आधुनिक राजस्थानी
का
संरचनात्मक व्याकरण

कालीचरण बहल
शिकागो विश्वविद्यालय

भाषा अन्वेषण सहायक
डा. सोहनदान चारण
जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर

श्री नारायणसिंह सांधू
राजस्थान संगीत नाटक अकेडेमी, जोधपुर

राजस्थानी साहित्य संस्थान, जोधपुर

वितरक :
राजस्थानी साहित्य संस्थान
यू. ग्राई. टी. के पास
भगवती पौधशाला के सामने, जोधपुर

मूल्य : चालीस रुपये मात्र

प्रथम संस्करण 1989

राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

मुद्रक :
एम. एल. प्रिन्टर्स
जोधपुर, राजस्थान, भारत

अनुक्रम

पृष्ठ

१. स्वन प्रक्रिया तथा लिपि

१.१. आ. राजस्थानी का ध्वनप्रक्रियात्मक विवरण भाषा के शब्दों को तद्विषयक वृहत्तम खंड मानकर प्रस्तुत किया जा रहा है।

१.२. भाषा के स्वनप्रक्रियात्मक एकको की तालिका नीचे प्रस्तुत की जा रही है।

१.२.१. व्यंजन

व्यंजन कोटि	उभयोष्ठ्य	जिह्वान्त-दन्त्य	जिह्वान्त-मूर्धन्य	जिह्वोपाग्रीय तालव्य	पश्चजिह्वा-कंठ्य
स्पर्श					
अघोष अल्पप्राण	प्	त्	ट्	च्	क्
अघोष महाप्राण	फ्	थ्	ठ्	छ्	ख्
घोष श्वास-द्वारीय रंजित	व्	द्	ड्	ज्	ग्
घोष महाप्राण	भ्	ध्	ढ्	झ्	घ्
घोष अल्पप्राण	ॿ्	ॾ्	ॾ्		
नासिक्य	म्	न्	ण्		ङ्
उत्क्षिप्त		र्	ड़्		
पार्श्विक		ल्	ळ्		
उत्क्षिप्त					
अघोष		स्			स़्
घोष	व्	ज़्		य्	ह

१.२.२. स्वर

	अग्र		मध्य		पश्च	
	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व
उच्च	ई	इ			ऊ	उ
मध्य	ए			अ	ओ	
निम्न	ऐ		आ		औ	

१.२.३. अधिखण्डात्मक

नासिक्यता

स्वराघात निरपेक्ष-

आरोही- / (इस चिह्न का प्रयोग अक्षर के बाद किया गया है।)

१.२.४. उपरिलिखित स्वनप्रक्रियात्मक एककों के पारस्परिक पार्थक्य का निदर्शन करने के लिए नीचे आवश्यक शब्दों के उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(१) प् . फ्

पींडो "मटकी रखने का स्थान" पालो "बेर की झाड़ी का सूखा पत्ता"
फींडो "चिपकी हुई नाक वाला" फालो "फोड़ा"
पुरो "पुर, नगर" पाग "पगड़ी"
फुरो "पीछे मुड़ना" फाग "एक सामूहिक नृत्य"

(२) ब् . भ् व्

बोड "मुर्गे की बांग" बट्ट "तेजी से"
भोड "तोड़ना" भट्ट "भट्ट"
वोड "गाड़ी में तेल देना" वट्ट "टेढ़ा-मेढ़ा होना"
बारी "खिड़की, छोटा झाड़ू" बाळो "जलाओ"
भारी "भारी, लकड़ियों का गट्ठर" भाळो "देखो"
वारी "वारी" वाळो "छोटा नाला"

(३) व् : ब्

बळ् "ताकत" वाअेरी "बिना"
वळ् "बारपन" बाअेरी "हवा"
बाट "अधकचरा गेहूं" बाड़ो "कमेला"
वाट "इन्तजार" वाड़ "कांटों की बाड़"
बाम्मण "ब्राह्मण" बाकळ् "उबाले हुए चने या मोठ"

बौम्मण "भांभी जाति की स्त्री" बाकल़ "मुहल्ले के बीच का मैदान"
वैवणौ "वैठना" बाइ "वहिन"
बैवणौ "चलना" बाई "शरीर का फूलना"

(४) त् : थ्

तारौ "तारा" तेल्ली "तेली"
थारौ "तुम्हारा" थेल्लौ "थैली"
तकियौ "सिराहना" ताकनैं "ताक कर"
थकियौ "थका हुआ" थाकनैं "थक कर"

(५) द् : ध् . द्

दड़ौ "बड़ी गेंद" दौम "मूल्य"
धड़ौ "तकड़ी का धड़ा" धौम "धाम"
वड़ौ "रेत का टीवा" वौम "जलकर राख होना"
दाव "दाव, मौका"
दाव "पशु"

(६) ट : ठ

टग "पत्थर का सहारा" टमकौ "नखरा"
ठग "ठग" ठमकौ "पायल का शब्द"

(७) ड् : ढ् . ड्

डाढी "दाढी" डैरौ "डेरा"
डाढी "एक जाति" ढैरौ "मूर्ख, ऊन काटने का औजार"
डागौ "एक जाति, वृद्ध ऊंट" डावौ "बाया"
ढागौ "वृद्ध बैल" डावौ "नदी का कगार"
अण्डौ "अण्ड" डाल़ "पेड़ की डाल"
अण्ढौ "दिन का तीसरा प्रहर" ढाल़ "ढलान"
डौग "लकड़ी"
ढौग "ढोंग"

(८) ज् : झ्

जक "शान्ति" जारी "जारी"
झक "झक (मारना)" झारी "छोटा लोटा"

(९) ग् : घ्

गुण "गुण"
घुण "घुन"

(१०) ष् ग् - ग्

कोण्ड "काट"

गोण्ड "नखर"

योण्ट "एक अश्लील शब्द"

(११) द् ण ड

टप्को "नखरा"

टण्कों "जबरदस्त"

टण्णाई "बल, सामर्थ्य"

टट्णाई टारने की क्रिया"

(१२) न ण

कोन "कान" कन "चोपड की कोडी को कान से छुआ कर गिराना"

कोण "तराजू की कान" कण "कण"

धन "धन" मन "मन"

धण "पत्नी" मण "एक तोल"

(१३) ब् ब् ब

बागो निश्चो

डागो बागो

पागो ज्योदाबर

(१७) ह्रस्व स्वर : दीर्घ स्वर

इ : ई

दिन "दिन"
दीन "गरीब"

उ : ऊ

घुर "नकारे की आवाज" घुन "घुन"
घूर "सार तत्व का बाहर आ जाना" घुण "ध्यान, लगाव"
गुण्ती "२९"
गूण्ती "गधे पर का बोरा"

अ आ

च/ऊ "हल की लकड़ी का नुकीला भाग" थल "स्थल"
चा/ऊ "चाहने वाला" थाल "थाल"

(१८) ॲ : ॳै

वेद "वेद" छे "अंत"
वॅद "वैद्य" छॅ "६"

(१९) ओ : ऑ

ढोळो "गिरा दो" ओरणो "ओढनी"
ढौळो "निर्बल" ऑरणो "वर्षा का होना"
कोम "जाति"
कौम "काम"

(२०) ऑ : ऊ

उपाडौ "उठाओ" करड़ौ "कड़ा"
उपाड़ू "अधिक खर्च करने वाला" करड़ू "अनाज का सस्ता दाना"

(२१) ई : ॲ

राईको "एक जाति" ऑईणो "वह गाय जो दूध न दे"
राॲतो "रायता" माॲनै "अन्दर"
चोॲ "बाल झड़ने का रोग"

(२२) सानुनासिक स्वर : निर्नुनासिक स्वर

खाँड "चीनी" ऊँव "बरसात का कम जल वाला बादल"
खाड "क्यारी" ऊव "ऊबने का भाव"

(२३) स्वराघात — : / (नीचे के उदाहरणों में निरपेक्ष स्वराघात को अचिह्नित रहने दिया गया है)

पीर "पीर"	सोरो "आसान"
पी/र "पीहर"	सो/रो "ससुर"
सारो "अस्तित्व"	कोड "उमग मिश्रित आनन्द"
सा/रो "ससुराल"	को/ड "कुष्ठ रोग"
सई "सही"	छेड़ै "छेड़ता है"
स/ई "स्याही"	छे/ड़ै "किनारे"
बाटी "घोटना क्रिया का पूर्णता वाचक रूप"	दाई "धाय"
बा/टी "कासे का बर्तन"	दा/ई "समान"
गोरी "गौरवर्ण की स्त्री"	जाजो "जाओ"
गो/री "ग्वाला"	जा/जो "ज्यादा"
ओड "एक जाति विशेष"	देवरो "देवर (बहु वचन)"
ओ/ड "कुएं पर बना स्थान"	दे/वरो "देवालय"
मैणी "मैना जाति की स्त्री"	पौर "पिछला वर्ष"
मै/णी "उपालम्भ"	पौ/र "प्रहर"
मौली "छाछ जो खट्टी न हो"	मेलणो "गाय दुहना"
मौ/ली "मौली का धागा"	मे/लणो "भेजना"
थोरी "एक जाति का नाम"	थौणो "थाना"
थो/रो "आग्रह"	थौ/णो "मिट्टी सहित अन्य स्थान पर लगाने के लिए उखाडा हुआ पौधा"

१ ३. आ. राजस्थानी लिपि देवनागरी लिपि का ही तनिक परिवर्तित रूप है। इस अध्याय के खण्ड (१.२.२) तथा (१.२.३) मे चयन किये गये व्यंजन और स्वर चिह्नों से इस तथ्य को लक्षित किया जा सकता है। नीचे आ. राजस्थानी वर्णमाला और तत्सम्बन्धी स्वनिमिक एकको की सूची प्रस्तुत की जा रही है। इस सूची में पहले स्वर तथा व्यजन वर्णों को सूचित करके प्रत्येक वर्ण के साथ उसके स्वनिमिक पर्याय को कोष्ठक में लिखा गया है।

स्वर . अ (अ), आ (आ), इ (इ), ई (ई), उ (उ), ऊ (ऊ), अे~ए (अे), अै~ऐ (अै), ओ (ओ), औ (औ)।

व्यंजन : क (क्), ख (ख्), ग (ग्), घ (घ्), ङ (ङ्), च (च्), छ (छ्), ज (ज् . ज़्), झ (झ्), ञ, ट (ट्), ठ (ठ्), ड (ड्), ढ (ढ्, ड़्),

ण (ण्), त (त्), थ (थ्), द (द, द्), ध (ध्, द्), न (न्)
प (प्), फ (फ्), ब (व्, ब्), भ (भ्), म (म्), य (य्), र (र्)
ड़ (ड़्), ल (ल्), ळ (ळ्), व (व्, ब्), स (स्, स्), ह (ह्)।

उपरोक्त वर्णमाला में घोष श्वासद्वारीय रंजित स्वनिम / व्, द्, ड्, ज्, ग् / और घोष अल्पप्राण स्वनिम / ब, द, ड / को चिह्नित करने की प्रणाली उल्लेखनीय तथ्य है। इसी प्रकार उत्क्षिप्त घोष स्वनिम / ज् / का वर्ण ज द्वारा संकेत भी उल्लेखनीय है।

अधिखण्डात्मक स्वनिम नासिक्यता का लिपि में बिन्दु (˙) द्वारा संकेत किया जाता है। अधिखण्डात्मक स्वनिम निरपेक्ष स्वराघात के लिये लिपि में कोई चिह्न नहीं है जो कि युक्ति युक्त है। आरोही स्वराघात का संकेत, जिस अक्षर पर इस स्वराघात की अवस्थिति हो, उसके साथ (') चिह्न के द्वारा संकेत किया जाता है; यथा (/ गो/री-/ "ग्वाला" गो'री, / पो/र / "प्रहर" पो'र) इत्यादि अनेकशः आरोही स्वराघात को लिखित आ. राजस्थानी में अचिह्नित भी छोड़ दिया जाता है।

२. आधुनिक राजस्थानी की अभिव्यंजक संरचना

२.१. सामान्य रूप से भारतीय आर्य भाषाओं में अभिव्यंजक संरचना के अभिसंज्ञक संरचना से पार्थक्य के विषय में वैयाकरणों का ध्यान नाम-मात्र को ही गया है। ऐसा क्यों हुआ है, इसका उत्तर तो भाषा विज्ञान की ऐतिहासिक प्रगति को समझकर किये गये विश्लेषण द्वारा ही दिया जा सकता है। इस अध्याय का उद्देश्य तो अत्यन्त सीमित है, और वह यह कि अभिसंज्ञक संरचना विषयक विवरण के साथ आ. राजस्थानी की अभिव्यंजक संरचना सम्बन्धी कतिपय तथ्यों का उल्लेख करना और इस तथ्य की स्थापना करना है कि अभिव्यंजक संरचना किसी भी भाषा का, विशेष रूप से आ. राजस्थानी की सर्वांग संरचना का, मूलभूत अंग है। भाषा के व्याकरण में इसे मात्र अपवादात्मक स्थान न देकर, इसका पूर्ण रूप से समुचित विवरण प्रस्तुत करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

२.२. अभिव्यंजक संरचना के अभिसंज्ञक संरचना से पार्थक्य को स्पष्ट करने के लिये निम्नलिखित दो उदाहरणों की पारस्परिक तुलना की जा सकती है।

(१) इण बिध सोच-विचार करतो हो के उणरै साथ वाळी फौज उठै आय पूगी। पण उठै तो राव अेकलो ई निगै आयो। दुसमी री फौजां री अेक ई सिपाई उठै कोनी हो। हजारूं सस्तर जमी माथै पडियोड़ा हा, फगत फौजां री उठती खेह सामी दीखती ही।

(२) राव आपरी फौज रा सिपाइयां नै कैयो—थे हकनाक लारै क्यूं आया! .... खैर थे आय ग्या हो तो अबै अे खोला-पाती चुगनै आपां रै अठै लै आवो। याद वणो रैवैला कै कोई जोधा लड़ण सारू आया तो हा।

प्रथम उदाहरण में जिन तलवार आदि वस्तुओं को सस्तर की संज्ञा से अभिहित किया गया है, द्वितीय उदाहरण में उन्हीं को खोला-पाती अर्थात् "कोल-पत्ती" आदि से सम्बोधित किया गया है। युद्ध करने के हेतु सेना द्वारा लाये शस्त्र उनके द्वारा डर कर भाग जाने पर युद्ध-भूमि पर फेंक दिये जाने से कील-पत्ती आदि हो गये। इन दोनों वाक्यों के वक्ता ने अपनी मनो-भावना के अनुकूल एक ही वस्तु का दो भिन्न-भिन्न नामों से उल्लेख करके, दोनों ही स्थितियों में शस्त्र आदि उक्त वस्तुओं के प्रति अपनी भावनाओं की अभिव्यंजना की है। शस्त्रों को खोला-पाती कह कर शत्रु का तिरस्कार, भूमि पर पड़े हुए

शस्त्रों की महत्त्वहीनता और अपने महत्त्व का जो प्रतिपादन किया गया है, ये सारे तत्त्व अभिव्यंजक संरचना का अंग हैं।

उपरिलिखित उदाहरणों में सस्तर एवं खीला-पाती दो भिन्न संज्ञाओं द्वारा भिन्न तथ्यों का संकेत किया गया है, उन्हीं तथ्यों का संकेत निम्न उदाहरण में भी है किन्तु यहाँ भिन्न शब्दों के प्रयोग द्वारा ऐसा नहीं किया गया।

(३) अणछक डाढ़ाळो ढबियौ ।......वो तू ंड गडाय अठी-उठी हेरण लागौ। बाजरी रै इण खेत आगै कठै ई खोज नी ढूका। निरचै चारूं चीलहरा इण खेत में चापळ्या दीसै। बाजरी ताळां छेक ऊभी झोला खावती ही। वो *तू ंड उठाय खेत माम्हीं जोयौ। बाजरी रौ बूं टौ-बूं टौ जाणै उणरी रिछ्या* हारू उमायौ ऊभौ हौ। डाढाळै री जीव ई हरियौ चकन हुयग्यौ।

इस उदाहरण में बाजरी के हवा में झूमने वाले पौधों का वर्णन करते हुए यह कहा गया है कि मानो वे शिकारियों से सूअर की रक्षा करने के भाव से आविष्ट होकर खड़े हैं, इत्यादि। यहाँ भी वक्ता की मनःस्थिति का आरोप किया गया है जो कि अत्यन्त उपयुक्त ही नहीं, अपनी प्रभविष्णुता से श्रोता अथवा पाठक को प्रभावित किये बिना नहीं रहता।

ऊपर अभिव्यजक और अभिसंज्ञक अर्थों का जो पार्थक्य दिया गया है वह आ. राजस्थानी भाषा की व्याकरणिक अर्थ-तात्त्विक संरचना का अविभाज्य अंग है। नीचे भाषा की विविध युक्तियों का उल्लेख किया जा रहा है, जिनसे व्याकरणिक अर्थ-तात्त्विक दृष्टि से अभिव्यंजक संरचना के महत्त्व का प्रति-पादन होता है।

२.३. सामान्यतया शाब्दिक दृष्टि से आदरार्थक, अपकर्षार्थक एवं सामान्य अवस्थितियों का पारस्परिक पार्थक्य बहुज्ञात तथ्य है। नीचे इस प्रकार के पार्थक्य के भाषा के विविध संवर्गों से उदाहरण एकत्रित किये जा रहे हैं।

(क) संज्ञाओं की अभिव्यजक अवस्थिति

आदरार्थक	अपकर्षार्थक	सामान्य
छाळी (स्त्री०)	टाटौ (पु०) घोनौ (पु०)	बकरी (स्त्री०)
घोड़ली (स्त्री०)	टारड़ी (स्त्री०)	घोड़ी (स्त्री०)
रावळौ (पु०)	खोलड़ौ (पु०)	घर (पु०)
देवौ (पु०)	राड (स्त्री०)	लुगाई (स्त्री०)
वैड़ (स्त्री०)	खोपी (स्त्री०)	गाय (स्त्री०)

आदरार्थक	अपकर्षार्थक	सामान्य
नारियौ (पु०)	खोपौ (पु०) ढागौ (पु०)	वळद (पु०)
कागलौ (पु०)	कोचौ (पु०)	हाडौ (पु०)
बासण (पु०)	तवरौ (पु०)	बर्तन (पु०)
—	खोदरड़ौ (पु०)	काम (पु०)
संत (पु०) मातमा (पु०)	मोडौ (पु०) भगड़ौ (पु०)	गाद्य (पु०)
झोटी (स्त्री०)	रौड़ौ (पु०), भाइयौ (पु०), खोरौ (पु०)	भैंस (स्त्री०)
गिंडक (पु०)	कुतरड़ौ (पु०)	कुत्तौ (पु०)
जाखोडौ (पु०) पांगल (पु०)	ढागौ (पु०)	ऊंट (पु०)
—	कुणकेयौ (पु०) जिणीतौ (पु०)	बाप (पु०)
—	डौल (पु०)	उणियारौ (पु०)
सीस (पु०)	भोडौ (पु०) भोडक (पु०) खोपड़ौ (पु०) पुटपड़ौ (पु०)	माथौ (पु०)
बासण (पु०)	ठीकरौ (पु०)	ठाम (पु०)

(ख) क्रियाओं की अभिव्यंजक अवस्थिति

आदरार्थक	अपकर्षार्थक	सामान्य
(थाल) अरोगणौ जीमणौ	गिटणौ	खावणौ
(रोटी) पोवणौ	घडणौ	बनावणौ
पधारणौ	गदणौ	आवणौ, जावणौ

२.४. ग्रादरार्थक, ग्रपकर्षार्थक एवं सामान्य के ग्रतिरिक्त ग्रन्य प्रकार से भी ग्रभिव्यंजना भाषा में होती है। इस तथ्य को स्पष्ट करने के लिए "नांव रौ म्यांनौ" शीर्षक लोककथा से सुरणरणौ क्रिया के भाव को कितने प्रकार से ग्रभिव्यंजित किया गया है, इसके उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे है।

(४) ......अेक सांधिया सूं होळै सी क पूछियौ—बीरा, कुण चलियौ !
"ग्रमरौ"
ग्रौ नाव उणरै कांनां में संख ज्यूं गूंजियौ।

(५) ग्रकै जावतां उणनै अेक मंगतौ साम्हौ धकियौ। चौधरण ...... उणरौ नाव पूछियौ। ...... ग्रवै नाव सुभट सुणीजियौ—धनियौ।
चौधरण रै कांना ग्रौ नाम मद्दिद करतौ रौ टकरायौ।

(६) वे मोटियार कैयौ कै वा भलो लुगाई कोनी भगतण है। चौधरण पूछियौ—वाल्हा, थारौ नांव कांई। भगतण मुळकनै बोली—सीता। चौधरण रै कांनां ग्रौ नांव बिच्छु रा डंक ज्यूं लागौ।

(७) मिंदर रा हेटला पगौतिया मायै अेक कोढण बैठी माखियां उडावती ही। ......चौधरण दो टका भिलाय नाव पूछियौ तौ पतौ लागियौ कै उणरौ नांव है लिछमी। चौधरण रै काना बुग मायै बुग वड़ता ज्यूं लखाया।

उपरिलिखित उदाहरणों में समस्त रेखांकित वाक्य सुरणरणौ क्रिया के ग्रभिव्यंजक पर्याय है।

२.५. प्रस्तुत ग्रध्याय का उद्देश्य जैसा कि पहले कहा जा चुका है। मात्र ग्रा. राजस्थानी की ग्रभिव्यंजक संरचना की स्थापना करना है। व्याकरणिक संरचना के विवरण की पूर्णता की दृष्टि से, इस पुस्तक के प्रत्येक ग्रध्याय के वर्ण्य विषय के प्रसंग में ही ग्रभिव्यंजक सरचना सम्बन्धी समस्त उपलब्ध तथ्यो को सग्रहीत कर दिया गया है। ग्रतः यहां उन्ही तथ्यों को ग्रलग से दोबारा संकलित नही किया जा रहा।

३. संज्ञा

३.१. आ. राजस्थानी संज्ञाओं को उनके लिंग के आधार पर दो कोटियों में विभाजित किया जा सकता है—(क) ऐसी संज्ञाएं जिनका लिंगानुसार संवर्गीकरण कतिपय प्रत्ययों का सहवर्ती होता है, और (ख) ऐसी संज्ञाएं जिनका लिंगानुसार संवर्गीकरण प्रत्ययों का सहवर्ती न होकर अन्य तत्त्वों पर आधारित होता है।

३.२. प्रत्ययों के सहवर्ती लिंगानुसार संवर्गीकृत संज्ञाओं की लिंग व्यवस्था में अन्तर्निहित संभावनाओं को भी दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—(क) वे संज्ञाएं जिनके लिंगानुसार रूप सामान्यतया अभिव्यंजक होते है, तथा (ख) वे संज्ञाएं जिनके लिंगानुसार रूप अन्य तत्त्वों पर आधारित होते हैं।

३.२.१. नीचे कोटि (क) की संज्ञाओं के ज्ञात वर्गों को सोदाहरण सूचित किया जा रहा है। इन संज्ञाओं में –ओ, –इयो तथा –ई प्रत्ययों की अवस्थिति एवं अनवस्थिति के आधार पर प्रत्येक संज्ञा के अधिकतम चतुर्विध रूप हो सकते है, यद्यपि इस कोटि की समस्त संज्ञाओं के अधिकतम सम्भावित रूप नहीं मिलते।

(१) प्रयत्त पुरुष नामों के लिंगानुसार रूप :

सामान्य पुल्लिग	विशिष्ट पुल्लिग	अल्पार्थक पुल्लिग	स्त्री लिंग
सोन	सोनो	सोनियो	सोनी
माद	मादो	माधियो	मादी
ऊद	ऊदो	ऊदियो	ऊदो
राम	रामो	रामियो	रामी

(२) प्रदत्त स्त्री नामों के लिंगानुसार रूप :

सामान्य पुल्लिंग	विशिष्ट पुल्लिंग	अल्पार्थक पुल्लिंग	स्त्री लिंग
प्यार	प्यारौ	प्यारियौ	प्यारी
विमल	विमलौ	विमलियौ	विमली
जसोद	जसोदौ	जसोदियौ	जसोदी
भीक	भीकौ	भीकियौ	भीकी

(३) मानवेतर एवं मानव प्राणीवाचक संज्ञाओं के लिंगानुसार रूप :

बकर	बकरौ	बकरियौ	बकरी
तोड	तोडौ	तोडियौ	तोडी
ऊंदर	ऊंदरौ	ऊंदरियौ	ऊंदरी
बांदर	बांदरौ	बांदरियौ	बांदरी
कांच	काचौ	कांचियौ	कांची
हिरण	हिरणौ	हिरणियौ	हिरणी
टोगड़	टोगड़ौ	टोगड़ियौ	टोगडी
कबूड़	कबूड़ौ	कबूड़ियौ	कबूड़ी
घेट	घेटौ	घेटियौ	घेटी
घोड़	घोड़ौ	घोडियौ	घोड़ी
डोकर	डोकरौ	डोकरियौ	डोकरी

(४) अप्राणीवाचक संज्ञाओं के लिंगानुसार रूप :

काचरी	कांचरौ	कांचरियौ	काचरी
ढोकळ	ढोकळौ	ढोकळियौ	ढोकळी
तासळ	तासळौ	तासळियौ	तासळी
बाटक	बाटकौ	बाटकियौ	बाटकी
रोट	रोटौ	रोटियौ	रोटी
जूत	जूतौ	जूतियौ	जूती
डोर	डोरौ	डोरियौ	डोरी
मटक	मटकौ	मटकियौ	मटकी
भोड	भोडौ	भोडियौ	भोडी
तूंब	तूंबौ	तूंबियौ	तूंबी
घोर	घोरौ	घोरियौ	घोरी
खाळ	खाळौ	खाळियौ	खाळी

गेड	गेडो	गेडियो	गेडी
ढिगल	ढिगलो	ढिगलियो	ढिगली
दातळ	दातळो	दातलियो	दातळी
खोल	खोलो	खोलियो	खोली
ठीकर	ठीकरो	ठीकरियो	ठीकरी
ढकण	ढकणो	ढकणियो	ढकणी
कुलड़	कुलड़ो	कुलड़ियो	कुलड़ी
खोप	खोपो	खोपियो	खोपी
कोथळ	कोथळो	कोथळियो	कोथळी
खेजड़	खेजड़ो	खेजड़ियो	खेजड़ी
खोपड़	खोपड़ो	खोपड़ियो	खोपड़ी
डाळ	डाळो	डाळियो	डाळी
गोड	गोडो	गोडियो	गोडी
सीगड़	सीगड़ो	सीगड़ियो	सीगड़ी

(२) *विकल रूपावली वाली संज्ञाएं :*

(क) प्राणीवाचक संज्ञाएं जिनके सामान्य पुल्लिंग रूप अनुपलब्ध हैं।

पाडो	पाडियो	पाडी
मिन्नी	मिनियो	मिन्नी
छोरा	छोरियो	छोरी
कीड़ी	कीड़ियो	कीड़ी
पावणो	पावणियो	पांवणो

(ख) *अप्राणीवाचक संज्ञाएं जिनके सामान्य पुल्लिंग रूप अनुपलब्ध हैं।*

कवाड़ो	कवाड़ियो	कवाड़ी
डब्बो	डबियो	डब्बी
फर्रो	फरियो	फर्री
झारो	झारियो	झारी
तवो	तवियो	तवी
डळो	डळियो	डळी
तड़ो	तड़ियो	तड़ी
तुर्रो	तुरियो	तुर्री
बचको	बचकियो	बचकी
थप्पो	थपियो	थप्पी
झंडो	झंडियो	झंडी

छुरौ	छुरियौ	छुरी
कड़ौ	कड़ियौ	कड़ी

(ग) त्रिविध रूपीय संज्ञाएं जिनके विशिष्ट पुल्लिंग रूप अनुपलब्ध है ।

ताकड़	ताकड़ियौ	ताकड़ी
काकड़	काकड़ियौ	काकड़ी
ढेलड़	ढेलडियौ	ढेलड़ी

(घ) त्रिविध रूपीय संज्ञाएं जिनके अल्पार्थक पुल्लिंग रूप अनुपलब्ध हैं ।

थेपड़	थेपड़ौ	थेपड़ी
फळ	फळौ	फळी

(ङ) त्रिविध रूपीय संज्ञाएं जिनके स्त्री लिंग रूप अनुपलब्ध हैं ।

आकड	आकड़ौ	आकड़ियौ
धेंड़	धेंडौ	धेंड़ियौ
खरड़क	खरड़कौ	खरड़कियो
रौड़	रौड़ौ	रौड़ियौ
खोर	खोरौ	खोरियौ
धोब	धोबौ	धोबियौ
गार	गारौ	गारियौ

(च) द्विविध रूपीय संज्ञाएं जिनके सामान्य पुल्लिंग और स्त्री लिंग रूप ही उपलब्ध है ।

सांगर	सांगरी
ताल	ताली
कुड़क	कुड़की
पीपळ	पीपळी

(छ) द्विविध रूपीय संज्ञाएं जिनके विशिष्ट पुल्लिंग और अल्पार्थक पुल्लिंग रूप ही उपलब्ध है ।

खाजौ	खाजियौ
खबोचौ	खबोचियौ
तूंडौ	तूंडियौ
मोलौ	मोलियौ

(ज) द्विविध रूपीय संज्ञाएं जिनके विशिष्ट पुल्लिग और स्त्रीलिंग रूप उपलब्ध है।

बिकरौ	बिकरी
खूंटौ	खूंटी
चकारौ	चकारी
अंधारौ	अंधारी
फूंदौ	फूंदी
फेरौ	फेरी
थुथकौ	थुथकी

(झ) द्विविध रूपीय संज्ञाए जिनके सामान्य पुल्लिग और अल्पार्थक पुल्लिग रूप ही उपलब्ध है।

बूक	बूकियौ
तळाब	तळावियौ
राड़	राड़ियौ
मोर	मोरियौ

(ञ) द्विविध रूपीय संज्ञाएं जिनके सामान्य और विशिष्ट पुल्लिग रूप ही उपलब्ध हैं।

बिगाड़	बिगाड़ौ
सुधार	सुधारौ
उधार	उधारौ
आक	आंकौ
अफंड	अफंडौ
अंदाज	अंदाजौ
आगण	आगणौ
घूंघट	घूंघटौ
फंद	फंदौ
वास	वासौ
पाप	पापौ
जाळ	जाळौ
गोट	गोटौ
भपीड़	भपीड़ौ
भचीड	भचीड़ौ
फटीड़	फटीड़ौ
सटीड़	मटीड़ौ

दटीड़	दटीड़ौ
खळिद	खळिदौ
हबिद	हबिदौ
कचंद	कचंदौ
तवंद	तवंदौ
सीधापण	सीधापणौ
गैलापण	गैलापणौ
ओछापण	ओछापणौ
तीखापण	तीखापणौ
बाडापण	बाडापणौ
खरापण	खरापणौ
सुगरापण	सुगरापणौ
नुगरापण	नुगरापणौ
हळकापण	हळकापणौ
बोदापण	बोदापणौ
मिनखापण	मिनखापणौ

(द) द्विविधरूपीय संज्ञाएं जिनके अल्पार्थक पुल्लिंग और स्त्रीलिंग रूप उपलब्ध हैं।

चौपनियौ	चौपनी
कोकड़ियौ	कोकड़ी
ताकड़ियौ	ताकड़ी

३.२.२. –औ, –इयौ तथा –ई प्रत्ययों की अवस्थिति अनवस्थिति से निष्पन्न रूपों के अतिरिक्त अन्य प्रत्ययों से भी संज्ञाओं के लिंग रूपों की रचना होती है। इस प्रकरण में इन इतर प्रत्ययों से निष्पन्न रूपों का उल्लेख किया जाएगा।

(१) पुल्लिंग रूप से –आणी प्रत्यय के योग से निष्पन्न स्त्रीलिंग रूप।

वाणियौ	वणियाणी
कंवर	कंवराणी
नौकर	नौकरांणी
सेठ	सेठाणी
पुरोहित	पुरोहितांणी, पिरोयतांणी
ठाकर	ठकराणी
रजपूत	रजपूताणी
धणी	धणियाणी

भाटी	भटियाणी
तुरक	तुरकाणी
साध	साधाणी

(२) पुल्लिंग रूप से –अण प्रत्यय के योग से निष्पन्न स्त्रीलिंग रूप ।

पुजारी	पुजारण
दरजी	दरजण
नाई	नायण
भिखारी	भिखारण
साथी	साथण
तेली	तेलण
धोबी	धोबण
भंगी	भंगण
मोची	मोचण
माळी	माळण
भावी	भावण
सामी	सामण
खाती	खातण
पटवारी	पटवारण
गांधी	गांधण
मालक	मालकण
चौधरी	चौधरण

(३) पुल्लिंग रूप के साथ –णी प्रत्यय के योग से निष्पन्न स्त्रीलिंग रूप ।

जाट	जाटणी
नटियौ	नटणी
डाक्टर	डाक्टरणी
मास्टर	मास्टरणी
मुसलमांन	मुसलमानणी
हाथी	हथणी
सिंघ	सिंघणी
वोद	वोदणी
भाट	भाटणी
खटीक	खटीकणी
सेर	सेरणी
वड़ियौ	वड़णी

(४) पुल्लिग रूप के साथ –ई प्रत्यय के योग से निष्पन्न स्त्रीलिंग रूप।

चारण	चारणी
बांमण	बांमणी
लवार	लवारी
दास	दासी
कुमार	कुमारी
गोप	गोपी
सुथार	सुथारी
कुम्हार	कुम्हारी
सरगरो	सरगरी

(५) स्त्रीलिंग रूपो के साथ –औ प्रत्यय के योग से निष्पन्न पुल्लिग रूप।

स्त्रीलिंग	पुल्लिग
चाळ	चाळौ
चाट	चाटौ
छांट	छाटौ
झाळ	झाळौ
ताक	ताकौ
गाठ	गांठौ
फाचर	फाचरौ
फूंफाड़	फूंफाड़ौ
सरण	सरणौ
सभाळ	सभाळौ
लेण-देण	लेणौ-देणौ
लार	लारौ
हाक	हाकौ
हुंकार	हुंकारौ
कचाक	कचाकौ
पचडाक	पचड़ाकौ
पचराक	पचराकौ
डिचकार	डिचकारौ
बुचकार	बुचकारौ
झणकार	झणकारौ
टणकार	टणकारौ
छणकार	छणकारौ
चिल्लाट	चिल्लाटौ

छळछळाट	छळछळाटो
झल्लाट	झल्लाटो
ठकठकाट	ठकठकाटो
सका	सको

(६) संस्कृत तत्सम संज्ञाएं जिनके पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग भाषा मे यथावत् प्रचलित हैं।

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
भगवान	भगवती
बुद्धिमान	बुद्धिमती
गुणवाण	गुणवती
बळवाण	बळवती
अभिनेता	अभिनेत्री
दाता	दात्री
विधाता	विधात्री
बालक	बालिका
पाठक	पाठिका
नायक	नायिका
अध्यक्ष	अध्यक्षा
कांत	कांता
प्रिय	प्रिया
स्वामी	स्वामिनी
तपस्वी	तपस्विनी

(७) फारसी-अरबी तत्सम संज्ञाएं जिनके पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग रूप प्रचलित है।

सायब	सायबा
मलिक	मलिका
वालिद	वालिदा
सुलतान	सुलताना

३.२.३. निम्नलिखित संज्ञाओ के लिगानुसार युग्म शब्द भेद पर आधारित हैं।

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
बाप	मां
पिता	माता
गाड	गाय
मोर	ढेल
धणी	लुगाई

३.२.४. अनेक पुंल्लिग संज्ञाएं ऐसी है जिनके स्त्रीलिंग प्रतिरूप भाषा मे उपलब्ध नही होते ।

चित्राम	घी	पीजरौ
खज	आटौ	दुसाकौ
मादर	गुळ	काम
पांणी	कुंजो	होठ
साबू	भाटौ	दांत
तेल	गदौ	

३.२.५. अनेक स्त्रीलिंग संज्ञाएं ऐसी है जिनके पुंल्लिग प्रतिरूप भाषा में अनुपलब्ध है ।

दारू	जट	जाजम	पावर
गाज	मूंण	सतरंज	काया
सक्कर	गिलास	ईस	आंख

३.२.६ भाषा में अनेक संज्ञाए ऐसी हैं जो रूप भेद के बिना पुंल्लिग अथवा स्त्रीलिंग दोनों में अवस्थित होती हैं ।

तेवड़	कडमड़	निसास
तनपट	कळकळ	सिकार
घात	काळस	पूंछ
चैन	थाग	ओखद
आळ-जंजाळ	ना	वगत
थावस	काकड़	

उक्त संज्ञाओं में से कतिपय की वाक्यो में अवस्थिति के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(१) वा घणी वार ई समझावती कै नीं नी व्है जैंडी तेवड़ करनै रात-दिन जीमावती रू, जे मिनखा नै खावणा वंद करदे तौ, पण बात निभावणी तौ दैत रै हाथ ही ।

(१क) आपरै बासै आय कमेड़ी नेवळै अर कागळै सारू घणा ई तेवड़ करिया ।

(२) अबै तौ वे बातां सपनै री आळ-जंजाळ हुयगी ।

(२क) रात रा सपनै में ई उणनै धन कमावण रा ई आळ-जंजाळ आवता ।

३ २.७. भाषा में अनेक स्त्रीलिंग संज्ञाएं है जिनके साथ –ई प्रत्यय के योग से अतिरिक्त स्त्रीलिंग रूप निर्मित होते हैं ।

मूल स्त्रीलिंग रूप	–ई प्रत्यय युक्त स्त्रीलिंग रूप
अंतावळ	अंतावळी
खळबळ	खळबळी
गाळ	गाळी
जुगत	जुगती
झड़	झड़ी

आस और आ–अन्त्य आसा, जो कि दोनों स्त्रीलिंग हैं, इसी कोटि की संज्ञाएं हैं।

३.२.८. कतिपय अन्य संज्ञाएं ऐसी है जिनके मूल स्त्रीलिंग रूपों से –ई और –औ प्रत्ययो के योग से अतिरिक्त स्त्रीलिंग और पुल्लिग रूपों की रचना होती है। यथा आंट से आंटी, आंटौ, ढांण से ढाणी, ढांणौ इत्यादि।

३.३. आ. राजस्थानी संज्ञाएं सामान्यत एक तथा बहु वचन मे अवस्थित होती है। अनेक संज्ञाएं वचन सम्बन्धी इस सामान्य नियम का अपवाद हैं किन्तु उनका विवरण आगे किया जायगा।

३.३.१. वचन की दृष्टि से आ. राजस्थानी संज्ञाओ के निम्नलिखित शब्दगत रूप वर्ग है :—

(अ) पुल्लिग सज्ञाए

(१) औ–अन्त्य संज्ञाएं, यथा, काकौ, छोरौ, बेटौ, टोगड़ियौ

(२) ई–अन्त्य संज्ञाएं, यथा, माळी, पापी, भगी

(३) ऊ–अन्त्य सज्ञाए, यथा, भाणू, बगू

(४) आ–अन्त्य संज्ञाएं, यथा, राजा, मातमा

(५) इतर संज्ञाए, यथा जाट, ठाकर

(आ) स्त्रीलिंग संज्ञाए

(१) ई–अन्त्य संज्ञाएं, यथा जाटणी, मिठाई, घड़ी, नगरी, टोगड़ी, भगोली, लुगाई, लुगावड़ी, पाडी, पाडकी, नाडी, नाडड़ी, बाटकी, नगरी, मूरती

(२) आ–अन्त्य संज्ञाएं, यथा आसा, चिंता, मां

(३) अनुचरित अ–अन्त्य सज्ञाए, यथा रत, विगत, परात, आस, लालटेण, मूरत, वैर

(४) इतर संज्ञाएं, यथा पापण, माळण, तेलण, खातण, गांधण, पटवारण, धोवण, ढोलण, भावण, सामण, दरजण, मालकण, पुजारण, मोचण, चौधरण, पातर, खातर इत्यादि संज्ञाएं भी स्त्रीलिंग संज्ञाओं के वर्ग (४) मे ही सम्मिलित की जा सकती है।

[illegible]

[illegible] के आधार पर [illegible] ऋजु [illegible] तिर्यक [illegible] [illegible]

संज्ञा वर्ग	एक वचन		बहुवचन	
	ऋजु रूप	तिर्यक रूप	ऋजु रूप	तिर्यक रूप
पु० (१) [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पु० (२) [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पु० (३) [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पु० (४) [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पु० (५) [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
स्त्री० (१) [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
स्त्री० (२) [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
स्त्री० (३) [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
स्त्री० (४) [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

स्त्रीलिंग वर्ग (२) की कतिपय संज्ञाओं के (यथा मुनाई, मिठाई आदि) रूपों में [illegible] है। इनका [illegible] नीचे दिया जा रहा है।

मुनाई संज्ञा की [illegible] रूपावली

	एकवचन	बहुवचन
ऋजु	मुनाई	मुनायां
तिर्यक	मुनाई	मुनायां

मिठाई संज्ञा की रूपावली भी मुनाई शब्द के समान है।

मुनाई शब्द के [illegible] रूप मुनायड़की की रूपावली निम्नलिखित है।

	एकवचन	बहुवचन
ऋजु	मुनायड़की	मुनायड़क्यां
तिर्यक	मुनायड़की	मुनायड़क्यां

उच्चारण भेद के कारण कोई [illegible] समस्त –ईं प्रत्यय-संज्ञाओं के बहुवचन (स्त्रीलिंग संज्ञाओं के ऋजु और तिर्यक तथा पुल्लिंग संज्ञाओं के केवल तिर्यक) [illegible]।

संज्ञा के समान लिखते है । यथा माल्यां (माळी तिर्यक बहुवचन) अथवा माड्यां (नाड़ी ऋजु तथा तिर्यक बहुवचन) इत्यादि । इसी प्रकार स्त्रीलिंग वर्ग (४) की संज्ञाओं की भाषा में स्थिति है ।

३.३.२ कतिपय अल्पार्थक पुल्लिंग संज्ञाओं और उनकी प्रतिरूपीय ~ई अन्त्य संज्ञाओं की शब्दगत रूपावली मे, विशेष रूप से तिर्यक बहुवचन मे, रूपगत अस्पष्टता आ जाती है । यथा, काचरियो (अल्पार्थक पुल्लिंग) तथा काचरी (स्त्रीलिंग) दोनों का तिर्यक बहुवचन रूप काचरियां~काचर्यां ही होगा । इस प्रकार की स्थितियां में प्रवस्थिति-संदर्भ के आधार पर ही अस्पष्टता का निराकरण किया जा सकता है ।

३.३.३ अनेक संज्ञाओं के सम्बोधनात्मक रूप भी भाषा मे प्रचलित है । सामान्यतः सम्बोधनात्मक और तिर्यक रूपो मे कोई भेद नही होता । कतिपय संज्ञाओं के सामान्य सम्बोधनात्मक रूपों के अतिरिक्त अन्य रूप भी भाषा मे प्रचलित है जो कि अभिव्यंजक होते है । यथा माळी संज्ञा के सामान्य सम्बोधनात्मक रूपों मे माळी (एक वचन) और मे माळियां (बहुवचन) के अतिरिक्त अभिव्यंजक सम्बोधनात्मक रूप है अं माळां (एक वचन) तथा अे माळां (बहुवचन) इत्यादि ।

सामान्य सम्बोधनात्मक बहुवचन का एक व्यक्ति के लिए आदरार्थक प्रयोग भी होता है ।

३.३.४. अनेक समूहवाची संज्ञाएं अन्तर्निहित बहुवचन में होने के कारण शब्दरूपगत दृष्टि से बहुवचन मे अवस्थित नही होती । इस कोटि के कतिपय उदाहरण हैं । समस्त सामान्य पुल्लिंग संज्ञाएं, जिनका विवरण प्रकरण संख्या (३.२) में किया जा चुका है, तथा कतिपय अन्य संज्ञाए यथा मानखो, माल, कमठांण, दाव~धाव, पंखेरू, नवियांण, हमायत, तमामत, जीमणियार इत्यादि ।

माईत, टाबर, जनेतर आदि शब्द, यद्यपि स्त्री अथवा पुरुष व्यक्तियो का समुद्देशन करते है, फिर भी इनकी शब्दगत रूपावली पुल्लिंग वर्ग (५) के समान ही होती है ।

अनेक संज्ञाएं, यथा भाइयो, मेणदल, काया, ओलद एकवचन में ही अवस्थित होती है । इस कोटि की संज्ञाओ की सूची काफी विस्तृत है ।

इस प्रकरण मे वर्णित अपवाद स्वरूप संज्ञाओं के विषय मे और अधिक अनुसन्धान की आवश्यकता है ।

३.४ आ. राजस्थानी मे दो संज्ञाओं की परस्पर आसक्ति से यौगिक संज्ञाओं की रचना होती है । इस प्रकार की यौगिक संज्ञाओ के तीन वर्ग है—(क) मानववादी यौगिक संज्ञाएं, (ख) मानवेतर प्राणीवाचक यौगिक संज्ञाएं तथा (ग) वस्तु इत्यादि वाचक यौगिक संज्ञाएं ।

३.४.१. मानववाची यौगिक संज्ञाओं के उनमें अवस्थित अंग-स्वरूप संज्ञाओं के लिंग और क्रमानुसार निर्मित चारों कोटियों के कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किए जा रहे हैं।

पुल्लिंग-स्त्री लिंग यौगिक संज्ञाएँ

ठाकर–ठकराणी	साध–साधाणी
सेठ–सेठाणी	सामी–सांमण
राजा–रांणी	भंगी–भंगण
राजपूत–राजपूतांणी	ढोली–ढोलण
चारण–चारणी	भांवी–भावण
बांमण–बांमणी	दरजी–दरजण
तेली–तेलण	दोहितौ–दोहती
सुथार–सुथारी	लोग–लुगाई
खाती–खातण	धणी–लुगाई
लवार–लवारी	बींद–बींदणी
कुम्हार–कुम्हारी	छोरौ–छोरी
सरगरौ–सरगरी	दादौ–दादी
दास–दासी	भाई–भोजाई
पटवारी–पटवारण	काकौ–काकी
चौधरी–चौधरण	मांमौ–मामी
पुजारी–पुजारण	नांनौ–नांनी
मालक–मालकण	बींद–बहू
डोकरौ–डोकरी	भाई–बैन
बेटौ–बेटी	भाणजौ–भाणजी
मासौ–मासी	जेठ–जेठाणी
देवर–देरांणी	साळौ–साळी

स्त्री लिंग-पुल्लिंग यौगिक संज्ञाएँ

मां–बाप	बैन–भाई
सासु–सुसरौ	मासी–भाणजौ
देवी–देवता	भुवा–भतीजौ
छोरी–छोरौ	बैन–बहनोई

पुल्लिंग-पुल्लिंग यौगिक संज्ञाएँ

राजा–रंक	गरीब–गुरबौ
चोर–साहूकार	गरीब–अमीर

कुटम–कबीलो	बूढो–वडेरो
नौकर–चाकर	वैरी–दुस्मी
ठाकर–ठेठर	किसांण–मजूर
वाळ–विचियो	

स्त्रीलिंग-पुल्लिंग यौगिक संज्ञाएं

भुवा–भतीजो
मा–बेटो
नणद–भोजाई
मासी–भांणजी
वैन–बेटी
सासू–बहू
याई–माई
देरांणी–जेठाणी

लोक मे प्रसिद्ध व्यक्तियों के नामो में पुरुष-स्त्री अथवा स्त्री-पुरुष के क्रम से व्यक्तिवाचक यौगिक संज्ञाओं के कतिपय उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

पुरुष-स्त्री यौगिक संज्ञाएं	स्त्री-पुरुष यौगिक संज्ञाएं
ढोला–मरवण	सीता–राम
शिव–पार्वती	राधा–कृष्ण
कृष्ण–रुक्मिणी	सोरठ–बीझो
जेठवा–ऊजळी	निहालदे–सुलतान
जलाल–बूबना	सयणी–बीजानंद
नल–दमयन्ती	रत्ना–हमीर

३.४.२. मानवेतर प्राणीवाचक संज्ञाओं से निर्मित यौगिकों के भी मानववाचक संज्ञाओं के समान ही चार वर्ग होते हैं।

पुल्लिंग-स्त्रीलिंग यौगिक	स्त्रीलिंग-पुल्लिंग यौगिक
सेर–सेरणी	गाय–बळद
कबूतरो–कबूतरी	भैंस–पाडो
घोड़ो–घोड़ी	कीड़ी–मकोड़ो
हाथी–हथणी	
गधो–गधी	
चकेरो–चकेरी	
चिड़कलौ–चिड़की	

कागलो–कागली
चिड़ो–चिडी

पुल्लिग-पुल्लिग यौगिक	स्त्रीलिंग-स्त्रीलिंग यौगिक
पंछी–जिनावर	चिड़ी–कमेड़ी
	गाय–भैंस

३४३. वस्तु इत्यादि वाचक यौगिक संज्ञाओ में उनमे अवस्थित अंगों के लिंग का महत्त्व उतना नही जितना कि परस्पर आसन्न अवस्थित संज्ञा युग्मों का। इस प्रक्रम द्वारा समिश्र कोटि की संकल्पनाओ का भाषा में प्रजनन होता है। यथा—छांग-बीण, जमीं-जायदाद, डान-पुन्न, दवा-दारू, धन-माल इत्यादि। ये समस्त संज्ञा युग्म ऐसे है जिनमे प्रत्येक युग्म के दोनों अंग सामाजिक प्रथाओ के आधार पर साथ-साथ अवस्थित होते है। जैसे जमीं-जायदाद का अर्थ है "जमीन, जायदाद एव इनकी समिश्र कोटि मे सम्मिलित की जा सकने वाली अन्य वस्तुएँ इत्यादि।" इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कोश मे प्रदत्त अर्थों के अनुसार इन यौगिको का अर्थ उनके अगों के योगफल से अतिरिक्त है।

इस कोटि की यौगिक संज्ञाओ के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे है।

छळ–कपट	हरख–उच्छव	चारो–पांणी
छळ–छंद	हीरा–मोती	चिलम–तंबाकू
छळ–प्रपंच	हीरा–जवारात	चीज–वुस्त
छळ–बळ	हीड़ो–चाकरी	चुग्गो–पाणी
छांण–बीण	हाय–तोबा	चौका–परिंडो
छिड़का–छाटा	चाल–चलगत	जात–पांत
जांच–पड़ताल	सिरख–पथरणो	फळ–फूल
फूंस–बाईंदो	पत्ता–पानड़ा	पुन्न–परताप
पुराण–सास्तर	कुरब–कायदो	कूंका–रोळो
केसर–कस्तूरी	सोनो–चादी	खरच–खातो
समंद–तळाव	साठ–गाठ	साज–माद
लाड–कोड	साळ–संभाळ	सिंनांन–संपाड़ो
सिनान–पांणी	सीर–संस्कार	सुख–आणद
सेंध–पिछाण	सेवा–बंदगी	सैर–सपाटो
सोच–विचार	रगड़ो–झगड़ो	राव–रत्तो
राळी–गूदड़ा	रीझ–खीज	रूप–रंग
रोटी–गाभा	रोळो–दंगो	वारो–न्यारो
लाग–लपेट	लाज–विपदा	लाज–सरम

लाड-दुलार	लिहाज-लचको	गुण-दोस
लेणो-देणो	काण-कायदो	माण-ताण
माया-संपत	माल-मतीदा	भाग-नुनफा
मोह्-परीत	मौज-मजा	पूजा-पाठ
वाटा-चूंटा	वात-विगत	गाज-माद
विणाव-सिणगार	विम-इमरत	धरम-अधरम
सुख-दुख	दिन-रात	जलम-मरण
वेरो-वावडी	व्रत-उपवास	जप-तप
भाटा-दगड़	अंतर-फुलेल	कागद-पतर
मरजी-पानड़ो	आगो-लारो	मापत-विपदा
आळ-जंजाळ	आव-आदर	इनाम-इकरार
ओळख-पिछाण	ओखद-उपचार	करम-धरम
काम-धंधो	काम-काज	काम-हलोगो
नाव-नामून	धरम-ध्यान	धरम-करम
नावो-लेखो	दया-मया	दाणो-पाणी
दुख-दरद	देण-दाफ	धन-माल
खिधरा-ठट्ठा	गरव-गुमाण	गाजा-वाजा
गाभा-लत्ता	गेणो-गाठो	घड़ी-पलका

३.४.४. समस्त मानववाची एवं मानवेतर प्राणी-वाचक यौगिक संज्ञाओं की लिंगानुसार निम्न कोटियां हैं :—

(क) पुरुष + स्त्री
(ख) पुरुष + पुरुष
(ग) स्त्री + पुरुष
(घ) स्त्री + स्त्री

कोटि (क), (ख), (ग) की यौगिक संज्ञाएं पुल्लिग होती है, और कोटि (घ) की संज्ञाएं स्त्रीलिंग।

समस्त वस्तु इत्यादि वाचक संज्ञाओं की उनमे अवस्थित घटको की संख्येयता अथवा असंख्येता के आधार पर दो उपकोटियां हो जाती है। इनमे संख्येय वस्तु इत्यादि वाचक संज्ञाओ का लिंगानुसार वर्गीकरण भी मानववाची एवं मानवेतर प्राणीवाचक संज्ञाओं के समान होता है। किन्तु असंख्येय वस्तु इत्यादि वाचक यौगिक संज्ञाए सामान्यतया चार उपकोटियों में विभाजित हो जाती हैं।

(क) पुल्लिग + स्त्रीलिंग
(ख) स्त्रीलिंग + स्त्रीलिंग

(ग) पुल्लिग + पुल्लिग

(घ) स्त्रीलिंग + पुल्लिंग

कोटि (क) (३-५) और (ख) (६) की यौगिक संज्ञाएं स्त्रीलिंग होती है, तथा कोटि (ग) (७-९) और (घ) (१०-१२) की संज्ञाएं पुल्लिग।

(ख) (३) दूजो जोर ई काई हो। वैन-बहुवां रै साथै हवेली री सगळी सुख-सायत ई बिलायगी।

(४) पुरखां रै इण गांव री मोह-परीत छोड़नै थूं दिसावर में कमाई सारू अवस जाजै।

(५) वा तौ किणी री मांन-मनवार नीं करी। रूपा रा कठोरदांण सूं आधो लाडू तोड़नै झट मूंडा में घरियौ।

(ख) (६) रत्ती माया रौ धणी हुवतां थकां ई उण सेठ रै मोठ-मरजाद नैड़ी आगी ई नी ही।

(ग) (७) वो आंखिया मींचनै इण बात रौ सोच-विचार करतो ई हो कै राजाजी रो असवार अंतावळ करतो बोलियौ—संता अबै कांई हुकम फरमावो।

(८) मिनख जीवन में ई सगळा धरम-करम, भगती अर ग्यान है। जीवणै-जीवणै में फरक हुय सकै, आ बात म्है मानूं।

(९) थारो करम-धरम था रै साथै। म्हैं तौ ठीकरी माथै लिखनै सही कर दूं ला।

(घ) (१०) म्हारै पूजा-पाठ मे किणी तरह री रांफी नी पड़णी चाहीजै। नवलखै हार री बात अबै कालै तड़कै ई व्हैला।

(११) सासू गाळी री नांव सुणियौ'र बोली ई—मर बळजाणी! हित्यारी पापण! थारा हाथ री रोटी-पांणी छोडणो पडसी।

(१२) रेसमी पोसाक माथै लागियोड़ो जरी-गोटो ई अंधारै मे पळापळ करतो हो।

३.४.५. शब्दगत रूप रचना की दृष्टि से समस्त यौगिक संज्ञाओं की तीन कोटिया हो सकती है :—

(क) ऐसी यौगिक संज्ञाएं जिनके द्वितीय घटक के साथ शब्दगत रूप प्रत्ययों का योग होता है।

(ख) ऐसी यौगिक संज्ञाएं जिनके दोनों घटकों के साथ शब्दगत रूप प्रत्ययों का योग होता है।

उपरिलिखित रूपावलियों के अतिरिक्त अनेक यौगिक संज्ञाओं के रूप भाषा में रूढ है। इनके नीचे दिये हुए रूपों के अतिरिक्त रूप नहीं होते।

खोसा-लूटो	राजा-रंक	धणी-धोरी
ताळा-कूंचो	चाल-चलगत	धन-माल
दया-मया	जमी-जायदाद	धन-संपत
दान-पुन्न	छाण-बीण	निसाण-पांती
गरब-गुमान	धरम-करम	नाम-नामूंन

कई यौगिक संज्ञाएं मूल में बहुवचन में ही होती है, यथा हीरा-जवाहरात, हीरा-जवाहराता; खिखरा-ठट्ठा, खिखरा-ठट्ठा इत्यादि।

३.४.६. सहिति अथवा प्रमाणाधिक्य वाचक बहुवचन की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है—(१३-१५)।

(१३) उठै धांन री काई तोटौ—ढिगलां धान पड़ियौ।

(१४) उणरै उठै अनाप-सनाप गायां-भैंस्यां, इण सारू वो मणां दूध सैर वेचण जावै।

(१५) थोड़ा दिनां में ई पीजारो बरसां बूढ़ो हुयग्यो।

३.४.७. अनेक संज्ञाएं सामान्यतया बहुवचन मे ही अवस्थित होती है। इनके कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१६) आ बात सुणनै सगळा जिनावर उण खिरगोस रा मौर थेपड़िया।

(१७) सासरै री उमायौ घर सूं बहीर हुयौ अर मारग में ई मौत सूं भेटका हुय गया।

(१८) दूजोड़ो भाई राजकंवरी नै तलण री बात बताई तो राजाजी रा होस गुम हुय ग्या।

(१९) म्हारी निजरां श्री सगळी ई नजारौ जोयौ।

(२०) दोनूं हाथां में भाणां चढ़ी चरी लेय वा वा रै पाखती आई।

(२१) उणरी खीभ तौ जांणै आकासां चढ़गी। गोफणवाळी रै सांम्ही तौ उणरी माथौ ई ऊंचौ नी हुयौ।

(२२) भूंडण सासां भरती बोली—आ बात सुणनै तौ म्हनै थारी अकल री ई पीदो उघड़तो दीसै।

(२३) माळण नै आदेस फरमाय सेजां फूल मंगावण री महर करावौ, म्हैं जिण काम में हाथ घालूं वो तो पार पड़ै इज।

३.४.८. संज्ञाओं की तिर्यक बहुवचन मे आदरार्थक एवं संज्ञा - समुद्बोधक अवस्थिति भी होती है। इन अवस्थितियों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(२४) म्हैं तौ पछै सगळी लाज-सरम नै आगी न्हाखनै पांवणां रै गाभा माथै हाथ पेरिया।

(२५) पण अणछक उणरै काना अेक कुम्हारी रै मूंडै एक अजब ई बात रौ सुरपुर सुणीजी—देखो अै मावड़ियां, आ सेठां री हवेली कैड़ी पटकी पड़ी।

(२६) खतोड़ मे आवै जको ई पैलपोत आ इज बात पूछै कै कारीगरां काई करो।

३.५. आ. राजस्थानी में संज्ञा$_1$ + का + संज्ञा$_2$ (= स$_2$ का स$_2$) रचनाओ की पर्याप्त जटिल और समुन्नत व्यवस्था है जिसका इस भाषा की अभिव्यंजक संरचना से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। इन रचनाओं में अवस्थित स$_2$–घटक अपने सहवर्ती स$_2$–घटकों की अर्थ-तात्त्विक वृत्तियों का निर्धारण करते हैं। यथा वाक्य संख्या (२७, २८) में

(२७) दुख अर विखै रो अधारो नैडो ई नी फरूकेला।

(२८) माया रै अधारै मे भटकै, परमात्मा रै अखंड उजास मे अलख उडाणा भर।

अवस्थित रचनाएं दुख अर विखै रो अंधारो तथा माया रो अंधारो ऐसी रचनाएं हैं जिनमें स$_1$–घटको दुख अर विखो तथा माया दोनो मे अंधारो नामक तत्त्व अथवा गुण के अन्तर्निहित होने की संकल्पना विद्यमान है। यहाँ दुख अर विखो तथा माया पर अंधारो का मात्र वक्ता दृष्टिकोण से अध्यारोपण ही न होकर अर्थ-तात्त्विक दृष्टि से इन स$_1$–घटकों की अन्धकारमयता (बौद्धिक कुण्ठाजन्य मानसिक स्थिति) का उद्घाटन किया गया है जो कि एक व्यावहारिक एवं सामाजिक सत्य है। इन वाक्यों मे आलंकारिकता के साथ-साथ अंधारो स$_2$–घटक द्वारा दुख अर विखो तथा माया नामक संकल्पनाओं का जो आविर्भूत मूर्तीकरण किया गया है, वह व्यावहारिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण तो है ही, किन्तु इसके अतिरिक्त राजस्थानी भाषा-भाषी समाज की रीति-नीतियो और मान्यताओं का निर्धारक साधन भी।

व्याकरणिक दृष्टि से दोनो वाक्यों मे फरूकेला (२७) और भटकै (२८) क्रियापदो का चयन भी इनमे अवस्थित स$_2$–घटकों से सम्बन्धित है।

स$_1$ का स$_2$ रचनाओ का, उनमे अवस्थित स$_2$–घटकों के प्रकार्यों के आधार पर, निम्न प्रकार से कोटि-विभाजन किया जा सकता है :

(क) गुणबोधक स$_1$ का स$_2$ रचनाए
(ख) बहुलताबोधक स$_1$ का स$_2$ रचनाएं
(ग) स्वल्पताबोधक स$_1$ का स$_2$ रचनाएं

(घ) सीमाबोधक $स_1$ का $स_2$ रचनाएं
(ङ) भार निर्धारक $स_1$ का $स_2$ रचनाएं
(च) विशिष्टिकृत $स_1$ का $स_2$ रचनाएं

३.५.१. गुणबोधक रचनाओं की वाक्यों में अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे है।

(२९) संवट भूंड री ठीकरी कवराणी सा माथै ई भावणी ही।

(३०) वीनणी मुळक री धार रै सागै मोसा री डंक मारती बोली—थैं कीं जाणी ई हो ?

(३१) नित हिवड़ै में बिछोव री लाय लागै भर उणनै आखियां रै पांणी सूं नित बुझाणी पड़ै।

(३२) कवरां रै भदीठ हुयां राजा डग-डग हंसियो। खिलरा करतो कैवण लागो—मीठी बोली री चासणी सूं मारा खोटा करम खरा नी हुय सकै।

(३३) राजकंवरी पैला तौ थोड़ी मुळकी, पण तुरत मुळक नै रीस रै ढकणा सूं ढाक दी।

(३४) गिरस्ती री भुरदियो गणण-मणण घूमण लागो।

३.५.२. बहुलताबोधक रचनाओं की वाक्यों में अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे है।

(३५) वेटा री उजियारी देख-देख वा बिखै रै भाखरां री ई भार ऊंचाय सकै :

(३६) मंसोबां रा भाखर गुड़कावता-गुड़कावता वे संवट सामलै घड़ै माथै पूगा ई।

(३७) प्रसमांन जोगी वारै आंसुवां री लड़ियां देख डग-डग हसण ढूकै जको ढबै ई नी।

(३८) डोल सूं सौरम री भभरोळां फूटै।

(३९) लोगां कंयो तौ म्हनै भरोसो नी हुयो। निजरां सूं पतवाणियां पछै हंसो री तूंताड़ियां मतै ई छूटगी।

(४०) तूटियोड़ी टांगां सूं लोई रा रेला बहण लागा।

३.५.३. स्वल्पता-बोधक रचनाओं की वाक्यों में अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित है।

(४१) दुख भर बिखै री तो पाछो सपनो ई नी भायो।

(४२) उण दिन रै बिजोग पछै की खायो-पीयो नीं। आखियां में नींद री कस ई नी भायो।

(४३) क्रमक्रम करतां धरती माथै पग दियो पण कठै ई धानणै री तिराण ई निगै नी ग्राई।

३.५.४. सीमा-बोधक रचनाग्रों की वाक्यों में ग्रवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(४४) लो पेट रै ग्रयाग खाडा नै भरण सारू वा मौत सूं ई बता कळाप करिया जएं बुढ़ापै री माठ लग पूगो।

(४५) रीस रो पींदो फाटता ई उणरै होठा खिल-खिल हंसी नाचण ढूकी।

(४६) वा री वातां सुणनै वेटो री रीस रो तळो माय ग्यो हो।

३.५.५. माप-निर्धारक रचनाग्रों की वाक्यों में ग्रवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखत है।

(४७) राजकंवरी ग्रपूठी ऊभी ही। कडियां रळकंता सोना रा केस जाणै सूरज री किरणां री झूमको बिखरियोड़ो।

(४८) हीरा-मोती, लाला ग्रर गुलाल रौ ढिग हुय ग्यो।

(४९) बेटी रै ब्याह मेर ई उजास रौ पुंज दमकतौ हो।

(५०) सुणी के ग्रापरी हवेली मे तो माया रा भंडार भरिया।

(५१) बतूळिया रा गोट माथै गोट उठावती, भाटां रा गिड़ा ठोकरा सूं उछाळतौ दैत दो घड़ी दिन चढिया ग्रापरी हवेली तो ग्रायो इज।

(५२) सोगरा मे उदई रा ढेपा थेपड़ीज ग्या हा।

इसी कोटि की कतिपय ग्रन्य रचनाएं है—चिड़ियां रो झूळ, गायां रो छांग, सिघणियां रौ झुंड, पिणियारियां रो झूलरो, हाडां रो जान, ढाबरां रो टोळ, लुगायां रौ मेळो इत्यादि।

३.५.६. विशिष्टिकृत मूर्त्तता-बोधक रचनाग्रों के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

पीड़ रौ सळावो	सुख रा दिन	मरदां रो जात
हील रो उठाव	ईसका रा झपीड़	सिंघा रो जात
हरख री फूंदिया	पवन रा लहरका	
ग्राणद रो ज्वार	मिनख रो खोळियो	
रूप री झाळ	लुगाई रो जमारो	
दरद रो चटीड़ो	मसांण रो ठायो	

३.६. ग्रामेड़ित संज्ञा-ग्रनुक्रमो के भाषा मे विविध प्रकार्य हैं। इस प्रकरण में।सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

(क) निम्नलिखित उदाहरणों में आमेड़ित संज्ञा अनुक्रमों का अर्थ है 'प्रत्येक अथवा एक-एक करके सब" (५३, ५४)।

(५३) झट अपळ-गपळ हुकम फरमाय दियो के बाजरो री बूंटी-बूंटी लूंद न्हाको।

(५४) पण आज रै दिन भाग फाटां पैली-पैली जद उणरी सासू घर-घर मे जायनै सोगरां वाळी बात बताई तौ लोग सुणनै दंगना हुय ग्या।

(ख) निम्न उदाहरण में आमेड़ित संज्ञा अनुक्रम का अर्थ है "बार-बार" (५५)।

(५५) महात्मा घड़ी-घड़ी कैवतो—भला मिनखां! म्हारै हाथ में की सिद्धाई कोनी।

(ग) निम्न उदाहरणों में अवस्थित अनुक्रमों में प्रत्येकता अथवा समस्तता के साथ-साथ तीव्रता की ध्वनि भी विद्यमान है (५६, ५७)।

(५६) म्हैं अैड़ो काई कसूर करियो। वा! म्हारी बोटी-बोटी छून न्हांखो पण म्हारै गुमान री रिछ्या करो।

(५७) बादरा री फींबी-फींबी बिखरगी।

(घ) निम्न उदाहरणों में कथित क्रिया-व्यापार की मात्र आवृत्ति का उल्लेख है (५८, ५९)।

(५८) कबूतरा हरख सूं गुटरगूं-गुटरगूं करण लागा।

(५९) सांप सळपट-सळपट करतो पाछो पींपळी माथै चढ़ण लागो के नोळियो फेर पूंछ पकड़नै नीचो तांणियो।

(ङ) निम्न उदाहरणों में आमेड़ित संज्ञा अनुक्रम एक ही संज्ञा की आवृत्ति से उनके वाच्यार्थ में भेद की ध्वनि वर्तमान है (६०, ६१)।

(६०) राजा-राणी रै हरख रो पार नी। हिवड़ै रै हरख-हरख रो संचो न्यारो हुया करै। कोई हार देय राजी व्है तौ कोई हार पाय राजी व्है। जित्ता हिवड़ा उत्ता ई हरख।

(६१) हाल तौ घणा बरसा तांई औ ठागो चलावणो है। हाल अैड़ो लांबो-चौड़ो सुख ई कांई पायो। फगत धूणी-धूणी तापी है।

(च) निम्न वाक्यों में आमेड़ित संज्ञा अनुक्रमों द्वारा परिमाणाधिक्य अथवा अमूल्य अथवा बाहुल्य ध्वनित हो रहा है (६२, ६३)।

(६२) राजकंवर अरड़ां-अरड़ां रोया। राजा री आंखिया में ई आसूं आय ग्या।

(६३) इण खास दीवाण पद रै लारै घोबा-धोबा धूड़ ।

(छ) निम्नलिखित री-अन्तर्निविष्ट अनुक्रमों में अप्रत्याशितता के साथ-साथ वाच्य की सम्पूर्णता का उल्लेख है (६४, ६५) ।

(६४) देत खेजड़ो-री-खेजड़ो उठाय लायो ।

(६५) तीन दिनां में वांणी री वांणी सिरसूं भेळो नी करै तो मायो वाढ़ण री आदेस ।

(६६) वा बोली-बोली सगळी गैणो-गांठो तीब-री-तीब उतार दियो ।

(ज) माथै-अन्तर्निविष्ट अनुक्रमों में चरम तीव्रण का अर्थ ध्वनित होता है (६७, ६८) ।

(६७) डाका री घड़िग माथै घड़िग उड़ण लागी ।

(६८) काळ माथै काळ पड़ण लागा । कुदरत ई मिनखा री वस्ती री वासी छोड उण जगळ में नेगम डेरा जमाय लिया ।

(झ) ई—अन्तर्निविष्ट अनुक्रमों में संज्ञाओं के वाच्य के परिमाणाधिक्य चरमावस्था के साथ-साथ इतर किसी वस्तु अविद्यमानता का बोध होता है (६९,७०) ।

(६९) च्यारूं खानी गुळो-व्रणो पांणी । पांणी ई पांणी । इण पांणी री तौ नी कोई थाग अर नी कोई पार ।

(७०) पंयाळ लोक री तो माया ई अनूठी । सोनै-रूपै रा रूंख । हीरा-मोतियां रा झूमका । धरती माथै काकरा री ठौड़ मिणियां ई मिणियां ।

(ञ) निषेध-निपात के साथ पर्याय-पदों की आवृत्ति के उदाहरण निम्नलिखित हैं (७१, ७२) ।

(७१) नीं कोई भौ नीं कोई डर । आपरी नींद सूवता और आपरी नींद ऊठता ।

(७२) चिड़ो अर चिड़ै रै आणंद री कोई पार 'न कोई छेह ।

(ट) आमेड़ित संज्ञा अनुक्रमों के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं (७३, ७६) ।

(७३) रात-रात म्हारै पेट में सुणी बात समा रेवै तो दिनूगै नै आफर ढोल हुय जाऊं ।

(७४) सोनल मंढो पांणी-पांणी कांन्ह्ड़ै नै लेय मांय बड़गो ।

(७५) स्याळ री जात—छंटां मांयलो छंट ।

(७६) अं बैना सूं बैना इण राज बारै निकळै जको वात करो, पछै म्हारै सूं मला विचारण री मन में लावो, पैला म्हैं अेक सबद ई नी सुणणो चावूं ।

४. सर्वनाम

४.१. आधुनिक राजस्थानी सर्वनामों को निम्नलिखित वर्गों में परिगणित किया जा सकता है।

४.१.१. पुरुषवाचक—

			एक वचन			बहु वचन	
उत्तम पुरुष			म्हैं	"मैं"	अभिनिहित	आपां	"हम"
					समष्टि	म्हे	"हम"
मध्यम पुरुष	सामान्य		थूं	"तू"		थें	"तुम, आप"
	आदरार्थ		—			आप	
अन्य पुरुष	आसन्न	पुल्लिंग	औ	"यह"		अै	"ये"
		स्त्रीलिंग	आ	"यह"			
	व्यवहित	पुल्लिंग	वो	"वह"		वे	"वे"
		स्त्रीलिंग	वा	"वह"			

उत्तम पुरुष एक वचन म्हैं का वैकल्पिक रूप हूं भी है।

पुरुष वाचक सर्वनामों के तिर्यक रूप निम्न सारणी में सूचित किये जा रहे हैं।

पुरुष वाचक सर्वनाम का ऋजु रूप	बद्धतिर्यक रूप — अवस्थिति के परिसर: कर्त्ता स्थानीय	— नै	— रो, — णो	अन्य परसर्ग	स्वतन्त्र तिर्यक रूप
म्हे	ऋजु रूप के समान		म्हनै म्हारो	—	—
आपै	,,	आपानै	आपारो~ आपाणो	—	आंपां
म्हे	,,	म्हानै	म्हारो	—	म्हां
थूं	,,	थनै	थारो	—	—
थें	,,	थानै	थारो-थाणो	—	थां
आप	,,	आपनै	आपरो	—	आप
ओ, आ	इण	इणनै~इनै	इणरो	—	इण
अै	इणा	इणानै~इयानै ~आनै	इणारो~इयारो ~आरो	—	इणां~आं
वो, वा	उण	उणनै~उनै उवैनै	उणरो	—	उण
वे	उणा	उणानै~उवानै ~वानै	उणारो~उवारो वारो	—	उणां~वां

४.१.२. निजवाचक

आप, आपै, आपोआप, सुतै, मतै, खुद, खुदोखुद, साम्रत, सैदरूप

उपरिलिखित निजवाचक सर्वनामों के अतिरिक्त विशेषण स्थानीय परिसरों में समस्त पुरुषवाचक सर्वनामों के निजवाचक रूप उनके सम्बन्धवाचक रूपों के समान ही होते हैं। ये समस्त रूप नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम रूप	उसका सम्बन्ध वाचक अथवा विशेषण स्थानीय निजवाचक रूप
म्हैं	म्हारौ
आंपै	आंपांरौ आपांणौ
म्हे	म्हांरौ
थूं	थारौ
थें	थांरौ
आप	आपरौ
औ / आ	इणरौ
अै	इणांरौ
वो / वा	उणरौ
वे	उणांरौ

विकल्प से समस्त अन्य पुरुष सर्वनामों का विशेषण स्थानीय निजवाचक रूप आपरौ भी हो सकता।

आदरार्थक विशेषण स्थानीय निजवाचक रावलौ की भी भाषा में अवस्थिति होती है।

सांप्रत "व्यक्तिगत रूप से, प्रत्यक्षतः, स्वयं" को भी अन्य निजवाचक सर्वनामों की कोटि में माना जा सकता है। इसकी वाक्यों में अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं (१, २)।

(१) म्हैं सांप्रत म्हारी निजरा स्यालिया नै थे मे जावता देखियो।

(२) रांणी रै मैल सूं साप्रत देखता नवलखो हार उचकाय लेजै।

सुतै "स्वतः" तथा मतै "स्वतः" की स्वतन्त्र रूप से अवस्थिति के अतिरिक्त विशेषण स्थानीय निजवाचक रूपों के साथ भी आसत्ति होती है। इस प्रकार से निर्मित समस्त रूप नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

म्हैं म्हारै	[सुतै / मतै	श्रो] श्रा]	इणरै / श्रापरै]	[सुतै / मतै
श्रांपै श्रांपारै	[सुतै / मतै	श्रै	[इणारै / श्रापरै	[सुतै / मतै
म्हे म्हारै	[सुतै / मतै	वो] वा]	उणरै / श्रापरै]	[सुतै / मतै
थूं थारै	[सुतै / मतै			
थें थारै	[सुतै / मतै	वे	[उणारै / श्रापरै	[सुतै / मतै
श्राप श्रापरै	[सुतै / मतै			

वितरक निजवाचकों की श्रवस्थिति विशेषण स्थानीय निजवाचक रूपों की श्रावृत्ति से होती है, यथा म्हारो-म्हारो, थारो-थारो। विकल्प से श्राप-श्राप श्रथवा श्रापोश्राप की श्रवस्थिति भी होती है (३, ४)।

(३) श्रबै थै सगळा श्रापोश्राप रै घरै जावो।

(४) गरमी री छुट्टी हुई, श्रध्यापक श्राप-श्रापरै घरै गया।

४.१.३. श्रन्योन्याश्रयवाचक

माहोमाह, श्रेक-दूजो, श्रापस

इन तीनों सर्वनामों की वाक्यों में श्रवस्थिति के उदाहरण निम्नलिखित है।

(५) एक हुती चिड़ो नै एक हुती ऊंदरी। वे माहोमाह धरमेला कंरिया।

(६) सगला श्रेक-दूजे रै सुख में त्यार श्रर श्रेक-दूजे रै दुख में त्यार। नित रात रा दरबार जुड़तो।

(७) श्रापा तो श्रा'र खराब हुया। बालका रै श्रापस री बातां चलतो श्रावै है।

४.१.४. सम्बन्धवाचक

जको, जिण

जको की रूपावली निम्नलिखित है।

		एकवचन	बहुवचन
पुल्लिंग	ऋजु	जको	जका
	तिर्यक	जका जकै	जका
स्त्रीलिंग	ऋजु	जको	—
	तिर्यक	जको	—

जिण मूल में ही तिर्यक एकवचन रूप है। इसका तिर्यक बहुवचन जिणां होता है। जिणां का वैकल्पिक रूप ज्यां भी है।

४.१.५. सहसम्बन्ध वाचक
सो

सो का तिर्यक रूप तिण है। तिण का बहुवचन रूप तिणां है। तिणां का वैकल्पिक रूप त्यां भी भाषा में उपलब्ध है।

४.१.६. अन्यवाचक
दूजो, बीजो

दूजो "अन्य, कोई और" की अवस्थिति का उदाहरण निम्नलिखित है।

(८) अेक निजर पतळी तो दूजी निजर जाडी, अेक पलक ऊनी तो दूजी पलक ठाडी। खुद रै मन री खुद नै ई जाच नीं पड़ै तो दूजै नै पड़ण री तो मारग ई कठै।

४.१.७. अनिश्चयवाचक
कोई, केई, कीं, निरी, अेक जणो

कोई एकवचन सर्वनाम है। इसका तिर्यक रूप किणी है।

केई मूल में बहुवचन सर्वनाम है। इसका तिर्यक बहुवचन रूप किणी है। कीं "कुछ" अविकार्य सर्वनाम है।

निरी "अनेक (स्त्रीलिंग)" किन्ही परिसरों में केई के स्थान पर अवस्थित होता है (९)।

(९) रांणीजी निरी वार सगळा नै सावळ घर में समझाया-बुझाया, तो ई बारो भूत नी उतरियो।

अेक जणो "कोई व्यक्ति" की अवस्थिति का उदाहरण निम्नलिखित है (१०)।

(१०) थारी वड भाग कै थारै दरद नै अेक जणो तो समझै है।

अनिश्चय वाचक कोई तथा केई के साथ को, सो तथा का, सा की क्रमशः आसति से कोई को, कोई सो, केई का, केई सा रूप निर्मित होते हैं (११, १२)।

(११) म्हनै आज मेळै में आंपा रै गाव रो कोई को आदमी इज निगै आयो।

(१२) इसरा वाक्य म्है देख लीना हूं। वा माय सूं केई का गळत है अर केई का सही है।

४.१.८. प्रश्नवाचक

कुण~किण, कँणी, काई

कुण~किण "कौन" की अवस्थिति ऋजु एकवचन, तिर्यक एकवचन तथा ऋजु बहुवचन मे होती है। इनका तिर्यक बहुवचन रूप किणां है।

कँणी "किसका" अनियमित सर्वनाम है। भाषा मे इसकी अवस्थिति अधिक नही होती (१३)।

(१३) ये अेक लाठी छाक लेयनै हाजरिया नै पूछियौ—श्रौ कँणी हाको है रे? परभात री वेळा अँ जँ जँ करता कुण कान खावै?

काई "क्या" अविकार्य सर्वनाम है। निम्न वाक्य मे, जहा सामान्यत कौ की अवस्थिति शक्य है कांई का प्रयोग हुआ है।

(१४) वो काई ई काढ'न देवणवाळो नी।

४.१ ९. समूहवाचक

सगळो सँग, सै, सब, सरब

सगळो "सब, सब कोई" का स्त्रीलिंग रूप सगळी है। इसकी रूपावली निम्न-लिखित है

	एकवचन		बहुवचन	
	ऋजु	तिर्यक	ऋजु	तिर्यक
सगळो	सगळो	सगळै~सगळा	सगळा	सगळा
सगळी	सगळी	सगळी	—	—

सगळो एकवचन मे संहिति वाचक संज्ञाओ का समुद्देशन करता है और बहुवचन में संख्येय संज्ञाओ का।

सँग "समस्त, सब" का तिर्यक बहुवचन सैंगां होता है। अन्य रूपों में कोई विकार नही होता।

सै सँग का वैकल्पिक रूप है और अविकार्य है। सामान्यतः इसकी अवस्थिति अभिव्यंजक परिसरो मे ही होती है (१५)।

(१५) दुनिया मे फगत दो ई चीजा रूपाळी अेक कुदरत नै दूजी नार। बाकी सै पंपाळ।

सब की रूपावली की रचना सँग के समान ही होती है। इसकी अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं (१६, १७)।

(१६) बेटो बाप रै दाई चतर हो। सब समझग्यो।

(१७) पछै दंत जाणं, आ प्रजा जाणं अर राजा जी जाणें। सबा नै आप-आप रो जीव वालो लागै।

सरव की अवस्थिति केवल संख्येय संज्ञाओ के समुद्देशन मे होती है।

४.१.१०. निर्देशितावाचक

सै, सागै

सै "उसी, वही" तथा सागै "वही, (पहले) जैसा" की वाक्यों में अवस्थिति के उदाहरण निम्नलिखित है (१८, १९)।

(१८) चांदणी चवदस रै सै दिन उण रो जलम हुयो, पछै वंस वयू नी उजागर व्हे।

(१९) इत्ती वार भलो करियां ई राजा जी रो तो वो रो वो सागै आदेस। तीन दिन में कौल पूरो नी हुयो तो घाणी त्यार।

४.१.११. व्याप्तिवाचक

हर, हरेक, दीठ

हर "प्रत्येक" का अर्थ तो स्पष्ट ही है। किन्तु हरेक के सामान्य अर्थ "प्रत्येक" के अतिरिक्त एक विशिष्ट अर्थ है "कोई भी" (२०)।

(२०) म्हारो नांव लेयनै उणरै घरै हरेक नै कैय दीजै। थारो काम वण जासी।

दीठ का मुख्यार्थ है "दृष्टि।" किन्तु निम्न वाक्य मे इसका अर्थ है "प्रति, हर" इत्यादि।

(२१) पिणियारी दीठ राज री तरफ सूं पीतळ रो अेक-अेक भांडो दिरवाय दियो।

४.१.१२. परिमाणवाचक

इतरो~इत्तो	"इतना"
उतरो~उत्तो	"उतना"
कितरो~कित्तो	"कितना"
जितरो~जित्तो	"जितना"
तितरो~तित्तो	"उतना ही"

इन मूल सर्वनामो के अतिरिक्त इनसे कतिपय सर्वनाम संयोजन भी निर्मित होते हैं। इतरो-उतरो, कितरो-जितरो इत्यादि।

समस्त परिमाण वाचक सर्वनामो की रूपावली की रचना विकार्य विशेषणों के समान होती है।

४.१ १३. गुणवाचक

अैड़ो "ऐसा" ऊड़ो, वैड़ो "वैसा"
कैड़ो "कैसा"
जैड़ो "जैसा" तैड़ो "तैसा"

इनके अतिरिक्त किसो~कियो 'कौन सा, कैसा,' कियोड़ो (कियो का प्रभिव्यंजक रूप) तथा जिसो~जियो "जौन सा, जैसा" भी इसी कोटि में परिगणित किये जा सकते हैं।

उपरिलिखित गुणवाचक सर्वनामो के निम्नलिखित संयोजन भी भाषा में प्रचलित हैं :

अैड़ो—ऊडो
अैडो—वैड़ो
जैड़ो—तैड़ो
जैड़ो—कैड़ो

समस्त गुणवाचक सर्वनामों की शब्दगत रूपावली की रचना विकार्य विशेषणो के समान ही होती है।

४.१.१४. प्रकारता बोधक

इतरै~इत्तै
उतरै~उत्तै
कितरै~कित्तै
जितरै~जित्तै
तितरै~तित्तै

समस्त प्रकारता बोधक सर्वनाम वस्तुत: प्रमाणवाचक सर्वनामो के एकवचन तिर्यक रूप हैं।

४.१.१५. रीतिवाचक
इउं~यूं, ईं, भ्यूं, क्यूं ज्यूं, त्यूं

इन सर्वनामो के कतिपय संयोजन नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

ज्यूं—त्यूं
क्यूं—त्यूं
ज्यूं—त्यूं

कींकर "कैसे" तथा कींकर "क्योंकर" भी इसी कोटि में परिगणित किये जा सकते हैं।

४.१.१६. स्थानवाचक

(क) अठै "यहां, इस स्थान पर"
उठै "वहां, उस स्थान पर"
जठै "जहां, जिस स्थान पर"
तठै "वहां, उस स्थान पर"
कठै "कहां, किस स्थान पर"

४.१.१७ दिशावाचक

(ख) अठी "इधर"
उठी "उधर"
जठी "जिधर"
तठी "तिधर"
कठी "किधर"

४.१.१८. इतर दिशा अथवा स्थानवाचक सर्वनाम रूप नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

(ग) अठीनै
उठीनै
जठीनै
तठीनै
कठीनै

(घ) अठै ई "यहा ही"
उठै ई "वहा ही"
जठै ई "जहां ही"
तठै ई "तहा ही"
कठै ई "कहा ही"

(ङ) अठा
उठा
उठा~जा
तठा~ता
कठा

(च) अठैकर, उठैकर, जठैकर, तठैकर, कठैकर,
अठीकर, उठीकर, जठीकर, तठीकर, कठीकर,
अठाकर, उठाकर, जठाकर, तठाकर, कठाकर,

उपरिलिखित स्थानवाचक सर्वनामो की परस्पर आसत्ति से निम्नलिखित संयोजनों की रचना होती है।

(छ) अठै–उठै, अठै–जठै, जठै–तठै, जठै–कठै,
अठी–उठी, अठी–जठी, जठी–तठी, जठी–कठी,
अठा–उठा, अठा–जठा, जठा–तठा, जठा–कठा,
अठै ई–उठै ई, अठै ई–जठै ई, जठै ई–तठै ई, जठै ई–कठै ई,
अठैकर–उठैकर, अठैकर–जठैकर, जठैकर–तठैकर, जठैकर–कठैकर,

अठीकर–उठीकर, अठीकर–जठीकर, जठीकर–तठीकर, जठीकर–कठीकर
अठीनै–उठीनै, अठीनै–जठीनै, जठीनै–तठीनै, जठीनै–कठीनै ।

आमेड़ित स्थान वाचक सर्वनामों की रचना रूप संख्या (क–ङ) की आवृत्ति से होती है, तथा अठै–अठै, अठो–अठो, अठीनै–अठीनै, अठै ई–अठै ई, अठा–अठा इत्यादि ।

रौ अन्तर्निविष्ट आमेड़ित सर्वनामों की रचना आमेड़ित रूपों में रौके अन्तर्निवेष से होती है, यथा अठै रौ अठै, उठै रौ उठै इत्यादि । इस प्रकार न अन्तर्निविष्ट स्थान-वाचको की भी रचना होती है, यथा अठै न अठै, उठै न उठै इत्यादि ।

४.१.१९ कालवाचक

(क) हमै, जद, तद, कद

(ख) अबै, जदै, तदै, कदै

(ग) हमार, हमारूं, हमकै, हमको, हमकी, हमलकै, हमकलै, हम कोई

(घ) अवार, अवारूं, अबकै, अबको, अबकी, अबलकै, अबकलै, अब कोई

(ङ) हणै, हणै ई
जणै, जणै ई
कणै, कणै ई

(च) जणैकलो, कणै कलो

(छ) जरा, करा

(ज) अबै ई, जदै ई, तदै ई, कदै ई

(झ) अजै, अजै ई

कालवाचक सर्वनामो के अन्य संयोजन निम्नलिखित है ।

कदै ई कदै
जद इज तो
जठै कठै ई
कदै ई न कदै ई
अवारूं रौ अवारूं
कदाक कणै ई

४. २. अन्य प्रकार के सार्वनामिक संयोजन नीचे सूचित किये जा रहे हैं ।

की–न–काई	कुण–न–कुण
केई–केई	कांई–न–कांई

जिण–तिण
किणी अेक
जिणं–जिणं
कोई–न–कोई
की–न–की

प्रकरण सख्या (४ १) में उल्लिखित आदरवाचक मध्यम पुरुष सर्वनामों के अतिरिक्त राज तथा हुकम की भी भाषा मे अवस्थिति होती है (२२, २३)।

(२२) म्हे म्हारै हाथ सूं बारणौ उघाड़ूं, राज वेगा सिधावै जकी बात करै ।

(२३) आप तो हुकम पोढिया हा, पण भखावटै-भखावटै ई लोग तौ दरसणां वास्तै अडवडिया जकौ मेळौ मच ग्यौ ।

जिण, तिण, किण से जिणो, तिणो, किणो रूप भी निर्मित होते हैं ।



५. विशेषण

५.१. प्रा. राजस्थानी में विशेषण कोई शब्दगत रूप वर्ग न होकर वाक्य विन्यास के आधार पर निर्धारित संवर्ग है। इस सवर्ग की निम्नलिखित मुख्य कोटियाँ हैं।

(क) गुणवाचक विशेषण
(ख) संख्यावाचक विशेषण
(ग) निर्धारक विशेषण
(घ) सार्वनामिक विशेषण

५.१.१. गुणवाचक विशेषणों के द्वारा अपने विशेष्यो के गुण-धर्मों का ही कथन नहीं होता क्योंकि कोश की दृष्टि से पारिभाषिक आधार पर प्रत्येक सज्ञा आदि विशेष्य शब्द स्वतन्त्र रूप से अपने पारिभाषित गुण-धर्मों का पुंज होता है। यथा कौआ नामक पक्षि को काला कौआ कहा जाय तो काला विशेषण द्वारा समधिकता दोष उत्पन्न हो जायगा क्योंकि कौआ नामक पक्षि का काला होना एक सर्वविदित तथ्य है, और कौआ संज्ञा की कोश मे दी गई परिभाषा मे उसके सामान्य रूप से काला होने का उल्लेख भी रहता है। अतः यह कहना अधिक युक्ति संगत है कि गुणवाचक विशेषणो का मुख्य प्रकार्य है स्ववाचित गुण-धर्मों को अपने विशेष्यों पर अध्यारोप तथा तज्जनित वैशिष्ट्य के उल्लेख द्वारा वाक्य मे वाचित विशेष्य, व्यक्ति अथवा वस्तु आदि के प्रति वक्ता के दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति। निम्नलिखित उदाहरण से इस तत्त्व को स्पष्ट किया जा सकता है (१)।

(१) हेटै उतर वा खेत मे सूअर अर भाचरियां नै हेरण लागी। इण मोल्या कवर सूं आगे बात करण रो मन नही व्हियो। उणरी आख्या तो धावा रिमता सूअर में अटकियोड़ी ही।

उक्त वाक्य मे वक्ता ने किसी राजकंवर को उसके घृणित कर्म के कारण मोल्या "पुरुषार्थहीन" कहकर उसके वैशिष्ट्य के उद्घाटन के साथ-साथ उसके प्रति अपने दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति भी की है। विशेष्य के गुण-धर्म के कथन के साथ वक्ता के विशेष्य के प्रति दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति भी विशेषणो का महत्त्वपूर्ण अर्थ-तात्त्विक प्रकार्य है।

गुणवाचक विशेषणों का अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकार्य यह भी है कि विरुद्धार्थक गुणवाचक विशेषण युग्मो के वास्तिवाचक घटक अपने अभिहित गुण-धर्मों के अनस्तित्व अथवा अभाव

के सूचक न होकर, नास्तिवाचकता के माध्यम से गुण-धर्मों के अस्तित्व का अभिधान करते हैं। निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित नास्तिवाचक विशेषणों की अवस्थिति से इस तथ्य को लक्षित किया जा सकता है (२-६)।

(२) उणरैं अदीठ हुया कंवर रैं जीव में जीव आयौ।

(३) बिणास रौ आको आवै जद स् वी बातां ई ऊंधी वण जावै।

(४) इण मंगतो री औ बेजोड़ रूप तो सगळी राणियां अर सगळी दासियां रैं रूप माथै पाणी फेर दियौ।

(५) खेत री रखवाळण रांणी बणतां ई अबळा हुयगी।

(६) सूरज रौ उजास अनाप। चंदरमा री चांणनी अनाप। बगत परवांण रितुवां रा गेड़ा हूवता।

५.१.२. आ. राजस्थानी के सामासिक गुणवाचक विशेषणों को, उनमें अवस्थित अंगों के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है:—

(क) गुवि$_1$–गुवि$_2$ सामासिक विशेषण जिनके दोनों अंगों से सहगामी गुण-धर्मों का बोध होता है, यथा भूखौ-तिरसौ, फोरौ-पतळौ, फूठरौ-फररौ, गैलौ-गूंगौ इत्यादि।

(ख) विरुद्धार्थक गुवि$_1$–गुवि$_2$ -सामासिक विशेषण, यथा अलगौ-नैड़ौ, गोरौ-काळौ, खारौ-मीठौ, ढाडौ-ऊनौ इत्यादि।

(ग) प्रतिध्वन्यात्मक गुवि$_1$-गुवि$_2$ सामासिक विशेषण, यथा अनाप-सनाप, गैलौ-गूलौ इत्यादि।

५.१.३. गुणवाचक विशेषणों से निर्मित पदबन्धों के आ. राजस्थानी में, निम्नलिखित वर्ग किये जा सकते हैं:—

(क) समतावाचक विशेषण पदबन्ध

(ख) तुलनावाचक गुणवाचक विशेषण पदबन्ध

(ग) तुलनावाचक विशेषण पदबन्ध

(घ) प्रसृत विशेषण पदबन्ध

५.१.३.१. समतावाचक विशेषण पदबन्धों में किसी उपमान को विशेष गुण-धर्म का मानक मानकर किसी उपमेय को उक्त गुण-धर्म के आधार पर उससे (अर्थात् उपमान से) समता की अभिव्यक्ति की जाती है। इन पदबन्धों की आतंरिक संरचना उपमान बोधक संज्ञा$_1$ + समतावाचक परसर्ग$_2$ + गुण-धर्मवाचक विशेषण$_3$ + उपमेय वाचक संज्ञा$_4$ के आधार पर होती है (७)।

(७) उवां ईंडा सूं मुखमल₁ री जात₂ फूटरा-रूपाळा₃ बिचिया₄ निकळिया।

समतावाचक गुणवाचक विशेषण पदबन्धों का उनमें अवस्थित परसर्गों के आधार पर वर्गीकरण किया जा सकता है। आ० राजस्थानी के गुण-धर्म समतावाचक परसर्ग निम्नलिखित हैं—

रै उनमान (८)
रै उणियार (९)
री कळाई (१०)
री जात (११)
रै दाई (१२)
रै सरीखो~रै सरीसो (१३)
सो (१३)
रै प्रमाण (१४)
रै जेड़ो (१५)
रै जितरो~रै जित्तो (१६)
रै जिसो (१७)
रै ज्यूं (१८)

इण परसर्गों की वाक्यों में अवस्थिति के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(८) श्री वन तो मा री गोद रै उनमांन सुखदाई।

(९) उणनै सातमो महीना हो। दसमै महीनै बाद रै उणियार रूपाळो बेटो जलमियो।

(१०) पण राजकुमारी तो कंवर री कळाई साव अबूझ ही।

(११) अबै थोड़ी-थोड़ी माटी हिळण लागी। रूपै री जात धौळा केस।

(१२) बेटो बाप रै दाई चतुर हो, सब समझग्यो।

(१३) कुच जाणं पाकी नारंगिया, सोपारी सा कठोर। पान सरीखो पेट। केसर लंकी।

(१४) अर इण बगत तो सेठाणू दूध रै झागो रै प्रमाण उणरो मन हळको अर निरमल हुयग्यो।

(१५) तीजोड़ो भाई नाडो वाळं देव री बात बताई। दूध जेड़े मीठे पाणी री चार बावड़िया री जाणं जित्तो गुण अर ओसाण आखो परधं मांनियो।

(१६) थारै जितरो मूरख इन घरती माथै सायद ई व्हैला।

(१७) म्हारा बीरा थूं तो म्हारै जिसोई निरभागी है।

(१८) इण घर में थारी देह गंगाजळ ज्यूं पवित्र रैवेला।

निम्न उदाहरण में एक ही वाक्य (१९) में अनेक समतावाचक गुणवाचक विशेषण पदबन्धो की अवस्थिति हुई है।

(१९) सूअै री चांच जैड़ी तीखो नाक, कंवळ रै उनमान रूपाळो उणियारो, कोयल सरीखो मधरी वाणी, हिरणी सरीखो चंचल आखिया, काले नाग रा विछियाँ जैडा काळा केस, हाथी री कळाई मतवाळी चाल, सिंघ रै उनमान पतळो कमर, हंस री कळाई लांबो नस—अे सगळी बातां मतवाळा कंवर नै अेक ढोड ई निगै आई।

५.१.३.२. तुलनावाचक गुणवाचक विशेषण पदबन्धो में उपमेय का उपमान से किसी गुणधर्म में प्रमाण अथवा मात्रा आधिक्य/अनाधिक्य का उल्लेख रहता है (२०)।

(२०) वांरै बिखै थर फोड़ा री बात सुणनै पंछी कैयो—बड़े इचरज री बात है कै थां मिनखां मे सांप सूं बत्ता हित्यारा व्है।

आतरिक संरचना की दृष्टि से इन पदबन्धों के विभिन्न अंग है उपमान (संज्ञा)+सूं+आधिक्यानाधिक्य सूचक विशेषण+उपमेय (संज्ञा) जैसा कि उदाहरण सख्या (२०) से स्पष्ट है। इन पदबन्धो की विविध संभावनाएं सोदाहरण नीचे सूचित की जा रही हैं।

(क) सूं बत्ता (देखिये उदाहरण संख्या २०)

(ख) सूं ई बत्ता (२१)

(२१) महारांणी उणरै पगां में माथो निवाय बोली—मासी थूं म्हारै वास्तै जलम देवणवाली मां सूं ई बत्ती।

(ग) सूं कम/निबलो इत्यादि (२२)

(२२) इण बळ रै उपरांत ई म्है आ बात कैवूं कै लुगाई सूं निबळो तो कोड़ो ई नी हुवै।

(घ) सूं इदक (२३)

(२३) भूंडण घणी री आखिया मे मीट गडाय कैवण लागी—इण दुनियां मे थां सूं इदक समझवान म्हनै तो कोई दूजो निगै नी आयो।

तुलनावाचक गुणवाचक विशेषण पदबन्धों में सूं के अतिरिक्त कतिपय अन्य परसर्गों की अवस्थिति के उदाहरण भी नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

(ङ) रै टाल,गुवि (२४)

(२४) पछै वाणियै टाळ लाज बचावणियों कोई दूजो कोनीं।

(च) रै बिचै गुवि (२५, २६)

(२५) अर दूजी खास बात आ ही कै छोटी राणी बडी राणी बिचै रूपाळी अंत इज घणी ही ।

(२६) इण बिचै तो बेटो नै हाथा मारणो वत्तो है ।

(छ) रै सामो गुवि (२७)

(२७) पच्चीस बरसौ रा भर मोटियार तो आपरै सामो फीका लागै ।

तुलनावाचक गुणवाचक विशेपणो के अन्तर्गत् ही अतिशयता बोधक पदबन्धों को भी सम्मिलित किया जा सकता है ।

(२८) दुनिया मे धन कै बित्त ई सबसूं सिरै चीज है ।

अतिशयता बोधक पदबन्धो मे उपमान स्थानोय संज्ञा के बदले मे सब आदि सर्वनामो की अवस्थिति है, जैसाकि उपरिलिखित उदाहरण से स्वत. स्पष्ट है । इस कोटि की रचनाओ के अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है ।

(२९) अैड़ो ग्रुमी तो आज पैली किणी रूपाळै सूं रूपाळै राजकंवर नै ई नी हुई व्हैला ।

(३०) अेक अळगै राज सूं फिरतौ-घिरतौ सासियां रो डेरो आयो । सासी एक सूं एक डंमाळ ।

तुलनावाचक गुणवाचक विशेषण पदबन्धों के अतिरिक्त भाषा मे कतिपय गुणवाचक विशेषणो तुलनावाचक शब्दगत रूप भी निर्मित होते हैं, यथा

	मूल गुणवाचक विशेषण रूप	तुलनावाचक रूप
(क)	बडो	बडेरो
	मोटो	मोटेरो
	छोटो	छोटेरो
	लाठो	लाठेरो
	बोदो	बोदेरो
	घणो	घणेरो
(ख)	नवो	नवादो

जैसाकि उपरिलिखित उदाहरणो से स्वतः स्पष्ट है उक्त प्रकार की शब्द रूप रचना भाषा मे केवल कुछ गिने-चुने विशेषणो तक ही सीमित है ।

गुणवाचक विशेषणों के अभिव्यंजक रूप भी निर्मित होते हैं। रूप रचना के आधार पर इनका निम्नलिखित कोटियों में विभाजन किया जा सकता है।

कोटि	सामान्य रूप	अभिव्यजक रूप		
(क)	मीठौ	मीठोड़ौ	मीठोड़कौ	मीठलौ
(ख)	मोटौ	मोटोड़ौ	मोटोड़कौ	—
(ग)	धीमौ	धीमोड़ौ	धीमोड़कौ	—
	नवौ	नवोड़ौ	नवोड़कौ	—
(घ)	अेकलौ	अेकलोडौ	—	—

काळौ के अभिव्यंजक रूप कालोड़ौ तथा काळोड़कौ के अतिरिक्त कालूटौ रूप भी उपलब्ध होता है।

उपरोक्त अभिव्यंजक रूपों के अल्पार्थक पुल्लिग (यथा मीठोड़ियौ इत्यादि) तथा स्त्रीलिंग (मीठोड़ी इत्यादि) रूप भी निर्मित होते हैं।

सामान्यतया उक्त अभिव्यजक रूपों से तुलनात्मकता की अभिव्यंजना भी होती है। यथा लंबौ का तुलनात्मक रूप लम्बोड़ौ तथा तम-भाव रूप लम्बोड़कौ आदि।

अनेक अविकार्य गुणवाचक विशेषणों के (जिनका उल्लेख प्रकरण संख्या (५,४) में किया गया है) भी अभिव्यंजक रूप निर्मित होते हैं। इनके कतिपय उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं :

अविकार्य गुणवाचक विशेषण	अभिव्यंजक रूप
अंदी	अंदोड़ौ
वाभ	वांभड़ो
मोटियार	मोटियारड़ौ
मूंभी	मूंभोड़ौ
असली	असलोड़ौ
कमसल	कमसलड़ौ
खामची	खामचोड़ौ
सफेद	सफेदियौ

समस्त अविकार्य गुणवाचक विशेषणों के अभिव्यंजक रूप विकार्य हो जाते हैं जैसा कि ऊपर के उदाहरणों से स्वतः स्पष्ट है।

अनेक अभिव्यंजक स्त्रीलिंग रूपों को तम-भाव गुणवाचक विशेषणों के रूप में भाषा में अवस्थिति रूढ़ है। मीठकी, मोटकी, खारकी, काळकी, कांणकी इत्यादि विशेषण इस कोटी के तम-भाव रूढ़ विशेषण हैं।

इस प्रकार -च प्रत्यय निर्मित कतिपय गुणवाचक विशेषणों के अभिव्यंजक स्त्रीलिंग रूप भी तम-भाव का अर्थ ध्वनित करते है, यथा कांणची, काळची, धोळची, पीळची, कूड़ची इत्यादि।

५.१ ३.३. तुलनावाचक विशेषण पदबन्धो में उपमेय की उपमान से समानता का कथन न करके, दोनो की परस्पर तुलना की जाती है (३१)।

(३१) भगवांन री मूरत बिचै उण में जड़ियोड़ा हीरा-मोती घणा सुहांणा लागा।

तुलनावाचक पदबन्धो में रै बिचै, रै आगै, रै सामी इत्यादि परसर्गों की अवस्थिति होती है।

(३२) वां दुखां सामी तो आ साव नाकुछ बात है, हुंसै जैड़ो।

(३३) ऊंदरो कैयो—प्रकल रै बळ आगै भाखर नै ई कणूकै बिरोबर हुवणो पड़ै।

(३४) भगती रै जोर आगै तो औ साव मामूली बातां है।

(३५) अर लुगाया रै अग-संग टाळ दूजो कोई सुख है ई कठै।

(३६) अर वांनै ई म्हारै सुख री टाळ दूजी की लालसा है।

५.१.३.४. प्रसृत विशेषण पदबन्धों के अन्तर्गत संज्ञा अथवा तुमर्थ + परसर्ग + गुणवाचक विशेषण की पारस्परिक संगति के आधार पर निर्मित अनेक रचनाएं हैं। इनकी मुख्य विशेषता यह है कि सम्पूर्ण प्रसृत विशेषण पदबन्ध का उसमें अवस्थित गुणवाचक विशेषण के स्थान पर आदेश किया जा सकता है, यथा (३७, ३८)।

(३७) एक राजा रै एक परधान हो। वो घणो हुसियार अर परवीण।

(३८) एक राजा रै एक परधांन हो। वो घणो हुसियार अर काम-काज मे परवीण।

वाक्य सख्या (३७) में गुणवाचक विशेषण परवीण के स्थान पर काम-काज में परवीण (३८) प्रसृत विशेषण पदबन्ध का आदेश हुआ है।

प्रसृत विशेषण पदबन्धों का उनमें अवस्थित परसर्गों के आधार पर वर्गीकरण और विवरण किया जा सकता है। नीचे में, रै लग, रै लारै, रौ, रो खातर, रै मिस रै बिचाळै, रै आपै इत्यादि परसर्गों से निर्मित प्रसृत विशेषण पदबन्धों के उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(३९) ....तीर-कंवाण अर सिकार री विद्या मे पारगत हुयग्यो।

(४०) परसेवा मे लथोपथ डावड़ो सपाड़ो करनै बिसाई खावणी चावतो हो।

(४१) म्हनै इक्कीस आंना पतियारो हुयग्यो कै के सगळा म्हनै मारण री जाळ-साजो में भेळा हा।

(४२) बापड़ा गरीब जिनावरां नै फगत पेट रै खातर मारणा कठा लग वाजब है।

(४३) म्हनै तो इण अखंड मून-समाध में फगत आ अेक बात समझ में आई कै जप-तप, ध्यांन, भगती इत्याद अै सगळी बाता इण दुनिया रै लारै सांधी लागै।

(४४) म्है तो आपरी पीड़ियां रो चाकर हू।

(४५) जवानी रो भूखो वकरो सेवट आपरो जीव गमाया रै यो।

(४६) म्हारो काई जिनात कै म्है आपनै म्हारी खातर दुखी करू'।

(४७) घणकरा पंथा रै झीणै जालां अलूझियोड़ा भेख रै मिस धरम री जूनी फाटी कूटै।

(४८) दोय पग थकै अर दोय पग लारै करतै वेरा रै बिचाळै उभै तो चूंघू'।

(४९) स्याळ आपरै मगज रै आपै निरभै हो।

५.२. आ० राजस्थानी के संख्यावाचक विशेषणों की विभिन्न कोटियां हैं—(क) गणनामूलक संख्यावाचक, (ख) प्रभागक संख्यावाचक, (ग) क्रमसूचक संख्यावाचक, (घ) आनुपातिक संख्यावाचक, (ङ) समुच्चयबोधक संख्यावाचक, (च) वितरक संख्यावाचक, (छ) समुच्चयात्मक एकलबोधक संख्यावाचक, (ज) योगबोधक संख्यावाचक, (झ) सन्निकट संख्यावाचक, (ञ) अनिश्चित् संख्यावाचक, (ट) अनिश्चित् सन्निकट संख्यावाचक, (ठ) गुणात्मक संख्यावाचक, (ड) इतर संख्यावाचक रचनाएं, (ण) संख्यावाचक पदबन्ध तथा (त) सहितिवाचक संख्यावाचक रचनाएं। इन समस्त संख्यावाचकों का सोदाहरण विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

५.२.१. आ० राजस्थानी के गणनामूलक संख्यावाचक नीचे सूचित किये जा रहे हैं:—

१. एक	६. [illegible]
२. दो~बे	७. सात
३. तीन	८. आठ
४. च्यार~चार	९. नव
५. पाच	१०. दस

११. इग्यारै~इग्यारै
१२. बारै
१३. तेरै
१४. चऊदे
१५. पन्दरे
१६. सोळे
१७. सतरे
१८. अट्ठारै
१९. उगणीस
२०. वीस
२१. इक्कीस
२२. बाईस
२३. तेईस
२४. चौईस
२५. पच्चीस
२६. छाईस
२७. सताईस
२८. अट्ठाईस
२९. गुणतीस
३०. तीस
३१. इकतीस
३२. बत्तीस
३३. तेतीस
३४. चौतीस
३५. पैंतीस
३६. छत्तीस
३७. सैंतीस
३८. अड़तीस
३९. गुणचालीस
४०. चालीस
४१. इगतालीस
४२. बंयालीस
४३. तंयालीस
४४. चम्मालीस
४५. पैंतालीस
४६. छियालीस
४७. सैंतालीस
४८. अड़तालीस
४९. गुणपच्चास
५०. पच्चास
५१. इक्कावन
५२. बावन
५३. तेपन
५४. चौपन
५५. पचपन
५६. छप्पन
५७. सतावन
५८. अट्ठावन
५९. गुणसाठ
६०. साठ
६१. इकसठ
६२. बासठ
६३. तेसठ
६४. चौसठ
६५. पैंसठ
६६. छासठ
६७. सिड़सठ
६८. अडसठ
६९. गुणन्तर~गुणसित्तर
७०. सित्तर
७१. इकोतर
७२. बावोतर
७३. तेवोतर
७४. चौवोतर
७५. पिचत्तर
७६. छियतर
७७. सितन्तर
७८. इठत्तर
७९. गुणियासी
८०. अस्सी
८१. इकियासी
८२. बंयासी

८३. तंयासी~तियासी	९२. वराणू
८४. चौरासी	९३. तेराणू
८५. पिचियासी	९४. चौराणू
८६. छियासी	९५. पंचाणू
८७. सितियासी	९६. छिन्नू
८८. इठियासी	९७. संताणू
८९. गुणनेवे~गुणनेऊ	९८. अंठाणू
९०. नेवे~नेऊ	९९. निनाणू
९१. इकराणू	१००. सौ

सौ से ऊपर के गणनामूलक संख्यावाचक भारतीय आर्य भाषाओं की तद्विषयक रचनाओं के अनुसार निर्मित होते है, अतः उनका यहाँ विशेष वर्णन प्रस्तुत करने की आवश्यकता नही है।

शून्य के राजस्थानी का वाचक शब्द है सुम।

उपरिलिखित गणनामूलक संख्यावाचकों के अतिरिक्त आ० राजस्थानी वर्षों की गणना करने के लिए एक अन्य कुलक का व्यवहार होता है, जिसके ऋजु तथा तिर्यक रूप भाषा मे उपलब्ध हैं। इस कुलक के एक से सौ तक की संख्या के वाचक गणनामूलक नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

ऋजु रूप	तिर्यक रूप
एकौ	एकै
दूऔ~बीऔ	दुए~बीए
तीऔ	तीए
चौकौ	चौकै
पांचौ	पाचै
छक्कौ	छक्कै
सातौ	सातै
आठौ	आठै
नवौ	नवै
दसौ	दसै
इग्यारौ	इग्यारै
बारौ	बारै
तेरौ	तेरै
चऊदौ	चऊदै
पनरौ	पनरै

ॠजु रूप	तिर्यक रूप
सोळौ	सोळै
सतरौ	सतरै
अठारौ	अठारै
उगणीसौ	उगणीसै
बीसौ	बीसै
इक्कीसौ	इक्कीसै
बाईसौ	बाईसै
तेईसौ	तेईसै
चौईसौ	चौईसै
पचीसौ	पचीसै
छाईसौ	छाईसै
सताईसौ	सताईसै
अठाईसौ	अठाईसै
गुणतीसौ	गुणतीसै
तीसौ	तीसै
इकतीसौ	इकतीसै
बत्तीसौ	बत्तीसै
तेतीसौ	तेतीसै
चौतीसौ	चौतीसै
पैंतीसौ	पैंतीसै
छत्तीसौ	छतीसै
सैंतीसौ	सैंतीसै
अड़तीसौ	अड़तीसै
गुणचाळीसौ	गुणचाळीसै
चाळीसौ	चाळीसै
इकताळीसौ	इकताळीसै
बयाळीसौ	बयाळीसै
तयाळीसौ	तयाळीसै
चम्माळीसौ	चम्माळीसै
पैंताळीसौ	पैंताळीसै
छींयाळीसौ	छींयाळीसै
सैंताळीसौ	सैंताळसै
अड़ताळीसौ	अड़ताळीसै
गुणपचासौ	गुणपचासै
पचासौ	पचासै

ऋजु रूप	तिर्यक रूप
इकावनो	इकावनैं
बावनो	बावनैं
तेवनो	तेवनैं
चौपनो	चौवनैं
पचपनो	पचपनैं
छपनो	छपनैं
सतावनो	सतावनैं
अठावनो	अठावनैं
गुणसाठो	गुणसाठैं
साठो	साठैं
इकसठो	इकसाठैं
बासठो	बासठैं
तेसठो	तेसठैं
चौसठो	चौसठैं
पैंसठो	पैंसठैं
छासठो	छासठैं
सिड़सठो	सिड़सठैं
अड़सठो	अड़सठैं
गुणसित्तरो	गुणसित्तरैं
सित्तरो	सित्तरैं
इकोतरो	इकोतरैं
बावोतरो	बावोतरैं
तेवोतरो	तेवोतरैं
चोवोतरो	चोवोतरैं
पिचतरो	पिचतरैं
छियंतरो	छियतरैं
सितन्तरो	सितन्तरैं
इठन्तरो	इठन्तरैं
गुणियासियो	गुणियासियैं
असियो	असियैं
इकियासियो	इकियासियैं
बयासियो	बंयासियैं
तयासियो	तयासियैं
चौरासियो	चौरासियैं
पिचियासियो	पिचियासियैं

ऋजु रूप	तिर्यक रूप
छियासियो	छियासियै
सितियासियो	सितियासियै
इठियासियो	इठियासियै
गुणनेवो	गुणनेवै
नेवो	नेवै
इकराणवो	इकराणवै
बराणवो	बराणवै
तराणवो	तराणवै
चौराणवो	चौराणवै
पच्चाणवो	पच्चाणवै
छिन्नवो	छिन्नवै
संताणवो	सताणवै
अठाणवो	अठाणवै
निन्नाणवो	निन्नाणवै
सईको	सईकै

५.२.२. प्रभागक संख्यावाचको के लिए भाषा मे निम्नलिखित शब्द प्रचलित हैं।

$\frac{1}{4}$	पाव	$1\frac{1}{2}$	डोड, डोडो, डेढ
$\frac{1}{2}$	आधो, साढो~साढा	$2\frac{1}{2}$	ढाई~अढ़ाई
$\frac{3}{4}$	पूंण~पूंणो, पूणो	$3\frac{1}{2}$	सूटो
$1\frac{1}{4}$	सवा	$4\frac{1}{2}$	ढचो

पूणो, सवा तथा साढो के योग से अन्य प्रभागक संख्यावाचक भी निर्मित होते हैं, यथा

पूणो दो	$1\frac{3}{4}$	साढो तीन~साढा तीन	$3\frac{1}{2}$
पूणो तीन	$2\frac{3}{4}$	साढो च्यार~साढा च्यार	$4\frac{1}{2}$
सवा दो	$2\frac{1}{4}$	पूण सो	७५
सवा तोन	$3\frac{1}{4}$	सवा सो	१२५
		डोढ सो	१५०
		पूणो दो सो	१७५
		साढो तीन सो	३५०

इत्यादि।

५.२.३. क्रमसूचक संख्यावाचकों में एक से लेकर छ तक वाचक शब्द निम्नलिखित हैं :—

पैलो
दूजो~बीजो
तीजो
चौथो
पांचमों
छठो

छ से ऊपर के क्रमसूचकों की रचना गणनामूलकों के साथ -मो प्रत्यय के योग से होती है। इनके कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है :—

गणनामूलक संख्यावाचक	क्रमसूचक संख्यावाचक
सात	सातमो
आठ	आठमो
नव	नमो
दस	दसमो
इगियारै	इगियारमो
बारै	बारमो
तेरै	तेरमो

५.२.४. आनुपातिक संख्यावाचकों की रचना गणनामूलक संख्यावाचक के साथ –गुणो प्रत्यय के योग से होती है।

दोगुणो	सातगुणो
तीनगुणो	आठगुणो
चौगुणो	नवगुणो
पांचगुणो	दसगुणो
छगुणो	

इन आनुपातिक संख्यावाचकों के उपरिलिखित एकवचन रूपो के अतिरिक्त बहुवचन रूप भी भाषा में निर्मित होते है, यथा दसगुणो वत्तो धन (एकवचन), तथा दसगुणा बत्ता रिपिया (बहुवचन)। एक वचन मे अवस्थिति में इनसे सहिति का बोध होता है और बहुवचन में संख्येयता का।

आनुपातिक संख्यावाचकों के एक अन्य कुलक की रचना गणनामूलकों के साथ –लड़ो प्रत्यय के योग से होती है :-

इकेलड़ो	छलड़ो
दोलड़ो~बेलड़ो	सातलड़ो
तेलड़ो	आठलड़ो
चौलड़ो	नवलड़ो
पांचलड़ो	दसलड़ो,

आनुपातिक संख्यावाचकों का एक अन्य वर्ग –वड़ो प्रत्यय के योग से भी निर्मित होता है। इस वर्ग मे एक से लेकर चार तक के गणनामूलकों के रूप ही निर्मित होते हैं, यथा इकेवड़ो, दोवडो~बेवड़ो, तेवड़ो तथा चौवड़ो।

५.२.५. समुच्चयबोधक संख्यावाचकों की रचना गणनामूलक संख्यावाचकों के साथ –आं अथवा –ऊ प्रत्ययो के योग से होती है। इनके कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

दूनां~दूनूं~दोनूं
तीना~तीनूं
चारा~च्यारा~चारूं~च्यारूं
पाचा~पांचूं
छवा~छवूं
सातां~सातूं
आठां~आठूं
नवां~नवूं
दसां~दसूं

दस से ऊपर समुच्चयबोधक संख्यावाचकों की रचना उतने नियमित रूप से नहीं होती। फिर भी कतिपय उपलब्ध रूप नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

बीसां~बीसूं
चालीसा~चालीसूं
पचासा~पचासूं
सैकड़ा~सैंकड़ूं
हजारां~हजारूं
लाखा~लाखूं
किरोड़ां~किरोड़ूं

५.२.६. वितरक संख्यावाचकों की रचना गणनामूलकों की मात्र एकबार आवृत्ति से होती है, यथा अेक-अेक, दो-दो, च्यार-च्यार, छ-छ, दस-दस इत्यादि। उच्चारण सौकर्य अथवा प्रयोजनीयता के कारण अनेक संभावित वितरक संख्यावाचकों के रूप भाषा मे उपलब्ध नहीं होते, यद्यपि उनकी रचना पर कोई व्याकरणिक प्रतिबन्ध नहीं है।

५.२.७. समुच्चयात्मक एकल बोधक संख्यावाचकों की रचना गणनामूलक संख्यावाचक के रो/रा/री परसर्ग की आसक्ति एवं तत्पश्चात् उक्त गणनामूलक की आवृत्ति द्वारा होती है। इनके कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं :–

अेक रो/री अेक
दोई रो/री दोई

परसर्ग रो/रा/री के स्थान पर इनके ह्रस्वीकृत का भी आदेश ऐसी रचनाओं मे होता है, यथा अेक'र अेक, दोय'र दोय इत्यादि।

समुच्चयात्मक एकल बोधक संख्यावाचकों के एक अन्य कुलक की रचना समुच्चय-बोधक संख्यावाचक के पश्चात् र की आसक्ति, एवं तत्पश्चात् उक्त समुच्चयबोधक संख्यावाचक की आवृत्ति से होती है। इस कुलक के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

अेक'र अेक	तीनूं'र तीनूं	पांचूं'र पांचूं
दोनूं'र दोनूं	च्यारूं'र च्यारूं	छवूं'र छवूं

समुच्चयात्मक एकल बोधक संख्यावाचकों की रचना एक से लेकर दस तक गणनामूलकों की आवृत्ति तथा उनके साथ मध्यप्रत्यय -आ- की अवस्थिति से भी होती है।

अेकाअेक	छवाछव
दोयादोय	सातासात
तीनातीन	आठाआठ
च्याराच्यार	नवानव
पांचापांच	दसादस

५.२.८. योगबोधक संख्यावाचकों के एक कुलक की रचना गणनामूलक संख्यावाचकों की आवृत्ति एवं उनके साथ मध्यप्रत्यय -न- की अवस्थिति से होती है। इन रचनाओं के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(५०) मिणधारी साप बारै'न बारै चौईस कोस री भांय मे किणी जीव नै नी छोड़तो।

(५१) कण कलो ई बोस'न बीस काई करै। पूरा पैंतीस रिपिया लेय बळद म्हारै हवाले करै जकी वात करै कनी।

५.२.९. समुच्चयबोधक संख्यावाचकों की आवृत्ति के साथ मध्यप्रत्यय -न- की अवस्थिति से भी योगबोधक संख्यावाचकों की रचना होती है। यथा,

(५२) किसनजी लाखूं'न लाखूं रिपिया लगायनै मिंदर चुणायो।

(५३) रामूड़ै नै सैंकड़ूं'न सैंकड़ूं बार समझाय दियो पण वो तो अैंडी नकटाई धारली कै म्हनै सबूरी झेलणी पड़ी।

५.२.१०. सन्निकट संख्यावाचकों की रचना गणनामूलकों के साथ 'क के योग से होती है। एक को छोडकर अन्य गणनामूलकों से सन्निकट संख्यावाचक निर्मित हो सकते हैं। गणनामूलक सन्निकट संख्यावाचकों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

दोये'क
तीने'क
च्यारे'क
सोळै'क
उगणीसे'क

उपरोक्त नियमानुसार प्रभागक सन्निकट संख्यावाचकों की भी रचना होती है। इनके उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

पाधे'क	डोडे'क
आधो'क, आधो'क, आधे'क	पूणोदोय'क
पूणे'क	सवादोय'क
सवा'क	अढाई'क

पूणोदोय'क तथा सवादोय'क आदि विकल्प रूप पूणो'क दोय तथा सवा'क दोय भी भाषा मे उपलब्ध है।

५.२.११. अनिश्चित संख्यावाचको की रचना किन्हीं दो संगत गणनामूलकों की परस्पर आसत्ति से होती है। ऐसे सयुक्त शब्द भाषा में सामान्यरूप से सिद्धप्रयोग ही होते हैं। इनके कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किए जा रहे है।

तीन–चार
दोय–चार
पाच-सात
सितर–अस्सी
दोय-च्यार हजार

५.२.१२. –क प्रत्यय की अवस्थिति अनिश्चित सख्यावाचको के साथ भी होती है। इस प्रकार से निर्मित कतिपय अनिश्चित् सन्निकट सख्यावाचको के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(५४) पाच-सातेक दिन कांम री तोजी नी वैठी तो धकै री सोय करैला।

५.२.१३. आ० राजस्थानी गुणात्मक सख्यावाचक कई दृष्टियो से महत्वपूर्ण है। एक तो इसमे प्रयुक्त गणनामूलक सख्यावाचको के स्वनप्रक्रियात्मक रूप कई स्थितियों मे भिन्न हैं, और दूसरे कई शब्दों के सिद्धप्रयुक्त रूप भी भिन्न है। इन तथ्यो का स्पष्टीकरण के हेतु नीचे दो से चालीस तक गुणात्मक रचनाओं को उद्धृत किया जा रहा है।

एक दू दू	एक तिरो तिगे	~	एक तियो तियो
दो दू च्यार	दो तिरो छ		दो तिया छ
तीन दू छ	तीन तिरो नव		तीन तिया नऊ
च्यार दू आठ	च्यार तिरो बारै		च्यार तिया बारै
पाच दू दस	पाच तिरो पनरै		पांच तिया पन्दरै
छ दू बारै	छ तिरो अट्ठारै		छ तिया अट्ठारै
सात दू चउदै	सात तिरो इक्की(स)		सात तिया इक्की(स)
आठ दू सोळै	आठ तिरो चोई(स)		आठ तिया चोइ(स)
नऊ दू अट्ठारै	नव तिरो सताई(स)		नव तिया सताई(स)
दास दूबा वीस	दायं तिरो तो(स)		दायं तिया तो(स)

एक चौक चौक	एक पंजो पंजो	एक छंग छंग
दो चौक आठ	दो पंजा दस	दो छग बारै
तीन चौक बारै	तीनो पंजा पन्दरै	तीन छग अट्ठारै
च्यार चौक सोळै	च्यारो पंजा वी(स)	च्यार छंग चोई(स)
पांच चौक बीस	पंजो क पच्ची	पाच छंग तो(स)
छ चौक चोई(स)	छ पंजा ती(स)	छ छंग छत्ती(स)
सात चौक अट्ठाई(स)	सातो पंजा पैंतो(स)	सात छंग बंयाळी(स)
आठ चौक बत्तो(स)	आठो पजा चाळी(स)	आठ छंग अड़ताली(स)
नऊ चौक छत्तो(स)	नऊ पंजा पैंताळी(स)	नव छंगां री चौपनै
दायँ चौक चाळी(स)	दायँ पंजा (पूरो) पच्चा(स)	दायँ छंग साठ

एक सातो सातो	एक आठो आठो	एक नम्मो नम्मो
दो साता चऊदै	दो आठा सोळै	दो नम्मा अट्ठारै
तीनो साता इक्की(स)	तीनो आठ चोई(स)	तीन नम्मा सत्ताई(स)
च्यारो साता अट्ठाई(स)	च्यारो आठा बत्तो(स)	च्यार नमा री छत्ती(स)
पांचो साता पैंतो(स)	पोचो आठा चाळी(स)	पाच नम पैंताळी (स)
छ सातू बंयाली(स)	छ आठू अड़ताळी(स)	छ नमां री चौपनै
सातो साती गुणपचा(स)	सातो आठू छप्पन	सात नमां री तेरीसठ
आठ सातै री छप्पन	आठो आठी चौसठ	आठ नमा री बोयंतर
नऊ साता री तेरीसठ	नऊ आठा री बोयंतर	नम्मै नम्मै इकियासी
दायँ साता सित्तर	दायँ आठा अस्सी	दायँ नम्मा नेऊ

एक दा दा	इगियारै एका इगियारै
दो दा वी(स)	इगियार दुआ बाई(स)
तीन दा ती(स)	इगियार तिया तेंती(स)
च्यार दा चाळी(स)	इगियार चौक चमाळी(स) (इगियारै चौका चमाळी(स))
पांच दा पच्चा(स)	इगियार पांण पचपन
छ दा साठ	इगियार छक छासठ
सात दा सित्तर	इगियार सात सितंतर (इगियारो साता सितंतर)
आठ दा अस्सी	इगियारो आठा इठियासी
नऊ दा नेवै	इगियार नम निनाणू
दायँ दाई सौ	इगियारो दावा एक सो ने दस

बारै एका बारै	तेरे एका तेरै
बार दुआ चोई(स)	तेर दुआ छाई(स)
बार तिया छत्ती(स)	तेर ती गुणचाळी(स)
बारै चोकूं अड़ताळी(स)	तेर चौका बावन
बार पांणिया साठ अे	तेर पाण पैंसठ
बार छकै नै बोयन्तर	तेर छक इठन्तर
बारौ साता चौरासी	तेरौ साता इकराणू
बारौ आठा छिन्नू	तेरौ आठ चिड़ोतरिया
बार नम इठड़ोतरियौ	तेर नम सतरावा हो
बारौ दाया एक सौ नै वीस	तेरौ दाया तीसा हो (तेर दावा एक सौ नै तीस)

चऊदे एका चऊदे	पनरे एका पनरे
चवद दू अट्ठाई	पनर दुआं ती(स)
चवद ती बयाळी(स)	ती पैताळी(स)
चऊद चौक छप्पन	चौका साठ
चऊद पाण सित्तर	पाण पिचन्तर
चऊद छकै नै चौरासी	छकड़ी नेऊ
चऊदौ साता अंठाणू	सात पिचड़ोतर
चऊद आठ बाड़ेतरियौ (चऊद आठ बारोतरियौ)	आठू बीया
चऊद नम छाईयां हो (चऊद नम छाईसा हो)	नऊ पैंतीया
चऊदा दा चाळिया हो	डबली में डोड सौ
~(चऊदा दावा एक सौ नै चाळी(स))	

सोळे एका सोळै	सतरे एक सतरे
सोळ दुआ बत्ती(स)	सतर दुआ चौती(स)
सोळ ती अड़ताळी(स)	सतर ती इक्कावन
सोळ चौका चौसठ	सतर चौका अड़सठ
सोळ पांण अस्सी	सतर पाण पिचियासी
सोळ छक्का छिन्नू	सतर छक बिलगरियौ
सोळ सात बाड़ोतरियौ	सतरौ सात उगणिया हो
सोळौ आठ अट्ठाइया हो	सतरौ आठ छतिया हो
सोळ नम चम्माळो	सतर नमा री तेपने
सोळौ दाया साठा हो	सतर दावा एक सौ नै सित्तर
~(सोळौ दावा एक सौ नै साठ)	

अट्ठारे एका अट्ठारे	उगणी एका उगणी
अट्ठार दुआ छत्ती(स)	उगणी दुआ अड़ती(स)
अट्ठार तिरी चौपने	उगणी ती सत्तावने
अट्ठार चौका वोयंतर	उगणी चौका छियन्तर
अट्ठार पांण नेऊ	उगणी पांण पंचाणू
अट्ठार छक इठड़ोतरियौ	उगणी छक चऊदा हौ
अट्ठारी सात छाईया हौ	उगणी सात तेतीया हौ
अट्ठारी आठ चम्माळौ	उगणी आठ बावनौ
अट्ठार नमोरी बासठियौ	उगणी नम इकोतरियौ
अट्ठारा दावा एक सौ ने अस्सो	उगणी दाया एक सौ नै नेवै।

बी एका बी	इक्की एका इक्की
बी दुआ चाळी(स)	इक्की दुआ बेयाळी
बी तिया साठ	इक्की तिया तेरीसठ
बी चौका अस्सी	इक्की चौका चौरासी
बी पाणिया सौ	इक्की पाण पिचबोतरियौ
बी छकं नै बीया हौ	इक्की छक छाईया हौ
बी सातू चाळौ	इक्की सात सं ताळौ
बीयो आठो साठा हौ	इक्की आठा अड़सठिया हौ
बी नमा अस्सियौ	इक्की नम गुणनेऊ हौ
बीयो दावा एक सौ नै बीस	इक्की दाया दो सौ नै दस

बाई एका बाई	तेई एका तेई
बाई दुआ चम्माळी	तेई दुआ छियाळी
बाई तिया छासठ	तेई ती गुणन्तर
बाई चौका इठ्यासी	तेई चौका बराणू (तेई चौका बांणू)
बाई पाण दाड़ोतरियौ	तेई पांण पनरावा हौ
बाई छक बतीया हौ	तेई छक अड़तिया हौ
बाई साता चौपनियौ	तेई साता इकसठियौ
बाई आठा छियंतरियौ	तेयौ आठा चौरासो
बाई नम अठाणू हौ	तेई नमा दो सौ नै सात
बाई दावा दो सौ नै बीस	तेयौ दावा दो सौ नै तीस

चौई एका चौई	पच्चो एका पच्चो
चौई दुश्रा ग्रडताळी (चौई दुश्रा ग्रड़ताळा)	पच्चो दुश्रा पच्चा
चौई ती बोयतर	पच्चो ती पिचन्तर
चौई चोका छिन्नू	पच्चो चौका सौ
चौई पाण बोया हौ	पच्ची पाण पच्चिया हौ
चौई छक चम्माळो	पच्ची छकड़ो डोड सौ
चौई साता ग्रड़मठियौ	पच्ची सात पिचतरियौ
चौई ग्राठा बराणू	पचियौ ग्राठा दोय सौ
चौई नमा दो सौ नैं सोळैं	पच्चो नम दो पच्चियौ
चौई दावा दो सौ नैं चाळी(स)	पच्ची) दावा दो सौ नैं पच्चा पचियौ)

छाई एका छाई	सत्ताई एका सत्ताई
छाई दुश्रा वावन	सत्ताई दुश्रा चौपन
छाई ति इठन्तर	सत्ताई तिया इक्यासी
छाई चौक चिडोतरियौ	सत्ताई चौक इठडोतरियौ
छाई पाण तिया हौ	सत्ताई पाण पैंतीया हौ
छाई छका छप्पन हो	सत्ताई छक बासटियौ
छाई सात बंयासियौ	सत्ताई सात गुणनेवा हौ
छाई ग्राठा दो सौ नैं ग्राठ	सत्ताई ग्राठा दो सौ नैं सोळैं
छाई नमा दो चौतीयौ	सत्ताई नम दो तयाळौ
छाई दावा दो सौ नैं साठ	सत्ताई दावा दो सौ नैं सित्तर

ग्रट्ठाई एकन ग्रट्ठाई	गुणती एका गुणती
ग्रट्ठाई दुश्रा छपन	गुणती दुश्रा ग्रट्ठावन
ग्रट्ठाई तिया चौरासी	गुणती तिया सितियासी
ग्रट्ठाई चौक बायोतरियौ	गुणती चौक सोलावौ
ग्रट्ठाई पाण चाळिया हो	गुणती पाण पैंताळो
ग्रट्ठाई छका ग्रड़सटियौ	गुणती छक चौवोतरियौ
ग्रट्ठाई साता छिन्नू हौ	गुणती साता दो सौ नैं तीन
ग्रट्ठाई ग्राठ दो चौइयो	गुणती ग्राठा दो वतीयौ
ग्रट्ठाई नम दो बावनियौ	गुणती नमा दो इकसठियौ
ग्रट्ठाई दावा दो सौ नैं ग्रस्सो	गुणती दावा दो सौ नैं नेवैं

ती एका ती	इकती एका इकती
ती दुम्रा साठ	इकती दुम्रा बासठ
ती तिया नेवै	इकती तिया तेराणू
ती चौका बीया हो	इकती चौक चोइया हो
ती पाण डोड सौ	इकती पाण पचपनियो
ती छका अस्सियो	इकती छक छियासियो
ती साता दो सो ने दस	इकती साता दो सत्ताई
ती आठा दो सो नै चाळो	इकती आठा दो अडताळो
ती नमा दो नै सित्तर	इकती नम दो गुणियासी
ती दावा तीन सो	इकती दावा तीन सौ नै दस

वत्ती एका वत्ती	तेती एका तेती
वत्ती दुम्रा चौसठ	तेती दुम्रा छासठ
वत्ती तिया छिन्नू	तेती ती निनांणू
वत्ती चौक अठाइया हो	तेती चौक बत्तियो
वत्ती पाण साठा हो	तेती पांण पैंसठियो
वत्ती छका बांणू (बराणू)	तेती छक अंठांणुम्रो
वत्ती सात दो चोइयो	तेती सात दो इकतिया
वत्ती आठा दो छप्पनियो	तेती आठ दो चौसठो
वत्ती नम दो इठियासी	तेती नम दो संताणू
वत्ती दावा तीन सौ नै बीस	तेती दाया तीन सौ नै तीस

चौती एका चौती	पैंती एका पैंती
चौती दुम्रा अड़सठ	पैंती दुम्रा सित्तर
चौती ती विलगरियो	पैंती ती पिचड़ोतर
चौती चौक छतीया हो	पैंती चौक चाळिया हो
चौती पांण सितरियो	पैंती पाण एक पिचड़ोतर
चौती छका दो सौ नै च्यार	पैंती छका दो सौ नै दस
चौती साता दो अड़तियो	पैंती सात दो पैंताळो
चौती आठ बुवोतरियो	पैंती आठा दो अस्सियो
चौती नमा तीन सौ नै छ	पैंती नम तीन पनरावो
चौती दावा तीन चाळियो	पैंती दावा तीन सौ नै पच्चा

छत्ती एका छत्ती	सैंती एका सैंती
छत्ती दुवा बोयंतर	सैंती दुवा चौवोतर
छत्ती ती इठड़ोतर	सैंती ती इगियारा हौ
छत्ती चौक चम्माळौ	सैंती चौका एक अड़ताळा
छत्ती पाण एक अस्सियौ	सैंती पाण एक पिचियाई हौ
छत्ती छका दो सोळावौ	सैंती छका दो वाइयौ
छत्ती सात दो बावनियौ	सैंती सात दो गुणासठौ
छत्ती आठ दो इठियाळौ	सैंती आठ दो छिन्नुओ
छत्ती नम तीन चौईयौ	सैंती नम तीन तेतिया
छत्ती दावा तीन सौ नै साठ	सैंती दावा तीन सित्तरओ

अड़ती एका अड़ती	गुणचाळी एका गुणचाळी
अड़ती दुआ छियंतर	गुणचाळी दुआ इठन्तर
अड़ती तिया एक चऊदै हौ	गुणचाळी तिया एक सतरावौ
अड़ती चौक बावनियौ	गुणचाळी चौका छप्पनियौ
अड़ती पाण एक नेऊ हौ	गुणचाळी पाण पचाणुओ
अड़ती छक दो अट्ठाईयौ	गुणचाळी छक दो चौतीयौ
अड़ती सात दो छासाठियौ~छासठियौ	गुणचाळी साता दो तेवोतरियौ
अड़ती आठा तीन सौ नै च्यार	गुणचाळी आठा तीन सौ नै बारे
अड़ती नम तीन बंयाळौ	गुणचाळी नम तीन सौ इकावनियौ
अड़ती दावा तीन सौ नै अस्सी	गुणचाळी दावा तीन सौ नै नेवै

चाळी एका चाळी
चाळी दुआ अस्सी
चाळी तिया बिया हौ
चाळम चौकड़ो साठा हौ
चाळी पाण दोय सौ
चाळी छक दो चाळियौ
चाळम साता दो अस्सियौ
चाळम आठा तीन सौ नै बीस
चाळी नम तीन सौ नै साठ
चाळी दावा च्यार सौ

५.२.१४ इतर संख्यावाचक रचनाओं के अन्तर्गत भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में व्यवहृत गणनामूलकों के नामों को सूचित किया जा रहा है।

(क) गणनामूलक शब्दों के नाम

अेको	सातो
दुओ	आठो
तीओ	नव्वो
चोको	दस्सो
पांचो	मीडो~सुम
छक्को	अेकी
	वेकी

(ख) ताश के खेल में व्यवहृत गणनामूलक नाम

इक्को
दुग्गी~दुर्री
तिग्गी~तिर्री
चौगी
पाची
छग्गी
साती
आठी
नवो~नवली~नवली
दसो~दसली~दसली

(ग) तिथियों के लिए व्यवहृत गणनामूलक नाम

अेकम
दूज~बीज
तीज
चोथ
पांचम
छठ
सातम
आठम
नम
दसम
इग्यारस
बारस

तेरस
चऊदस

इसी कोटि के अन्य शब्द पूनम, सुद~सुदी, बद~बदी, अंधारपख, ऊजळपख~चांदणोपख इत्यादि है।

(घ) सन्तान के लिए परिवार में व्यवहृत गणनामूलक शब्द

मोभरौ	"प्रथम पुत्र"	पूठलौ	"अन्तिम पुत्र"
मोभरी	"प्रथम पुत्री"	पूठली	"अन्तिम पुत्री"
बिचेटियौ	"बीचवाला पुत्र"		
बिचेटकी	"बीचवाली पुत्री"		

(ङ) गाय-भैंसों के ब्याने के क्रमसूचक शब्द

पैलीयांण
दूजीयांण
तीजीयाण
चौथीयाण
पाचोयाण, इत्यादि

(च) गिप के खेल में एक से दस तक की संख्या के गणनासूचक शब्द

मीर	"प्रथम"
दुल	"द्वितीय"
तिल	"तृतीय"
चौल	"चतुर्थ"
पांचल	"पंचम"
छल	"षष्ठ"
सातल	"सप्तम"
आठल	"अष्टम"
नवल	"नवम"
दसल	"दशम"

५.२.१५. गुणित एककों अथवा भागकों द्वारा योग-संख्या सूचित करने की भी भाषा में पद्धति है। एतद्विषयक संहितिवाचक संख्या पदबन्धों का निदर्शन करने वाले कतिपय वाक्य नीचे उदाहृत किये जा रहे हैं।

(५४) बारै नै बारै चौईस कोस तांई जीव नाव बाको नी छोडियो।

(५५) तीस साट सौ बरसा रै सगैटगै पूगी हू, म्हनै तो सुख नांव इण ममूभणी री ई आयी।

(५६) आप तो अेक री बात करो, म्हैं अैड़ो अठारा बीसो अपछरावां आपरै पगां लायनै पटक दूं ।

आ. राजस्थानी की कतिपय सहितिवाचक संख्यावाचक रचनाएं सोदाहरण नीचे सूचित की जा रही है ।

आधेटो "आधी दूरी"

(५७) आधेटै आय कान्हूडो ब्यारूं खांनी भाल ऊंचो आभै सांम्ही जोयो । इण समन्दर री तो लीला ईं न्यारी ।

आधोआध "आधा-आधा"

(५८) सेठ अर बिणजारै रै आधोआध । दोना नै अेक दूजै माथै पूरो भरोसो ।

आधोऊधो "कुछ-कुछ"

(५९) आधोऊधो चेतो हुयो जणै ब्यारूं हथमार भिभकनै बैठा हुआ ।

पांच-पच्चीस "एक अनिश्चित संख्या"

(६०) जंगळ मे पांच-पच्चीस भेळा होय टणकाई करता तो जिनावर वांनै मतै ईं सलट लेता, इण वास्तै रात रा घरै सूता साथै बात करी ।

इक्को-दुक्को "कोई-कोई, कोई ही"

(६१) बरसां मे कै जुगा मे ऊड़ माथै रा इक्का-दुक्का जलमै ।

अलेखूं "अगणित"

(६२) काळ री की भरोसो कोनी तोई हरछिण अलेखूं जीव जलमैला ।

अणगिण "अगणित"

(६३) मुगत हुयोड़ी अणगिण लुगाया घूमर घाल-घाल ईं नाची । घणा ई गीत गाया ।

अेकोअेक "प्रत्येक, हर एक, समस्त"

(६४) करतां-करतां मोटियार री पगथलिया सूं लेय गळै ताई री अेकोअेक मूलां निकळगी"

अेकाअेक "केवल एक"

(६५) सातूं भाई परणिया-पातिया, बीदणियां रूपाळी । अेकाअेक नणद रो अणूतो लाड राखै ।

अेकणसागै "एक साथ"

(६६) अेकणसागै आठूं-री-आठूं विलायगी ।

दो-एक "दो एक, एक-दो"

(६७) घोड़ा हेटै उतर घोवा दो-एक डालू तौ लाय दो ।

एक सूं दूजौ "एक से अधिक"

(६८) घणकरा लोग तो अेक सूं दूजी वातई नी छोड़ी ।

सईकौ "सौ, सैकड़ा"

(६९) छतौ भरी-तरो गवाड़ी । म्हूं आज न्यारौ सोधी कर । सईकँ रै लगै-टगै पूगो हूं ।

सहितिवाचक प्रत्यय की अवस्थिति के भी कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(७०) सैकड़ूंन रिपिया भेळा करिया पछै मिंदर बिणाणो सरू करियो ।

(७१) सेठ दिसावर जायनै करोड़ान रिपिया भेळा करिया ।

५.३. निर्धारक विशेषण अन्य विशेषणों, संज्ञाओं तथा क्रियाओं के पूर्व अवस्थित होकर, अपने इन विशेष्यो के गुण-धर्मों आदि के प्रमाण अथवा मात्रा का निर्धार करते हैं। यथा निम्नलिखित वाक्यो मे (७२, ७३)

(७२) राजा लोभी अतइज घणौ हौ ।

(७३) डाकण री बेटी रा दात पीळा-पट्ट हा ।

राजा को बहुत लोभी मात्र न कहकर (७२) "अंतइज घणौ लोभी" कहा है। उसी प्रकार वाक्य संख्या (७३) मे दातो को मात्र पीला न कहकर "पीळा-पट्ट" कहा है। इन दोनो वाक्यों मे अंतइज एवं पट्ट शब्द क्रमशः लोभी स्वभाव और दातों के पीलेपण के प्रमाणाधिक्य अथवा आत्यान्तिकता का बोध कराते हैं। साथ-ही-साथ ये दोनों शब्द श्रोता के सम्मुख एक ऐसी स्थिति उपस्थित करते हैं जिससे उसके हृदय मे वर्णित व्यक्ति, वस्तु इत्यादि के प्रति विविध भावो का उद्वेलन हो उठता है और श्रोता वर्ण्य विषय के प्रति उन्मुक्त भाव से निर्द्वन्द्व होकर तत्व ग्रहण में समर्थ हो जाता है ।

वर्ण्य विषय की दृष्टि से इन निर्धारकों की विभिन्न कोटिया हैं—(क) यथावत्ता बोधक, (ख) आतिशय्य बोधक, (ग) मापबोधक ।

५.३.१. यथावत्ता बोधक निर्धारक विशेषणों का प्रकार्य है किसी गुण अथवा स्थिति की मात्रा अथवा परिमाण का प्रबल रूप से इस प्रकार समर्थन करना कि वक्ता ने उसके विषय मे जैसा कहा है श्रोता को उसके वैसा होने में संशय न रहे। इस कोटि के ज्ञात निर्धारक-विशेषणों की सूची नीचे प्रस्तुत की जा रही है और यथासम्भव उदाहरण भी ।

अंगै (७४)	दरजै (८२)
अंतइज (७५)	छक्कै-पंजै (८३)
अकछ (७६)	नक्की
अकन (७७)	नांमो
अणूंतौ (७८)	धापनै
अड़ीजंत (७९)	निपट
अलल (८०)	निरंध
इदक	नेगम
अैन	पूरौ
'क	बडौ
काठौ (८१)	फगत
खासो	बिलकुल
खासौ-भलौ	बोळी
घणौ	भर
जबर	मुळगौ (८४)
ठेट	सफा
थोड़ौ-घणौ	साव (८५)
	हदभात (८६)

(७४) पण इचरज री बात कै देस निकाळै री वात सुणिया ई राजकंवर अंगै ई दुमना नीं हुया।

(७५) राजा लोभी अंतइज घणौ हौ।

(७६) घणकरा अकछ हथियार भेख रै ओलै इंछा परवाण मौजां माणै।

(७७) छोटोडी राजकंवरी....बोली—परणीजूं ला तौ इण केस वाळा मोटियार नै ई, नीतर अकन कंवारी रैवूं ला।

(७८) अेक धोबी री गधौ अणूंतौ इज माठौ अर जिद्दी हौ।

(७९) ठाकर अर ठिकांणै री परधै अेक पग रै पाण हाथ जोड़ियां हाजरी में अड़ीजंत त्यार।

(८०) हजार मिनखां जित्तौ अेकलौ ई, अलल-हिसाब झूठ बोलियौ तौ ई की सुख पायौ नी।

(८१) ऊंदरौ तौ काठौ आती आयोड़ौ हौ इज।

(८२) दरजै लाचार होय राजाराणी नै राजकवंरी री बात मांनणी पड़ी।

(८३) स्याळ तौ छक्कै-पजे सावचेत हौ। वो तौ हुक्की करतौ उठै सूं सौकड़ मनाई।

(८४) थांरै मन सूं औ उर मुळगौ ई काढ़ दै।

(८५) सगळौ दरीखानौ चुप हुय ग्यौ। साव नवौ सवाल हौ। सगळा सोचन लागा।

(८६) नीवड़ौ हदभात घेर-घुमेर हौ। सूरज री किरणा ई कांई हुय जावै।

५ ३.२. आतिशय्य बोधक निर्धारक-विशेषणों की आतरिक संरचना के आधार पर पाच वर्ग किये जा सकते है। इस कोटि के समस्त निर्धारक वस्तुतः अभिव्यंजक हैं।

इन पाचो वर्गों के निर्धारकों के उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

	गु. वा. विशेषण	निर्धारक विशेषण सहित अभिव्यंजक रूप
(क)	खारौ	खारौ खट्ट, खारौ खिट्ट, खारौ खुट्ट
	गोळ	गोळ गट्ट, गोळ गिट्ट, गोळ गिट्ट
	गीलौ	गीलौ गच्च, गीलौ गिच्च, गीलौ गुच्च
	ढीलौ	ढीलौ ढच्च
	तीखौ	तीखौ तच्च
(ख)	खाली	खाली खणक, खाली खणच
	तीखौ	तीखौ तणच
	फूटरौ	फूटरौ फणक
	फोरौ	फोरौ फणक

(ग) इस कोटि के निर्धारक सामान्यतः गुणवाचक विशेषणो सहित ही प्रवस्थित होते हैं।

टिप्पाटोळ	धोळौ फक्क	कालौ कुराड़
हुब्बा होळ	काळौ मिट्ट	ठालौ ठलाक
ऊजलौ फट	काळौ धाक	मोटियार काटौ
चानणो घट्ट	त्यार टंच	बूढौ खंखर
नागौ तड़ंग	मोठौ गुटक	सूखौ खणक
पाधरौ सणक	धापु धप्प	

(घ) इस कोटि के निर्धारक भी सामान्यतः गुणवाचक विशेषणों सहित ही प्रवस्थित होते हैं।

ठाडौ हेम	सारौ म्राक	धारौ जेर
म्रात ममोलिया	लाबौ लक्कड़	बूढौ ढंण

काचो भिग	फीको धूक	रातो लाल
ठंडो धेंड़	चौड़ो चौगान	फाटो पूर
सफेद भिग	पाधरो धूम	धोलो चन्दन
मीठो मिसरी		

(ङ) अन्य कोटि के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं ।

रातो चोळ	लीलो चम	गोरो मिछोर
हरियो चकन	लीलो झोर	मणां वंद

५.३.३. माप बोधक निर्धारक-विशेषण ऐसे पारम्परिक मापक हैं जिनके द्वारा प्रसंगानुसार वर्णित विषय, वस्तु इत्यादि के गुण-धर्म की मात्रा अथवा परिमाण-निर्धारण की अभिव्यक्ति होती है । यथा—

मात्रा निर्धारक

सोलै आना परवस	दरदर रो मंगतो
इक्कीस आंना पतियारो	भुजभुज रा लाख
दो वास ऊंडो	
पांच मण गुळ	
धोबो-धोबो धुड़	
घड़ा रै मूंडै दारू	

परिमाणाधिक्य वाचक निर्धारक

इन निर्धारकों की वाक्यों में अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(८७) धोरो भळे गुणचिया-गुणचिया पांणी पायो ।

(८८) इण भात मार्थ मे धोबा-धोबा धूळ उछाळतो, हाथ पग हिलावन रै गुण नैं बिड़दावतो बो अतनांक मे नाचतो-कूदतो रमग्यो ।

(८९) मोठा रो पोट धोल अजुतै कोड मूं वानैं पराया । छिमरा-छिमरा लार पाणी पायो ।

५.३.४. कतिपय माप निर्धारकों की अभिव्यंजना उनके अभिधेयार्थ पर निर्भर न होकर, सन्दर्भ की सापेक्षिकता के माध्यम से व्यक्त होती है, यथा वाक्य संख्या (९०) में "एक मंगाळ भरनै गाडिया गो दूध" देखने में सामान्य कथन है, किन्तु इसमें मात्रा में दूध की प्राप्ति असाध्य कार्य है । यहां सन्दर्भ द्वारा अत्यधिक मात्रा का संकेत है । इसी प्रकार के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(९०) बावड़ी रै मांय पेफावती राणी काळै दिन ऊगतां पाण सूवेला। ब्यांरै पागै चार सिध ऊभा। पेफावती रै माथै कसूंबल साल ओढ़ियोड़ी। पगांतियै हळदी रो रूंख। सिरांतियै मेहदी रो रूंख। सिधां नै अेक गंगाल भरनै सांढिया रो दूध पाया वै घुस्कारो ई नीं करै। नीतर ब्यांरै अेकण साथै झपटै नै रूं-रूं फाड़ न्हाकै।

(९१) तद राजा जी रो सांनी मिलिया दीवांण जी पैंसी सरत बताई। नंदी रै मांय सात बारी चिरमियां अेक ठौड़ राळैला। सगळी चिरमियां तीन दिन में पाछी भेळी नी करै तो पाणी में पीलीजैला।

५.३.५. नीचे कतिपय माप बोधक निर्धारक पदबन्धो की अवस्थिति के उदाहरण निर्दशित किये जा रहे है।

(९२) माखण री सौरम अर मिसरी रै मिठास सूं वो मन में जाणै जित्तो राजी हुयो।

(९३) राजा हुत्तंड व्हे ज्यूं मचियोड़ो हो।

(९४) म्हैं गलती मांय आ इज करूं कै इण कमसल जात नै जीवती छोडूं।

५.४. शब्दगत रचना के आधार पर समस्त विशेपणो को दो कोटियो मे परिगणित किया जा सकता है, (क) विकार्य, अर्थात् जिनके साथ अपने विशेप्यों के अनुसार लिंग तथा वचन के वाचक प्रत्ययो का योग होता है (यथा भलो छोरो, भली छोरी इत्यादि), तथा (ख) अविकार्य, अर्थात् जिनके साथ अपने विशेप्यों के अनुसार लिंग तथा वचन के वाचक प्रत्ययों का योग नही होता (यथा रोगी मिनख, अखूट आणद, अखूट माया इत्यादि)।

विकार्य विशेपणो मे समस्त विकार्य गुणवाचक तथा कतिपय निर्धारक विशेपण, विकार्य तथा अविकार्य विशेपणो के अभिव्यजक रूप, गणनामूलक सख्यावाचक, कतिपय प्रभागक सख्यावाचक (यथा आधो, पूणो, डोडो इत्यादि), क्रमसूचक संख्यावाचक, आनुपातिक सख्यावाचक अथवा इन संख्यावाचको के अभिव्यंजक रूपों को परिगणित किया जा सकता है। नीचे विकार्य विशेपणो की शब्द रूप गत रूपावली और उनके विशेप्यों के साथ लिंग-वचनानुसार अन्वय का निदर्शन भलो विशेपण की छोरी और छोरो संज्ञाओं के साथ अवस्थिति के उदाहरणो द्वारा किया जा रहा है।

		एक वचन	बहुवचन
पुंल्लिग	ऋजु	भलो छोरो	भला छोरा
	तिर्यक	भला~भलै छोरा-छोरै	भला~भलां छोरा
स्त्रीलिंग	ऋजु	भली छोरी	भली छोरियां
	तिर्यक	भली छोरी	भली छोरियां

संख्येय संज्ञाओं से निर्मित यौगिकों में अवस्थित घटकों में लिंग भेद होने पर विकार्य विशेषण की अवस्थिति पुल्लिग बहुवचन मे होती है (९५)।

(९५) दोनूं भाई-बैंन भणूंता भला है।

५.५. अभिव्यंजक रूप रचना के अतिरिक्त वाक्यों मे विशेषणो की अवस्थिति "वैण सगाई" (अथवा अनुप्रास) के आधार भी होती है। वैण सगाई का निदर्शन करने वाले कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(९६) हुबाहुब हिबोळा भरतो डाडो अर निरमल पाणी।

(९७) वांनै देखतां ई ठळाक ठळाक रोवण लागो, जांणै सांवण री काळी कळायण बरसो व्है।

(९८) ....बनैरी मां किंवाड़ रै ओळैं झोंणैं झोळैं सूं मूंडो काढनै बोली....

(९९) ....जे राती रोहो मे अेकळै मिनख नै मिळ जावै तौ छाती फाट जावै।

५.६. विशेषणो से निर्मित आमेड़ित रचनाएं (जिनमें से कतिपय का उल्लेख संख्यावाचकों की रचना के प्रकरण में किया जा चुका है) भी अभिव्यंजक संरचना का अंग हैं। इनके कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

(१००) भोपणा भंवारा कड़बटीला। बोखौ मूंडो। नीचैं लुलियोड़ो तीखौ नाक। फाटोड़ी-फाटोड़ी आखियां।

(१०१) उण कंवळै-कंवळै उरणिया नै देखतां ई उणरै लाळा पड़ण ढूकी।

(१०२) बनै री मा अर बड़ी मा चाकी पीसती थारी भूंडी-भूंडी बातां करती ही।

(१०३) दोनां रै न्यारी-न्यारी आंखियां है अर न्यारी-न्यारी जोतां है।

रौ-अन्तर्निविष्ट आमेड़ित रचनाओं के भी कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(१०४) पाछौ रौ पाछौ गांव रपटूं, म्हनै केई काम सारणा है।

(१०५) अठै भी ठोट रौ ठोट रै जावैला।

५.७. सार्वनामिक विशेषण कोई भिन्न शब्द रूपात्मक संवर्ग न होकर, सर्वनामों की विशेषण स्थानीय अवस्थिति पर आधृत उनके वाक्यविन्यासात्मक संवर्गीकरण का वाचक शब्द है। भाषा के समस्त सर्वनामों का विवरण प्रकरण संख्या (४) में किया जा चुका है। इसलिये उनके वाक्य विन्यासात्मक प्रकार्यों की मात्र सूची प्रस्तुत करके आवृत्ति करना न तो व्याकरणिक दृष्टि उपयुक्त है और न ही सरचनात्मक स्पष्टीकरण के लिए उपयोगी। इसलिए इस विषय का विवेचन वाक्यविन्यास विभाग में किया जायगा।

६. क्रिया

६.१. प्रा. राजस्थानी क्रिया प्रकृतियां अपनी आंतरिक संरचना के अनुसार वर्गीकृत होती है और पक्ष, वृत्ति तथा काल आदि के वाचक प्रत्ययों से युक्त होकर इनके समापिका क्रिया रूपो की रचना होती है। आन्तरिक संरचना के अन्तर्गत इनके प्रकृतिरूप-निर्माण तथा वाच्यादि तत्वों का विवेचन आवश्यक होता है।

६.२. प्रकृतिरूप-निर्माण के आधार पर क्रियाओं का निम्न वर्गों मे विभाजन किया जा सकता है :

(क) अनुकरणात्मक क्रिया-प्रकृतियां, यथा कचरणौ, धमोड़णौ, धरड़णौ, धरहड़णौ, धसमसणौ, पंपोळणौ इत्यादि। इनका विशेष विवरण अनुकरणात्मक प्रातिपदको के रूपनिर्माण के अध्याय मे किया जायगा।

(ख) संज्ञा तथा विशेषण जात क्रिया प्रकृतियां, यथा

कोडावणौ	अंकुरणौ	मीठावणौ
मोलावणौ	अंणसणौ	पूरणौ
उजाड़णौ	अंवेरणौ	अंधियारणौ
उफाणणौ	अफडणौ	
उबाळणौ	सिणगारणौ	
खोतरणौ	अैठणौ	
डांमणौ	उथापणौ	
खरचणौ	उथाळणौ	
डरणौ	खीभणौ	
ठगणौ	आदेसणौ	

(ग) क्रियाप्रकृति अनुक्रम, जो कि दो स्वतन्त्र क्रियाप्रकृतियो की पारस्परिक आसत्ति से व्युत्पन्न होते हैं, यथा खावणौ-पीवणौ, खावणौ-कमावणौ, कमावणौ-खावणौ, कैवणौ-सुणणौ आदि।

(घ) यौगिक क्रियायें जिनमे संज्ञा अथवा विशेषण के साथ विशिष्ट रचनांग क्रियाओं की आसत्ति से क्रियाप्रकृति रूपो की रचना होती है। यथा राजी हुवणौ, ध्यान राखणौ, ध्यान लगावणौ, सोच करणौ, काबू राखणौ इत्यादि।

(ङ) संयुक्त क्रियाएं, जिनमें मूल क्रिया प्रकृतियो के साथ (जिनमें उपरोक्त वर्णित सभी वर्गों की क्रियायें तथा वर्ग (च) की क्रियायें भी सम्मिलित हो सकती है), कतिपय विवारक क्रियाओं की आसक्ति होती है। यथा कचर जावणी, खा-पी लेवणी, काबू राख सकणी, निकळ जावणी, उमड़ आवणी, छलक आवणी, सुण चुकणी, ले पधारणी इत्यादि।

(च) मूल क्रियायें जिनके अन्तर्गत् मात्र क्रियाप्रकृति शब्दों को सम्मिलित किया जाता है। यथा जावणी, आवणी, बैठणी, देखणी, राखणी इत्यादि।

(छ) क्रि$_1$–क्रि$_2$ क्रियाप्रकृति अनुक्रम जिनमें अन्य विविध अनुक्रमों, यथा छोड़णी चावणी, खोलणी आवणी, कूटण संमणी, कूटण लागणी, आवणी पड़णी आदि को सम्मिलित किया जा सकता है। इस कोटि के अन्तर्गत् अन्य अनेक प्रकार के क्रि$_1$–क्रि$_2$ अनुक्रम भी है। इन सबका विवरण प्रकरण संख्या (६ १४) मे किया जायगा।

६.३. आ. राजस्थानी क्रियाप्रकृति अनुक्रमों में रूप एवं अर्थ की दृष्टि से निम्न कोटियों की रचनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है।

(क) सम्बन्धित क्रियाप्रकृति अनुक्रम
(ख) पर्यायवाची क्रियाप्रकृति अनुक्रम
(ग) विपर्यायी क्रियाप्रकृति अनुक्रम
(घ) आ- क्रियाप्रकृति अनुक्रम
(ङ) प्रतिध्वन्यात्मक क्रियाप्रकृति अनुक्रम
(च) इतर क्रियाप्रकृति अनुक्रम

६.३.१. सम्बन्धित क्रियाप्रकृति अनुक्रमो में पूर्ववर्ती क्रियाप्रकृति द्वारा वाचित क्रिया-व्यापार का उसकी अनुवर्ती गौण क्रियाप्रकृति के क्रिया-व्यापार से प्रचलित व्यवहार की दृष्टि से सम्बन्ध होता है, और दोनों क्रियाप्रकृतियों का अर्थ, कोश में प्रदत्त अर्थों के अनुसार होते हुए भी, मात्र उनका योगफल नहीं होता। यथा, खावणी-पीवणी अनुक्रम का सामान्य अर्थ है "खाने तथा पीने के क्रिया-व्यापार में प्रवृत्त होना।" यह अर्थ कोश में प्रदत्त इन क्रियाओं के पृथक-पृथक अर्थों के योगफल पर आधारित तो है परन्तु सम्पूर्ण अनुक्रम खावणी-पीवणी का वास्तविक अर्थ नहीं माना जा सकता (१)।

(१) लुगाई हूं, लुगाई रा दुख-दरद नैं जांणू हूं। म्हारो धरम बिगड़ियो, म्हारा बस थका थारो नी बिगड़ण दूं। इण घर मे थारो अंजळ है, सीर-संस्कार है, थारी मरजी व्है ज्यूं खा-पी। थनैं कुण ई ओछो देखणियो नी। लखो री बाता सुणनैं बांमणी रा जीव मे जीव आयो।

उपरोक्त उदाहरण मे खावणो-पीवणो के सामान्य अर्थ के अतिरिक्त यह अर्थ भी है कि "तुम निश्चिन्त होकर मेरे घर मे रहो" इत्यादि।

एक ही क्रियाप्रकृति अनुक्रम के भाषा मे विविध प्रसगानुसार विविध अर्थ भी हो सकते है। खावणो-पीवणो अनुक्रम की निम्न अवस्थितियों मे इसके क्रमशः अर्थ है "किसी की खातिरदारी करना (२)" तथा "किसी के गृह मे अव्यवस्था का होना (३)" इत्यादि।

(२) खावण-पीवण रो सगळो माकूल इंतजाम पैली सूं हुयोड़ो हो।

(३) म्हारा तो सगळा खाणा-पीणा ई छूटग्या।

कई सम्बन्धित क्रियाप्रकृति अनुक्रमों के दोनों अंगों मे क्रमभेद से अर्थभेद भी होता है (४, ५)।

(४) जका मेनत कर कमावै-खावै, सभ्यता और मिलणसारी नै समझै। गुणां री कदर करै, मिनखां री अदब करै।

(५) हाल विचिया कंवळा है। खावण-कमावण जोगा हुयां पैली जे थूं दुभात लायनै परै बैठाण दी तो टाबरा री कांई गत बिगड़ैला, इणरो थनै कीं अंदाज है।

उपरिलिखित वाक्यों मे कमावणो-खावणो (४) का सामान्य अर्थ है "कुछ वृत्ति, व्यापार आदि करना," और खावणो-कमावणो (५) का सामान्य अर्थ है "स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने के योग्य हो जाना" इत्यादि।

६.३.२. पर्यायवाची क्रियाप्रकृति अनुक्रमों के दोनों अंग प्राय: एक-दूसरे के पर्यायवाची होते हैं। यथा उछळणो-फादणो, उछलणो-कूदणो, घूमणो-फिरणो, लड़णो-झगड़णो, लीपणो-पोतणो, जांणणो-बूझणो, इत्यादि। अर्थ की दृष्टि से इन अनुक्रमों को समश्रकोटि अनुक्रमो की संज्ञा से अभिहित किया जा सकता है (६,७)।

(६) लोग-बाग कांई देख्यो कै मूवटा रो तूटोड़ी टाग रै समचै ई राणी री दूजोड़ी टांग तूटनै अळगो जाय पड़ी। राणी हेटै गुड़गो। तूट्योड़ी टागां सूं लोई रा रेला बहण लागा। जोस मे अठी-उठी उछळती-फादती री।

(७) जंवाई जीमैं है, लुगायां गीत गावै है, अर टाबर-टीगर उछळता-कूदता किलोळ करै है।

६.३.३. विपर्यायवाची क्रियाप्रकृति अनुक्रमो के दोनो अंग प्राय: एक-दूसरे के विपर्याय होते हैं। यथा आवणो-जावणो, घटणो-बढ़णो, उळझावणो-सुलझावणो, बणणो-बिगड़णो, चढ़णो-उतरणो इत्यादि। अर्थ की दृष्टि से इन अनुक्रमो को विपर्याय समिश्रकोटि अनुक्रमों की संज्ञा से अभिहित किया जा सकता है (८)।

(८) इण भांत रै नवा विचारां रा काचो सूत उळझावती-सुळझावती वा उठै पूगो तो राजकंवरी पूछ्यो—भुवा जो, आज मोड़ा घणां आया। घूमण नै अळगी भांय गिया काई ?

६.३.४. आ-क्रियाप्रकृति अनुक्रमों की रचना मुख्य क्रिया के साथ उसी से निर्मित आ-प्रेरणार्थक रूप की आसत्ति से होती है। यथा, करणो-करावणो, झुरणो-झुरावणो इत्यादि। अर्थ की दृष्टि से इस कोटि के अनुक्रम भी समिश्र अर्थवाची रचनाएं हैं (९)।

(९) रामा-सांमा कर-कराय'र, बांमण कैयो इज–स्याळ भाई, आज तो अेक बात माथै म्हारै दूंना रै भोड हुयगो।

६.३.५. प्रतिध्वन्यात्मक क्रियाप्रकृति अनुक्रमों की रचना मुख्य क्रिया के साथ उसी से निर्मित उसके प्रतिध्वन्यात्मक रूप की आसत्ति से होती है। यथा, ढांगणो-ढूंगणो, घूमणो-घामणो, लिखणो-विखणो, इत्यादि।

६.३.६. इतर क्रियाप्रकृति अनुक्रमों में सामान्यत: ऐसी रचनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है जिनका द्वितीय अंग भाषा में स्वतन्त्र क्रिया के रूप में अवस्थित नहीं होता। यथा, परखणो-पातणो, मांगणो-सांगणो, मिळणो-जुळणो, इत्यादि।

६.४. अन्य भारतीय आर्य भाषाओं के समान आ. राजस्थानी में भी क्रिया-नामिक पदबन्धों (संज्ञा$_2$ + परसर्ग + संज्ञा$_1$ अथवा संज्ञा$_2$ + परसर्ग + गुणवाचक विशेषणों) के साथ रचनांग क्रियाओं की आसत्ति से विविध प्रकार की क्रिया-व्यापार बोधक रचनाएं होती हैं, जिन्हें सामान्यतः यौगिक क्रियाओं की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। जैसा कि उपरोक्त परिभाषा से स्पष्ट है, इन यौगिक क्रियाओं के दो मुख्यांग होते हैं— (क) क्रियानामिक पदबन्ध तथा (ख) रचनांग क्रिया। यथा, ध्यान संज्ञा को संज्ञा$_1$ (=सं$_1$) मानकर, इससे निर्मित यौगिक क्रियायें हैं, सं$_2$ रौ ध्यांन आवणो, सं$_2$ रौ ध्यांन लगावणो, सं$_2$ सारू ध्यांन लगावणो, सं$_2$ रौ ध्यांन करणो, सं$_2$ रौ ध्यान देवणो, सं$_2$ माथै ध्यांन देवणो, सं$_2$ रो ध्यांन राखणो, सं$_2$ रो ध्यांन रैवणो, सं$_2$ रै वास्तै ध्यांन धरणो, सं$_2$ रो ध्यांन छोडणो, सं$_2$ नै ध्यांन बंधणो, इत्यादि। इसी प्रकार सं$_2$ + परसर्ग + राजी क्रियानामिक पदबन्ध को (जिसमें सं$_1$ के स्थान पर विशेषण राजी की अवस्थिति हुई है) सातंय मानकर, इससे निर्मित यौगिक क्रियाओं के उदाहरण हैं, सं$_2$ माथै राजी हुवणो, सं$_2$ सूं राजी हुवणो, सं$_2$ रै सारू राजी हुवणो, सं$_2$ नै राजी करणो, सं$_2$ नै राजी राखणो, सं$_2$ माथै राजी रैवणो, इत्यादि।

इन दोनों कोटियों के उदाहरणों में क्रमशः ध्यान संज्ञा और राजी विशेषण का क्रियाकरण हुआ है। इसके साथ-ही-साथ यह तथ्य भी द्रष्टव्य है कि एक ही क्रियानामिक पदबन्ध के साथ विविध रचनांग क्रियाओं की अवस्थिति हो सकती है, और एक ही रचनांग क्रिया के साथ विविध क्रियानामिक पदबन्धों की।

६.४.१. यौगिक क्रियाओं में अन्य समस्त अंगों का सातत्य होने पर भी परसर्गों की अवस्थिति मे विभेद होने पर विविध रूप से सूक्ष्म अर्थ-भेद हो जाता है (१०, ११)।

(१०) कोई अबूझ बाळक सोनै सूं लदियोड़ो अेकलोई धकै पड़ जावै तो ठग सपना मे ई उण बाळक रे साथै धोखो नी करै।

(११) ईयां कर-कर केई विळिया वूढा-वडेरा नै धोखो दीनो, धूर्ते सू उलटो करी अर होकै रो पाणी गिटियो।

इन वाक्यो मे स$_1$-सज्ञा धोखो के अर्थ मे परसर्ग रै साथै (१०) और नै (११) के आधार पर जो सूक्ष्म अर्थ-भेद हुआ है वह स्वतः स्पष्ट ही है।

६.४ २. क्रियानामिक पदबन्धों में अवस्थित स$_1$—संज्ञाएं सामान्यतया भाववाचक होती है जैसा कि ऊपर के उदाहरणो से स्पष्ट है। किन्तु वस्तुवाचक सं$_1$—संज्ञाओं की इन परिसरों मे अवस्थिति पर विशेष प्रतिबन्ध नही है। वस्तुवाचक सं$_1$—सज्ञाएं दो प्रकार की होती है:—(क) शारीरिक अंग नाम बोधक, तथा (ख) आधारवाचक अभिव्यंजक संज्ञाएं।

शारीरिक अंग नाम बोधक संज्ञाओं की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१२) सावळ कान देयनै सिंघ री होकारो सुणी तो वानै संतां रै मुकाम सूं ई आवती सुणीजी।

(१३) जद वाप ई आंखियां फेर ली तो पछै फूलकंवर किण आगै मुरझायोड़ै हिवड़ै रो सताप परगट करै।

उपरोक्त वाक्यो मे कान देवणो (१२) तथा आंखियां फेर लेवणो (१३) दोनों यौगिक क्रियाएं हैं जिनमें कान सज्ञा श्रवण तथा आंखियां दृष्टि की प्रतिस्थानीय है। ये दोनो यौगिक क्रियाएं क्रमशः ध्यानपूर्वक सुनने तथा किसी के प्रति घृणा आदि भावों की अभिव्यक्ति कर रही हैं।

गुणवाचक अभिव्यंजक रचनाओं के अनेक उदाहरण प्रकरण संख्या (३.५.१) मे दिये जा चुके हैं। नीचे एक और उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है (१४)।

(१४) घर रो मिनख ई जद लाज री वाड़ लाघे तो पछै कुण उणरो रिछ्या कर सकै।

इस वाक्य में अवस्थित यौगिक क्रिया लाज री वाड़ लांघणो में स$_2$—संज्ञा वाड़ गुणवाचक अभिव्यंजक संज्ञा है और समस्त यौगिक क्रिया के अर्थ "किसी से निन्दनीय अथवा शर्मनाक व्यवहार करने" के आधार पर इस वाक्य मे वाड़ शब्द का प्रयोग सर्वथा संगत है।

यौगिक क्रियाओं में वस्तुवाचक सं$_1$–संज्ञाओं की अवस्थिति तत्सम्बन्धी संकल्पनाओं की विविध आविर्भावनाओं से सम्बन्धित होती हैं, और उपरोक्त प्रकार के वाक्यों में इनका अर्थ कोश में दिये अर्थ से भिन्न हो जाता है।

६.४.३. कई यौगिक क्रियाओं के संरचना की दृष्टि से एकाधिक रूप भी भाषा में उपलब्ध होते हैं। यथा, सं$_2$ रै माथै काबू राखणो (१५) तथा सं$_2$ नै काबू में राखणो (१६)।

(१५) थारै बेबेतै हुतां ई म्हनैं रीस तो घणी आई, पण मन माथै काबू राखियो।

(१६) आज पोहरे री बात इत्ती खारी लागै सो पैला मन नै काबू में राखणो हो।

इसी प्रकार के कुछ अन्य उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

(१७ क) सं$_2$ रै माथै कब्जो कर लेवणो

(१७ ख) सं$_2$ नै कब्जे में कर लेवणो

(१८ क) सं$_2$ नै इनाम देवणो

(१८ ख) किणी नै सं$_1$ इनाम में देवणो

(१९ क) सं$_2$ नै रीस आवणो

(१९ ख) सं$_2$ री रीस में आवणो

अनेक रचनाओं, यथा धोखे में आवणो, काम (में) आवणो, धोखे में रैवणो आदि के मूल सं$_2$ + परसर्ग + सं$_1$ + रचनाग क्रिया रूप भाषा में उपलब्ध नहीं होते।

अनेक यौगिक क्रियाओं (यथा, किणी री आदर करणो) के प्रतिस्थानीय क्रिया पदबन्ध भी (यथा, किणी नै आदरणो) आदि भाषा में उपलब्ध होते हैं। इस प्रकार के अतिरिक्त उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं (२०-२३)।

(२० क) किणी री रुखाळी करणो

(२० ख) रुखाळणो

(२१ क) किणी री पिछाण करणो

(२१ ख) पिछाणणो

(२२ क) पूरो करणो

(२२ ख) पूरणो

(२३ क) किणी रै माथै रीस आवणो/करणो

(२३ ख) रिसावणो

६.४.४. सकर्मक और अकर्मक यौगिक क्रियाओं के कई युग्मों में रचनांग क्रियायें भिन्न-भिन्न भी होती हैं (२४-२६)।

	सकर्मक यौगिक क्रिया	अकर्मक यौगिक क्रिया
(२४)	$स_2$ नै नसीयत देवणो	$सं_2$ नै नसीयत मिलणो
(२५)	$सं_2$ में सळ घालणो	$सं_2$ में सळ पड़णो
(२६)	$स_2$ रौ पिदड़को काढणो	$सं_2$ रौ पिदड़को निकळणो

उपरोक्त उदाहरणों में क्रमश: देवणो : मिलणो, घालणो : पड़णो तथा काढणो : निकळणो रचनांग क्रियायें एक-दूसरे को सकर्मक : अकर्मक प्रतिस्थानीय हैं। यह प्रवृत्ति भाषा मे यौगिक क्रियाओं तक हो सीमित है।

६.५. संयुक्त क्रियाओं द्वारा किसी भी क्रियाप्रकृति के वाच्य व्यापार की विशिष्ट आविर्भावनाओं का विवरण प्रस्तुत किया जाता है। उक्त आविर्भावनाओं के विविध पक्षों अथवा प्रावस्थाओं की अभिव्यक्ति एवं इन दोनों के प्रति वक्ता के दृष्टिकोण की अभिव्यंजना, मुख्य क्रिया से आसक्त विवारक क्रियाओं द्वारा होती है।

आ. राजस्थानी विवारक क्रियाओं को तीन कोटियों मे विभाजित किया जा सकता है—(क) पक्ष विवारक क्रियाए, (ख) प्रावस्था विवारक क्रियाएं, तथा (ग) अभिव्यंजक विवारक क्रियाएं। इन तीनो कोटियों की विवारक क्रियाओं का उनके प्रकारों एवं उदाहरणों सहित विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

विवारक क्रियाओं के साथ अवस्थिति के आधार पर समस्त राजस्थानी क्रियाप्रकृतियो के दो विभाग है—(क) व्यंजनात (यथा, कर–, जांण–, ऊठ– इत्यादि), और (ख) स्वरान्त (यथा आ–, जा–, खा–, पी–, छू– इत्यादि)। विवारक क्रियाओं के साथ *अवस्थिति होने पर समस्त स्वरान्त क्रियाप्रकृतियो के साथ –य का आगम* हो जाता है, यथा आय सकणो, जाय चुकणो, खाय लेवणो, पीय जावणो, छूय सकणो इत्यादि। कभी-कभी इस नियम के अपवाद भी मिल जाते हैं किन्तु इन अपवादो के होते हुए भी य–आगम को वैकल्पिक नही माना जा सकता।

६.५.१. आ. राजस्थानी की पक्ष विवारक क्रियाएं निम्नलिखित हैं।

(१) शक्यताबोधक
सहजता अथवा
अध्यवसिति वाचक — सकणो (२७-३१)।

(२) प्रक्रमबोधक
नैरन्तर्यवाचक — रहणो (३२, ३३)।
समापनवाचक — चुकणो (३४)।

(३) संक्रमणबोधक

अवसितिवाचक	आवणो (३५, ३६)।
पर्यवसितिवाचक	जावणो (३७, ३८)।

(४) संक्रमणबोधक

स्वनिमित्तवाचक	लेवणो (३९, ४०)।
परनिमित्तवाचक	देवणो (४१, ४२)।

इन पक्ष-विवारकों की वाक्यों में अवस्थिति के उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

(२७) गोफणवाळो रै डर आगै वो उणरै रूप नै सावळ निरख ई नीं सकियौ। उणियारा रै सांम्ही जोवण री हीमत नी हुई।

(२८) झूठ नीं बोलियां तौ वांणिया बिणज ई नी कर सकै, पछै उणरै तो चोरी रौ धंधौ हो।

(२९) उण सिंघ रै मिस् वा फेफावतो रांणी री माया ही। नीतर बापड़ा सिंघ री कांई जिनात कै घोड़ा सूं आगै जाय सकै।

(३०) व्याह रा भाग अैड़ा माड़ा नी हुय सकै। राम जांणै काले रौ सूरज कांई बधाई लावै। इण घात री घड़ी भर पैला किणनै वेरो हो। अणचींत्यौ दुख प्रगटै तो अणचींत्यौ सुख ई तूठ सकै।

(३१) अर उठी व्याह वींदणिया नै औ पक्को विस्वास हो कै जको मोटियार पैफ रा फूल लाय सकै वो यूं सोरै सास मरणियौ कोनीं।

(३२) ....आयनै रांणी नै कैयौ—राजा तो आज दूजो व्याव कर रिया है, जको औ पड़लै रौ सैमान लेयनै जाय रियौ हूं।

(३३) पण आपरौ न्याव म्हांनै कबूल है। म्हे दूना ई राजी खुसी आपनै पंच थाप रियां हां।

(३४) की तो गाववाळा पैली सूं ई उण रै बारै में केई बातां सुण चुका हा।

(३५) मां-बेटी नै रोवता देख उणरी आंखियां में आंसू छळक आया।

(३६) आप जैड़ै तपसी री सेवा रौ मौको म्हांनै फेर कद वण आवैला।

(३७) अबै किणी भांत रौ चढावौ कै भेंट आवती तौ आधी उण रा सासरिया लेय जावता, अर आधी ठिकाणै वालकै हुय जाती।

(३८) पण थारै बिना म्हारो जीव फड़का चढ़ जावै।

(३९) वो सगळी बस्ती नै हाथ जोड़तो बोलियौ—थे तौ सगळा म्हनै उठतां ई रोड़ लियौ।

(४०) अर ठाकर सा जे ओ सोच लियो कै म्हैं हवा में अधर उडतो जाय सकूं तो वे घोड़ी देवैला ई कोनी।

(४१) साथणियां वींदणी नै धक्को देय मेड़ी मांय रोड़ दी।

(४२) चिड़ी तो आपरी चांच मे ऊदरी री पूंछ पकड़नै झट करती रा बारै काड दी।

६.५.२. आ. राजस्थानी को प्रावस्था विवारक क्रियाएं निम्नलिखित हैं।

(५) उत्क्रमण बोधक

आवेगात्मक	ऊठणो (४३)।
संवेगात्मक	बैठणो (४४,४५)।

(६) अवक्रमण बोधक

आकस्मिक	पड़णो (४६,४७)।
अनाकस्मिक	न्हाखणो (४८)।

(७) सीमाक्रमण बोधक

आरम्भ माणोत्तर	{चालणो (४९,५०)। हालणो
समापणपूर्व	छूटणो (५१)।

(८) उपक्रमण बोधक

प्रत्यक्ष	रखणो (५२,५३)।
परोक्ष	छोड़णो (५४)।

उपरोक्त विवारक क्रियाओं की वाक्यो मे अवस्थिति के उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(४३) जै जै कारा सूं कोट गूंज ऊठियो। झिरोखै में बैठी लुगाया ई सतां री जै बोली।

(४४) ... वांनै कैयो कै आंपारा भूवाजी कठै ई आंपा रै साथै घात नी कर बैठै।

(४५) अै लुगाया तो सगळी दुनिया नै ई लै बैठेला।

(४६) उणरी आंखियां मे आसू उमड़ पड़िया।

(४७) इण भांत वदळीजियोड़ै दिन-राता री गेड़ो अकथ आणद रै सागै घूमतो हो कै अणछक अेक मंज आय पड़ियो।

(४८) वो तो पछै असी सोचो नीं कोई मूं डो, वेद व्यास नै आपरै दोनूं हाथा झाल उणरी घाटो मरोड़ न्हाखो।

(४९) म्हनैं राज-दरबार मे ले चालो, म्हैं इणरी म्यांनी बतावूं'ला ।

(५०) पैंली सटके देणी रा थे म्हनैं थारी धुरकाळ खनैं ले हालौ ।

(५१) ....तद बो नागो तरवार लेय कायर री कळाई भाग छूटो ।

(५२) पगरखियां कादे में धसण कारण डावें हाथ में झेल राखी ही ।

(५३) थे म्हानैं काई समझ राखिया हौ ।

(५४) सत राव चोरियोड़ा खजाना री पाई री पाई चोरां खनैं सूं खोसनैं आपरै मुकांम में जावतैं सूं राख छोडी ही ।

६.५.३. आ. राजस्थानी की अभिव्यंजक विवारक क्रियाएं निम्नलिखित है ।

(९) संक्रमण बोधक
  अवसिति अथवा
  पर्यवसिति वाचक — पधारणी (५५) ।

(१०) संक्रमण बोधक
  स्वनिमित्तवाचक — लिरावणौ (५६) ।
  परनिमित्तवाचक — दिरावणौ (५७,५८) ।

(५५) आपरी दाय पड़ै जित्ता नगीना ले पधारौ ।

(५६) चेलो तुरत जबाब दियौ— बाप जो, आखियां मीच लिरावौ, आपै ई अंधारौ हुय जावैला ।

(५७) आप फोड़ा नी खावणी चावौ तौ म्हनैं मया बगसाय दिरावौ, म्हैं तोड़ लावूं ।

(५८) तद राजकंवर कैयौ— अवारूं तौ म्हारै कीं नी चाहीजे । फगत दूध री मया कर दिरावौ तौ जांणे आखी दुनिया रौ राज भरपायो ।

६.६. मूल क्रियाप्रकृतियों के अतिरिक्त कतिपय विवारक क्रियाओं की अवस्थिति वाचक तथा अपूर्णतावाचक कृदन्तों के साथ भी होती है ।

पूर्णतावाचक कृदन्त परक रूपो के साथ अवस्थित होने वाली विवारक क्रियाएं हैं पूर्णता णो (५९,६०) तथा रैवणो (६१,६२) ।

(५९) चितारण रै समचै ई दौड़िया आवाला । हाथिया रो सिरदार इण नैनै सै'क आवर ऊंदरियै री बात सुणनै डगडग हंसियो ।

(६०) इण अबखी वेळा मे हाथी उणनैं याद करियो । याद करतां ई ऊंदरां रो सिरदार तो न्हाटो आयो ।

(६१) अेक बार लोग उखड़ गया तो पछै वस में करणा दोरा है। राज-काज संभाळण मे हरदम गुड़को वणियो रैवेला।

(६२) गवाळियो अेक लांठो डाग लेयनै लुकियोड़ो बैठो रियो।

अपूर्णतावाचक कृदन्त परक रूपों के साथ अवस्थित होने वाली विकारक क्रियाएं आवणो (६३), जावणो (६४) तथा रैवणो (६५)।

(६३) थान रै मांय ऊभा रा गाभा आला व्है जको थे तो मारग चालता आया।

(६४) हाथियां री सिरदार आपरै पगां सूं धुड़ नै खूंदतो गयो।

(६५) वो भगती भाव सूं झूमतो रियो अर वस्ती रा सगळा लोग ई घांटियां हिलावता रिया।

६.७. वाच्य के आधार पर आ. राजस्थानी क्रियाप्रकृतियों के निम्नलिखित शब्द-रूपात्मक सवर्ग स्थापित किये जा सकते हैं।

(क) –ईज प्रत्यय युक्त मूल भाववाच्य क्रियाएं; यथा उपरीजणो, कंदीजणो, धैळीजणो, घूंपीजणो, गोटीजणो, कजळालइजणो, गैळीजणों, कांवीजणो, गदीजणो, गरमीजणो, तुईजणो, थाबीजणो, नजरीजणो, पसीजणो इत्यादि।

(ख) मूल अकर्मक क्रियाएं जिनके सकर्मक प्रतिरूप भाषा में उपलब्ध नही होते, यथा आवणो, जावणो, सूवणो, जागणो, डूबणो इत्यादि।

(ग) अकर्मक वाच्य क्रियाएं जिनके सकर्मक वाच्य प्रतिरूप विविध प्रक्रमों द्वारा व्युत्पन्न होते हैं। क्रियाओ के निम्न वर्ग हैं।

(१) व्यंजनात अकर्मक क्रियाप्रकृतिया जिनके मध्यवर्ती –अ– के स्थान पर –आ– का आदेश करके सकर्मक वाच्य प्रतिरूप निर्मित होते हैं।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य प्रतिरूप
अंकणो	आंकणो
अंजणो	आंजणो
कटणो	काटणो
कतणो	कातणो
खंचणो	खांचणो
गळणो	गाळणो
गंठणो	गांठणो

(२) व्यंजनांत अकर्मक क्रियाप्रकृतिया जिनके मध्यवर्ती –इ– के स्थान पर –ए– का आदेश करके सकर्मक वाच्य प्रतिरूप निर्मित होते है।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य प्रतिरूप
खिरणौ	खेरणौ
धिरणौ	घेरणौ
टिकणौ	टेकणौ

(३) व्यजनात अकर्मक ,क्रियाप्रकृतियां जिनके मध्यवर्ती –उ– के स्थान पर –ओ– का आदेश करके सकर्मक वाच्य रूप निर्मित होते हैं।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य प्रतिरूप
कुरणौ	कोरणौ
घुटणौ	घोटणौ
घुळणौ	घोळणौ
चुभणौ	चोभणौ
चुळणौ	चोळणौ
जुड़णौ	जोडणौ
टुळणौ	टोळणौ
खुबणौ	खोबणौ

(४) व्यंजनात अकर्मक वाच्य क्रियाए जिनके मध्यवर्ती –इ– के स्थान पर –ई– अथवा –उ– के स्थान –ऊ– का आदेश करके सकर्मक वाच्य प्रतिरूप निर्मित होते है।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य प्रतिरूप
चिरणौ	चीरणौ
पिसणौ	पीसणौ
पिटणौ	पीटणौ
हुनणौ	हूनणौ
पुंछणौ	पूंछणौ
लुंटणौ	लूंटणौ

(५) व्यंजनांत अकर्मक वाच्य क्रियाओ के उपान्त्य –अ– के स्थान पर दीर्घ –आ– का आदेश करने से उनके सकर्मक वाच्य रूप निर्मित होते हैं।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य रूप
अवतरणौ	अवतारणौ
उखड़णौ	उखाड़णौ
उछरणौ	उछारणौ

(६) कई –अ– स्वरान्त अकर्मक वाच्य क्रियाओ मे –अ के स्थान पर –आव का आदेश करने से उनके सकर्मक वाक्य रूप निर्मित होते है।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य रूप
उगणो	उगाणो~उगावणो
उचकणो	उचकाणो~उचकावणो
खसकणो	खसकाणो~खसकावणो
गिरणो	गिराणो~गिरावणो

(घ) अनेक सकर्मक वाच्य क्रियाएं ऐसी है जिसके अकर्मक वाच्य रूप भाषा में उपलब्ध नहो है। यथा, करणो, लिखणो, देवणो, लेवणो, न्हाखणो इत्यादि।

(ङ) अनेक अकर्मक वाच्य क्रियाओं के सकर्मक वाच्य प्रतिरूप उपरिलिखित नियमानुसार निर्मित नहीं होते।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य प्रतिरूप
बिकणो	बेचणो
टूटणो	तोड़णो
फूटणो	फोड़णो
छुटणो	छोड़णो
दुड़णो	दौड़णो
धुपणो	धोवणो
बिखरणो	बिखेरणो
निमणो	नामणो
निवड़णो	निवेड़णो

(च) अनेक क्रियाप्रकृतियां ऐसी है जिनकी अकर्मक एवं सकर्मक दोनों वाच्यों में, बिना किसी व्याकरणिक प्रतिबन्ध के, अवस्थिति होती हैं। ऐसी क्रियाओं के अन्तर्गत अनुकरणात्मक (विशेष रूप से –आ प्रत्यय). संज्ञा तथा विशेषण-जात क्रियाओं को भी सम्मिलित किया जा सकता है। इस कोटि की क्रिया-प्रकृतियों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

खटखटावणो	आदरणो
फड़फड़ावणो	भूलणो
थड़थड़ावणो	मलापणो
तमतमावणो	मावणो
भनभनावणो	भरणो
झनझनावणो	पलटणो
टमटमावणो	बदलणो
मुटमुटावणो	उलटणो
छटछटावणो	
धमधमावणो	

(घ) अनेक क्रियाप्रकृतियों के एकाधिक रूप भाषा में प्रचलित हैं।

दीसणो~दीधणो~दीठणो
वैसणो~वैठणो
डरणो~डरपणो
खदबदणो~खदबदावणो
जगमगणो~जगमगावणो
डगमगणो~डगमगावणो
हड़बड़णो~हड़बड़ावणो

६.७.१. प्रकरण संख्या (६.७) में (ग ६) कोटि की सकर्मक क्रियाप्रकृतियों के **–आ और –आव** अन्त्य वैकल्पिक परिवर्तों का उल्लेख किया गया है। वस्तुतः भाषा का सामान्य नियम है कि प्रत्येक **–आ** अन्त्य मूल अथवा व्युत्पन्न क्रियाप्रकृति का एक अन्य **–आव** अन्त्य वैकल्पिक परिवर्त होता है। इस प्रकार की क्रियाप्रकृतियों के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

आणो~आवणो
जाणो~जावणो
लगाणो~लगावणो
उठाणो~उठावणो
अटकाणो~अटकावणो
रमाणो~रमावणो
रखाणो~रखवाणो
गवाणो~गवावणो

६.८. आ. राजस्थानी क्रियाप्रकृतियों के साथ पक्ष, वृत्ति, तथा काल आदि तत्त्वों के बोधक प्रत्ययों के योग से इनके समापिका क्रियारूप निर्मित होते हैं।

पक्ष, वृत्ति, काल आदि तत्त्वों के अतिरिक्त क्रियारूपों के साथ कर्त्ता अथवा कर्म के बोधक तत्त्व पुरुष, लिंग आदि भी अन्वय द्वारा सन्निहित रहते हैं।

६.८.१. समापिका क्रियारूपों में विन्यस्त समस्त तत्त्वों की व्यवस्था को समझने के लिए यह आवश्यक है कि आ. राजस्थानी क्रिया रूपावली का रचनात्मक वर्गीकरण करके, उसमें अन्तर्निहित परिच्छेदक अभिलक्षणों का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाए। रचनात्मक वर्गीकरण की दृष्टि से समस्त आ. राजस्थानी समापिका क्रियारूपों को चार कोटियों में विभक्त किया जा सकता है।

(क) पूर्णतावाचक कृदन्त से निर्मित क्रियारूप
(ख) अपूर्णतावाचक कृदन्त से निर्मित क्रियारूप

(ग) कृदन्त विशेषण से निर्मित क्रियारूप
(घ) क्रियाप्रकृति से निर्मित क्रियारूप

६.८.१.१. पूर्णतावाचक कृदन्त की रचना क्रियाप्रकृति के साथ –यो अथवा –इयो प्रत्यय के योग से होती है। समस्त –आ अन्त्य क्रियाप्रकृतियों के साथ –यो का योग होता है, और समस्त व्यंजनान्त क्रियाप्रकृतियो के साथ –इयो का। इस प्रकार निर्मित पूर्णतावाचक कृदन्तों के लिंगवचनानुसार रूप नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है। इन रूपो मे उगाणो क्रिया को –आ अन्त्य क्रियाप्रकृतियों का और उतरणो क्रिया को व्यंजनान्त क्रियाप्रकृतियों का प्रतिनिधि मानकर रूप प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

इस विषय मे कतिपय अपवाद भी है। उनका उल्लेख नीचे किया जा रहा है।

क्रियाप्रकृति	एकवचन		बहुवचन	
रूप	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग
उगा–	उगायो	उगाई	उगाया	उगाई
उतर–	उतरियो	उतरी	उतरिया	उतरी

कई क्रियाप्रकृतियों के पूर्णतावाचक कृदन्त रूप अनियमित होते हैं। यथा,

जा–	गयो	गी	गया	गी
दे–	दीनो	दीनी	दीना	दीनी
ले–	लीनो	लीनी	लीना	लीनी
कर–	कीनो	कीनी	कीना	कीनी

६.८.१.२. अपूर्णतावाचक कृदन्त की रचना क्रियाप्रकृति के साथ –तो प्रत्यय के योग से होती है। स्वरान्त क्रियाप्रकृतियों मे –तो के योग से पूर्व –वा– का आगम हो जाता है।

अपूर्णतावाचक कृदन्त के लिंगवचनानुसार रूप नीचे उद्धृत किये जा रहे हैं।

क्रियाप्रकृति	एकवचन		बहुवचन	
रूप	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग
उगा–	उगावतो	उगावतो	उगावता	उगावतो
उतर–	उतरतो	उतरतो	उतरता	उतरतो
जा–	जावतो	जावतो	जावता	जावतो
दे–	देवतो	देवतो	देवता	देवतो
ले–	लेवतो	लेवतो	लेवता	लेवतो
कर–	करतो	करतो	करता	करतो

६.८.१.३. कृदन्तविशेषण की रचना क्रियाप्रकृति के साथ –णौ प्रत्यय के योग से होती है। स्वरान्त क्रियाप्रकृतियो में –णौ के योग से पूर्व –वा– का आगम हो जाता है।

कृदन्तविशेषण के लिंगवचनानुसार रूप नीचे उद्धृत किये जा रहे है।

क्रियाप्रकृति	एकवचन		बहुवचन	
रूप	पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
उगा–	उगावणौ	उगावणी	उगावणा	उगावणी
उतर–	उतरणौ	उतरणी	उतरणा	उतरणी
जा–	जावणौ	जावणी	जावणा	जावणी
दे–	देवणौ	देवणी	देवणा	देवणी
ले–	लेवणौ	लेवणी	लेवणा	लेवणी
कर–	करणौ	करणी	करणा	करणी

६.८.१.४. पूर्णतावाचक कृदन्त, अपूर्णतावाचक कृदन्त तथा कृदन्त विशेषण के साथ हुवणौ सहायक क्रिया के वृत्ति और काल बोधक रूपों की आसत्ति से उक्त तीनों कोटियो के आ. राजस्थानी समापिका क्रियारूप निर्मित होते हैं। इन वृत्ति तथा काल बोधक रूपो के उनमें अन्तर्निहित तत्त्वो के अभिलक्षणों के अनुसार नाम नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

इन तीनों कोटियो की समापिका क्रिया रूपावली मे वृत्ति तथा काल आदि की अवस्थिति में भेद होने के कारण निम्न तीनो स्तम्भों में + चिह्न से अभिप्राय है कि उक्त तत्त्व-समिश्र की अवस्थिति होती है, और – चिह्न से उक्त तत्त्व-समिश्र की अनवस्थिति अभिप्रेत है।

वृत्ति आदि तत्त्व समिश्र नाम	समापिका क्रिया रूपावली		
	पूर्णतावाचक कृदन्त	अपूर्णतावाचक कृदन्त	कृदन्त विशेषण
१. असिद्धि	+	+	+
२. अनुमित प्रतिज्ञप्ति	+	+	+
३. असंदिग्ध संभावना	+	+	+
४. संदिग्ध संभावना	+	+	+
५. भूत	+	+	+
६. वर्तमान्	+	–	+
७. वृत्ति-काल विरहित रूप अवस्थिति	+	+	+

इन तीनों कोटियो के समापिका क्रियारूपो की संख्या २० है।

मात्र क्रियाप्रकृति के साथ प्रत्ययों के योग से निर्मित रूपावली के उसमें अन्तर्निहित त्वो के अभिलक्षणानुसार नाम नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

प्रत्ययुक्त क्रियाप्रकृति समापिका क्रिया रूप नाम

(२१) उद्‌बोधन
(२२) आज्ञा
(२३) अनुमित प्रतिज्ञप्ति
(२४) असंदिग्ध संभावना
(२५) वर्तमान् संभावना
(२६) सम्भावना

६.८.१.५. आ. राजस्थानी की समापिका क्रिया रूपावली के समस्त २६ रूपों के नेक वैकल्पिक परिवर्त भाषा मे उपलब्ध हैं। इन वैकल्पिक परिवर्तों के समस्त ज्ञात रूपों ो, उनके पुरुष, लिंग, वचन सहित, जावणौ क्रियाप्रकृति को आधार मानकर नीचे सूचित किया जा रहा है।

जावणौ के समापिक क्रिया रूप

समापिका क्रिया रूप नाम	पुरुष	लिंग		एकवचन		बहुवचन
				समापिका क्रिया रूप		
(१) पूर्णप्रसिद्धि वाचक	अन्य	पुल्लिग	ग्यो	हुतो~व्हेतो~व्हेवतो~हूवतो	ग्या	हुता~व्हेता~व्हेवता~हुवता
		स्त्रीलिंग	गी	हूती~व्हेती~व्हेवती~हुवती	गी	हुती~व्हेती~व्हेवती~हुवती
(२) पूर्णअनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक	उत्तम	पुल्लिग	ग्यो	हू'ऊं~हू'वूं~व्हे'ऊ~व्हे'वूं	ग्या	हू'आं~हू'वां व्हे'आ~व्हे'वां
		स्त्रीलिंग	गी	हू'ऊं~हू'वूं~व्हे'ऊं~व्हे'वूं	गी	हू'आं~हू'वा व्हे'आं~व्हे'वा
	मध्यम	पुल्लिग	ग्यो	हू'ई~व्हे'ई~व्हू'ई	ग्या	हू'ओ~हू'वो~व्हे'ओ~व्हे'वो
		स्त्रीलिंग	गी	हू'ई~व्हे'ई~व्हू'ई	गी	हू'ओ~हू'वो~व्हे'ओ~व्हे'वो

समापिका क्रिया रूप नाम	पुरुष	लिंग		एकवचन		बहुवचन
	अन्य	पुल्लिंग	ग्यो	हू'ई~व्है'ई~ व्हू'ई	ग्यो	हू'ई~व्है'ई व्हू'ई
		स्त्रीलिंग	गी	हू'ई~व्हू'ई~ व्हू'ई	गी	हू'ई~व्है'ई व्हू'ई
(३) पूर्ण असंदिग्ध संभावना वाचक	उत्तम	पुल्लिंग	ग्यो	व्हूला~ व्हूलो	ग्या	व्हांला
		स्त्रीलिंग	गी	व्हूंला व्हूली	गी	व्हांला व्हाली
	मध्यम	पुल्लिंग	ग्यो	व्हैला व्हैलो	ग्या	व्होला
		स्त्रीलिंग	गी	व्हैला व्हैली	गी	व्होला व्होली
	अन्य	पुल्लिंग	ग्यो	व्हैला व्हैलो	ग्या	व्हैला
		स्त्रीलिंग	गी	व्हैला व्हैली	ग्या	व्हैला व्हैली
(४) पूर्ण संदिग्ध संभावना वाचक	उत्तम	पुल्लिंग	ग्यो	व्हूं	ग्या	व्हां
		स्त्रीलिंग	गी	व्हूं	गी	व्हो
	मध्यम	पुल्लिंग	ग्यो	व्है	ग्या	व्हो
		स्त्रीलिंग	गी	व्है	गी	व्हो
	अन्य	पुल्लिंग	ग्यो	व्है	ग्या	व्है
		स्त्रीलिंग	गी	व्है	गी	व्है
(५) पूर्ण भूत	अन्य	पुल्लिंग	ग्यो	हो	ग्या	हा
		स्त्रीलिंग	गी	ही	गी	ही

समापिका क्रिया रूप नाम	समापिका क्रिया रूप: पुरुष	लिंग	एकवचन	बहुवचन
(६) पूर्ण वर्तमान्	उत्तम	पुल्लिंग	ग्यो हूं	ग्या हां
		स्त्रीलिंग	गी हूं	गी हां
	मध्यम	पुल्लिंग	ग्यो है	ग्या हो
		स्त्रीलिंग	गी है	गी है
	अन्य	पुल्लिंग	ग्यो है	ग्या है
		स्त्रीलिंग	गी है	गी है
(७) पूर्णता वाचक	अन्य	पुल्लिंग	ग्यो	ग्या
		स्त्रीलिंग	गी	गी
(८) अपूर्ण असिद्धि वाचक	अन्य	पुल्लिंग	जावतो हुतो~व्हेतो~व्हेवतो~हूवतो	जावता हुता~व्हेता~व्हेवता~हूवता
		स्त्रीलिंग	जावती हुती~व्हेती~व्हेवती~हूवती	जावती हुती~व्हेती~व्हेवती~हूवती
(९) अपूर्ण अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक	उत्तम	पुल्लिंग	जावतो हू'ऊं~हू'वूं~व्हे'ऊं~व्हे'वूं~व्हू'वूं	जावता हू'आं~हू'वां~व्हे'आं~व्हे'वां~व्हूवां
		स्त्रीलिंग	जावती हू'ऊं~हू'वूं~व्हे'ऊं~व्हे'वूं~व्हू'वूं	जावती हूं'आं~हू'वां~व्हे'आं~व्हे'वां~व्हूवां
	मध्यम	पुल्लिंग	जावतो हू'ई~व्हे'ई~व्हू'ई	जावता हू'ओ~हू'वो~व्हे'ओ~व्हे'वो~व्हू'वो
		स्त्रीलिंग	जावती हू'ई~व्हे'ई~व्हू'ई	जावती हू'ओ~हू'वो~व्हे'वो~व्हे'ओ~व्हू'वो

समापिका क्रिया रूप नाम	पुरुष	लिंग	एकवचन		बहुवचन	
	अन्य	पुल्लिंग	जावतो	हूं'ई~व्हे'ई ~व्हूं'ई	जावता	हूं'ई~व्हे'ई ~व्हूं'ई
		स्त्रीलिंग	जावती	हूं'ई~व्हे'ई ~व्हूं'ई	जावता	हूं'ई~व्हे'ई ~व्हूं' ई
(१०) अपूर्ण असंदिग्ध संभावना वाचक	उत्तम	पुल्लिंग	जावतो	व्हूंला	जावता	व्हांला
		स्त्रीलिंग	जावती	व्हूंला व्हूंली	जावती	व्हांला व्हांली
	मध्यम	पुल्लिंग	जावतो	व्हेला	जावता	व्हेला
		स्त्रीलिंग	जावती	व्हेला व्हेली	जावती	व्हेला व्हेली
	अन्य	पुल्लिंग	जावतो	व्हेला	जावता	व्हेला
		स्त्रीलिंग	जावती	व्हेला व्हेली	जावता	व्हेला व्हेली
(११) अपूर्ण संदिग्ध संभावना वाचक	उत्तम	पुल्लिंग	जावतो	व्हूं	जावता	व्हां
		स्त्रीलिंग	जावती	व्हूं	जावती	व्हां
	मध्यम	पुल्लिंग	जावतो	व्हे	जावता	व्हो
		स्त्रीलिंग	जावती	व्हे	जावती	व्हो
	अन्य	पुल्लिंग	जावतो	व्हे	जावता	व्हे
		स्त्रीलिंग	जावती	व्हे	जावती	व्हे
(१२) अपूर्ण भूत	अन्य	पुल्लिंग	जावतो	हो	जावता	हा
		स्त्रीलिंग	जावती	ही	जावती	ही

समापिका क्रिया रूप नाम	पुरुष	लिंग	समापिका क्रिया रूप एकवचन	बहुवचन
(१३) अपूर्णता वाचक	अन्य	पुल्लिग	जावतो	जावता
		स्त्रीलिंग	जावती	जावती
(१४) अप्रसिद्ध संकेत वाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो हुतो~व्होता ~व्हैवतो ~हूवतो	एक वचन के समान
(१५) अनुमित प्रतिलब्धित संकेत वाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो हूं'ई~व्हूं'ई व्हूं'ई	एक वचन के समान
(१६) असंदिग्ध सभावना संकेतवाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो व्हैलो	एक वचन के समान
(१७) संदिग्ध संभावना संकेतवाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो व्है	एक वचन के समान
(१८) भूत संकेत वाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो हो	एक वचन के समान
(१९) वर्तमान् सकेत वाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो है	एक वचन के समान
(२०) संकेत वाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो	एक वचन के समान
(२१) उद्बोधन वाचक	मध्यम		जाजे~जाइजे	जाजो~जाइजो
(२२) आज्ञा वाचक	मध्यम		जा	जावो~जाओ

समापिका क्रिया रूप नाम	समापिका क्रिया रूप			
	पुरुष	लिंग	एक वचन	बहु वचन
(२३) अनुमित प्रविज्ञप्ति वाचक	उत्तम		जा'ऊं~जासूं~ जास्यूं	जा'वां~जा'मां~ जासां~जास्या
	मध्यम		जा'ई~जासी	जा'ओ~जा'वो~जासो
	अन्य		जा'ई~जासी	जा'ई~जासी
(२४) असंदिग्ध	उत्तम		जाऊंला	जावांला~जामांला
संभावना	मध्यम		जावैला	जावौला
वाचक	अन्य		जावैला	जावैला
(२५) वर्तमान्	उत्तम		जाऊं हूं~जावूं हूं	जावां हा~जामां हा
संभावना	मध्यम		जावै है	जावौ हौ
वाचक	अन्य		जावै है	जावै है
(२६) संभावना	उत्तम		जाऊं~जावूं	जावां~जामां
वाचक	मध्यम		जावै	जावौ
	अन्य		जावै	जावै

रूप संख्या (१४-२०) के सीमित परिसरों में स्त्रीलिंग रूप भी उपलब्ध होते हैं। इस स्थिति में अकर्मक क्रिया के कृदन्त विशेषण के स्त्रीलिंग रूप (यथा, जावणी) के साथ सहायक क्रिया की अवस्थिति होती है।

६ ८.१.६. समस्त उपरिलिखित रूप भाषा में सामान्य रूप से अधिमान्य नहीं हैं। अतः मात्र अधिमान्य रूपों को लेकर नीचे लिखणो क्रिया की समापिका क्रिया रूपावली का निदर्शन किया जा रहा है।

सकर्मक क्रियाओं के पूर्णतावाचक कृदन्त तथा कृदन्त विशेषण से निर्मित समापिका क्रिया रूपों में कृदन्त और कर्मस्थानीय संज्ञा में लिंग-वचनानुसार अन्वय होता है और सहायक क्रिया एवं कर्त्ता स्थानीय संज्ञा में (अन्य पुरुष को छोड़कर) पुरुष-वचनानुसार अन्वय होता है। इन तथ्यों का निर्देश लिखणो क्रिया की समापिका क्रिया ... में कर दिया गया है।

लिखणो की समापिका क्रिया रूपावली

(१) पूर्ण प्रसिद्धि वाचक

	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिंग	लिखियो हुतो	लिखिया हुता
स्त्रीलिंग	लिखी हुती	लिखी हुती

(२) पूर्ण अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक

उत्तम पुरुष	पुल्लिंग	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	हूं'ऊं	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	हूं'आं
	स्त्रीलिंग	लिखी हूं'ऊं		लिखी हूं'आं	
मध्यम पुरुष	पुल्लिंग	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	हूं'ऊं	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	हूं'वो
	स्त्रीलिंग	लिखी हूं'ई		लिखी हूं'वो	
अन्य पुरुष	पुल्लिंग	लिखियो (ए.व.) लिखियो (ब.व.)	हूं'ई	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	हूं'ई
	स्त्रीलिंग	लिखी हूं'ई		लिखी हूं'ई	

(३) पूर्ण असंदिग्ध संभावना वाचक

उत्तम पुरुष	पुल्लिंग	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	ह्वूंला	लिखियो (ए.व.) लिखियो (ब.व.)	ह्वांला
	स्त्रीलिंग	लिखी ह्वूंला		लिखी ह्वाला	
मध्यम पुरुष	पुल्लिंग	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	ह्वैला	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	ह्वोला
	स्त्रीलिंग	लिखी ह्वैला		लिखी ह्वोला	
अन्य पुरुष	पुल्लिंग	लिखियो (ए.व.) लिखियो (ब.व.)	ह्वैला	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	ह्वैला
	स्त्रीलिंग	लिखी ह्वैला		लिखी ह्वैला	

(४) पूर्ण संदिग्ध संभावना वाचक

उत्तम पुरुष	पुल्लिंग	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	ह्वूं	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	ह्वां
	स्त्रीलिंग	लिखी ह्वूं		लिखी ह्वां	

मध्यम पुरुष	पुल्लिंग	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	व्है	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)		
	स्त्रीलिंग	लिखी व्है		लिखी व्हो		
अन्य पुरुष	पुल्लिंग	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	व्है	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	व्है	
	स्त्रीलिंग	लिखी व्है		लिखी व्है		

(५) पूर्ण भूत

	एक वचन	बहु वचन
पुल्लिंग	लिखियो हो	लिखिया हा
स्त्रीलिंग	लिखी ही	लिखी ही

(६) पूर्ण वर्तमान्

उत्तम पुरुष	पुल्लिंग	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	हूं	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	हा
	स्त्रीलिंग	लिखी हूं		लिखी हां	
मध्यम पुरुष	पुल्लिंग	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	है	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	हो
	स्त्रीलिंग	लिखी है		लिखी हो	
अन्य पुरुष	पुल्लिंग	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	है	लिखियो (ए.व.) लिखिया (ब.व.)	है
	स्त्रीलिंग	लिखी है		लिखी है	

(७) पूर्णता वाचक

पुल्लिंग	लिखियो	लिखिया
स्त्रीलिंग	लिखी	लिखी

(८) अपूर्ण असिद्धि वाचक

पुल्लिंग	लिखतो व्हैतो	लिखता व्हैता
स्त्रीलिंग	लिखती व्हैती	लिखती व्हैती

(९) अपूर्ण अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक

उत्तम पुरुष	पुल्लिंग	लिखतो हु'ऊं	लिखता हु'आं
	स्त्रीलिंग	लिखती हु'ऊ.	लिखती हु'आं

		एक वचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	पुल्लिग	लिखतो हु'ई	लिखता हु'म्रो
	स्त्रीलिग	लिखती हु'ई	लिखतो हु'म्रो
अन्य पुरुष	पुल्लिग	लिखतो हु'ई	लिखता हु'म्रो
	स्त्रीलिग	लिखती हु'ई	लिखती हु'ई

(१०) अपूर्ण असंदिग्ध सभावना वाचक

उत्तम पुरुष	पुल्लिग	लिखतो व्हूंला	लिखता व्हांला
	स्त्रीलिग	लिखती व्हूला	लिखती व्हांला
मध्यम पुरुष	पुल्लिग	लिखतो व्हैला	लिखता व्होला
	स्त्रीलिग	लिखती व्हैला	लिखती व्होला
अन्य पुरुष	पुल्लिग	लिखतो व्हैला	लिखता व्हैला
	स्त्रीलिग	लिखती व्हैली	लिखती व्हैला

(११) अपूर्ण सदिग्ध संभावना वाचक
समस्त रूप जावणो क्रिया के रूपो के समान है।

(१२) अपूर्ण भूत
समस्त रूप जावणो क्रिया के रूपों के समान है।

(१३) अपूर्णता वाचक
समस्त रूप जावणो क्रिया के रूपो के समान हैं।

(१४) असिद्ध सकेत वाचक

	एक वचन	बहु वचन
पुल्लिग	लिखणो व्हैतो	लिखणा व्हैता
स्त्रीलिग	लिखणो व्हैती	लिखणी व्हैतो

(१५) अनुमित प्रतिज्ञप्ति संकेत वाचक

पुल्लिग	लिखणो व्है'ई	लिखणा व्है'ई
स्त्रीलिग	लिखणो व्है'ई	लिखणी व्है'ई

(१६) असदिग्ध संभावना सकेत वाचक

पुल्लिग	लिखणो व्हैला	लिखणा व्हैला
स्त्रीलिग	लिखणो व्हैला	लिखणी व्हैला

		एक वचन	बहुवचन
(१७) संदिग्ध संभावना संकेत वाचक			
	पुल्लिग	लिखणो व्है	लिखणा व्है
	स्त्रीलिंग	लिखणी व्है	लिखणी व्है
(१८) भूत संकेत वाचक			
	पुल्लिग	लिखणो हो	लिखणा हा
	स्त्रीलिंग	लिखणी ही	लिखणी ही
(१९) वर्तमान संकेत वाचक			
	पुल्लिग	लिखणो है	लिखणा है
	स्त्रीलिंग	लिखणी है	लिखणी है
(२०) संकेत वाचक			
	पुल्लिग	लिखणो	लिखणा
	स्त्रीलिंग	लिखणी	लिखणी
(२१) उद्बोधन वाचक			
	मध्यम पुरुष	लिखजै	लिखजो
(२२) आज्ञा वाचक			
	मध्यम पुरुष	लिख	लिखो
(२३) अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक			
	उत्तम पुरुष	लिखसूं~लि'खूं	लिखसा~लि'खा
	मध्यम पुरुष	लिखसी~लि'खी	लिखसो~लि'खो
	अन्य पुरुष	लिखसी~लि'खी	लिखसी~लि'खी
(२४) असंदिग्ध संभावना वाचक			
	उत्तम पुरुष	लिखूं'ला	लिखांला
	मध्यम पुरुष	लिखैला	लिखोला
	अन्य पुरुष	लिखैला	लिखैला
(२५) वर्तमान् संभावना वाचक			
	उत्तम पुरुष	लिखूं	लिखां हां
	मध्यम पुरुष	लिखै है	लिखो हो
	अन्य पुरुष	लिखै है	लिखै है

		एक वचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	पुल्लिग	लिखतो हूं'ई	लिखता हूं'ओ
	स्त्रीलिंग	लिखती हूं'ई	लिखती हूं'ओ
अन्य पुरुष	पुल्लिग	लिखतो हूं'ई	लिखता हूं'ओ
	स्त्रीलिंग	लिखती हूं'ई	लिखती हूं'ई

(१०) अपूर्ण असंदिग्ध संभावना वाचक

उत्तम पुरुष	पुल्लिग	लिखतो व्हूंला	लिखता व्हांला
	स्त्रीलिंग	लिखती व्हूंला	लिखती व्हांला
मध्यम पुरुष	पुल्लिग	लिखतो व्हैला	लिखता व्होला
	स्त्रीलिंग	लिखती व्हैला	लिखती व्होला
अन्य पुरुष	पुल्लिग	लिखतो व्हैला	लिखता व्हैला
	स्त्रीलिंग	लिखती व्हैली	लिखती व्हैला

(११) अपूर्ण संदिग्ध संभावना वाचक

समस्त रूप जावणो क्रिया के रूपों के समान है।

(१२) अपूर्ण भूत

समस्त रूप जावणो क्रिया के रूपों के समान है।

(१३) अपूर्णता वाचक

समस्त रूप जावणो क्रिया के रूपों के समान हैं।

(१४) असिद्ध संकेत वाचक

	एक वचन	बहु वचन
पुल्लिग	लिखणो व्हैतो	लिखणा व्हैता
स्त्रीलिंग	लिखणी व्हैतो	लिखणी व्हैतो

(१५) अनुमित प्रतिज्ञप्ति संकेत वाचक

पुल्लिग	लिखणो व्हे'ई	लिखणा व्हे'ई
स्त्रीलिग	लिखणी व्हे'ई	लिखणी व्हे'ई

(१६) असंदिग्ध सभावना सकेत वाचक

पुल्लिग	लिखणो व्हैला	लिखणा व्हैला
स्त्रीलिग	लिखणी व्हैला	लिखणी व्हैला

		एक वचन	बहुवचन
(१७) संदिग्ध संभावना संकेत वाचक			
	पुल्लिग	लिखणो व्है	लिखणा व्है
	स्त्रीलिग	लिखणी व्है	लिखणी व्है
(१८) भूत संकेत वाचक			
	पुल्लिग	लिखणो हो	लिखणा हा
	स्त्रीलिग	लिखणी ही	लिखणी ही
(१९) वर्तमान संकेत वाचक			
	पुल्लिग	लिखणो है	लिखणा है
	स्त्रीलिग	लिखणी है	लिखणी है
(२०) संकेत वाचक			
	पुल्लिग	लिखणो	लिखणा
	स्त्रीलिग	लिखणी	लिखणी
(२१) उद्बोधन वाचक			
	मध्यम पुरुष	लिखजे	लिखजो
(२२) आज्ञा वाचक			
	मध्यम पुरुष	लिख	लिखो
(२३) अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक			
	उत्तम पुरुष	लिखसूं ~ लि'खूं	लिखसा ~ लि'खा
	मध्यम पुरुष	लिखसी ~ लि'खी	लिखसो ~ लि'खो
	अन्य पुरुष	लिखसी ~ लि'खी	लिखसी ~ लि'खी
(२४) असंदिग्ध संभावना वाचक			
	उत्तम पुरुष	लिखूंला	लिखाला
	मध्यम पुरुष	लिखैला	लिखोला
	अन्य पुरुष	लिखैला	लिखैला
(२५) वर्तमान् संभावना वाचक			
	उत्तम पुरुष	लिखूं हूं	लिखा हां
	मध्यम पुरुष	लिखै है	लिखो हो
	अन्य पुरुष	लिखै है	लिखै है

		एक वचन	बहुवचन
(२६) सभावना वाचक			
	उत्तम पुरुष	लिखू	लिखां
	मध्यम पुरुष	लिखै	लिखो
	अन्य पुरुष	लिखै	लिखै

६.८.१.७. उपरिलिखित समापिका क्रिया रूपावली को वाक्यों में अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१) पूर्ण असिद्धि वाचक

(६६) सुमेज में बोलियो—वावळो भाटो गिटग्यो हुतो तो ई म्हैं उणनैं मूं डै बोलाय लेतो, पछै थारो तो जिनात ई कांई है।

इस वाक्य मे गिटग्यो हुतो पूर्ण असिद्धि वाचक रूप है, जबकि निम्न वाक्य मे समझायो हुतो (६७) रूप का अर्थ है "समझाया था"। इस प्रकार की संदिग्ध रचनाओं का समाधान वाक्य परिसरों और सहायक क्रिया के रूप हुतो तथा योजक क्रिया (प्रकरण ६.१०) के रूप हुतो~हो के पारस्परिक पार्थक्य के आधार पर किया जा सकता है।

(६७) जद कुत्तो उणनैं कैयो—भाई, म्हैं थनैं पैला ई समझायो हुतो पण थूं तो मानी नी।

(८) अपूर्ण असिद्धि वाचक

(६८) आज बाबो जीवतो हुतो तो थारी मासी नैं अै फोडा नी पड़ता।

(१४) असिद्ध संकेत वाचक

(६९) जे थारो धन-वित्त अर जमी-जायदाद म्हारै अटावणी हुतो तो म्हैं थनैं इतरी लाठो क्यूं हुवण देवतो। छोटै थकै नैं इज मार'र खाडावूच नी कर देतो।

(२) पूर्ण अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक

(७०) जे पेड़ रै नीबू लागा हु'ई तो म्हैं बेरै सूं आवतो लेतो आवूं ला नीतर म्हा।

(९) अपूर्ण अनुमित प्रतिजप्ति वाचक

(७१) कुण थारै धुंप सेवतो हुसी ? हाय मां आज थूं अनाथ हुयगी, म्हारै जीवता जीव कुण जांणै थनैं काई-कांई दुख भोगणा पड़ता हुसी।

(१५) अनुमित प्रतिजप्ति संकेत वाचक

(७२) म्हारै सूं तो किणी री गरजा नी करीजै, उणनैं रोटी खावणी हु'ई तो खाय लेसी अर नीतर भूखो इज पड़ रै'ई।

(३) पूर्ण असदिग्ध संभावना वाचक

(७३) आ दुनिया थपियां पछै ई कोई मिनख आज दिन तक जीवता मिंघ नै नी पकड़ियो व्हैला ।

(१०) अपूर्ण असदिग्ध संभावना वाचक

(७४) अर बीस बरसां तक जकां री गोद में म्हैं रमी, इत्ती सांठी हुई, म्हनैं ई वारै बिना कीकर आवड़तो व्है ला । आप इणरी नी अदाज लगा सको ।

(१६) असदिग्ध संभावना संकेत वाचक

(७५) मोयण नै कठै जावणी व्हैला ।

(४) पूर्ण सदिग्ध सभावना वाचक

(७६) म्हे सपनै में ई आपरै साथै दगो करण री विचार करियो व्हां तो म्हानै नरक मे ई ठौड़ नी मिळे ।

(११) अपूर्ण सदिग्ध संभावना वाचक

(७७) तद घरवाळो कैयो—थैं कमाई करता व्हो तो कळपूं ई किण वास्तै ।

(१७) सदिग्ध सभावना सकेत वाचक

(७८) आप लोगां रै भगती-भाव सूं म्हैं अणूंतो राजी हूं । पण जकी हूवणी व्है वा कीकर टळ सकै ?

(४) पूर्ण भूत

(७८) भावना रै कारण ई तो भगवान राम चंदरजी सबरी रै हाथ सूं अैंठवाड़ा बोर खाया हा ।

(१२) अपूर्ण भूत

(७९) बो तो आपरी धुन मे निचोतो हुयोड़ो फदाफद करतो जावतो हो कै अजांणचक उणनैं ठा पडी कै लारै सूं कोई उणरी टांगड़ी अपड़ली है ।

(१८) भूत सकेत वाचक

(८०) जे इण सरीर नै ई सूंपणो हो तो राजकंवर री रंगमैल किसो भूंडो हो ।

(८१) केई दिनां ताई लिछमा री ओळूं आई, पण छेकट भूलणो ई हो ।

(६) पूर्ण वर्तमान्

(८२) ठेट मुकाम पधारण री क्यूं तकलीफ फरमावो । म्हैं म्हारै साथै ई आपरो भोजन मंगाय लियौ हूं ।

(१९) वर्तमान् संकेत वाचक

(८३) आपनै तौ फगत पाणी पीवणी है, अठोकर नीं सई उठोकर सई ।

(७) पूर्णता वाचक

(८४) राजा देखै तौ रांणी रथ सूं उतर री ।

(८५) में आयो तौ म्हनै गलिया ई सरमां ।

(१३) अपूर्णता वाचक

(८६) रोयनै निवळापणो बताय दियो तौ मूळी कालं मिळती इणी सायत मिळ जावैला ।

(८७) मां पाछो पड़ूत्तर दियो—म्हनै कोई पूछियो व्है तौ म्है ई थनै पूछती बेटी।

(२०) संकेत वाचक

(८८) इणरै बिस नै तौ अकल सूं दाटणो पड़्सी । डील में करार नी व्है तौ बगत आया अकल सूं कांम सारणो ।

(८९) थानै म्हारै दुख-दरद सूं कांई लेणो-देणो ।

(९०) वो उभो-उभो मन रा लाडू खावण लागो कै पैला खिचियां नै खावणा कै पैला स्याळ-स्यालणी नै ।

(२१) उद्‌बोधन वाचक

(९१) अेकर ढगळो रांन नै कैयो—वेलो थूं म्हनै अकेलो छोडनै मत जाजे ।

(९२) नवलखो हार गमजो अर अंड़ा सता रा अठै आवणा हुओ । औ नवलखो हार तौ भलौं ई गमियो ।

(२२) आज्ञा वाचक

(९३) थोड़ो निरायत कर । ध्यान सूं बात सुण ।

(९४) खिरगोसियो वत्तो जोस दिरावण सारू सिंग नै कैवण लागो—अदाता, अेकर निरांयत सूं सावळ विचार कर लिरावो ।

(९५) रोटो बीजी सायनै आवा, पछै भलांई कित्तो जेज लागो ।

(२३) अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक

(९६) म्हारै सरीर रै हाथ मत लगाजो, थाको ये कंवोला उठै चालसूं परो, म्हनै नीतर ई कठै ई जावणो तौ है ई ।

(९७) म्हैं म्हारै घरै मोकळा मिनखा नै देखिया तौ मन में जाणियो—म्हारी मोड़ी बायं है । औवत खिनाल करायं है, घर मबं म्हनै बालण नै आसी ।

(२४) असंदिग्ध संभावना वाचक

(९८) राजकंवर सोचियौ के जिण लुगाई रा केन अैड़ा है तौ वा खुद कैड़ी रूपाळी व्हैला।

(२५) वर्तमान् संभावना वाचक

(९९) आप निचीता रौ, म्हैं नगरी रा सगळा ऊंदरा लेयनै इणी गायत साथै आवूं हूं।

(१००) हजार बुद्धि बोलियौ—थे माव साचौ को हौ। आ गायत है अर थांरा आळ सूं काणी है।

(१०१) म्हैं नित-नेम सूं निव्रत होयनै अवाल्ं दरबार में हाजर होयनै आऊं हूं।

(१०२) आपरै आसरै नाम्ं जीव पळै है। इण बाळक माथै थोड़ी दया विचारौ, अवै आपरै सरणै है।

(२६) संभावना वाचक

(१०३) हंसती-हंसती ई बोली—राजा, म्हैं तौ जांणती कै थूं इसी मोटी राज संभाळी जकी थारै में कीं न कीं अकल तौ व्हैला [illegible]।

(१०४) सूरज आथूंण में ऊगै तौ म्हैं म्हारै वचन सूं टळूं।

(१०५) वा अम्यागत बामणी जिण भांत बिखा रा दिन काढ़िया, [illegible] भगवान किणी नै उणनै नै ई नीं बतावै।

(१०६) म्हैं थनै नींद नाम सूं ओळखूं हूं।

६.८.२. आ. राजस्थानी योजक क्रिया रूपों की व्यवस्था [illegible] कालों के आधार पर की जाती है, जिनका विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

नीचे परो की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(१०७) थारू दिसावा में मन करें उठीनें जावो परा। अब थाप आपरें मार्थ जूंझो। किणी रें भरोसें मार्थ जीवण वितावणो निवळापणो है।

(१०८) देत कह्यो—थनें दुख काई है सो म्हनें बता। ब्याव करिया तो थूं म्हनें छोड जावें परी। म्हैं किणी भाव अेकलो नी रैय सकूं।

(१०९) वेलो सगळा मिल परा नें माय रो मांय अेक दूजो ई जाळ रचियो।

(११०) थूं काई धापियो परा। रोटी तो च्यार ई खाई कोयनी म्रर धापग्या।

(१११) कठै यो उठै तो नी जावेला परो।

(११२) राम न्यारो ई भलो है परो नी।

६.१०. अन्तर्निहित भाववाच्य क्रियाओं को छोड़कर सामान्यतः समस्त अकर्मक और सकर्मक क्रियाओ से उनके प्रेरणार्थक रूप व्युत्पन्न होते हैं।

प्रेरणार्थक रूपो की व्युत्पत्ति आ. राजस्थानी व्याकरण में एक अत्यन्त जटिल एवं उलझा हुआ विषय है। कोश एवं उपलब्ध व्याकरणों में इस विषय का उचित समाधान नहीं प्राप्त होता। इसलिए निम्नलिखित विवरण में परीक्षापेक्ष युक्तियो का सहारा लिया गया है। प्रस्तुत वर्णण प्रकरण संख्या (६.७) में दिये गये क्रियाप्रकृतियों के अकर्मक-सकर्मक वाच्य-सवर्गीकरण पर आधृत है।

६.१०.१ सामान्य रूप से अकर्मक और सकर्मक क्रियाप्रकृतियों के प्रेरणार्थक वाच्य रूप स्वतन्त्र रूप से निर्मित होते हैं। यथा अकर्मक वाच्य क्रिया कटणो और इसके सकर्मक वाच्य प्रतिरूप काटणो दोनो क्रियाप्रकृतियो की प्रेरणार्थक वाच्य रूपावली स्वतन्त्र रूप से निर्मित होगी।

इन दोनों संवर्गों की क्रियाप्रकृतियो के साथ सयुक्त होने वाले प्रेरणार्थक वाचक प्रत्ययों को सामान्य सूची नीचे प्रस्तुत की जा रही है।

(क) —आव
(ख) —आण
(ग) —आड़

६.१०.२. —ईज प्रत्यय युक्त भाववाच्य क्रियाओ के प्रेरणार्थक वाच्य रूप निर्मित नहीं होते।

... मूल अकर्मक क्रियाएं (कोटि ख प्रकरण ६.७) मे अधिकाश के साथ प्रेरणार्थक वाच्य के प्रत्ययो की अवस्थिति होती है। इस कोटि की क्रियाओं के प्रेरणार्थक वाच्य रूपों के कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

मूल अकर्मक	व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
वाच्य रूप	क	ख	ग
आवणो	अवावणो	अवांणणो	अवाड़णो
जावणो	जवावणो	जवाणणो	जवाड़णो
रोवणो	रोवावणो	रोवांणणो	रोवाड़णो
सूवणो	सूवावणो	सूवांणणो	सूवाड़णो
जागणो	जगावणो	जगाणणो	जगाड़णो
लागणो	लगावणो	लगाणणो	लगाडणो
दूखणो	दूखावणो	दूखांणणो	दूखाड़णो
रूसणो	रूसावणो	रूसाणणो	रूसाड़णो
अटकणो	अटकावणो	अटकाणणो	अटकाड़णो
चूकणो	चूकावणो	चूकाणणो	चूकाड़णो
डूबणो	डुबावणो	डुबांणणो	डुबाडणो
गिदणो	गिदावणो	गिदाणणो	गिदाड़णो
धूजणो	धूजावणो	धुजाणणो	धूजाड़णो
अंठणो	अंठावणो	अंठाणणो	अंठाड़णो
थाकणो	थकावणो	थकांणणो	थकाड़णो

व्यंजनात अकर्मक-सकर्मक क्रिया प्रकृतियो के (कोटि ग (१) प्रकरण ६.७) प्रेरणार्थक वाच्य रूप निम्न उदाहरणों के अनुसार निर्मित होते है।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक	अंकणो	अंकावणो	—	—
सकर्मक	आंकणो	अकवावणो	—	—
अकर्मक	कटणो	कटावणो	—	कटाड़णो
सकर्मक	काटणो	कटवाव	—	कटवाड़णो
अकर्मक	गळणो	गळावणो	—	—
सकर्मक	गाळणो	गळवावणो	—	—
अकर्मक	खचणो	खंचावणो	—	—
सकर्मक	खाचणो	खचवावणो	—	—
अकर्मक	गंठणो	गठावणो	—	—
सकर्मक	गाठणो	गंठवावणो	—	—
अकर्मक	मरणो	मरावणो	—	मराड़णो
सकर्मक	मारणो	मरवावणो	—	मरवाड़णो
अकर्मक	पळणो	पळावणो	—	—
सकर्मक	पाळणो	पळवावणो	—	पळवाड़णो

क्रियाप्रकृति कोटि ग (२) के प्रेरणार्थक वाच्य प्रतिरूप निम्नलिखित हैं।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप	व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक खिरणो	खिरावणो	—	—
सकर्मक खेरणो	खिरवावणो	—	—
अकर्मक घिरणो	घिरावणो	—	—
सकर्मक घेरणो	घिरवावणो	—	—
अकर्मक टिकणो	टिकावणो	—	—
सकर्मक टेकणो	टिकवावणो	—	—
अकर्मक फिरणो	फिरावणो	—	—
सकर्मक फेरणो	फिरवावणो	—	—
अकर्मक छिदणो	छिदावणो	—	—
सकर्मक छेदणो	छिदवावणो	—	—
अकर्मक भिदणो	भिदावणो	—	—
सकर्मक भेदणो	भिदवावणो	—	—

क्रियाप्रकृति कोटि ग (३) के प्रेरणार्थक वाच्य प्रतिरूप निम्नलिखित हैं।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप	व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक घुटणो	घुटाणणो	घुटावणो	घुटाड़णो
सकर्मक घोटणो	घुटवावणो	घुटवाणणो	घुटवाड़णो
अकर्मक घुळणो	घुळावणो	—	—
सकर्मक घोळणो	घुळवावणो	—	—
अकर्मक जुडणो	जुडावणो	—	—
सकर्मक जोड़णो	जुडवावणो	—	—
अकर्मक खुबणो	खुबावणो	—	—
सकर्मक खोबणो	खुबवावणो	—	—
अकर्मक मुड़णो	मुड़ावणो	—	—
सकर्मक मोड़णो	मुड़वावणो	—	—
अकर्मक चुभणो	चुभावणो	—	—
सकर्मक चोभणो	चुभवावणो	—	—
अकर्मक खुलणो	खुलावणो	—	—
सकर्मक खोलणो	खुलवावणो	—	—

क्रियाप्रकृति कोटि ग (४) के प्रेरणार्थक वाच्य प्रतिरूप निम्नलिखित हैं।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक	पिसणो	पिसावणो	—	पिसाड़णो
सकर्मक	पीसणो	पिसवावणो	—	पिसवाड़णो
अकर्मक	चिरणो	चिरावणो	—	—
सकर्मक	चीरणो	चिरावणो	—	—
अकर्मक	पिटणो	पिटावणो	—	पिटाड़णो
सकर्मक	पीटणो	पिटवावणो	—	पिटवाडणो
अकर्मक	लुटणो	लुटवावणो	—	लुटाड़णो
सकर्मक	लूटणो	लुटवावणो	—	लुटवाड़णो
अकर्मक	छुनणो	छुनावणो	—	—
सकर्मक	छूनणो	छुनवावणो	—	—
अकर्मक	पुंछणो	पुंछावणो	—	—
सकर्मक	पोछणो	पुंछवावणो	—	—

क्रियाप्रकृति कोटि ग (५) के प्रेरणार्थक वाच्य प्रतिरूप निम्नलिखित है।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक	उखड़णो	उखडाणो	—	—
सकर्मक	उखाड़णो	उखड़वाणो	—	—
अकर्मक	उछरणो	उछराणो	—	—
सकर्मक	उछारणो	उछरवाणो	—	—

व्यंजनात अकर्मक-सकर्मक क्रियाप्रकृतिया (कोटि ग (६) प्रकरण ६.७) के प्रेरणार्थक वाच्य रूप निम्न उदाहरणों के अनुसार निर्मित होते है।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक	ऊठणो	उठावणो	उठावणो	उठाड़णो
सकर्मक	उठावणो	उठवावणो	उठवावणो	उठवाड़णो
अकर्मक	बैठणो	बैठावणो	बैठाणणो	बैठाड़णो
सकर्मक	बैठावणो	बैठवणाणो	बैठवाणणो	बैठवाड़णो
अकर्मक	दवणो	दबावणो	—	दबाड़णो
सकर्मक	दबावणो	दबवावणो	—	दबवाड़णो

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक	ऊभणो	उभावणो	उभाणणो	उभाड़णो
सकर्मक	उभावणो	उभवावणो	उभवाणणो	उभवाड़णो
अकर्मक	उडणो	उडावणो	उडाणणो	उडाड़णो
सकर्मक	उडावणो	उडवावणो	उडवाणणो	उडवाड़णो

क्रियाप्रकृति कोटि घ के प्रेरणार्थक प्रतिरूप निम्नलिखित हैं।

सकर्मक वाच्य रूप	व्युत्पन्न प्रेरणार्थक रूप क	ख	ग
गावणो	गवावणो	गवाणणो	गवाड़णो
राखणो	रखावणो	रखाणणो	रखाड़णो
देखणो	देखावणो	देखाणणो	देखाड़णो
जीमणो	जीमावणो	जीमाणणो	जीमाड़णो
रमणो	रमावणो	रमांणणो	रणाड़णो
चूंघणो	चूंघावणो	चूघाणणो	चूंघाड़णो
चाखणो	चखावणो	चखांणणो	चखाड़णो
लिखणो	लिखावणो	लिखाणणो	लिखाड़णो

६.११. –ईज प्रत्यय सहित अवस्थित होने वाली मूल भाववाच्य क्रियाओं को छोड़कर सामान्यतः आ० राजस्थानी क्रियाओ के भाववाच्य-कर्मवाच्य रूप दो प्रकार से निर्मित होते हैं—(क) क्रियाप्रकृति के साथ –ईज प्रत्यय के योग से, तथा (ख) क्रिया-प्रकृति के पूर्णतावाचक कृदन्त रूप के साथ जावणो क्रिया की आसत्ति से। इन दो प्रकार से निर्मित भाववाच्य-कर्मवाच्य रूपों को क्रमशः श्लिष्ट भाववाच्य तथा जा-भाववाच्य रूपो की सज्ञाओं से अभिहित किया जा सकता है।

सामान्य रूप से अकर्मक, सकर्मक तथा प्रेरणार्थक रूपों से भाववाच्य-कर्मवाच्य रूपो की निष्पत्ति पर भाषा मे कोई विशेष व्याकरणिक प्रतिबन्ध नही है।

६.११ १. श्लिष्ट भाववाच्य रूपो की रचना के कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

अकर्मक/सकर्मक वाच्य रूप	श्लिष्ट भाववाच्य रूप
दौड़णो	दौड़ीजणो
निकळणो	निकळीजणो
टपकणो	टपकीजणो
मिटणो	मिटीजणो
बैठणो	बैठीजणो

सामान्यतः व– अन्त्य क्रियाप्रकृतियों के साथ श्लिष्ट भाववाच्य प्रत्यय –ईज के योग से –व का लोप हो जाता है। यथा—

व– अन्त्य क्रियाप्रकृति	श्लिष्ट भाववाच्य रूप
खावणो	खाईजणो
दरसावणो	दरसाईजणो
रोवणो	रोईजणो
जावणो	जाईजणो
मावणो	माईजणो
हुवणो	हुईजणो

किन्तु पीवणो का भाववाच्य रूप पीवीजणो ही होता है।

अनेक अनुकरणात्मक क्रियाप्रकृतियों के दो-दो रूप भाषा में प्रचलित हैं। इनके व– अन्त्य रूपों के श्लिष्ट भाववाच्य रूपों की रचना में –व का लोप हो जाता है।

द्विरूपीय अनुकरणात्मक क्रियाप्रकृतियां	श्लिष्ट भाववाच्य रूप
खदबदणो	खदबदीजणो
खदबदावणो	खदबदाईजणो
जगमगणो	जगमगीजणो
जगमगावणो	जगमगाईजणो
डगमगणो	डगमगीजणो
डगमगाणो	डगमगाईजणो

कतिपय अन्य अनुकरणात्मक क्रियाप्रकृतियों की स्थिति उपरोक्त प्रकार की द्विरूपीय अनुकरणात्मक क्रियाप्रकृतियों से भिन्न है। इनका मूलरूप तो एक ही होता है किन्तु श्लिष्ट भाववाच्य रूप दो-दो उपलब्ध होते हैं।

अनुकरणात्मक क्रियाप्रकृति	श्लिष्ट भाववाच्य रूप
फड़फड़ावणो	फड़फड़ीजणो (१)
	फड़फड़ाईजणो (२)

इस स्थिति मे रूप संख्या (१) और (२) में अर्थ भेद भी हो जाता है (११३, ११४)। रूप संख्या (१) अकर्मक

(११३) आज तो अणूंतो तावड़ है। गरमी सूं जीव फड़फड़ीजे।

(११४) इण कबूडे सूं पांख ई नी फड़फड़ाईज।

क्रिया का श्लिष्ट भाववाच्य रूप है और रूप संख्या (२) सकर्मक अर्थ प्रयुक्त रूप का भाववाच्य (अथवा कर्मवाच्य) रूप।

कुछ क्रियाओं के अकर्मक वाच्य में दो-दो रूप उपलब्ध होते हैं, परन्तु उनका श्लिष्ट भाववाच्य रूप एक ही उपलब्ध होता है।

अकर्मक वाच्य द्विरूपीय	श्लिष्ट भाववाच्य
टकरणौ~टकरावणौ	टकरीजणौ
चकरणौ~चकरावणौ	चकरीजणौ

घबराणौ~घबरावणौ का श्लिष्ट भाववाच्य रूप घबरीजणौ होता है। इसी प्रकार लेवणौ, देवणौ आदि का श्लिष्ट भाववाच्य रूप भी क्रमशः लिरीजणौ, दिरीजणौ आदि होता है।

६.११.२. जा- भाववाच्य रूपों में केवल जावणौ क्रियाप्रकृति के पूर्णतावाचक कृदन्त जायौ से जायौ जावणौ रूप निर्मित होता है। अन्य क्रियाओं के पूर्णतावाचक कृदन्त रूपों में ऐसा भेद नहीं होता।

जा- भाववाच्य रूपों में सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रियाप्रकृतियों के पूर्णतावाचक कृदन्त रूपों में मूल वाक्यों के कर्मानुसार लिंग-वचन का अन्वय होता है। यथा

देखियौ जावणौ (पुल्लिंग, एक वचन)
देखिया जावणौ (पुल्लिंग, बहुवचन)
देखी जावणौ (स्त्रीलिंग, एक/बहुवचन)

कर्मस्थानीय संज्ञा के साथ नै परसर्ग की अवस्थिति होने पर भी संज्ञा और जा- भाववाच्य क्रियारूप में अन्वय विद्यमान रहता है (११५)।

(११५) इण भगती री तौ वो परताप है कै भाटै में जीव घालियौ जा सकै, भाखरा नै हवा में उडाया जा सकै अर अथाग समुन्दरां नै पलक में सुखाया जा सकै।

६.११.३. श्लिष्ट भाववाच्य और जा- भाववाच्य क्रियाओं के समापिका क्रिया रूप सामान्य क्रियाओं के समान ही निर्मित होते है। अकर्मक क्रियाओं से निर्मित भाववाच्य रूपों में अन्वय नहीं होता अर्थात् समस्त रूप पुल्लिंग एक वचन में ही अवस्थित होते हैं। जा- भाववाच्य रूपों में समापिका क्रिया जावणौ क्रिया के साथ संलगित होते हैं।

६.११.४. कतिपय श्लिष्ट भाववाच्य क्रियाओं वाले वाक्यों के कर्तरि प्रयोग वाले प्रतिस्थानीय नहीं होते। ऐसे वाक्यों के जा- भाववाच्य रूप भाषा में उपलब्ध नहीं हैं। यथा वाक्य संख्या (११६) का कर्तरि प्रयोग प्रतिरूप होता है (११६क)।

(११६) पछै उण सूं दौड़ीजै कोनी।
(११६क) पछै वो दौड़ै कोनी।

वाक्य संख्या (११६) का जा–भाववाच्य प्रतिरूप भाषा में सम्भाव्य है (११६ख) किन्तु वाक्य संख्या (११७) का

(११६ख) पछै उण सूं दौड़ियौ कोनी जावै।

(११७) भळै बरसात हुई तौ हाथी रै उण खोज में पांणी भरीजग्यौ।

का जा– भाववाच्य प्रतिस्थानीय अनुपलब्ध है।

६.११.५. प्रत्येक कर्तरि प्रयोग वाक्य के भाववाच्य प्रतिस्थानीय में कर्त्ता-स्थानीय संज्ञा के साथ सूं परसर्ग की अवस्थिति होती है (११८, ११९)।

(११८) आज री रात ई औ काम हुणो चाहीजै। प्रजा री औ कळपणो अबै म्हारै सूं नी देखीजै।

(११९) ... इण कवूड़ी री औ विखौ म्हारै सूं नी देखियौ जावै।

किन्ही स्थितियों मे सूं के स्थान पर रै हाथां (सूं) (१२०) अथवा नैं (१२१) की अवस्थिति होती है।

(१२०) बांदरी हाथ जोड़तौ थकौ कैवण लागौ–आप धणी रै हाथां (सूं) मारियौ जाऊं, इण सूं धिन भाग म्हारा भळै की व्है नी।

(१२१) म्हारै सुख आगै नी तौ म्हनैं दूजा री दुख दीसै अर नी सुणीजै। म्हूं तौ म्हारै सुख में डूबोडौ।

किन्ही वाक्यो मे मूल कर्त्ता के स्थान पर साधन वाचक संज्ञा की भी सूं परसर्ग के साथ अवस्थिति होती है (१२२-२४)।

(१२२) कांटा अर सूला सूं पगथलियां बीधीजगी।

(१२३) रंजी सूं टपरी ढकीजगी।

(१२४) गुळी रै परताप सूं उणरौ रग तौ कदाक बदळीजग्यौ पण उणरौ सुभाव कीकर बदळै।

साधनवाचक संज्ञाओं के स्थान पर कभी-कभी संयोजक कृदन्त की भाववाच्य वाक्यों मे अवस्थिति होती है (१२५)।

(१२५) अेक निजर बाधणियौ जोयौ कैयौ—भगवान रामचंदर ई सोना रौ मिरगलौ देख छलीजग्या तौ बापड़ो औ राजकंवर तौ कांई वडो बात।

सामान्य कथन सूचक वाक्यो मे कर्त्ता स्थानीय संज्ञाओं का लोप भी हो जाता है (१२६)।

(१२६) ठकराणी जो कँयो---आप ई कँड़ो बिलळो वातां करो। संतां री जात-पांत थोड़ो ई देखीजे।

६.११.६. भाषा में कतिपय क्रियायें ऐसी हैं जिनके भाववाच्य प्रतिरूप तो उपलब्ध है किन्तु उनके प्रेरणार्थक रूपों का अभाव है। इस प्रकार की क्रियायें हैं, मठोठणो, मांगणो, मुळमुळावणो, रणकारणो, जतावणो, चापळणो, वकारणो, भणकारणो, मिण-मिणावणो, मूंदणो, ढागोलणो इत्यादि।

६.१२. संयुक्त क्रियाओं के समान ही भाषा में कतिपय क्रिया संयोजन ऐसे हैं जिनका अर्थ की दृष्टि से महत्त्व है। ऐसे क्रिया संयोजनों को अर्थ के आधार पर निम्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :

(क) इच्छार्थक
(ख) स्ववृत्यार्थक
(ग) आसन्नबोधार्थक
(घ) आरम्भप्रमाणार्थक
(ङ) अनुज्ञार्थक
(च) बाध्यतार्थक
(छ) आवृत्यार्थक

६.१२.१. इच्छार्थक क्रिया संयोजन की रचना भावार्थक संज्ञा के साथ चावणो अथवा चाहीजणो क्रियाओं की आसत्ति से होती है इच्छार्थक क्रिया संयोजन भावार्थक संज्ञा के ओ- प्रत्यय और ई- प्रत्यय रूपों के आधार दो प्रकार के होते हैं। इनकी वाक्यों में अवस्थिति के उदाहरण निम्नलिखित हैं (१२७-२८)।

(१२७) रांणी तो राजा रो मूंडो ई नी देखणो चावतो। राजा रै पाछती आतां ई वा अपूठी मुड़नै मूंडो फेर लियो।

(१२८) वो तो रांणी सूं सला-सूत बिचारियां-बिनाई दीवाण नै बुलाय आदेस कर दियो कै अेड़ा नाजोगा कुमाणसां री वो मूंडो ई नी देखणो चावै।

६.१२.२. स्ववृत्यार्थक संयोजन की रचना -ओ अथवा -ई प्रत्यय भावार्थक संज्ञा के साथ आवणो क्रिया की आसत्ति से होती है (१२९-३०)।

(१२९) इंदर भगवान री औ अणचींत्यो ओळबो सुणनै राजकंवर हाको-बाको हुग्यो। उणसूं पाछो एकाएक जबाब देवणो ई नी आयो।

(१३०) बाई बाग्नं उभी सगळी वातां सुघट सुणी। उणसूं को जवाब देवणो नी आयो।

६.१२.३. आसन्नबोधार्थक संयोजन की रचना प्रत्ययरहित भावार्थक संज्ञा के साथ आवणो क्रिया की आसक्ति से होती है (१३१-३२)।

(१३१) बेटो ई बीस ई बरसां रो लड़दो हूण आयो पर हाल तांई कमाई री गैल ई नीं ढूको।

(१३२) श्रेस ई भादवो ढळण आयो अर हाल लावै पनै रो खेंखाड़ करतो वायरो वाजै।

६.१२.४. आरंभमाणार्थक संयोजन की रचना प्रत्ययरहित भावार्थक संज्ञा के साथ संभणो, लागणो, ढूकणो तथा मंडणो क्रियाओं में से किसी एक की आसक्ति से होती है (१३३-३६)।

(१३३) रूळियारगो करता हाथोहाथ अपड़ीजग्यो तो लोग उणनै कूटण संभिया।

(१३४) मां री देखादेख बाप नै ई पैलका टाबर अळखावणा लागण लागा।

(१३५) सो आ बात विचार नै दारू पीवण ढूका जको ढबिया ई नी।

(१३६) इण भांत राजकंवर रै रंगमैल मे दोनां री प्रीत रा चाद-सूरज ऊगण मंडिया सो वगत परवांण नित ऊगता ई गिया।

६.१२.५. अनुज्ञार्थक संयोजन की रचना प्रत्यय रहित भावार्थक संज्ञा के साथ देवणो क्रिया की आसक्ति से होती है (१३७)।

(१३७) सेसनाग री बेटो फुण हिलावतो बोलियो-बिना वरदांन मांगियां म्हैं थानै अठै सूं चुळण ई नी दूं।

६.१२.६. बाध्यतार्थक संयोजन की रचना भावार्थक संज्ञा के साथ पड़णो क्रिया की आसक्ति होती है। इस रचना में भावार्थक संज्ञा और कर्त्ता अथवा कर्म में लिंग-वचनानुसार अन्वय विद्यमान रहता है।

(१३८) फगत गरीबी रै कारण थानै सात फेरां री परणियोड़ी छोड़णी पड़ती।

(१३९) संवट कायो होय म्हनै म्हारो सुभाव बदळणो पड़ियो।

६.१२.७. आवृत्त्यार्थक सयोजन की रचना -इया (१४०) अथवा-वो (१४१) प्रत्यय सहित क्रिया प्रकृति के साथ करणो क्रिया की आसक्ति से होती है।

(१४०) रजपूता रै केई बळा खांडा सूं ई परणीजिया करै।

(१४१) भंवरियो अंठो री कळाई सूंग दिन गिटवो करै, तो ई उणरी भूख को भागै नी।

६.१३. आ. राजस्थानो असमापिका क्रियारूपों के निम्नलिखित भेद

(क) संयोजक कृदन्त
(ख) कृदन्त विशेषण
(ग) पूर्णता वाचक कृदन्त
(घ) अपूर्णता वाचक कृदन्त
(ङ) भावार्थक संज्ञा

६.१३.१. संयोजक कृदन्त की रचना क्रियाप्रकृति के साथ अनै अथवा अर चिह्नकों की प्रवस्थिति अथवा वैकल्पिक रूप से इन दोनों की अनवस्थिति द्वारा होती है। निम्नलिखित वाक्यों में इन तीनों प्रकार की संयोजक कृदन्त परक रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१४२) राणी री वातां सुणनै राजा उणरै गुण अर उणरी समझ माथै घणौ ई राजी हुयौ।

(१४३) अजाणचक री बोली सुण'र राजा जी चमकिया। अठी-उठी जोयौ पण कीं निगै आयौ नीं।

(१४४) सेसनाग रौ बेटौ ई आ साढै री बात सुण अणूतौ राजी हुयौ।

सामान्य रूप से चिह्नक अनै तथा अर दोनों के अ का लोप होकर इनके वैकल्पिक रूप नै तथा 'र ही भाषा में प्रवस्थित होते हैं।

संयोजक कृदन्त परक पदबन्धों में निपात परो की प्रवस्थिति भी होती है। इस प्रकार की रचनाओं के अंगों का क्रम होता है क्रियाप्रकृति + परो ± अनै अथवा अर।

(१४५) गधौ निजर आयां पछै उण रै जेज कठै। वौ तौ होळै होळै ढावा सूं उतर परौ नै सप गधेड़ा रौ कान झाल लियौ।

(१४६) अै इण साल ई एम एड कर परा 'र आया है।

(१४७) डेरा आगै सगळा घरग खड़ा देखिया तौ आड़ोसी-पाड़ोसी ई अचंभौ कर परा खनै आया।

समस्त प्रवस्थितियों में परो निपात का आधार वाक्य की कर्त्ता-स्थानीय संज्ञा से लिंग-वचनानुसार अन्वय होता है।

नैरन्तर्यबोधक अर्थ में संयोजक कृदन्तपरक पदबन्ध में क्रियाप्रकृति की ... भी होतो है।

दोवड़ी ८

(१४८) कालो मानो ताळियां माथै ता...
बूकी जको हंसतो ढवो ई नी।

संयोजक कृदन्त परक पदबन्धों की कतिपय
प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

निम्न वाक्यों में क्रिया से निर्मित संयोजक कृदन्त "अधिक" (१४९) तथा "बडे से बड़ा" (१५०) के ग्रर्थों मे ग्रवस्थित है।

(१४९) अेक सूं अेक ग्रकल मे वदनैं।

(१५०) राजा वद-वदनै कौल करियौ तद वा रूसणौ छोडियौ।

निम्न वाक्यों मे करणौ से निर्मित यौगिक क्रिया की विविध संयोजक कृदन्तपरक ग्रवस्थितियो के वैशिष्ट्य का निदर्शन किया जा रहा है।

ग्रवस करनै "ग्रवश्य ही, जरूरी ही" (१५१)

(१५१) बीनणी जवाब दियौ—कवर नी होवण रै कारण वौ ग्रवस करनै मिनख हुवतौ इज। म्हारो निजर मे कवर बिचैं मिनख रौ घणौ मान है।

किणी सूं इदक करनै मांनणो "किसी से बढकर मानना" (१५२)

(१५२) बाप नैं इण विध कळपतो देख तीनूं बेटा वद-वदनै कैयौ कै वे छोटकिया भाई नैं खुद रै जीव सूं ईं इदक करनै मांनैला।

किणी नैं संज्ञा करनै मांनणो "किसी को सज्ञा (के रूप मे) मानना" (१५३)

(१५३) पूतळी घड़णवाळो तौ बाप री ठौड़ हुयो ग्रर ग्रा इणनैं धणी करने मानैं।

खाणैं नैं परसाद करनैं खावणो "भोजन को प्रसाद मानकर खाना" (१५४)

(१५४) पैली धणी नैं जीमावती, पछै बचियै-खुचियै खांणै नैं परसाद करनैं खावती।

नीचे जाण करनैं "जान-बूझकर" (१५५) तथा जाणनैं "समझकर" १५६ की ग्रवस्थितियो के उदाहरण दिये जा रहे है।

(१५५) फगत वडोड़ा भाइयां नैं चिड़ावण सारू वो जाण करनै लारली बात करी।

(१५६) राव री ग्रा बात तौ साव साचो ही कै गधेड़ो जाणनै जद वौ भच देणो रा सिंघ रौ कांन जोर सूं पकड़ियौ तौ पछै उणनैं नीवड़ा रैं बांधियौ जिरौ चुसकारौ ई नी करियौ।

निम्न वाक्यों मे चलायनैं (१५७-५८) की ग्रवस्थितियो का वैशिष्ट्य स्पष्ट है।

(१५७) अेक सवार उणनैं सावळ समझावतां कैयौ—बावळा, देस रौ धणी थनैं चलायनै मांगण सारू कैयो, ग्रर थूं अंदाता रै सामीसाम ई नटै, थारी ग्रांतो तौ नीं ग्राई।

(१५८) चौधरी रै खाता-पांनडा तो लिखियोड़ा हा कोनीं; उद मरियां उपरात कुण चलायनै हामळ भरै।

इस प्रकार के कतिपय अन्य प्रयोगों के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

हाथां करनै "जान-बूझ कर"

(१५९) पण अठीनै संत खुद मन-ई-मन कळपण लागो कै हाथां करनै श्रो डाळो गळा में लियो।

पगा हालनै "अपने पैरों से चलकर, जान-बूझकर"

(१६०) पगां हालनै मौत रै मूंडै फंदियो।

निम्न वाक्यों में हुयनै की अवस्थितियां भी महत्वपूर्ण हैं।

(१६१) बोलियो—म्है एक छोटो जिनावर हुयनै कूदग्यो। थारै वास्तै तौ श्रा बात सैल म्हेला।

(१६२) श्रेकर श्रेक हाथियां रौ टोळो पाणी पीवण नै ऊंदरा री उण नगरी मांयं-कर हुयनै जावण लागो...।

निम्न वाक्य मे लेयनै को परसर्गवत् अवस्थिति निदर्शित है।

(१६३) म्हारै बिचियां री पाती री बात लेयनै म्हारै धांदो पड़ग्यो।

लेयनै की परसर्गवत् अवस्थिति से मिलती-जुलती जायनै की अवस्थिति के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

(१६४) बकरी हमैं जायनै बांदरै री चलाकी पिछाणी, पण सांदो कांई लागै।

६.१३.२. कृदन्त विशेषण की रचना क्रियाप्रकृति के साथ -ण प्रत्यय के योग से होती है। इस प्रकार निर्मित रचना के साथ वाळो अथवा हार/हारो तत्वों की अवस्थिति हो सकती है, अथवा वैकल्पिक रूप से लिंग-वचन प्रत्ययों का योग होता है। यथा जावणो क्रिया से जावणवाळो, जावणहार, जावणहारो; जावणो आदि रूप व्युत्पन्न हो सकते है। समस्त कृदन्त विशेषणों की भाषा के वाक्यों मे गुणवाचक विशेषण स्थानीय अवस्थिति होती है।

कृदन्त विशेषण की, हार-अन्त्य रूप को छोड़कर, विकारी गुणवाचक विशेषणों के समान शब्दगतरूप रचना होती है।

कृदन्त विशेषण की वाक्यों में अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१६५) ग्यांन नैं कंठा करणियो ग्यांनी नी है, ग्यान रो सिरजन करणवाळो अर ग्यांन नै श्रापरा करमा में बरतणियो ग्यानी व्है।

(१६६) थें बतावौ तो एक पूछूं के दुनियां मे पेट रै जाया चील्हरां सूं अर सुहाग नै राखणहारै धणी सूं कोई तीजो चीज फेर ई की बत्ती है कांई ?

सामान्य कृदन्त विशेषण (अर्थात् –णौ अन्त्य कृदन्त) के अभिव्यंजक रूप भी भाषा में निर्मित होते है। समझणौ को आधार मानकर इस रूपावली का निदर्शन करने वाली संभावनाएं निम्नलिखित हैं।

लिंग	कृदन्त विशेषण	अभिव्यंजक	प्रतिरूप
पुल्लिंग	समझणोड़ौ	समझणोड़को	समझणोड़लौ
अल्पार्थक	समझणोड़ियौ	—	—
स्त्रीलिंग	समझणोड़ी	समझणोड़की	समझणोड़ली

उपरोक्त अभिव्यंजक रूपों की भाषा में अवस्थिति उतनी अधिक नहीं होती।

६.१३.३ पूर्णतावाचक कृदन्त की रचना का उल्लेख प्रकरण संख्या (६.८.१.१) में किया जा चुका है। अतः इसकी अभिव्यंजक रूपावली सूचित की जा रही है। उक्त रूपावली को सूचित करने के लिए बैठणौ तथा लिखणौ क्रियाओं को आधार माना गया है।

बैठणौ क्रिया के पूर्णतावाचक कृदन्त की अभिव्यंजक रूपावली

लिंग	पूर्णतावाचक कृदन्त रूप		अभिव्यंजक प्रतिरूप		
पुल्लिंग	बैठौ	बैठोड़ौ	बैठोकड़ौ	बैठोड़को	बैठोड़लौ
अल्पार्थक	—	बैठोड़ियौ	—	—	—
स्त्रीलिंग	बैठी	बैठोडी	बैठोकड़ी	बैठोड़की	बैठोड़ली

लिखणौ क्रिया के पूर्णतावाचक कृदन्त की अभिव्यंजक रूपावली

लिंग	पूर्णतावाचक कृदन्त रूप		अभिव्यंजक प्रतिरूप	
पुल्लिंग	लिखियौ	लिखियोडौ	लिखियोड़को	लिखियोड़लौ
अल्पार्थक	—	लिखियोडियौ	—	—
स्त्रीलिंग	लिखी	लिखियोड़ी	लिखियोड़की	लिखियोड़ली

उपरिलिखित विकार्य रूपों में, गुणवाचक विशेषणों के समान ही, कर्त्ता अथवा कर्म के लिंग-वचनानुसार विकार होता।

पूर्णतावाचक कृदन्त के उपरोक्त विकार्य रूपों के अतिरिक्त अविकार्य रूप की भी रचना होती है। इस रूप का निर्माण क्रियाप्रकृति के –यां अथवा –इयां प्रत्यय के योग से होता है। ई– अन्त्य क्रियाओं के साथ –या प्रत्यय का योग होता है और अन्य क्रियाप्रकृतियों के साथ –इयां का। अविकार्य पूर्णतावाचक कृदन्त की अवस्थिति वाक्यों में क्रिया-विशेषण स्थानीय ही होती है (१६७-७०)।

(१६७) बांमणी कांई पडूतर देवती। नीची धूण करियां बोली-बोली ऊभी री।

(१६८) साथै सूखोड़ौ खालड़ौ लियां वौ वड़लै रै माथै चढ़नै बैठग्यौ।

(१६९) आपां रै साथै रैयां इण बाळक नै भूखौ-तिरसौ मरणौ पड़ैला।

(१७०) धणी रै मरियां, अबै आ देह फगत माटी री है, जकी वगत आयां माटी में ई मिळ जासी।

अविकार्य पूर्णतावाचक कृदन्त के साथ कतिपय परसर्गों की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१७१) पण अबै डरियां सूं ई दुरमी छोडैला तो नीं।

(१७२) खासी ताळ तांई वौ राणी सूं मीठी-मीठी वातां करी। चोगणी पगार री लोभ दियां पछै ई राजी नीठ मानियौ।

(१७३) भलां म्हारै गाव मोमकर पधारौ अनै गोठ-घूगरी जीमियां बिगर पधारण दां आपनै। आप तो म्हारै मूंगा पामणा हौ।

(१७४) पण म्हैं हाल कवारी किन्या हूं। फेरा खायां बिना मरूं तौ अगत आवूंला।

अविकार्य पूर्णतावाचक कृदन्त के साथ अवधारक निपात ई की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(१७५) पण इचरज री वात कै देस-निकाळा री बात सुणियां ई राजकंवर तौ अंगै ई दुमना नी हुया।

(१७६) अैड़ा पापियां री तौ परस करियां ई पाप लागै।

(१७७) सिपाई मरियां ई हाथ सूं सस्तर नी छोड़ै जकौ जीवतां ई सस्तर लारै छोड़नै गिया परा।

(१७८) ठाकरसा सांमी देखनै घोड़ै री लगाम हाथ में झेलियां ई केवण लागौ –म्हैं राजाजी री फरमांण लेयनै आयौ हूं।

पूर्णतावाचक कृदन्त के विकार्य तथा अविकार्य रूपों की वाक्यों में आवृत्ति भी होती है (१७९-८०)।

(१७९) पण सौ वुद्धि तौ जाजम रा पल्ला भेळा व्है उण जगा वैठियौ जको वैठो-
वैठो ई आपरै नीचै सूं पल्ला नैं काड आगा फैंक दीना।

(१८०) कंवर रा पग झालियां-झालिया ई वाबौ वेटी मायै चिड़तौ बोलियौ—
राजा अर कंवर रै हाथा कदेई कसूर नी हुया करै।

६ १३.४. अपूर्णतावाचक कृदन्त की रचना का उल्लेख प्रकरण संख्या (६.८.१.२) में किया जा चुका है। नीचे, जावणौ और लिखणौ क्रियाओं को आधार मानकर, इसके अभिव्यंजक रूपों को सूचित किया जा रहा है।

जावणौ किया के पूर्णतावाचक
कृदन्त की अभिव्यंजक रूपावली

लिंग	अपूर्णतावाचक कृदन्त रूप	अभिव्यंजक प्रतिरूप			
सामान्य पु.	जावत	—	—	—	—
विशेष पु.	जावतौ	जावतोडौ	जावतड़ौ	जावतोड़कौ	जावतोड़लौ
अल्पार्थक पु.	—	जावतोड़ियौ	—	—	—
स्त्रीलिंग	जावती	जावतोड़ी	जावतड़ी	जावतोड़की	जावतोड़ली

लिखणौ किया के पूर्णतावाचक
कृदन्त की अभिव्यंजक रूपावली

लिंग	अपूर्णतावाचक कृदन्त रूप	अभिव्यंजक प्रतिरूप			
सामान्य पु.	लिखत				
विशेष पु.	लिखतौ	लिखतोडौ	—	लिखतोड़कौ	लिखतोड़लौ
अल्पार्थक पु.	—	लिखतोड़ियौ	—	—	—
स्त्रीलिंग	लिखती	लिखतोड़ी	—	लिखतोड़की	लिखतोड़ली

सामान्य पुल्लिग रूप को छोड़कर अन्य सब रूपों मे विकार्य विशेषणों के समान लिंग-वचनानुसार विकार होता है।

अपूर्णतावाचक कृदन्त के उपरोक्त अभिव्यंजक रूपों के अतिरिक्त एक अन्य रूप भी भाषा में उपलब्ध होता है। इस रूप की रचना क्रियाप्रकृति के साथ —न्त् प्रत्यय के योग से होती है। —न्त् प्रत्यय रूपों मे भी विकार्य विशेषणों के सामान विकार होता है, यथा जावंतौ, जावंती, लिखंतौ, लिखंती। न्त्— प्रत्यय रूप की वाक्य मे अवस्थिति का ७८ निम्नलिखित है।

(१८१) गोडां रळकंतो काळो भंवर आंटो रो फटकारो देय टकरांणी भचकै आडो फिरो।

उपरोक्त समस्त रूपों के अतिरिक्त अपूर्णतावाचक कृदन्त के निम्न अन्य रूप भी उपलब्ध होते हैं।

(क) आमेड़ित रूप, यथा रोवतो-रोवतो (१८२)।

(१८२) अंत मे रोवतो-रोवतो कैयो-म्हारै आगे-लारै कोई कोनीं।

(ख) थकौ-संलगित रूप, यथा मुळकतो थकौ (१८३)।

(१८३) लक्खो मुळकतो थकी जवाब दियो—आपरो ई दियोड़ो खावूं हूं।

(ग) -आं-अन्त्य रूप, यथा देखतां, मळापतां (१८४)।

(१८४) मारग मे मळापतां सिंग खिरगोसियैं नै भळै पूछियो—कित्तो क अळगो है उणरो किलो।

(घ) -आं-अन्त्य आमेड़ित रूप, यथा सोचतां-सोचतां (१८५)।

(१८५) सोचतां-सोचतां सेवट उणनै अेक अटकळ सूजी।

(ङ) -आं-अन्त्य ई आसन्न रूप, यथा सुणतां ई (१८६)।

(१८६) गीत री भणक सुणतां ई हाथी तौ मस्त हुयौ पण हुयौ।

(च) -आं-अन्त्य थकांई संलगित रूप, यथा हूवतां थकां (१८७)।

(१८७) खुद रै घर री ठरकी निसैवार हूवतां थकां ई वौ मळीच हो।

(छ) -आं-अन्त्य थकां संलगित रूप, यथा हूवतां थकां (१८८)।

(१८८) बन मे राजा रै हूवतां थकां किणी रै साथै इन्याव व्है, इणसूं तो निजोगी बात भळै कांई व्है।

अवधारक निपात ई के स्थान पर कभी-कभी अपूर्णतावाचक कृदन्त के साथ पांण की भी अवस्थिति होती है (१८९)।

(१८९) स्याळ री आ बात सुणता पाण सिंगा रा धै छिलग्या।

पांण के पूर्व अपूर्णतावाचक कृदन्त के सामान्य रूप की अवस्थिति भी होती है (१९०)।

(१९०) राणी तो आवत पाण राजा सूं लड़ण लागी—आछो धोको दीनो म्हनै।

६.१३.५. भावार्थक संज्ञा की रचना क्रियाप्रकृति के साथ—णो प्रत्यय के योग से होती है। रूप की दृष्टि से भावार्थक संज्ञा और कृदन्त विशेषण (विशेष रूप से कृदन्त

विशेषण की ग्रौ– ग्रन्त्य अवस्थितियों में भेद नहीं होता। किन्तु इन दोनों के पार्थक्य को समझने के लिये यह जानना आवश्यक है कि भावार्थक संज्ञा की अवस्थिति संज्ञा स्थानीय होती है और कृदन्त विशेषण की विशेषण स्थानीय (१९१-९५)।

(१९१) किणी संत नै सत्तावणो आपां नै ई फोड़ा घालेला। संतां रो तो की नी विगड़ेला।

(१९२) उणनै राज करणो ई छोड़ देवणो चाहीजे।

(१९३) समझावणो म्हारो फरज हो, मांनो नीं मांनो थांरी मरजी।

(१९४) अंत में कैयो––मर जावणो कबूल है पण पाछो धोबी री गवाडी सांमी तो मूडो ई नी करूं।

(१९५) वौ लाडू खावणा तो पांतरग्यो। वांनै खावण री इकावळी धोखतो गियो।

उपरोक्त उदाहरणों मे भावार्थक संज्ञा की संज्ञा स्थानीय अवस्थिति ऋजु रूप में एक तथा बहु दोनों वचनों मे है। किन्तु तिर्यक रूप में अवस्थितियों में भावार्थक संज्ञा के साथ ग्रौ– अन्त्य संज्ञाओं के समान –ग्रा~ग्रै (एकवचन में) और –ग्रां (बहुवचन में) प्रत्ययों का योग नहीं होता, यथा (१९६-९८)।

(१९६) म्हारै हंसण रो फगत ग्रो इज स्यांनो है।

(१९७) दो-तीन दिनां पछै ठाकरसा भळै उठै कर घूमण पधारिया तो सेठ वांनै अणूता राजी निगै आया।

(१९८) जबरै सू जबरै नै जोवण छुळिया, सो दो तो विना हेरियां ई मिळग्या।

उपरोक्त उदाहरणों में हंसण (१९६), घूमण (१९७), तथा जोवण (१९८) आदि रूपों को अविकार्य भावार्थक संज्ञा रूप कहना अधिक युक्ति संगत है।

अनिवार्य भावार्थक संज्ञा रूपों से निर्मित क्रिया सयोजकों का उल्लेख प्रकरण संख्या (६.१२) में किया जा चुका है।

किन्तु उपरोक्त सामान्य नियम के अतिरिक्त किन्हीं विशेष परिस्रों में –ग्रा~ग्रै अन्त्य भावार्थक संज्ञा रूप की अवस्थिति भी हो सकती है।

(१९९) रामूड़ो कदेई थारै देखणा में आवै तो फट देती रा म्हनै समचार कर दीजै।

(२००) ल्हास नै रावळा मे मगवाई। रोवणा-धोवणा रै मार्गे हलावो-चलायो ई सरु हुयो।

अविकार्य भावार्थक संज्ञा के दोनों प्रकार के रूपों में सामान्य तथा विशिष्ट के आधार पर अर्थ भेद होता है।

६.१४. पिछले प्रकरणों में वर्णित संयुक्त क्रियाओं एवं क्रिया-संयोजनों के अतिरिक्त भाषा में अनेक ऐसे क्रिया$_1$ + क्रिया$_2$ (=क्रि$_1$ + क्रि$_2$) अनुक्रम उपलब्ध होते हैं जिन्हें सामान्य रूप से संयुक्त क्रियाओं आदि के साथ परिगणित करने की भ्रांति हो सकती है।

(२०१) सिंघ मलापनै पाज मायें आय ऊभो।

(१०२) ....भोजाइयां नै समभावण लागो कै ठूंणो सो हुय छूटो।

(२०३) ठाकर सा तो कंवर जळमण री वधाई सुणनै दारू चूंपणो मांडियो जको नव दिनां ताई लगोलग पीवता ई गिया।

उपरिलिखित वाक्यों में "आय उभो," "हुय सूटो," तथा "चूंपणो मांडियो" वस्तुतः अपनी आन्तरिक संरचना के आधार पर संयुक्त क्रियाओं एवं क्रिया-संयोजनों से भिन्न कोटि की रचनाएं हैं। इन क्रिया$_1$ + क्रिया$_2$ अनुक्रमों की रचना इस अध्याय में वर्णित विविध प्रक्रमों द्वारा होती है। नीचे इन क्रिया-अनुक्रमों का, उनमें अन्तर्निहित प्रक्रमों सहित सोदाहरण विवरण किया जा रहा है।

६.१४.१. आय ऊभणो, मार गेरणो, लाय घालणो, मनाय छोडणो, ले डूबणो आय ढबणो, ले ढळणो, आय ढूकणो, हार थाकणो, कंय बरसावणो, आय धमकणो, बांध नीरणो, जाय पकड़णो, लाय पटकणो, आय पूगणो, जाय पूगणो, लेय फिरणो, उतार फ़ैंकणो, तोड़ बगावणो, निकळ बहणो, आय बाजणो, आय बिराजणो, गडाय बूरावणो, आय बैठणो, जाय बैठणो, छांन मारणो, मार राळणो, लेय सिधावणो आदि रचनाएं वस्तुतः अविसित संयोजक कृदन्त + समापिका क्रिया अनुक्रम है, जिनमें समापिका क्रिया के मूल संयुक्त क्रिया रूप में अवस्थित विवारक क्रिया लुप्त है। यथा आय उमणो आदि का मूल रूप है आय (नै) उमग्यो। उपरिलिखित समस्त क्रि$_1$ + क्रि$_2$ अनुक्रमों की निष्पत्ति, छांण मारणो इत्यादि कतिपय अनुक्रमों को छोड़कर, उल्लिखित प्रक्रम द्वारा हुई है। "आय (नै) ऊभग्यो" सामान्य संयोजक + संयुक्त क्रिया के परिवर्तित रूप "आय ऊभो" में अप्रत्याशित क्रिया-व्यापार का होना ध्वनित होता है, जबकि उसके मूल रूप में ऐसा अर्थ ध्वनित नहीं होता।

इन क्रि$_1$ + क्रि$_2$ अनुक्रमों में आय पूगणो, जाय पूगणो आदि की व्याख्या अन्य प्रकार से भी की जा सकती है। वह यह है कि इस प्रकार के अनुक्रमो का मूल रूप है पूग आयो तथा पूग ग्यो, और आय पूगो, जाय पूगो आदि रूप मूल संयुक्त क्रिया के दोनों अंगों (मुख्य क्रिया + विवारक क्रिया) में क्रम-परिवर्तन का परिणाम हैं।

छांण मारणो (२०४) आदि अनुक्रम ऐसी रचनाएं है,

(२०४) म्हारो राज छांण मारियो पण कठै ई उजास रो रेसो निजर नीं आयो।

जिनकी व्युत्पत्ति उपरोक्त दोनों प्रक्रमों से पृथक है। छांण मारणो वस्तुतः एक संयुक्त क्रिया है जिसमें प्रावस्था विवारक न्हाखणो के स्थान पर उसके अभिव्यंजक प्रतिस्थानीय मारणो की अवस्थिति हुई है।

६.१४ २. इसी प्रकार "चूंपणो मांडणो" (६ २२.४.) क्रिया अनुक्रमों में (जिनमे प्रथम अंग असमापिका क्रिया रूप भावार्थक संज्ञा की अवस्थिति होती है) भावार्थक संज्ञा की कर्त्ता अथवा कर्म स्थानीय संज्ञाओं के स्थान पर अवस्थिति हुई है। इस कोटि के अनुक्रमों के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(२०५) बोळणो सीखियो वद सू आज दिन तांई घणो ई झूठ बोलियो।

(२०६) सुथार रो बेटो तो फगत माया खरचणो जांणतो सो खुलै खाळ खरचण लागो।

(२०७) मां रो तो रोवणो ढवियो पण म्हारो रोवणो नी ढवियो।

(२०८) वे दोनू तो जांणे बोलणो ई बिसर ग्या ह्वे।

(२०९) खुद रै फोड़ै विचै उणरै हीयै टाबरां रो कळपणो घणो घणो साल्हतो।

६.१५. आ. राजस्थानी मे वाक्यांशों अथवा समापिका क्रियापदबन्धों के आमेड़ण द्वारा विविध रूप से अभिव्यंजक रचनाएं निर्मित होती हैं। उदाहरण के लिये निम्नलिखित वाक्य में वर्णित सूर्यास्त के दृश्य को लिया जा सकता है।

(२१०) अवै गुलाल रो ओ गोळ-गट्ट थाळ आधो खांडो हूयग्यो। ओ डूबो! ओ डूबो!

इस वाक्य में ओ डूबो! ओ डूबो! ऐसी ही आमेडित रचना है। इन रचनाओं का, अभिव्यंजक सरचना के अध्याय में वर्णन करके, न अलग से विवरण करना इसलिए आवश्यक है कि उक्त रचनाएं अभिव्यंजक होते हुए भी कतिपय वाक्यविन्यासात्मक युक्तियों पर आधारित हैं। ये युक्तिया भाषा की वाक्यविन्यासात्मक संरचना का अविभाज्य अंग हैं। नीचे इस कोटि की रचनाओं का सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

६ १५.१: इस कोटि की प्रथम अभिरचना है पण द्वारा समापिका क्रिया पदबन्ध की आवृत्ति (२११-१२)।

(२११, उणरी आतां डर रे कारण कुळबुळावण लागी। गावड़ घुमाय च्यारू खांनी भाळियो। सिंघणी रो रूप धार काळ तो आयो पण आयो।

(२१२) नी मांनणवाळा अगै ई मत मानो, म्है तो थानै हुई जकी बात बतावू कै थोड़ा दिना पछै ई बिना माईता रै उण छोकरा रो डंको बाजियो पण वाजियो।

इस कोटि की द्वितीय अभिरचना मे समापिका क्रिया पद को जको ईज के अन्त-निवेश द्वारा आवृत्ति होती है।

(२१३) घरवाळा घणी ई समझाइस करी पण ठाकर तो नीं मानिया जको नी इज मानिया।

(२१४) लोगां घणा ई हाथ जोड़िया, पण सेमनाग तो धत पकड़ ली जकी पकड़ इज ली।

तृतीय ग्रभिरचना मे समापिका क्रिया पदबन्ध, + जकी + समापिका क्रिया पदबन्ध, + ई की ग्रवस्थिति होती है। इस अभिरचना की ग्रवस्थिति सामान्य रूप से विरोधवाचक प्रतियोगिक वाक्यों के पण-वाक्यांश के पूर्व होती है।

(२१५) धरम रै वास्तै चढायोडो पूजायो कदै ई अकारथ नीं जावै। आगलै जलम में तो वो लाधै जको लाधै ई, पन इण जलम में ई वो चौगणो होय पाछो हाथ आवै।

चतुर्थ अभिरचना में समापिका क्रिया पदबन्ध की ग्रावृत्ति के साथ 'क का अन्तर्निवेश होता है।

(२१६) देत री वेटी डर सूं धूजती वोली कै उणरो वाप ग्रायो 'क आयो।

एक अन्य ग्रभिरचना में समापिका क्रिया पदबन्ध की ई अन्तर्निविष्ट ग्रावृत्ति होती है।

(२१७) राजा री निजर तो घोड़ा माथै ई चिपगी। अँडे घोड़ा री कीरत तो कानां सुणी ई सुणी ही। निजरां देखण रो काम तो ग्राज ई पड़ियो। राजा तो हीस रै समचै ई घोड़ा री परख कर ली ही।

संयोजक समुच्चय बोधक निपात ग्रर के ग्रन्तर्निवेश सहित भी समापिका क्रिया पदबन्ध की ग्रावृत्ति होती है।

(२१८) मायो निवायनै कैवण लागी—ग्राज तो ग्रापरा दरसण हुया ग्रर हुया।

अवधारक निपात तो के ग्रन्तर्निवेश सहित भी समापिका क्रिया पदबन्ध की ग्रावृत्ति होती है। यह ग्रभिरचना सामान्यतया हेतुमद् रचनाओं तक ही सीमित है, यद्यपि हेतुमद् वाक्य चिह्नक की भी ग्रवस्थिति होना अनिवार्य नहीं है।

(२१९) बात सुणतां ई राकस रा तो धै छिलग्या। ग्रबै करै तो काई करै। आज तो ग्रो जम किणी भाव नीं छोड़ैला।

समापिका क्रिया पदबन्ध, + तो + कर्त्ता ग्रथवा कर्म समुद्देशक सर्वनाम + समापिका क्रियापदबन्ध भी एक इसी कोटि की महत्त्वपूर्ण अभिरचना है।

(२२०) पछै क्यूं पूछणो। उण रै पगां री रज माथै रै लगावण सारू लोग भड़-वड़िया तो वे अड़वड़िया।

समापिका क्रिया पदबन्ध, + तो पछै + कर्त्ता ग्रथवा कर्म समुद्देशक सर्वनाम + इज + समापिका क्रिया पदबन्ध, अभिरचना निदर्शन निम्न उदाहरण द्वारा होता है।

(२२१) सगळा जंगळ में हायतोबा मची तो पछै वा इज मची ।

नीं + समापिका क्रिया पदबन्ध की आवृत्ति से निर्मित रचना का उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है ।

(२२२) न्याव, मेळप, भाई-चारौ अर बराबरी रैं उपदेसां कुदरत रौ ढारौ नी बदळीजै, नी बदळीजै ।

सहगम्बन्ध वाचक सर्वनाम + समापिका क्रिया पदबन्ध की आवृत्ति से निर्मित अभि-रचना के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(२२३) पण आ अपछरा हाल म्हारी रांणी नीं है सो नी है ।

(२२४) राजा यांचा देय-देय नैं हार थाकियौ, पण रांणी नै पतियारौ नीं हुयौ सो नीं हुयौ ।

(२२५) गाव रै गोखौ आवतां ई भाणजा रौ पेट दूखण मंडियौ सो वो मंडियौ । कचूड़ौ लुटै ज्यूं लुटण लागौ ।

समापिका क्रियापदबन्ध की सामान्य आवृत्ति के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(२२६) बोलणौ सीखियौ तद सूं आज दिन ताई घणौ ई झूठ बोलियौ, घणौ ई झूठ बोलियौ ।

(२२७) अेक पग रै पांण नीचे टिरियोड़ौ वो ऊंचौ उडतौ ई ग्यौ, उडतौ ई ग्यौ ।

नीचे इस कोटि के वाक्यो के कतिपय अन्य उदाहरण दिये जा रहे हैं, जिनमे प्रत्येक वाक्य तत्सम्बन्धी अभिरचना का प्रतिनिधित्व करता है ।

(२२८) नीद में सूतोड़ी नै अैडो सपनौ आयौ हुवतौ तौ खुलिया पछै तूट जावतौ । पण जागतोड़ी रौ औ सपनौ कीकर अर कद तूटैला ।

(२२९) ... कैयौ—हा, थारी वात तौ साव साची पण झूठ री आंधी आगै साच री भुतियौ टिकनै कित्तोक टिकै ।

(२३०) म्हनै तौ फगत इण बात रौ इचरज व्है कै आ कुलखणी मां रै पेट मे नौ महीना खटी तौ खटी इज कीकर ।

(२३१) अमोलक हीरां री बात सुणनै उणरौ जीव डिगियौ तौ अैडौ डिगियौ कै अजेज उण चिड़ी नैं छोड़ दीनी ।

(२३२) देखियौ—अेक कालिंदर फुण करियां फूला रै जोड़ै डसण री ताक मे बैठौ । आज तौ बचिया ज्यूं ई बचिया । पाधरौ मूठ माथै हाथ ग्यौ ।

किन्ही स्थितियों मे क्रिया पदबन्धो की तीन बार भी अवस्थिति होती है ।

(२३३) पौर मे बरसियौ तौ बरसियौ ई बरसियौ—पछै क्यू पूछौ वाता ।

७. क्रियाविशेषण

७.१. म्रा राजस्थानी क्रियाविशेषणों को उनके प्रकार्यों के आधार पर दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, (क) वाक्यात्मक क्रियाविशेषण, और (ख) सामान्य क्रियाविशेषण।

७.१ १ वाक्यात्मक क्रियाविशेषण मात्र क्रिया पदबन्धों के आश्रित अंग न होकर, सम्पूर्ण वाक्यों के विशेषण होते है। निम्न वाक्यों में नीठेक (१) तथा नीठ (२) की प्रवर्तियों से क्रमशः वाक्यात्मक एवं सामान्य क्रियाविशेषणों के प्रकार्यात्मक पार्थक्य स्पष्ट निदर्शन हो रहा है।

(१) पण ऊंदरी तो किणरी किरियावर मानै, सामी भूंडती कैयौ—नीठेक तो घणा दिना सूं गुळ रौ भौरो भ्रांखियां देखियौ, पण होळी ऊठियँ नै थौ ई को सवायौ नी।

(२) भ्रर तठा उपरात असमान जोगी सेठां री बेटी नै आपरी मौत रौ भेद बतायौ। अटकतौ-अटकतौ नीठ बोलियौ—सात समुंदरां पार अेक मिंदर है।..

इन दोनों उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि वाक्यात्मक और सामान्य क्रियाविशेषणों का परस्पर पार्थक्य शब्दरूपात्मक अथवा परस्पर व्यावर्तक शब्द-संवर्गों आदि पर आधारित नहीं है। इस तथ्य को अधिक स्पष्ट करने के लिए वाक्यात्मक क्रियाविशेषणों के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(३) सेवट काई हुयनै वा आपरै मन मे कैवण लागी—इया खाटा वड्छ अंगूरां साफ साव ई कुण भ्रडूंपा मारै।

(४) पण भ्राईवा म्है न्यारी ई म्हारा मुकाम में भोजन करूंला।

(५) चिड़ो छोटो तो भ्रवस हो पण ही इयक चतर।

(६) समभ्र फगत बतावण रै आसरै नी हुया करै।

(७) नगीनम बिसा मायै बिखो पड़ण सू बामणी रो काळजो काठो हुग्यो।

(८) राजा री कंवर नित-हमेस उण मारग ई सैर-सपाटा वास्तै घोड़ा चढ़ियो निकळतो।

(९) स्याळणी तुरताफुरता अेक अटकळ बिचार ली।

उपरिलिखित वाक्यों में मेक्ट (३), आइंदा (४), अबस (५), फगत (६), लगोलग (७), नितहमेस (८), तथा तुरताफुरता (९) की वाक्यात्मक क्रियाविशेषण रचनाओं के रूप में अवस्थिति हुई है।

७.१.२. सामान्य क्रियाविशेषणों के मुख्य वर्ग हैं (क) सार्वनामिक क्रिया विशेषण, (ख) क्रिया विशेषण के रूप में अवस्थित होने वाली संज्ञाएं तथा विशेषण, और (ग) अन्य विविध क्रिया विशेषण पदबन्ध।

७.१.२.१. सार्वनामिक क्रियाविशेषणों के अन्तर्गत सर्वनामों की जिन कोटियों को वर्गीकृत किया जा सकता है, वे हैं (क) निजवाचक सर्वनाम, (ख) अन्योन्याश्रय वाचक सर्वनाम, (ग) परिमाणवाचक सर्वनाम, (स) गुणवाचक सर्वनाम, (ङ) प्रकारता बोधक सर्वनाम, (च) रीतिवाचक सर्वनाम, (छ) स्थानवाचक सर्वनाम, (ज) काल वाचक सर्वनाम तथा प्रकरण संख्या (४.२) मे उल्लिखित कतिपय सर्वनाम (यथा, कीं-न-कांई, कांई-न-कांई इत्यादि)। कतिपय अन्य वर्गों के सर्वनामो की भी सीमित रूप से क्रियाविशेषण स्थानीय अवस्थिति होती है।

इन समस्त सर्वनाम वर्गों का उल्लेख पहले किया जा चुका है। इनका विशेष विवरण वाक्यविन्यास के अन्तर्गत किया जायगा।

७.१.२.२. क्रियाविशेषण के रूप में अवस्थित होने वाली संज्ञाओं मे से कुछ तो ऐसी हैं जिनकी क्रियाविशेषण स्थानीय अवस्थिति भाषा मे रूढ हो चुकी है। इनमें स्थान— दिशावाचक क्रियाविशेषण, कालवाचक क्रियाविशेषण और रीतिवाचक क्रियाविशेषणों को सम्मिलित किया जा सकता है। अनेक गुणवाचक तथा निर्धारक विशेषण भी रीतिवाचक क्रियाविशेषणो मे सम्मिलित किये जा सकते हैं। इन तीनो कोटियों के क्रियाविशेषणों के कतिपय उदाहरण नीचे संकलित किये जा रहे हैं।

कतिपय स्थान वाचक क्रियाविशेषण

मांय, मायनै, मायकर, माय री माय, माठ, तलबै, हेटै, बारै, घकलै बळ, आडंकट, [illegible]ट-कूंट, ठौड़-ठौड, ताडै, दर-दर, अधर, ऊपरै, ऊंची, मथारै, सिध, लारै, पालती, पाडै, [illegible]जू-बाजू, नेड़ो-आगो, सांनी, चौ तरफ, च्यारू मेर, च्यारू दिस, काठै, डावी बाजू, छेडै, [illegible] कोस अळगा, सामीं, सौ कोस आतरै, आगै, आगे-पाछै, धकै, बिचाळै, दर-दर इत्यादि।

कतिपय दिशा वाचक क्रियाविशेषण

सांमी कूंट, ऊळ दिसा (उगूण), परियाण कूंट, लंकावू दिसा, निरात कूंट, [illegible]सा, पचाव कूंट, धुरावु दिसा, सांमी कूट इत्यादि।

कतिपय कालवाचक क्रियाविशेषण

वेळा, वगत, सायत, वगत-बेवगत, टांणै, फेर, फेरूं, अेकर, सालौसाल, आयेंवर, पौर, परार, तैपरार, अष्ट पौर, आठ पौर, बत्तीस घड़ी, एक बार, सात बळा, पैलकै, पार, अेक दिन, परसूं, खिणेक, एक पलक, घमेक, आज रै दिन, भाग फाटौं, सदियें-सदियें, तड़कै तड़कै, विनूडे पैली, दूजै दिन सार सूणतौ, भखावटै, भाभरकै, दिन रै वधांण, सिझ्या, आथण-सवार, आज, कालै, रोज, रोजीना, बेगौ, अबेज, अणजेज, निरो ताळ, खासी ताळ, घणी ताळ, सरूपोत, सिरेपोत, पैल पोत, हाल, हाल ई, हाल तो, हाल ताईं, हमेसा ।

राजस्थानी महीनों के नाम भी इसी कोटि में आते हैं—यथा, चैत, वैसाख, जेठ, आसाढ, सावण, भादवा, आसोज, काती, मिगसर, पोह, माह, फागुन ।

कतिपय रीतिवाचक क्रियाविशेषण

धीमैं, हौळै, धीरै, पैदल, खाकौ, वेगो, जल्दी, घणकरा, छांनै, ओलै, फदास, अचांणचक, सटकै इत्यादि ।

उपरोक्त वर्गों के अतिरिक्त संज्ञाओं की परसर्गों सहित (तथा कुछ परिसरों में तिर्यक रूप में किन्तु परसर्ग रहित) अवस्थिति क्रियाविशेषण संवर्ग की मुख्य विशेषता है (१०,११)।

(१०) हाथी तौ उणरी बोलीरी सोय में भळै उठै सूं दौड़ियौ, चौगणै वेग सूं दौड़ियौ ।

(११) ये बोला-बोला पवन रै वेग जैपांणै री नींव में बड़ जावौ । भाटिया रै सरणै पूगिया पछै जीव नै जोखौ नी ।

इन उदाहरणों में (चौगणै वेग सूं (१०) तथा पवन रै वेग (११)) वेग संज्ञा की क्रमशः परसर्ग सहित तथा परसर्ग रहित अवस्थितियों के उदाहरण हैं ।

संज्ञाओं की परसर्ग सहित अथवा परसर्ग रहित क्रियाविशेषण स्थानीय अवस्थितियों की कतिपय व्याकरणिक विशेषताओं का उल्लेख करने से पूर्व आधुनिक राजस्थानी परसर्गों का विवरण प्रस्तुत करना आवश्यक है ।

७.१.२.३. आ. राजस्थानी परसर्गों को दो कोटियों में विभाजित किया जा सकता है । नै, सूं, तक, रो, में, भर इत्यादि परसर्गों को छोड़कर शेष समस्त परसर्ग रो के तिर्यक रूप रै/रा के साथ कतिपय संज्ञाओं अथवा विशेषणों की आसक्ति से निर्मित होते हैं । कुछ परसर्गों की रचना रै/रा के स्थान पर सूं की अवस्थिति से भी होती है ।

नीचे आ. राजस्थानी के समस्त ज्ञात परसर्गों की सूची प्रस्तुत की जा रही है ।

रै अड़ोअड़ 'के समीप'
रै अठै 'के यहां'
रै अलावा 'के अलावा, के अतिरिक्त'
रै असवाड़ै-पसवाड़ै 'के आस-पास'
र आंगे 'के सहारे'
रै आगै 'के आगे'
सूं आगै 'से आगे'
रै आगै-लारै 'के आगे-पीछे'
रै आडी 'के आगे, पर'
रै आड़ै-पाड़ै 'के आस-पास'
रै आपै 'के सहारे'
रै आरपार 'के आरपार'
रै आसरै 'के आसरे'
रै उठै के वहां'
रै उनमान के समान'
रै उणियार 'के जैसा'
रै उणियारै 'के जैसा, के समान'
रै उपरांत 'के बाद, के पश्चात्'
रै ऊपर के ऊपर, पर'
रै ओळै-दौळै | 'के इधर-उधर, के
रै ओळा-दौळा | चारों ओर'
रै ओलै 'के बहाने, के पास'
रै ओळावै 'के बहाने'
रै कनै 'के पास'
री कळाई 'की तरह'
रै कारण 'के कारण'
रै कूंतै
केरा 'का'
रै कनाकर के पास से'
रै कनै सूं 'से, के द्वारा'
री खातर 'के लिए'
रै खातर 'के लिए, के कारण'
रै खांनी 'की ओर'
रै खांनी-खानी 'से इधर उधर'
रै खांनी-खांनी सूं 'के चारों तरफ से'
रै खिलाफ 'के खिलाफ'

रै गळोकर | 'के पास से, के नजदीक
रै गळाकर | (से)'
रै गोडै 'के पास'
री जात '(के) जैसा'
रै जित्तौ '(के) जितना'
रै जेडौ '(के) जैसा'
रै जोग 'के लिए, के उपयुक्त'
रै जोगौ 'के योग्य, के उपयुक्त'
रै जोड़ै 'के बराबर, के साथ, के सामने, के समान, के पास'
रै ज्यूं 'के समान, के जैसा, की तरह'
रै टाळ | 'के सिवाय, के अलावा, के
री टाळ | अतिरिक्त, के बिना'
रै टिप्पै 'के आधार पर'
रै ठौड़ | 'की जगह, के स्थान पर'
री ठौड़ |
तक 'तक'
रै तणी 'के समीप, के निकट, तक, के सहारे, के आधार पर, का'
री तरै 'की तरह'
रै तळाकर | 'के नीचे से, के नीचे के
रै तळैकर | तरफ से'
रै तळै 'के नीचे, के तल पर'
रै ताई 'तक, के लिए'
रै ताळकै 'के हवाले, के अधिकार मे, के लिए'
रै तौर माथै 'के तौर पर'
रै थाळै 'के धरातल पर, पर'
रै दाई 'के समान, के तुल्य, के बराबर'
दीठ 'प्रति, प्रति एक, हर एक, फी'
रै धकै 'के आगे, के सामने, के सम्मुख, के मुकाबले मे'
रै धकै-धकै 'के आगे-आगे'
रै धको 'की ओर'
रै थथोपै 'के सहारे'
रै नाव माथै 'के नाम पर'
रै नाव सूं 'के नाम पर'

रै नीचै 'के नीचे'
सूं नीचै 'से नीचे से नीचे की ओर'
नै 'को, की तरफ के लिए'
रै नैड़ा कर 'के नजदीक से'
रै नैड़ो 'के निकट'
रै पछै 'के बाद, के पश्चात्, के पीछे के उपरान्त से लेकर, के बाद से'
सूं पछै 'से बाद में'
रै पछै-पछै 'के पीछे-पीछे, के बाद-ही बाद में'
रै परवांन 'के अनुरूप, के समान, के तुल्य, के बराबर, के सदृश, की भांति, के मुताबिक'
रै परवानै 'के मुताबिक, के अनुसार, के अनुरूप'
रै पसवाड़े 'के पास में, के निकट, के एक ओर'
रै पाण 'के सहारे के बल, के कारण, के हेतु, के आधार पर, हो'
रै पाखती | 'के पास के निकट,
रै पागती | के समीप'
रै पाडै 'के पास, के निकट'
रै पायै के पास'
रै पार 'के पार'
रै पुरांण 'के अनुसार'
रै पेटै के निमित्त, के बदले में के एवज में, के लिए, के नाम पर'
रै पैला 'के पहले, के पूर्व'
सूं पैला 'से पहले, से पूर्व'
रै पैली 'के पूर्व, से पूर्व, के पहले'
सूं पैली 'से पहले'
रै पैली-पैली 'के पहले ही, से पहले ही'
सूं पैली-पैली 'से पहले ही'
रै प्रमाण 'के जैसा, के समान'
रै बदळै 'के बदले, के समान' के एवज में, के वास्ते, कुते'

रै बदळै मे 'के बदले में'
रै बळ सूं 'के बल पर'
रै बस 'के वशीभूत होकर, के कारण'
रै बाबत 'के बाबत, के सम्बन्ध में, के निमित्त, के लिए, के वास्ते'
रै बारै 'के बाहर'
सूं बारै 'से बाहर'
रै बारै में के बारे में'
रै बिगर 'के बगैर, बे-, के अलावा, के अतिरिक्त'
रै बिचाळै 'के बीच अपना मध्य में'
रै बिचै 'के बीच, आपस में'
रै बिचै 'की अपेक्षा, की तुलना में, की बनिस्बत'
रै बिना 'के बिना'
रै बिरोबर | 'के बराबर'
रै बरावर |
रै बिलू 'के पक्ष में'
रै बीच मे के बीच में'
रै बेगी के लिए'
भर 'भर'
रै भरोसै 'के भरोसे'
री भात 'की भांति'
रै भेळा 'के संग, के साथ'
रै मज्झ 'के मध्य में'
रै मतै की मति के अनुसार, अपने आप'
रै मान 'के बराबर के प्रमाण में, के समान'
रै माय 'के भीतर के अन्दर'
रै माय-मांय 'के भीतर-भीतर'
रै माय कर- 'में से (होकर)'.
रै माय-बारै 'के अन्दर-बाहर'
रै मायनै 'में'
रै मायनै सूं 'में से'
रै माकूल 'के अनुरूप'

रै माडै 'के बिना'
रै माथे 'पर, बाद, के लिए'
रै माथाकर | 'के ऊपर से,
रै माथैकर | के ऊपर की तरफ से'
रै माथै सूं 'के ऊपर से'
रै मारग 'के रास्ते'
रै मारफत 'के द्वारा, के माध्यम से, के मारफत'
रै मिस 'के बहाने, के रूप में'
रै मुजब के अनुसार, के मुताबिक, के माफिक'
रै मूंडै-मूंड के रूबरू, के सामने'
रै मूडागै 'के सामने'
रै मुताबक 'के मुताबिक'
मे 'मे'
रै मौके 'के मौके पर'
री 'का के लिए'
रूप सूं 'रूप से'
रै रूप मे 'के रूप में'
रूपी 'रूपी'
लग तक, पर्यन्त'
रै लगती 'लगातार'
रै लगै-टगै 'के करीब, के लगभग, के निकट'
रै लायक 'के समान, के जैसा'
रै लारै 'के पीछे के साथ, के कारण, से'
रै लारै-लारै 'के पीछे-पीछे के साथ-साथ'
सूं लेय....तक 'से लेकर.. तक'
सूं लेय... तांई 'से लेकर . तक'
रै वास्ते 'के वास्ते, के लिए'
रै संधा कै 'के संधिस्थल पर'
रै समचै 'हो, के समान, के अनुसार, के आधार पर'

रै समान 'के समान'
रै समेत 'के समेत, के सहित'
सर 'के अनुसार'
रै सरीखौ | 'के सरीखा, के बराबर'
रै सरीसौ |
सरूप 'स्वरूप'
रै सलवै 'के नजदीक, के निकट, के समीप, के पास'
रै सस्तै 'के समान'
रै सांमी 'के सामने, की ओर'
रै सांमीसांम 'के प्रत्यक्ष'
रै संडै 'के पास, की तरफ'
री-सौ 'का सा'
रै सागै 'के साथ, से'
रै साटै 'के बदले'
रै साथै 'के साथ, पूर्वक, से'
रै साथै-साथै 'के साथ-साथ'
रै सार 'के बारे में'
रै सारू 'के लिए'
रै सारै 'के सहारे'
रै सिवाय 'के सिवाय'
सूं 'से, के द्वारा'
रै सूणौ 'के बराबर, तक, के समान'
रै सूरौ 'के समेत'
हंदी तक, को, पर'
रै हल्ले 'मे'
रै हवालै 'के हवाले'
रै हां नै 'के वश में, सामने'
रै हाथ 'के हाथ'
रै हाथां 'के हाथों'
रै हेटै 'के नीचे'
सूं हेटै 'से नीचे'
रै हेटैकर | 'के नीचे की ओर से'
रै हेटैकर |

सामान्य रूप से रौ, री मे निर्मित परसर्गों के रौ, री अंशों का लोप हो जाता है, यथा (१२.१६)

(१२) म्हारै जचणी अठो लोह री लीक। साची बात रै आगै म्हैं बदनामी री परवा नीं करूं।

(१३) ऊंदरौ कयौ—अकल रै बळ आगे भारत नै ई कणूके विरोवर हुवणी पड़ै।

(१४) दीपता मारोम आगे अदीठ दुख रा कळाप क्यूं करूं।

(१५) सुगनचिड़ी रै भाडा सुगना रै उपरांत ई सगळा इण राज री सींव नै लापनै परलै राज री सींव में वड़ग्या।

(१६) बरस उपरांत पाछा इणी दिन उठै आवण री कौल कर ग्या।

अनेक परसर्गों के पूर्व संज्ञाओं की अवस्थिति के आधार पर विशिष्ट प्रयोग उपलब्ध होते हैं। यथा,

(१७) सेवट मन उपरांत लापरवाई सूं कैवल रौ दिखावौ करियौ।

इस वाक्य (१७) में मन उपरांत का अर्थ है 'मन न होने पर भी।'

(१८) इत्तै वेग रै उपरात ई चोल्हरा रा खोज उणरी निजर सूं रमिया कोनी हा। वारै खोजा में ई उणरौ जीव अटकियोड़ी ही।

उपरिलिखित वाक्य मे वेग रै उपरांत का अर्थ है 'वेग के बावजूद भी'।

अनेक संज्ञा + परसर्ग अनुक्रमों के क्रम-परिवर्तित रूप परसर्ग + संज्ञा भी भाषा मे उपलब्ध होते हैं। यथा, गांव सांमी (१९), निजरां सांमी (२०), बावड़ी सांमी (२१), तथा सांमी आतो (२२), सांमी चढांत (२३), तथा समंदर रै मझ (२४) एवं मझ वेपारा (२५) इत्यादि।

(१९) स्यालिया री मौत आवै.जद गांव सामी जाया करै।

(२०) कागली तो सगळां री निजरा सामी गोरावै री खोपाळ में हार पटक दीनी।

(२१) माथै सूखो खालड़ो ओढ़नै वो उण बावडी सांमी वहीर हुयौ।

(२२) सांमी छाती झेलियोड़ी लाठी घाव देखनै राजाजी कैयौ—आप फगत पूजियोड़ा सत ई नी हो पण इणरै सागै आप सूरवीर ई किणी सूं कम नी।

(२३) नाड़ी मे सामी चडात पांणी कीकर गिडल ग्यो, म्हारै तो मगज में ई आ बात बैठे जैड़ी को दीसै नी।

(२४) ... अर उठी समंदर रै मझ टापू में कंवराणी री विपदा रौ कांई लेखौ हो।

(२५) मझ वेपारा आखिथ मसळतो बैठो हुयो, अर पाधरौ महात्मा रै आसण आयो।

सूं परसर्ग की अवस्थिति पुरुषवाचक सर्वनामों के सम्बन्ध वाचक रूप (यथा म्हैं से म्हारो) के तिर्यक एक वचन रूप के साथ होती है। विकल्प से सम्बन्धवाचक सर्वनाम के –रै का लोप भी हो जाता है। इस प्रकार निर्मित समस्त रूप नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

म्हैं	म्हारै सूं ~ म्हासूं
आपै	आपणैसूं ~ आंपासूं
म्हे	म्हारैसूं ~ म्हांसूं
थूं	थारै सूं ~ था सूं
थे	थारै सूं ~ थां सूं
आप	आपरै सूं ~ आप सूं
औ, आ	इणरै सूं ~ इण सूं
अै	इणांरै सूं ~ इणां सूं
वो, वा	उणरै सूं ~ उण सूं
वे	उणांरै सूं ~ उणां सूं

७.१.२.४. अन्य विविध क्रियाविशेषण पदबन्धों के अन्तर्गत सर्वप्रथम उल्लेखनीय है अनुकरणात्मक पदबन्धों की अपनी संगत क्रियाओं के साथ अवस्थिति। नीचे इस प्रकार कि कतिपय क्रियाविशेषण + क्रिया संयोजनों की सूची प्रस्तुत की जा रही है।

फड़ाफड़ा फोफणो	डचाडच खावणो
हुडां-हुडां हालणो	डचां-डचा खावणो
बडां-बड़ां बोलणो	भूं-भूं रोवणो
टचां-टचां टाचणो	ढळाक-ढळाक रोवणो
भड़ां-भड़ां भचीडणो	छबरां-छबरां रोवणो
भटा-भटा जावणो	तपातच तावकणो
झबाझब झबूकणो	सपासप सबोड़णो
टरां-टरां टरकणो	सटासट समेटणो
बटाबटा बोलणो	सबड़-सबड़ सबोड़णो
फटाफटा फंकणो	सगग-सगग बेवणो
फणूण-फणूण फेंकणो	सगग-सगग सूंतणो
बणूण-बणूण फेंकणो	सगग-सगग सिळगणो
गटा-गटां गिटणो	सणक-सणक सिणकणो
गटागट गिटणो	सुरड़-सुरड़ सिसकणो
गळाक-गळाक गिटणो	सड़िन्द-सड़िन्द सुरड़णो
गटळ-गटळ गिटणो	चटाचट चाटणो
खपा-खपा खावणो	लपर-लपर चाटणो
खपाखपा खाणवो	सपोलप लेवणो

झकळ-झकळ भिंजोळणो	गड़ागड़ गुड़णो
पदड़-पदड़ कूदणो	तड़ातड़ तोड़णो
पड़ापड़ पड़णो	भड़ाभड़ बोलणो
गवा-गवां जावणो	वढावढ वायणो
टपाटप टपकणो	थरथर धूजणो
धपाधप कूदणो	नच-नच नाचणो
फदाफद कूदणो	थड़थड़ थेपड़णो
फड़ाफड़ फाड़णो	घमघम उतरणो
फरड़-फरड़ फाड़णो	खटखट खटखटावणो
गबागब लुकावणो	ढमाढम बजावणो
झटाझटा झापणो	बड़िंग बड़िंग बजावणो
ठमाठम ठमकणो	घड़िंग-घड़िंग बजायणो
ठपाठप ठोकणो	कचर-कचर किचरणो
झड़ाझड़ झाड़णो	खैं-खैं बाजणो
धमाधम धमकणो	फैं-फैं फैंकणो

नीचे उपरोक्त प्रकार की रचनाओं के वाक्यों में उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(२६) सेवट टंवलिया खाय ढचूं ढचूं पगां रै आपै दौड़ण लागो।

(२७) असमान जोगी री आरत अर तिसणा री चरखो इणी भांत धगण-धगण चालतो रियो।

(२८) फूल जेड़ो कवळो रूपाळो टाबर तो ठिरड़क नीठ चालै अर आप घोड़ै माथै ईलोजी री कळाई जमियो है।

(२९) गुडाळिया पछै थड़ी अर थड़ी पछै ठम्मक-ठम्मक हालणो सीखियो।

(३०) कसूबल मुखमल रा सिरख-पथरणा अर ओसीसो पळापळ चिमकण लागो।

(३१) ऊंपर आभा में अणगिण तारा पळापळ खिवै।

(३२) चढ़तै-उतरतै होडै रै सागै उणरो रूप झबझब,खिवतो हो।

(३३) सापड़ियोड़ी चांदणी धोळां रै पालणै झूलण लागी। उणरै परस सूं सावळो पाणी जगामग-जगामग पळकण लागो।

(३४) नवी रांणी झवांझव वणाव करनै मैला चढ़ती ही के वा इज सूं डै लागी डावड़ी भळै सामी थकी।

(३५) वात सुणता ई म्हारो आखियां मांमी झपाझप बीजळियां सळावा मारण लागी।

(३६) गरणं सात मीठो पुडियां बांधी ही। सोनळ मछळी पांणी में पळापळ नाचती नाचती अेक-अेक टुकड़ो निगळती गी।

(३७) वो तो गपाक-गपाक बिना दांत लगायां ई गिटण लागो।

(३८) सेस नाग मन करतो जकै जिनावर नै दटाक-दटाक गिट जातो।

(३९) सांयड तो भरड़ भरड़ पाका आंबा चिगळती ही।

(४०) राजा डकळ-डकळ पीवण सारू घणो ई खपियो, पण पावण वाळा राजी नी हुयो।

(४१) मनवार करता ई असमांन जोगी तो दो कचोळा भरनै गटागट पीगो।

(४२) अेक ई सास में डग-डग सगळो पाणी गरलै खळकाय जोर सूं डकार खाई।

अनेक अनुकरणात्मक शब्दो की तिर्यक एक वचन मे अनेक क्रियाओं से संगति का निदर्शन करने के लिये कतिपय उदाहरण नीचे दिये जा रहे है।

(४३) ठाकर रो घोडो मारग-मारग भरणाटै दोड़तो रियो।

(४४) मोतियां रै खोजां-खोजा राजकंवर भरणाटै उडियो।

(४५) वो घोड माथै भरणाटै जाय पाछो आवै।

(४६) सुगन मिळता ई वो तो पछै भरणाटै हालियो।

(४७) वो आवाज खांनो बहीर हुयो। तरतर बाळक रो रोवणो सुभट हूवतो गियो।

(४८) जीभ तरतर वत्ती पळेटा खावण लागगी ही।

(४९) लोगां री निबलाई सूं कंवर री खीझ रो तरतर आधण उकळतो ई गियो।

(५०) संतां रो तरतर कळेस बधण लागो।

(५१) चाद तरतर ऊंचो चढ़ण लागो।

(५२) ....कै राणी रो सरीर तो तरतर छीजतो ई गियो।

(५३) अेकर तो मरियां पछै ई जचो; पण धकळ-धकळ लोई री तूंताड़ियां छूटती देख म्है मन माथै नीठ कावू राखियो।

(५४) ....नागी तरवार देखनै धग-धग धूजण लागो।

(५५) म्हारै सूं तो चुळीजै ई कोनी, मांय धपळ-धपळ सिळगै।

(५६) लोग आछी तरै जांणता कै वो मरियां ई साच नी बोलै, तो ई साच बोलावण सारू धरेळ-धरेळ हाडका भागियां बिना नी मांनता।

(५७) सेठ अेकर सूरां रूंख रै गळाकर नीसर जाता तो वो हुरियो हुय जावतो, सूरो नदी रै मांयकर निकळतो तो वा जगग-जगग मोटां-मोटां घड़ वहण लाग जाती ।

(५८) उणरी मोतियां रा राता-लाल डोळा भणण-भणण फिरता हा ।

(५९) राज्य रै लारै सगळा असवार भरणाटै उडिया जावता हा ।

(६०) आ रिमझोळां री रिम्मां-झिम्मां रणक सुणीजी ।

(६१) फाटोड़ा गाभा पर फाटोड़ा लिप्तर पैर वो लिप्तर-लिप्तर दितावर रै मारग बहीर हुयो ।

७.१.२.५. अनुकरणात्मक शब्द तथा देवणो एवं करणो क्रियाओं की परस्पर आसत्ति से निम्न प्रकार के क्रियाविशेषण पदबन्धों की रचना होती है ।

(क) अनुकरणात्मक शब्द + { देती / करती } रा

(ख) अनुकरणात्मक शब्द + देणी (रा)

इन दोनों प्रकार की रचनाओं की वाक्यों में अवस्थिति के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(६२) माधो झालनै झरड़ देती रो हेटै बैठग्यो ।

(६३) पछै तो वो काळिंदर रै गोडै आम झरड़ करती रो हेटै बैठग्यो ।

(६४) चिड़ी तो कैवताई फुर देती रा उडनै भैंस रै उवाड़ै माथै जाय'र बैठगी ।

(६५) ....पण कूकड़ो तो सूकता ई फुर करती रो उडग्यो ।

(६६) वो तो हळफळियो फट देती रो खदेड़ै में कूदग्यो ।

(६७) स्याळियो फट करती रा पडूतर दीनो....

(६८) ... वो तो दुलेवड़ी कमर सूं भंवळ खायनै तड़ाच देती रो हेटै गुड़ग्यो ।

(६९) थोड़ी ताल में ई इण भांत रो नसो उफणियो के रमतो जोगी तड़ाच करती रो बेचेत होयनै गुड़ग्यो ।

(७०) वो दट देणी रो हेटै गुडग्यो ।

(७१) डोकरी रो बेटो झट देणी रा ऊठ'न बोलियो —ठीक है अकल होठां मायँ रैवै, गम खावै, पण अकल पैरे काई है ?

(७२) आज इण सरवर रो पाणी पीवण वास्तै पाळ रो ढाळ में ठुमक-ठुमक चालती ही के स्याळमिन्नी लारै सूं झच देणी री पकड़ ली ।

(७३) लोगां सोचियो कै अबै पाछो भच देणी ऊठतां ई पुजारी जवान हुय जावैला ।

(७४) चिड़ी तौ सुणता ई फट देणी उडनै ऊंट री थू'थी माथै बैठगी ।

नीचे इस कोटि की रचनाओं के कतिपय युग्मों के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

अनुकरणात्मक शब्द + {देती रा / देणी रा}

(७५) वा सटकै देती रा नीचै उतरी । नेवळा सूं रामां-सामां करनै बोली—नेवळा वीर, आज म्हैं सूरज पूजूं ला ।

(७६) पैली सटकै देणी रा ये म्हनै थांरो चुरकाळ खनै ले हालो ।

अनुकरणात्मक शब्द + करती (रो)

(७७) भाखरां रै ढवता ई काळियो घोड़ो तौ सप्प करती रो पार हुयग्यो ।

(७८) ... कै इत्तै में थोरी नागी तरवार लेय हप्प करती रो मांय बड़ियो ।

(७९) झरणाट करती रो बाटको पटकनै बोली - देखिया थांरै लाडकै भाई रा लखण ।

(८०) आ बात कैय वा तौ भंडिद करती रो थाडो औडाळ मांय वड़गी ।

(८१) कंवर रै मूंडै अेड़ी खथावळ सुण दीवांण री बेटी रै जोबन भर रूप रै जाणै चरड़ करती डांम लागो ।

(८२) कड़िया वंधियोड़ी सोना री म्यान सू सप्प करती कटार काढी ।

(८३) सपाक करती वाढाळी सिंघ री गावड़ रै आरपार हुयगी ।

७.१ ३. कतिपय संज्ञाएं परसर्ग रहित अवस्था में सामान्यतः तिर्यक बहुवचन में ही क्रियाविशेषण रूप में अवस्थित होती हैं। इस प्रकार की संज्ञाओं के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(८४) थारो प्यालो म्हैं तौ आंखियां ई देखियो नीं ।

(८५) न्याव, मेळप, भाई-चारो अर बराबरी रै उपदेसां कुदरत रो ढारो नी बदळीजै, नी बदळीजै ।

(८६) उणरी सास घरघर फिरनै कैयो—इत्ता दिन कानां सुणी जकी बातां सांप्रत साची हुयगी।

(८७) विणयाणी जोर सूं बोली—अबकी तौ डोई सूं घी घालियो, फेर मांगियो तो कुड़छियां-कुड़छियां घालूंला ।

(८८) घाटै मारग गोडां-गोडां पाणी बहण लागो, तो ई वो सासरै रो कोढायो साव नागो तडंग छपळक-छपळक करतो चालतो ई गियो।

(८९) मा कंवता ई मासी री म्रांखिया सूं तो दवरां-दवरां आसू बरसण लागा।

(९०) लोगा रो बतूळियो पगां हालियो।

(९१) ग्रावता ई कवरा रो फूको सास निकळ जावंला। पछै वा आपरै हाथां सू म्राठू राजकवरा नै साडा-बूच करनै पाछी आय जावंला।

(९२) बेटो तो वैराग लेय वडकै ई हमेसा रै वास्तै माठरा रम जावंला।

(९३) राणी म्रापरी ग्रनुट जवांनी नै सदाभूम निणगार रमणंला पडती ही कै वा इज डावडी जाननै सामी पकी।

(९४) खेत री धणी तो रोसा बळतां आगरै हाथां रा वेजा इज वट काढिया।



८. विस्मयादि बोधक

८.१. आ. राजस्थानी के विस्मयादि बोधक, सम्बोधक, कतिपय विशिष्ट निपातों एवं अन्य इसी प्रकार के तत्वों का इस अध्याय में सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जायगा।

८.२ नीचे भाषा में सामान्य रूप से प्रचलित कतिपय सम्बोधक उदाहरण सहित संकलित किये जा रहे हैं।

हां

(१) डोकरी हाथ जोड़नै बोली—हां संतां पूरा सात गधेड़ा ह्या।

रे

(२) वे ग्रेक लांठी छाक लेयनै हाजरिया नै पूछियो—ओ कैणो हाकी है रे? परभात री वेळा ग्रै जै-जै करता कुण कांण खावै?

ग्रे

(३) गुचळकिया खावती बोली—चिड़ी बाई, बारै काड ग्रे।

हा

(४) दैत राजी होय बोलियो—हा, आ बात तो म्हनै ई कबूल। मांनण जैड़ी बात व्है तो क्यूं नी मानूं।

ऊं हूं

(५) कांळिदर फुण हिलावतो बोलियो—ऊं हूं, म्हनै ग्रैड़ो गुण नी मनावणो।

अरर

(६) अरर, आ छबकाळी तो सगळा नै मात कर दियो।

आं हां

(७) मुखिये जवाब दियो—आं हां, ग्रै तो अंगै ई भूगा-बोळा कोनी। दाळंट बोलै।

हे हे

(८) तर-तर सूरज ढळण लागो। तपतां-तपतां सेवट ग्रबै आथमण री जचगी दीसै। हे हे, आ कोर पाणी मे गीली व्ही। कठै ई बासदी रो गोळो बुझ नी जावै।

निम्न वाक्य (९) में देखणो क्रिया के आज्ञावाचक बहुवचन रूप देखो की सम्बोधक स्थानीय अवस्थिति हुई है ।

(९) पछै मां टिचकारी देवती कैयो—देखो, म्हारा ई हीया फूटा जको आपनै रेकारो देवूं ।

यहा इस तथ्य का उल्लेख कर देना आवश्यक है कि अपनी अभिव्यंजकता के कारण उपरोक्त सम्बोधक विस्मयादि बोधकों से निश्चयात्मक रूप से पृथक नही किये जा सकते ।

८.३ नीचे आ. राजस्थानी के कतिपय विस्मयादि बोधक शब्दों तथा पदबन्धों को उदाहरण सहित संकलित किया जा रहा है ।

व्हा

(१०) गरणो झाटकतां-झाटकतां वो टावर री कळाई बोलियो—व्हा, अबै तो सातूं ई पुड़िया निठगी । म्हारी सोनल मंछी थनै भळै काई खवाडूं ।

हुकनाक

(११) कंवर रै साम्ही मूंडो करनै रूखै सुर मे बोली—हुकनाक वापड़ै जीव री थेह रो ठायो छुडायो ।

छो

(१२) इंदर भगवांन कोप करैला तो छो करता ।

(१३) नाच संपूरण हुवता ई कंवर जांणै नसै में व्है ज्यूं ई बोलियो – छो हुई कबूडी, म्है तो इण सूं ई ब्याव करूंला ।

छेवास

(१४) वाको फाड़ण वाळा मोटियार रा मौर थापलतो राईको बोलियो—छेवास रे डारा, थारै जैड़ा सचवाया मिनख रै अै नाढ लोग इत्ती छोजत करी ।

भलां

(१५) बाप हेटै लुळ लुणिया सूदा हाथ जोड़नै कैयो—भलां, म्हारो कांई ठरको कै आपनै हांण पुगावां ।

जाणै

(१६) आपरो दुख सुणावतां तो बावै री आंखिया फगत जळजळी हुई ही, पण बामणी री विपदा सुणियां तो उणरी आंखिया सूं आंसुवां री जांणै बिरखा हुयगी ।

ठालाभूला

(१७) अै ठालाभूला तो अठै ई मरखुटा ।

म्हारी

(१८) म्हारो वो चोर तो जबरो । सुणतां पाण लप हूंकारो भर लियो ।

८.४. नीचे कतिपय संज्ञाओं तथा संज्ञा पदबन्धों के सम्बोधनार्थक रूपों की वाक्यों में अवस्थिति के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे है ।

(१९) भूंडण आसू थांमती बोली—म्हारा लाडलां, इण बात री सोच थें आछी करियो ।

(२०) म्हारी लाडल बेटी, रीस रै कारण थूं आपो विसरगी ।

(२१) हेलो मारियो—माजा पारवती, म्हारै सूं औ पंपाळ नीं संभै ।

(२२) बावळी, आखै चोखलै मे थारै हीयै री पीड़ समझणवाळो म्हारै सिवाय कोई दूजो कोनीं ।

(२३) तद वा आपरै बेटै रै साम्ही देख बोली—कान्हूड़ा, अबै ढील मत कर ।

(२४) पूछियो—थूं कुण है भाया ? इत्ता दिन तो कदै ईं नी देखियो ।

(२५) महात्मा घड़ी घड़ी कैवतो—भला मिनखां, म्हारै हाथ मे की सिद्धाई कोनी ।

८.५. प्रकरण सख्या (८.४) में वर्णित संज्ञाओं के सम्बोधक रूपों के समान ही निम्न वाक्यों मे सम्बोधकों तथा वाक्य पूर्वाश्रयी रचनाओं की अवस्थिति हुई है ।

(२६) हे भगवान ! लुगाई रै अंतस में रीस रा खीरा चेतन करतो बगत उणरी रीस नै पांगळी क्यूं करी ।

(२७) कुम्हारी रै मूंडै साम्ही जोयो । रांम-जांणै रूसियोड़ा उणियारा इत्ता सुहावणा क्यूं लागै ।

(२८) भगवांन मोज करै, आपरै जीव रै कीं जोखो हुयग्यो तो इण बादल मैल रा काई दीन व्हैला ।

८.६. सही (२९) तो सही (३०), तो खरी (३१) तो खरी (३२) की विस्मयादि बोधकार्यक अवस्थितियों के उदाहरण निम्नलिखित हैं ।

(२९) राज पाच महीनां उडीक रा आणंद उठायो तो अेक महीनो भळै सही ।

(३०) उण कैयो—मांनण जोग बात व्हैला तो म्हैं अवस आपरी बात मानूंला । आप फरमावो तो सही ।

(३१) बामणी धणी नै झिझेड़ती बोली— कठै सूं चोर नै लाया, बतावो तो खरी ।

(३२) इचरज अर हरख रै सुर मे वकाई खावती बोली—चालो, देखो तो खरी, आपां रै गीगलो हुयो ।

८.७. सूत्रीकृत वाक्य और वाक्यात्मक रचनाएं, जो कि भाषा में स्थायी कथनों के रूप में अवस्थित होते हैं, व्याकरण की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इनके कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(३३) तो रामजी भला दिन दे, अेक गाव मे अेक बांमण परिवार रेंवतो हो।

(३४) वा तो धोळो-धोळो सँग दूध जांणतो।

(३५) अर जे इण चाळ-चोळ रैं बिचाळै कोई अणचींतो तोजो वैठगो तो पछै पूणगो ई काई !

(३६) थांनै नी पोसावै तो काले सूं ई थाळाणो करूं। म्हे भलो अर म्हारो माटो भलो।

(३७) हाथी सूंड री, विच्छू कांटे री अर सासू आपरै जस री घणी आसा रुखाळी राखिया करै।

(३८) राजा नै आसरो रैयत रो, रजपूत नै आमरो तरवार रो, साहूकार नै आसरो धनरो, बामण नै आसरो विद्या रो अर गरीब नै आसरो भगवान रो।

८.८. मार, इत्याद, बीजो, मातर, फलोणां, धर आदि अनेक ऐसे शब्द हैं जिनकी वाक्यों में अवस्थिति का व्याकरण में उल्लेख करना आवश्यक है। इस प्रकार के शब्दों के वाक्यविन्यासात्मक प्रकार्यों की व्याख्या कोश में सामान्य रूप से नहीं की जा सकती। इनके महत्व को ध्यान में रखते हुए इनके कतिपय उदाहरण ही नीचे संकलित किये जा रहे हैं।

(३९) तठा उपरात दोवाण जी री बहू वानै बग्घी मे साथै ले जावण लागी तो हवेली में मार धरळियो मचग्यो।

(४०) देखता-देखता केई अजगर, केई सांप, केई सूवा, तीतर, कबूड़ा, कागला, गिरजड़ा, चीता, सूअर, सिंघ, स्याळ छाळीनारिया, बळद, गायां, अर घोड़ा इत्याद भांत-भांत रै जिनावरां री मेळो मचग्यो।

(४१) वो समळो माल बीजो लेयनै गाव पूगग्यो है।

(४२) वेटा, जद थारै जिस्तो घोर नास्तिक म्हारै दरसण मातर सूं परमेस्वर रो भगत बणग्यो तो आ म्हारो मुगती विचै ई मोटी बात है।

(४३) ....बाप नै अरज कराई, म्हारो माळै र फलोणां कंवर जी रै उठै भेजावो।

(४४) धर मजलां धर कूचां हालतो ई गियो, हालतो ई गियो।

८.९. —वाळो प्रत्यय की अवस्थिति से निर्मित शब्दात्मक रचनाओं का व्याकरण में अलग से उल्लेख करना आवश्यक है, क्योंकि इस तरह की समस्त रचनएं अर्थ की दृष्टि से वस्तुत. वाक्यात्मक हैं, यथा—

(४५) सात चांदी री, सात सोनै री अर सात हीरा-मोतियां री पोळां रै पछै राजकवर नै सपनैवाळो बाग परतख आपरी निजरां दीखियो ।

वाक्य (४५) में अवस्थित पदबन्ध सपनैवाळो बाग का अर्थ है "सपनै में देखियो जको बाग" अथवा "जिण बाग नै सपनै में देखियो वो बाग" ।

८.१०. भळै तथा उससे निर्मित अन्य रचनाओं की वाक्यों मे अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित है ।

भळै 'फिर'

(४६) मारग में मळापता सिंग खिरगोसिया नै भळै पूछियो— कित्तो'क अळगो है उणरो किलो ।

भळै 'ग्रौर'

(४७) पण इणरै सागै मांज री रात म्हारो अेक प्रण भळै कै इण सराप नै आसीस मे बदळ देणो ।

भळै 'ग्रौर, अतिरिक्त'

(४८) सेसनाग री मिणिया रो हार भळै व्हे तो कांई पूछणो ।

भळै 'अन्य, अतिरिक्त'

(४९) नतीजो नीति पुराण ई राखणो चोखो है, हूं भळै कांई कैवूं ।

भळै ई 'फिर भी'

(५०) पण खिरगोस तो भळै ई हंसतो रियो ।

८.११. ग्रा. राजस्थानी अवधारक निपात तथा अवधारक रचनाओं का सोदाहरण विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है ।

ई 'भी'

(५१) बांमणी बोली—आप बोपारी हो तो मैं ई अेक मां हूं ।

नीतर ई 'वैसे भी'

(५२) कंवर नीतर ई सिधावणवाळो हो ।

ई "हो"

(५३) बाप घणो ई बरजियो पण कंवर तो नी मानियो ।

(५४) कुम्हारी पाछी जावण सारू बिमांण मे पग धरियो ई हो कै *अगमान* ... मायै उणरी निजर पड़ी ।

इज 'ही'

(५५) भगवांन रै पछै म्हनै आपरो इज आस है।

(५६) पण काल सिंझ्या सूं ई खेत री रुखाळी री जिम्मो म्हारो इज है।

तो 'तो'

(५७) सेनापति कैयो—वा ई तो आपरै साम्हो अरज करनी चावौ।

तो ई 'तो भी'

(५८) काळ री की भरोसो कोनीं तो ई हर छिण अलेखूं जीव जलमैला।

तक 'तक'

(५९) इण चिंतवंणी हालत में वा आपरो ओरणो तक ओढ़णो पातरगी।

धुराधुर 'तक, भी'

(६०) अलेखूं भगत उणरै चरणां में माथो निंवावता। राजा धुराधुर डंडोत करता, चरणां मुगट धरता।

ना 'न'

(६१) किणी बातरी कोताई करजै मती नीं।

नी 'न'

(६२) पोटा म्हांखण दो। मोड़ो हुयग्यो! सैणां हो नी।



९. सामान्य वाक्य संरचना

९.१. आ. राजस्थानी में सामान्य वाक्यों के अन्तर्गत मुख्य रूप से तीन प्रकार की रचनाओं को परिगणित किया जा सकता है—(क) अकर्मक क्रिया से निर्मित वाक्य, (ख) सकर्मक क्रिया से निर्मित वाक्य, तथा (ग) संयोजक क्रिया से निर्मित वाक्य।

९.१.१. अकर्मक क्रिया से निर्मित वाक्यों में अवस्थित क्रियाओं के सोपाधिक परिसरों के अनुसार, इन वाक्यों का तीन कोटियों मे वर्गीकरण किया जा सकता है। नीचे इन तीनों कोटियों के वाक्यों के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(क) क्रिया विशेषण सोपाधिक परिसर वाक्य

(१) वा आवती होय माळ सूं हेटै उतरी। उरबाणे पगां ई वारै साम्ही आई।

(२) सावण री तीज सू ई पैला आ लांठी तीज किसी आई ?

(३) दोनू जणां बावडी रै पाणी मूं बारै निकलनै अतलोक में आयग्या हा।

(४) जोग री बात कै अेकर आधी अर में दोनू सागै आया।

(५) म्हे आपरो की बिगाड़ नी करांला। म्हे घणौ मोद करनै अठै आया।

(६) आसाढ़ उतरियां सुरंगो सावण आयो।

(७) अंदाता रै काना हाल अै सुभ समंचार नीं पूगा दीसै। बीकांणै सूं राज रौ कासिद आयौ।

(८) सात पाणी री, सात हवा री अर सात उजास री पोळां पार करियां सेवट पंयाळ-लोक आयौ ई।

(९) इण बावड़ी मांयं वा फेर कदैई पाछी सिनांन करण सारू तौ अवस आवैला।

(१०) काल जिण वगत थारै घर साम्ही म्हारो रथ आयो हो, आज उणी वगत हीरा-मोतियां सू भरियोड़ी सात गाड़ियां आवैला।

(११) आपरै बारणै कै तो जगळ रो राजा आय सकै कै मिनखां रा राजा ई आय सकै।

(ख) क्रियानामिक सोपाधिक परिसर वाक्य

(१२) अेक परी कंयो के आटै री पूतळी बणिया रैवता तो कीकर घरवाळी री याद आवती।

(१३) एक पलक मे ई उणरै मन मे अै सगळा विचार आयग्या ।

(१४) अंदाता, म्हारै माथै जद औ संकट आयनै पड़ियो है तौ पछै कळजुगी अवतार फेर कद काम आवैला ।

(१५) परियां नाच-नाच हार थाकी तौ ई उणरी आंखियां में इण विध रै नाच री सैमूळी रगत नी आई ।

(१६) राजाजी नै जाणै जित्ती रीस आई । दांत पीसता थका बोलिया—काबू री माल चरता था लोगा नै लाज को आवै नीं ।

(१७) ....अर मरणारौ इणसूं सिरै मोकौ फेर कद आवैला ।

(१८) अर ठेट उपरलै पगोतिया पूगिया पछै किणी संत नै दुनिया री किणी बात माथै रीस नी आवै ।

(१९) रीस अर आंमना रै कारण वारी आंखियां मे आंसू आयग्या ।

(२०) जाटणी दांत पीसती बोली—मर जाती तौ पापौ कटतौ । दुनिया नै सोरौ सास तौ आवतौ ।

(२१) थानै म्हारौ तौ घ्यांन ई को आवै नी ।

(२२) अर आडी हुवता ई उणनै नींद आयगी ।

(ग) पूरक सोपाधिक परिसर वाक्य

(२३) पण म्हारौ माथौ तौ साव भंवियोड़ौ । सुभट अर सीधी बाता ई दोरी समझ मे आवैला ।

(२४) अैडो बिलालो मोटियार तौ सुणण मे नीं आयौ ।

(२५) बूढ़ा-वडेरा तौ आ बात जाणता ई हा कै फैफ रा फूला री तमास मे जकौ ई गियौ उणरी पूठ तौ देखी पण पाछौ मूंडौ देखण मे नीं आयौ ।

(२६) गा कैयौ तौ ई बेटी रै आ बात मानण मे नी आई ।

(२७) पाछी हजार बरस ई आखिया दूखणी आय जावै तौ वो पाणी मे पीलीजण सारू त्यार ।

(२८) म्हनै परख रौ डर नी । खरौ उतरूला ।

(२९) पण बेटा आ लाडैसर देवी नी तौ पूजिया वस मे व्है, अर नी सिंवरिया काबू मे आवै ।

(३०) सिंघ री खाल पैरियोड़ौ वो तौ मोटो गधौ निकळियौ ।

(३१) बावळा वगत माथै थारै काम ना आवूं तौ पछै किणरै काम आवूं ।

९१.२. सकर्मक क्रियाओं से निर्मित वाक्यो का भी, उनमे अवस्थित क्रियाओं के सोपाधिक परिसरो के आधार पर त्रिविध वर्गीकरण किया जा सकता है ।

(क) क्रिया विशेषण सोपाधिक परिसर वाक्य

(३२) मिनखा देह रै इण खोळिया मे म्हैं कळजुगी अवतार रै ओळखिया कोनीं।

(३३) लक्खी विणजारो वां सगळा नैं ई आपरै रथ माथै विठांण लिया।

(३४) वो आपरी बही खोलनै बाळक रौ नांव-धाम, वगत, मिती, बार अर संवत् इत्याद सगळी बातां टीपली।

(३५) वे सगळी मिल परी नै आपरै मन री बात बांमणी नैं बताई।

(३६) आज सू इण गवाड़ी नैं थूं ई संभाळ। औ घर अबै थारो है, म्हारो नी।

(३७) मागियोड़ा दांणां री पोटळी वो नवी बीनणी रै हाथ मे झिलाय देतौ।

(ख) क्रिया नामिक सोपाधिक परिसर वाक्य

(३८) कागलौ हिरण नैं घणौ बरजियो कै इण छळी अनजांण स्याळ रौ पतियारौ मत कर।

(३९) कीडी नै कण अर हाथी नै मण देवण री जिणनैं घ्यांन, वो सांई आंपां रौ ई घ्यान राखैला।

(४०) म्हारै साथै धोखो करियौ तौ वौ खुद ई सवायो धोखो खायो।

(४१) आंरै बिना तौ वे सास ई नी लै सकै।

(४२) हरख रा आंसू ढुळकावतौ गळगळै सुर में बोलियो—अन्तरजामी आज म्हारी भगती सुफल हुई।

(४३) रैयत री सगळी रीस राजा कवरा माथै झाड़ी। रीस मे कड़कतौ बोलियो—दुस्टियां म्हारै सूं लारलै भो रो कांई आंटो साझो।

(४४) पण अदातां, कदैई म्हनै ई हाजरी रो मौको दिराजो।

(४५) गादी री थोड़ी-घणी तौ लाज राखिया करो।

(४६) थारी नेक सला सूं वो आखै राज री रंगत ई बदळ सकै।

(४७) बारै बरसां रै तप रै पछै ई रीस अर मद माथै वो काबू नी पा सकियौ अर अै आठूं रा आठूं भाई राजकंवर होयनै ई रीस अर मद रै नैंड़ा कर ई नी निकळिया।

(४८) नवी अपछरा तौ वां नै अैड़ा बस में करिया कै वे अेक छिण वास्तै ई रंग-मैल सूं बारै नी निकळता।

(४९) तौ ई घर री नवी धणियाणी नित-हमेस आपरै धणी नैं सुसरैवाळी सीख याद अणावती।

(५०) राजकंवर बोल्यो—म्हा हर सांस रै समचै थारी सीख नै याद राखसां।

(१३) एक पलक मे ई उणरै मन मे अे सगळा विचार आयग्या ।

(१४) अंदाता, म्हारै माथै जद ओ संकट आयनै पड़ियो है तौ पछै कळजुगी अवतार फेर कद काम आवैला ।

(१५) परियां नाच-नाच हार थाकी तौ ई उणरी आंखियां में इण विध रै नाच री सैमूळी रंगत नी आई ।

(१६) राजाजी नै जाणै जित्ती रीस आई । दांत पीसता थका बोलिया—फावू री माल चरतां थां लोगां नै लाज को आवै नीं ।

(१७) ....अर मरणारी इणसूं सिरै मौको फेर कद आवैला ।

(१८) अर ठेट उपरलै पगोतिया पूगियां पछै किणी संत नै दुनिया री किणी बात माथै रीस नी आवै ।

(१९) रीस अर आमना रै कारण वारी आंखियां में आंसू आयग्या ।

(२०) जाटणी दांत पीसती बोली—मर जाती तौ पापो कटतौ । दुनिया नै सोरौ सास तौ आवतौ ।

(२१) थांनै म्हारो तौ ध्यांन ई को आवै नी ।

(२२) अर आडी हुवता ई उणनै नींद आयगी ।

(ग) पूरक सोपाधिक परिसर वाक्य

(२३) पण म्हारौ माथौ तौ साव भंवियोड़ौ । सुभट अर सीधी बातां ई दोरी समझ मे आवैला ।

(२४) अैडो विलालो मोटियार तौ सुणण मे नी आयौ ।

(२५) बूढा-वडेरा तौ आ बात जाणता ई हा कै फैफ रा फूला री तमास मे जकौ ई गियौ उणरी पूठ तौ देखी पण पाछो मूंडो देखण मे नी आयौ ।

(२६) गा कैयो तौ ई वेटी रै आ बात मानण में नी आई ।

(२७) पाछी हजार वरस ई आखिया दूसणी आय जावै तौ थो पाणी मे पीलीजण सारू त्यार ।

(२८) म्हनै परस रो डर नी । परी उतरूंला ।

(२९) पण वेटा आ साईसर देयौ नी तौ पूजिया वस मे व्है, अर नी सिवरिया काबू मे आवै ।

(३०) मिष री साल पैरियोड़ो ओ तौ मोटो गधो निकळियो ।

(३१) बावळा वगत माथै थारै काम ना आवूं तो पछै किणरै काम आवूं ।

९.१.२. सकर्मक क्रियाओ से निर्मित वाक्यों का भी, उनमें प्रवस्थित क्रियाओं के सोपाधिक परिसरों के आधार पर त्रिविध वर्गीकरण किया जा सकता है ।

(क) क्रिया विशेषण सोपाधिक परिसर वाक्य

(३२) मिनखा देह रै इण खोळिया में म्है कळजुगी अवतार रै ओळखिया कोनीं।

(३३) लक्खी विणजारो वां सगळा नैं ई आपरै रथ माथै विठांण लिया।

(३४) वो आपरी वही खोलनै बाळक रौ नाव-धांम, वगत, मिती, बार अर संवत् इत्याद सगळी वातां टीपली।

(३५) वे सगळी मिल परी नैं आपरै मन री बात बांमणी नैं बताई।

(३६) आज सूं इण गवाड़ी नैं थूं ई संभाळ। ओ घर अबै थारौ है, म्हारौ नी।

(३७) मांगियोड़ो दांणां री पोटळी वो नवी बींनणी रै हाथ में भिळाय देती।

(ख) क्रिया नामिक सोपाधिक परिसर वाक्य

(३८) कागलौ हिरण नैं घणौ बरजियौ कै इण छळी अनजांण स्याळ री पतियारौ मत कर।

(३९) कीडी नैं कण अर हाथी नैं मण देवण री जिणनै ध्यान, वो साई आपां री ई ध्यान राखैला।

(४०) म्हारै साथै धोखौ करियौ तौ वौ खुद ई सवायौ धोखौ खायौ।

(४१) आंरै विना तौ वे सांस ई नी लै सकै।

(४२) हरख रा आंसू ढुळकावतौ गळगळै सुर में बोलियौ—अन्तरजांमी आज म्हारी भगती सुफल हुई।

(४३) रैयत री सगळी रीस राजा कवरा माथै झाडी। रीस में कड़कतौ बोलियौ—दुस्टियां म्हारै सूं लारलै भौ रौ कांई आंटो साझौ।

(४४) पण अंदाता, कदैई म्हनैं ई हाजरी रौ मौकौ दिराजो।

(४५) गादी री थोड़ी-घणी तौ लाज राखिया करौ।

(४६) आरी नेक सला सूं वौ आखै राज री रंगत ई बदळ सकै।

(४७) बारै बरसा रै तप रै पछै ई रीस अर मद माथै वो काबू नीं पा सकियौ अर अै आठू रा आंठूं भाई राजकंवर होयनै ई रीस अर मद रै नैड़ा कर ई नी निकळिया।

(४८) नवी अपछरा तौ वां नै अैड़ा बस में करिया कै वे अेक छिण वास्तै ई रंग-मैल सूं बारै नी निकळता।

(४९) तौ ई घर री नवीं धणियांणी नित-हमेस आपरै धणी नैं सुसरैवाळी सीख याद अणावती।

(५०) राजकंवर कैयौ—म्हा हर सांस रै समचै थारी सीख नैं याद राखसां

(ग) पूरक सोपाधिक परिसर वाक्य

(५१) खूटोड़ा मिनख म्हनैं काली मिणे तो म्हैं किसा वानैं समझणा गिणूं।

(५२) बात अर माटै रो काई, बिठावो ज्यूं ई बैठे। कोई उणनैं रैदास भगत रो रूप जाणता तो कोई उणनैं रामदेवजी रो नवो अवतार मांनता।

(५३) हिरणी बोली—म्हे तो इणनैं वांबी कैयनैं बतलावूंला।

(५४) मिनख खुदोखुद नैं अकल रो उजागर अर समझ रो सागर मानैं।

(५५) असमान जोगी तुरंत ठाडो पडनैं बोलियो—थूं तो इन वादळ मैल री खास धणियांणी। थनैं भलां चाकर कुण कैवै ?

९.१.३. संयोजक क्रिया से निर्मित कतिपय वाक्यों के उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(५६) भतीजा रो लाड करनैं उणनैं समझायो कै औ पांणी तो खारो आक है।

(५७) वो सोनल नै पूछियो— बाल्हा थूं कुण है ? इंदर री परी, सुरग री अपछरा कै कोई डाकण-स्यारी ?

(५८) सोनल रो भतीजो ईं उठै उभो हो।

(५९) चौधरण सालस अर भली ही।

(६०) लोग घणा ई खपता तो ई सनागत नी कर सकता कै वा पूतळी है कै कोई परतख जीवतो उणियारो है।

(६१) अेक जाट रो गायां माथे ईं गुजराण हो। करसन वास्तै जमीं री चांम ई नी ही।

(६२) अेक स्वाळख रा चौधरी नै फूठरा, फबता नागौरी बळदां रो अणूतो कोड हो।

(६३) थें म्हानैं कीकर अर कित्ता जल्दी मार सको, काई थारो ग्यांन इणी बात मे है। जे इणरो नांव ग्यांन है तो पछै म्हारो अग्यान घणो वत्तो।

९.२. प्रकरण संख्या (९.१) मे वर्णित त्रिविध वर्गीकरण समस्त राजस्थानी क्रिया प्रकृतियों पर लागू होता हो है, ऐसी बात नही है। उक्त प्रकार के वर्गीकरण का मुख्य उद्देश्य है भाषा को वाक्यविन्यासात्मक संरचना के सभी ज्ञात पक्षों का उद्घाटन करना। अतः इस नियम के अपवाद स्वरूप यह कहा जा सकता है कि सामान्य रूप से आ-अन्त्य अनुकरणात्मक और संज्ञा तथा विशेषण जात क्रियाप्रकृतियों से क्रियाविशेषण सोपाधिक परिसर वाक्यों की ही रचना होती है, इत्यादि।

९.३. प्रकरण सख्या (९.१.१. ९.१.२ तथा ९.१.३) में सूचित वाक्यों की आन्तरिक अधिक्रमिक संरचना के सन्निहित अवयवों का विश्लेषण निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है।

(क) वाक्य→ कर्त्ता · विधेय

(ख) विधेय→ { अकर्मक क्रिया पदबन्ध .
कर्म सकर्मक क्रिया पदबन्ध
यौगिक क्रिया पदबन्ध

प्रकरण संख्या (९.१.१. ९.१.२ तथा ९ १.३) में सूचित कतिपय वाक्यों का नीचे पुर्नोल्लेख किया जा रहा है। इनमें उपरोक्त नियम (क) और (ख) के अनुसार क्रमशः प्रथम क्रम अवयवों को ( )₁ द्वारा तथा द्वितीय क्रम अवयवों को ( )₂ चिह्नित किया जा रहा है।

(१) (वा)₁ (आवती होय माळ सूं हेटै उतरी।)₂

(२०) ....(दुनियां नैं सोरो सास तौ)₁(आवतौ।)₂

(२१) (थांनै म्हारौ तौ ध्यान ई)₁(को आवतौ नी।)₂

(२४) (अैड़ौ बिलालो मोटियार तौ)₁(सुणण में नीं आयौ।)₂

(३३) (लक्खी बिणजारौ)₁(वां संगळां नैं ई आपरै रथ माथै बिठांण लिया।)₂

(३९) ....(वो सांई)₁(आपां री ई ध्यान राखैला।)₂

(४२) .. (म्हैं तौ)₁(इणनैं बांबी कैयनै बतलावूंला।)₂

(४९) (चौधरण)₁(सालस अर भली ही।)₂

(६२) (अेक स्वाळख रा चौधरी नै फूठरा, फबता नागौरी बळदां री अणूंती कोड)₁(ही।)₂

( )₁ द्वारा चिह्नित अवयवों का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि कर्त्ता-स्थानीय अवयवों को दो कोटियों में विभाजित किया जा सकता है, अर्थात्

(ग) कर्त्ता → { संज्ञा पदबन्ध
क्रिया नामिक पदबन्ध

उपरोक्त पुनर्लिखित उदाहरणों में वाक्य संख्या (२०, २१ तथा ६२) में क्रियानामिक पदबन्धों की कर्त्ता स्थानीय अवस्थिति है। शेष समस्त वाक्यों में संज्ञा पदबन्धों की। इसी प्रकार ( )₂ द्वारा चिह्नित अवयवों में भी कर्म-स्थानीय अवयव भी दो प्रकार के है, यथा

(घ) कर्म→ { संज्ञा पदबन्ध
क्रियानामिक पदबन्ध

कर्म-स्थानीय अवयवों के दोनों प्रकारों का पार्थक्य स्पष्ट करने के लिए तद्विषयक उदाहरण एक बार फिर उद्धृत किए जा रहे हैं। उनमें ( )₂ द्वारा चिह्नित अवयवों को रेखांकित करके सूचित किया जा रहा है।

(३३) (लक्खी बिणजारो)₁ (वां संगलां नै ई आपरै रथ माथै बिठांण लिया ।)₂
संज्ञा पदबन्ध

(३९) ... (वो साई)₁ (आपां रौ ई ध्यान राखैला)₂
क्रियानामिक पदबन्ध

अकर्मक क्रिया पदबन्धों और सकर्मक क्रिया पदबन्धो के साथ क्रियाविशेषणों की वैकल्पिक अवस्थिति और पूरकों की अवैकल्पिक अवस्थिति का पार्थक्य स्पष्ट करने के लिए नियम (ङ) का उल्लेख किया जा रहा है। इसी नियम मे यौगिक क्रिया पदबन्ध के अवयवो का विश्लेषण भी स्पष्ट किया जा सकता है।

(ङ) अकर्मक क्रिया पदबन्ध
सकर्मक क्रिया पदबन्ध
यौगिक क्रिया पदबन्ध } ⇒

(क्रिया विशेषण पदबन्ध) { अ. क्रि पदबन्ध
स. क्रि पदबन्ध
यौ. क्रि पदबन्ध

क्रिया विशेषणो का विवेचन अध्याय (७) मे किया जा चुका है।

अ क्रि. पदबन्ध, स. क्रि. पदबन्ध और यौ क्रि. पदबन्ध नामक अवयवों में भी दो प्रकार के पदबन्ध है—(क) पूरक + अपूर्ण क्रिया पदबन्ध तथा पूर्ण क्रिया पदबन्ध। इन दोनों कोटियो के पदबन्धो का पार्थक्य निम्न नियम द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

(च) क्रि पदबन्ध→ { पूरक + अपूर्ण क्रिया पदबन्ध
पूर्ण क्रिया पदबन्ध

प्रकरण संख्या (९.३) मे पुनर्लिखित वाक्यो में वाक्य संख्या (२४), (५३) और (५९) मे क्रमशः पूरक + अपूर्ण अकर्मक क्रिया, पूरक + अपूर्ण सकर्मक क्रिया तथा पूरक + यौगिक क्रिया अवयवों की अवस्थिति हुई है। इन अवयवों का निर्देश करने के लिए इन वाक्यों को पुनः लिखकर, उनमे उपरोक्त अवयवो को रेखांकित किया जा रहा है।

(२४) (भैंडो बिलालो मोटियार तो)₁ (सुणण में नी आयो ।)₂
पूरक — अपूर्ण अकर्मक क्रिया

(५३) ....(म्हैं तो)₁ (इणनै बाबी कैयनै बतलावूंला ।)₂
पूरक — अपूर्ण सकर्मक क्रिया

(५९) (चौधरण₁ (सालस अर भली ही ।)₂
पूरक — यौगिक क्रिया

९.४. संज्ञा पदबन्धों में समानाधिकरण सम्बन्ध की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(६०) कमेड़ी रा पंजिया भाल राजकंवर नाहरसिंघ बारै टापू माथै आयो तो समंदर हिबोळै चढ़ियोड़ो हो।

(६१) राजकंवर बहादुरसिंघ राज रै केई दीवाण अर केई पारखिया नै केसां रौ कोयो बतायो।

समानाधिकरण सम्बन्ध वाले पदबन्धों मे निम्न रचनाओं को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

(६२) राजाजी रा फरमांण री वात सुणतां ई ठाकर अर वो दोनूं ई मन में *अणूंता डरिया।*

(६३) अंगुर, दाड़म, सेव, जांमफल, नारंगी, इरंड-काकड़ी, सीताफळ इत्याद केई मीठा-मीठा फळ।

९.४.१. भाषा मे अनेक ऐसी वाक्यवत् रचनाएं हैं जो स्वतन्त्र वाक्य न होकर, अपने पूर्ववर्ती वाक्यों का अंग हैं यथा

(६४) पिंडतजी कैयो—नी बेटा, आपरा स्वास्थ सारू मारग चालता बटावू नैं क्यूं तकलीफ दूं। सुण्यो कै किणी देस रा आठ राजकंवर उठै आयोड़ा है। दया अर करुणा रा सागर। किणी दुखयारा रा दुख तो वे देख ई नी सकै।

इस उदाहरण मे रेखांकित रचना न तो स्वतन्त्र वाक्य है और न ही पूर्ववर्ती वाक्य के साथ किसी प्रकार से सयोजित है। किन्तु ऐसा होते हुए भी अर्थ की दृष्टि से अपने पूर्ववर्ती वाक्य का अंग है। इस प्रकार की रचनाओं को वाक्य पूर्वाश्रयी की संज्ञा से अभिहित किया जा सकता है।

निम्नलिखित उदाहरणों में रेखांकित रचनाएं भी वाक्य पूर्वाश्रयी है।

(६५) म्हारी वडभाग कै रोटी उतरण रै सागै म्हारी गवाड़ी कोई पांवणो आयो।

(६६) उण बगत वां में घोड़ै जित्तो करार आयग्यो हो। वे घड़ी घड़ी किड़किया चावता अर कैवता जावता—आया बापड़ा गरीबां रौ सोच करणवाला!

(६७) आपनै म्हारी आण अेक पावडो ई अकै दियो तो।

९.५. सामान्य रूप से सकर्मक क्रियाओं के पूर्णतावाचक समापिका क्रियारूपों मे पूर्णतावाचक कृदन्त के लिंग-वचन कर्म-स्थानीय संज्ञा के अनुसार और सहायक क्रिया के पुरुष-वचन कर्त्ता संज्ञा (अथवा सर्वनाम) के अनुसार होते है। अन्वय की इन विविध संभावनाओं का निदर्शन निम्नलिखित वाक्यों द्वारा किया जा रहा है।

(३३) (लक्खी बिणजारो)१ (वा
संज्ञ

(३९) ....(वो सांई)१ (आपां रो :
क्रियानामि

अकर्मक क्रिया पदबन्धो और सकर्मक
वैकल्पिक अवस्थिति और पूरकों की अवैकल्पिक
नियम (ङ) का उल्लेख किया जा रहा है। इस
यवो का विश्लेषण भी स्पष्ट किया जा सकता है

(ङ) अकर्मक क्रिया पदबन्ध
सकर्मक क्रिया पदबन्ध } ⇒
यौगिक क्रिया पदबन्ध

(क्रिया विशेषण पदबन्

क्रिया विशेषणों का विवेचन अध्याय (७) मे

अ. क्रि पदबन्ध, स क्रि. पदबन्ध और यौ क्रि
प्रकार के पदबन्ध है—(क) पूरक + अपूर्ण क्रिया पदब
दोनो कोटियो के पदबन्धो का पार्थक्य निम्न नियम द्वारा

(च) कि पदबन्ध→ { पूरक + अपूर्ण क्रिया पद
पूर्ण क्रिया पदबन्ध

प्रकरण संख्या (९.३) मे पुनलिखित वाक्यों में वा
(४९) मे क्रमशः पूरक + अपूर्ण अकर्मक क्रिया, पूरक + अपूर्ण
यौगिक क्रिया अवयवों की अवस्थिति हुई है। इन अवयवों
वाक्यों को पुनः लिखकर, उनमें उपरोक्त अवयवों को रेखांकित

(२४) (मैंड़ो बिलालो मोटियार तो)१ (सुणण में नी अ
पूरक अपूर्ण
अकर्म१

(४३) ....(म्हैं तो)१ (इणनै वांवी कैयनै वतलावूंला।)२
पूरक अपूर्ण सकर्मक
क्रिया

(४९) (चोपरण१ (सालम अर भलो हो।)२
पूरक यौगिक
क्रिया

९.६. अनेक स्थितियों में सकर्मक क्रियाओं के कर्म-स्थानीय संज्ञाओं के साथ नैं परसर्ग की अवस्थिति सामान्यतया नहीं होती (७७)।

(७७) गिलोलां सूं पछी मार-मारनैं ढिग कर देता। यूं नित वोछरडायां पछैं अेक दिन वानैं नवी ई कुबद सूझी।

किन्तु अनेक अन्य स्थितियों में नै परसर्ग की अवस्थिति अनिवार्य है (७८-८१)।

(७८) थारो वड भाग कै थारा दरद नैं अेक जिणी तो समझै है।

(७९) राजा री सिंघ रै मिस मौत ने परतख आवती देखी।

(८०) धूं माईतां रै सांम्ही रोय-रोय हार थाकी, तौ ई वे थारी पीड़ नैं नी पिछाण सकिया। सेवट थनैं ई माठ झेलणी पड़ी।

(८१) राजकंवरी आंसुवां नैं पूंछती थकी वोली—इण कड़ाव अर अगन देवता रै च्यारूंमेर सात वळाका देवणा। थें कडियां तणा लुळनै धकै-धकै चालौ अर म्हैं लारै-लारै।

वाक्य संख्या (७८-८१) मे कर्म-स्थानीय सज्ञा के साथ नै परसर्ग की अवस्थिति इन वाक्यों के सन्दर्भों में व्यक्त उद्देश्य की चिह्नक है। इन वाक्यों में अवस्थित कर्म-स्थानीय संज्ञाओ दरद (७८), मौत (७९), पीड़ (८०) तथा आंसु (८१) के अर्थ-वैशिष्ट्य को जानने के हेतु इन वाक्यों के सन्दर्भों का ज्ञान आवश्यक है क्योंकि ये सज्ञाएं अपने सामान्य अर्थों में अवस्थित न होकर सन्दर्भों मे वर्णित विषयानुरूप विशिष्टार्थक है।

९.६ १. निम्नलिखित वाक्यो मे सकर्मक क्रिया के मुख्य कर्म की बहुवचन में, किन्तु आमेड़ित रूप मे अवस्थिति होने पर, संज्ञा और क्रिया में एकवचन अन्वय है।

(८२) चानणो करनैं खुणो-खुणो जोयो, पण उठै तौ कीं नी लाधो।

९.७ सामान्य रूप से भाषा में प्रेरणार्थक वाक्यों का दो कोटियों में वर्गीकरण किया जा सकता है—(क) आदरार्थक प्रेरणार्थक वाक्य, तथा (ख) सामान्य प्रेरणार्थक वाक्य।

९.७.१. आदरार्थक प्रेरणार्थक वाक्यों मे सामान्यत: क्रियाओं के सकर्मक रूपों के स्थान पर उनके प्रेरणार्थक रूपों की अवस्थिति कर दी जाती है। इस प्रकार के वाक्यो के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(८३) ... पण अंदाता, कदेई म्हनैं ई हाजरी रो मौको दिराज्यो।

(८४) इण भात नगरी मे रौळौ-दंगो ई नी हुवैला अर आपरी मनचाही हुय जावैला। मांनो तौ म्हारी आ सला है, पछै राज री मरजी व्है ज्यूं हुकम दिरावै।

उपरिलिखित दोनों वाक्यों में देवणो के स्थान पर उसके प्रेरणार्थक रूप दिरावणो की आदरार्थक अवस्थिति हुई है।

(६८) म्हैं तौ आज म्हारी आंखियां इण सूरज री पळको दीठो हूं ।

(६९) पण तौ ई अका लोगां नैं समझावण री म्हैं प्रण करियौ हूं, वां लोगां नैं अेक दिन समझायनैं ई छोड़ूला ।

(७०) डावा माथैं उमनै मां नैं डूबती देखी तौ वो खुद नदी में कूदण वास्तै त्यार हुयौ कै नदी सूं आवाज आई—नी बेटा, नीं ।

कर्मस्थानीय संज्ञा के साथ नैं 'को' परसर्ग की अवस्थिति होने पर भी पूर्णतावाचक कृदन्त और कर्म स्थानीय संज्ञा मे पारस्परिक लिंग-वचनानुसार अन्वय का नियम अक्षुण्ण रहता है ।

(७१) पछै वो उण खसर मिकोतरी नैं राज दरबार में डावी थर बाकी सगळियां नैं सीख देय बहोर करी ।

(७२) वा आपरै हाथां सूं बोरड़ी रा कांटा भेळा करिया । ठेट आगा ईं आगा जायनै न्हाकिया ।

कर्मस्थानीय मुख्य संज्ञा के साथ नैं परसर्ग की अवस्थिति और वाक्य में गौण कर्म की अवस्थिति मे भेद है । उपरोक्त अन्वय केवल मुख कर्म स्थानीय सज्ञा (जो कि ऋजु रूप मे हो अथवा नैं परसर्ग सहित) और सकर्मक क्रिया के भूतकालिक कृदन्त में ही होता है । गौण कर्म की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(७३) दूजैं दिन ईं धणी सूं छानै-ओलै आपरै हिवड़ारी हार अेक सुनार नैं बेच दियौ ।

अन्य समस्त स्थितियों में समापिका क्रियारूपों के लिंग-वचन तथा पुरुष वचन कर्त्ता स्थानीय संज्ञाओं के अनुसार होते हैं ।

एक वचन पुंल्लिग अथवा स्त्रीलिंग संज्ञा की कर्त्ता स्थानीय अवस्थिति में आदरार्थक अन्वय होने पर क्रिया बहुवचन पुंल्लिग में होती है, यथा (७४-६.) ।

(७४) उखरडी रै खनाकर निकळतां उखरड़ी कैवौ – हळदी बाई, ढळिया ढळिया कीकर जावौ, सोना रौ गैणौ-गांठो लेता जावौ ।

(७५) उखरड़ी सूं उतरतां ईं अंट अरड़ायौ । सगळै गांव में खळबळ माची ।-नांनांणा सू हळदी बाई आया रे, हळदी बाई आया रे ।

(७६) ठाकर सा सूं तुरत की जवाब देवता नी वणियौ तौ वे यूक गिटता बोलिया—भगवान री बात न्यारी है । वे म्हारा कैणौ मांनो तौ, थारा पावणां नैं अठे कोट में बुलावौ । इणनै सावळ परखा । आपांरी निजर सूं उणरी पतियारो लां ।

९.६. अनेक स्थितियों में सकर्मक क्रियाओं के कर्म-स्थानीय संज्ञाओं के साथ नै परसर्ग की अवस्थिति सामान्यतया नही होती (७७)।

(७७) गिलोलां सूं पंछी मार-मारनै ढिग कर देता। यूं नित बोछरड़ायां पछै अेक दिन वानै नवी ई कुबद सूझी।

किन्तु अनेक अन्य स्थितियों में नै परसर्ग की अवस्थिति अनिवार्य है (७८-८१)।

(७८) थारो वड भाग कै थारा दरद नै अेक जिणी तो समझै है।

(७९) राजा री सिंघ रै मिस मौत ने परतख आवती देखी।

(८०) यूं माईतां रै साम्ही रोय-रोय हार थाकी, तौ ई वे थारी पीड़ नै नीं पिछाण सकिया। सेवट थनै ई माठ झेलणी पड़ी।

(८१) राजकंवरी आसुवां नै पूंछती थकी बोली—इण कड़ाव अर अगन देवता रै ब्यारूंमेर सात वळाका देवणा। मैं कड़ियां तणा लुळनै धकै-धकै चालो अर म्हैं लारै-लारै।

वाक्य संख्या (७८-८१) में कर्म-स्थानीय संज्ञा के साथ नै परसर्ग की अवस्थिति इन वाक्यों के सन्दर्भों में व्यक्त उद्देश्य की चिह्नक है। इन वाक्यों मे अवस्थित कर्म-स्थानीय संज्ञाओं दरद (७८), मौत (७९), पीड़ (८०) तथा आंसु (८१) के अर्थ-वैशिष्ट्य को जानने के हेतु इन वाक्यों के सन्दर्भों का ज्ञान आवश्यक है क्योकि ये संज्ञाएं अपने सामान्य अर्थों में अवस्थित न होकर सन्दर्भों मे वर्णित विषयानुरूप विशिष्टार्थक है।

९.६.१. निम्नलिखित वाक्यों में सकर्मक क्रिया के मुख्य कर्म की बहुवचन में, किन्तु आम्रेडित रूप में अवस्थिति होने पर, संज्ञा और क्रिया में एकवचन अन्वय है।

(८२) चांनणो करनै खुणो-खुणो जोयो, पण उठै तो कीं नी लाधो।

९.७ सामान्य रूप से भाषा में प्रेरणार्थक वाक्यों का दो कोटियों में वर्गीकरण किया जा सकता है—(क) आदरार्थक प्रेरणार्थक वाक्य, तथा (ख) सामान्य प्रेरणार्थक वाक्य।

९.७.१. आदरार्थक प्रेरणार्थक वाक्यों मे सामान्यतः क्रियाओं के सकर्मक रूपो के स्थान पर उनके प्रेरणार्थक रूपों की अवस्थिति कर दी जाती है। इस प्रकार के वाक्यों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(८३) ... पण अंदाता, कदैई म्हनै ई हाजरी रौ मौकौ दिराज़ो।

(८४) इण भांत नगरी मे रौळो-दंगो ई नी हुवैला अर आपरी मनचाही हुय जावैला। मानो तौ म्हारी आ सला है, पछै राज री मरजी व्है ज्यूं हुकम दिरावै।

उपरिलिखित दोनों वाक्यों में देवणो के स्थान पर उसके प्रेरणार्थक रूप दिरावणो की आदरार्थक अवस्थिति हुई है।

९.७.२. सामान्य प्रेरणार्थक वाक्यों को केवल प्रेरणार्थक वाक्य न कहकर, कारण-बोधक प्रेरणार्थक वाक्य कहना अधिक उपयुक्त है। इस तथ्य को स्पष्ट करने के लिए कतिपय उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

(८५ क) रांम मोवन नैं कैयनैं उण खनैं सूं कागद लिखायो।

(८५ ख) ओ कागद मोवन रांम रै कैण सूं लिखियो।

वाक्य संख्या (८५ क) और (८५ ख) की परस्पर तुलना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि 'पत्र लिखने का क्रिया-व्यापार' मोवन नामक व्यक्ति ने रांम नामक व्यक्ति की प्रेरणा से किया है, और दोनों वाक्यों का यह सामान्य अर्थ है। इस आधार पर वाक्य-युग्म (८५) के दोनों घटक ही वस्तुत: प्रेरणार्थक वाक्य हैं। ऐसा होते हुए भी इन दोनों वाक्यों में अर्थ-भेद है। इस वाक्य युग्म के घटक (क) का अभिप्राय है वक्ता द्वारा मोवन नामक व्यक्ति के कागद लिखने के (किसी अन्य के कहने पर) क्रिया-व्यापार के करने के कारण का उल्लेख। इसके विपरीत घटक (ख) का अभिप्राय है मोवन नामक व्यक्ति के किसी अन्य की प्रेरणा से कागद लिखने के क्रिया-व्यापार में प्रवृत्त होने तथा उसे पूरा करने के कार्य का वक्ता द्वारा उल्लेख। घटक (क) क्रिया का रूप प्रेरणार्थक है और घटक (ख) में अप्रेरणार्थक। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस वाक्य युग्म का घटक (क) कारणबोधक प्रेरणार्थक वाक्य और उसका प्रतिरूप घटक (ख) कार्यबोधक प्रेरणार्थक वाक्य।

इसके अतिरिक्त मोवन नामक व्यक्ति अपनी मरजी से भी पत्र लिख सकता है (८५ ग)।

(८५ ग) मोवन आपरी मरजी सूं कागद लिखियो।

वाक्य संख्या (८५ ग) में मोवन के द्वारा किये गये क्रिया-व्यापार का तो उल्लेख है किन्तु उसने यह कार्य अपनी इच्छा से किया है, किसी अन्य की प्रेरणा से नहीं। अतः वाक्य (८५ ग) को कार्यबोधक अप्रेरणार्थक वाक्य की संज्ञा से अभिहित करना युक्ति संगत है।

नीचे कारणबोधक प्रेरणार्थक वाक्यों के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(८६) बापजी, हाथ जोड़ अरज करूं कै अैड़ी रीस मत अणावो।

(८७) राजाजी रै आदेस सूं डावड़ियां ई राजगरू नैं उंच र मैलां में लेगी।

(८८) औ म्हारूं सिरदार जिणनैं नाई जांण टाट रो इलाज करवायो, वो नाई थोड़ो ई है।

(८९) वो भाई सूं मिलण सारू घणा ई लालरिया लिया, पण लोग मानिया कोनी। हाकां-धाकां सोना रा रथ में बैठाय राजतिलक करण सारू लेय ग्या।

(९०) आवतां ई राजा नैं बधायो। चंवरां दुळाय सोना रा रथ में बिठाण दरबार में ले ग्या। राजतिलक करियो। बामण रो डीकरो....देखतां-देखतां राजा बणग्यो।

(९१) वालग-जोगी असमान जोगी हीडै हीडतो आठूं ई लुगायां नैं आपरैं विमांण में वैसांण ले उडियो।

(९२) हो तो घणो ई भूत। न्याव करावण वाळा पंचा री घांटिया अेकण सागै मरोड़ सकतो, केई चाळा कर सकतो। लाय्यां उत्तन उठांण सकतो। पण चार वरसां सूं प्रीत रै खोडियैं उणरो अंतस बदळग्यो।

(९३) इण बादळ मैंल तो मरिया ई जिद नी छूटै। इमी रैं कूंपलैं रा छाटा देय असमांन जोगी पाछी जीवाड़ दे।

९.७.३. कारणबोधक प्रेरणार्थक वाक्यों में प्रेरणार्थक कर्त्ता और प्रेरणार्थक समापिका क्रिया रूप मे लिंग-वचन और पुरुष-वचन अन्वय सामान्य वाक्यों के समान ही होता है (प्रकरण संख्या ९.५), किन्तु प्रेरित अथवा मूल कर्त्ता के साथ (रैं) खनै सूं परसर्ग की अवस्थिति होती है।

९.८. पीछे प्रकरण संख्या (६.११) में भाववाच्य तथा कर्मवाच्य क्रिया रूपों की रचना का विवरण किया जा चुका है। यहां इन क्रिया रूपो के वाक्यविन्यासात्मक प्रकार्यों का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत किया जायगा। जा-भाववाच्य तथा कर्मवाच्य एवं इज-भाववाच्य तथा कर्मवाच्य वाक्यों (९४, ९५) के समान

(९४) खिरगोस नैं जीवतो आवतो देखियो तो सगळा जीव डरिया कै हुमैं तो जीया मौत मारिया जावांला।

(९५) उण सूं थैड़ा तोल नीं उठाईजै।

भाषा मे अकर्मक क्रियाओं से निर्मित इस प्रकार के वाक्य हैं जो रूप की दृष्टि से तो नही, किन्तु अर्थ-तात्त्विक दृष्टि से भाववाच्य वाक्यो से मिलते-जुलते हैं (९६,९७)।

(९६) वेजा काम करण री माफी मागण में ई म्हनैं लाज को आवै नी। पण बिना कसूर करिया म्हारैं सूं कसूरवार माडै नीं बणीवै।

(९७) छोटकियो हंसनै जवाब दियो—म्हारा मन री किणी सूं वण नीं आवै, तद बतावणी बिरथा। थारैं दाय पड़ै ज्यू कर न्हाखो।

उपरिलिखित वाक्यों की तुलना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि वाक्य संख्या (९७) में बणणो क्रिया के भाववाच्य रूप बणिजणो की अवस्थिति न होने पर भी, अर्थ की दृष्टि से इसे कर्तरि-वाच्य नही कहा जा सकता। इस वाक्य (९७) मे भाववाच्य क्रिया की अनवस्थिति होने पर अर्थ के आधार पर इसे भाववाच्य वाक्यो के अन्तर्गत परिगणित करना आवश्यक है और यह भी आवश्यक है कि क्रियाओं के भाववाच्य इत्यादि रूपों और अकर्मक क्रियाओं की भाववाच्यवत् अवस्थितियों मे, यदि कोई अर्थ-पार्थक्य है तो उसका स्पष्टीकरण किया जाये।

९.८.१. भाषा मे किसी भी क्रिया-प्रकृति का, चाहे वह अकर्मक हो अथवा सकर्मक (अथवा प्रेरणार्थक), द्विविधात्मक अर्थ होता है, जिसे उक्त क्रिया-प्रकृति के (क) क्रिया-व्यापार तथा (ख) उक्त क्रिया-व्यापार के फल की संज्ञाओं से अभिहित किया जा सकता है। यथा 'रोटी पोवणो' क्रिया का क्रिया व्यापार है 'आटा गूंधना, रोटी बेलना, बेली हुई रोटी को तवे आदि पर डालकर आग पर सेंकना इत्यादि,' और इस क्रिया का फल है उक्त क्रिया-व्यापार के द्वारा 'तैयार की गई रोटी' इत्यादि। इस प्रकार प्रत्येक क्रिया-प्रकृति के, उसके अर्थ की दृष्टि से, दो भाग हैं, यथा उस क्रिया-प्रकृति का वाच्य क्रिया-व्यापार तथा उस क्रिया-व्यापार द्वारा जनित फल।

उपरिलिखित उदाहरण संख्या (९४, ९५ तथा ९६) मे उन वाक्यो मे अवस्थित क्रियाओं के भाववाच्य-कर्मवाच्य रूपों से उक्त क्रियाओं के मात्र क्रिया-व्यापार का वाचन होता है। इसके विपरीत वाक्य संख्या (९७) मे अवस्थित क्रिया के क्रिया-व्यापार द्वारा जनित फल का ही उल्लेख वाक्य के वक्ता का अभिप्राय है। सामान्य रूप से व्याकरण में क्रिया-प्रकृतियों के जिन रूपों को (अर्थात् वणणों से वणियो जावणो तथा वणीजणो) भाववाच्य कर्मवाच्य रूपों की संज्ञा से अभिहित किया जाता है, उनका सम्बन्ध क्रिया-व्यापार के फल से न होकर मात्र क्रिया-व्यापार के उल्लेख से ही होता है। इसके विपरीत भाववाच्य-कर्मवाच्यवत् अवस्थित क्रियाओ का सम्बन्ध क्रिया-व्यापार से न होकर, तज्जनित फल से होता है।

निम्नलिखित उदाहरणों मे क्रिया-प्रकृतियों के क्रिया-व्यापार के उल्लेख को स्पष्ट-तया लक्षित किया जा सकता है।

(९८) राजाजी थोड़ा सा नरम होयनै कैवण लागा—आज दस दिन हुयग्या रांणी रै मैल सूं नवलखो हार चोरीजग्यो।

(९९) धणी जवाब दियो— म्हनै पैला जैड़ी चेती ही ऊडो चैती थकै राखीजैला।

(१००) झूंपडी रै लारै चावळ सीझरिया है, सक्कर छांणीज री है अर घी तपाईज रियो है।

(१०१) डोकरी हंसनै कैवण लागी—थारै वरसां ही जद चांद अपड़ण ही हुंस राखती. पण अबै तो पहली ई नी लांघीजै, मूं रूंख माथै चढण री वात भलां कही।

(१०२) आ वात कैय वो सूवटा री घांटी मरोडी। डाकण री ई घांटी मुरड़ीजी। अरड़ावण री घणी कोसीस करी, पण बोल नीं निकळिया।

९.८.२. कर्मवाच्य–भाववाच्य वाक्यों मे क्रिया के लिंग-वचन और पुरुषवचन या तो मूल वाक्य की कर्म-स्थानीय संज्ञानुसार होते हैं (जैसा कि उदाहरण संख्या (१०२)

से स्पष्ट है) अथवा, अकर्मक क्रिया वाले वाक्य से निर्मित भाववाच्य में पुल्लिग, एकवचन अन्य पुरुष मे (१०३)।

(१०३) पछै उणसूं दौड़ीजियौ कोनी। तड़ाच खाय'र हेटै पड़ग्यौ।

मूल वाक्य के कर्त्ता के साथ कर्मवाच्य-भाव-वाच्य वाक्यों मे (रै) सूं परसर्ग की अवस्थिति होती है (१०४-५)।

(१०४) म्हारै सूं नी सळटाईजै जद भगवांन रै दुवार हाजर हुजे।

(१०५) पछै तो उणरै बाप सूं ई खंघेड़ै बारै को निकळीजै नीं।



१०. संयोजित वाक्य

१०.१. सहसम्बन्धवाचक सर्वनाम सो की अवस्थिति सामान्यतः निर्विकल्प आवृत्ति अथवा अविच्छिन्न घटना चिह्नक के रूप मे होती है। इसकी अवस्थिति द्वारा निर्मित कतिपय संयोजित वाक्यों के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१) मोकौ मिळतां ई असमान जोगी सूं कही सो वाता पूछ समंचार पुगाय देवैला।

(२) वेटा तौ घर, गांव अर मा नै छोड़ बहीर हुया सो अेक छिन वास्तै ई नीं ढबिया। हालता-हालता तीन दिन अर तीन रातां वीतगी।

किन्ही परिसरों मे सो की वो अथवा वा स्थानीय अवस्थिति भी होती है।

(३) आ वाता नै अबूझ समझै सोई अबूझ।

(४) म्हैं तौ मरियां ई उणरी वात नीं टाळा। आप करौ जकौ न्याव अर आप फरमावौ सो साच है।

१०.२. कार्य-कारण वाक्यो मे प्रथम उपवाक्य में किसी कारण का उल्लेख करके, उसके अनुवर्ती उपवाक्य मे उक्त कारण के कार्य अथवा परिणाम का उल्लेख किया जाता है। इन दोनों उपवाक्यों का संयोजन क्यूंकै, इण वास्ते, इणी खातर, इण खातर आदि संयोजकों द्वारा होता है। नीचे इस कोटि के वाक्यों के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(क) कारण उपवाक्य + क्यूंकै + कार्य उपवाक्य

(५) घर-धणी कै दूजा किणी नै इण वात री पतौ नीं पड़ण दियौ। क्यूंकै टा पड़िया की न कीं रांफो पड़ जावतौ।

(ख) कारण उपवाक्य + इणीखातर + कार्य उपवाक्य

(६) मोकळियो सूंसावती वा मोमा रै सुर में बोली—भाटियां सूं हाथ पारो पांनो नी पड़ियो दीसै, इणी खातर ऐड़ी विलळी वात करी।

(ग) कारण उपवाक्य + इण खातर + कार्य उपवाक्य

(७) उणरै रूपाळै डोल नै निजर नी लाग जावै, इण खातर उणरा घरवाळा दिन में दस वार उणनै थुथकी न्हाखता हा।

(घ) कारण उपवाक्य + इणी वास्तै + कार्य उपवाक्य

(९) गरीबां री मनचीती नीं हुया करै इणी वास्तै तो वे गरीब है।

(ङ) कारण उपवाक्य + इण वास्तै + कार्य उपवाक्य

(९) आप पैला सूं ई हजारूं बातां समझियोड़ा हो, इण वास्तै म्हा टाबरां री समझ आपरै हीयै नी ढूकै।

(च) कारण उपवाक्य + इण वास्तै + कार्य उपवाक्य

(१०) मिनख नै अगलै छिण री जाच नीं पड़ै, इण वास्तै धरती माथै नित नवीं नवी वातां अवतरै।

१०.३. कै– संयोजित वाक्यों के दोनों अंगों, अर्थात् मुख्य उपवाक्यों तथा उत्तरवर्ती कै– उपवाक्यों के पारस्परिक सम्बन्धों के आधार पर कै– उपवाक्यो के विविध, प्रकार्य निर्धारित किये जा सकते हैं। इस प्रकरण मे उन विविध प्रकार्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

१०.३.१. कै– उपवाक्यों की अवस्थिति अपने मुख्य उपवाक्यो की अकर्मक क्रियाओं तथा सकर्मक क्रियाओं के क्रमशः कर्ता एवं कर्म-स्थानीय प्रकार्यों में होती है। इण प्रकार्यों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(११) इत्ता बरसां पछै म्हनै तो लागै कै म्हारो कोई दूजो नांव हुय ई नी सकै।

(१२) लोग कैवता कै उण दिन सूं ई मा री जोव उपड़ग्यो।

इस कोटि के कै– संयोजित वाक्यो के मुख्य उपवाक्यों मे अवस्थित क्रियाओं का वर्ग ही इस तथ्य का नियामक है कि उनके साथ कर्त्ता-स्थानीय (अकर्मक क्रियाओं के लिये) और कर्म-स्थानीय (सकर्मक क्रियाओं के लिये) कै-उपवाक्य अवस्थित हो सकते हैं। इस वर्ग की कतिपय अन्य क्रियाएं हैं जाणणो, मांगणो, सुणणो, चावणो, तथा लागणो इत्यादि हैं।

१०.३.२. व्याख्यक कै– उपवाक्यो के अन्तर्गत दो प्रकार के उपवाक्यों को परिगणित किया जा सकता है।

सामान्य शब्द व्याख्यक उपवाक्यों द्वारा मुख्य उपवाक्य के अन्तर्गत् बात इत्यादि शब्दों की कै– उपावाक्यों द्वारा व्याख्या की जाती है।

(१३) नगर में किणी रै बस री वात कोनी कै कोई सिंघ नै मार सकै।

(१४) घणा बरसां पैली री बात कै किणी अेक गाव मे मायापत सेठ रैवतो हो। आखै मुलक मे विणज वधियोड़ो।

अन्य व्याख्यक उपवाक्यों को विशिष्ट अविर्भाविना व्याख्यक कै-उपवाक्यों की संज्ञा से अभिहित किया जा सकता है। इन वाक्यों द्वारा मूल वाक्यो मे अवस्थित कर्ता अथवा कर्म स्थानीय संज्ञाओं की विशिष्ट आविर्भानाओं का उल्लेख किया जाता है।

(१५) तद नगर सेठ हुंसनै कैयो —घरवाळा दूजी कमाई तो नी, पण चौपड़-पासा सामै बांधिया। पण म्हामे आ मोटी खोड़ कै बाजी लगाया बिना दांव नी रमूं।

(१६) म्हारा बड़भाग कै यूं म्हनै बेटी रै मांव सूं बतलाई।

(१७) वानै तो सपना मे ई ठा कोनीं कै कैंडी जाळ-साजी। राजा कंवरां री मूंडी क्यूं नीं देखणी चावै। सगळा गताघम में पड़ग्या।

विशिष्ट आविर्भाविना व्याख्यक वाक्यों के अन्तर्गत उन कै- उपवाक्यों को भी परिगणित किया जा सकता है, जिनके सम्बन्धित मुख्य वाक्यों मे कर्ता एवं कर्म-स्थानीय संज्ञाओं के पूर्ण सार्वनामिक निरधारक विशेषणों - इत्तो, कित्तो, अैड़ो, इण विध, इण भांत आदि की अवस्थिति है।

(क) (१८) कंवराणी नै रीस तो अैडी आई कै वा कंवर री जीभ खाचलै।

(१९) थोडी ताळ में ई संयोग री वात अैड़ी बणी कै पारवती रै राज री राजकंवर सिकार रमनै बावडी रै गळाकर न सरियो।

(२०) पछे आपरै धणी साम्ही इनारो करती बोली —इणरा लखण तो अैड़ा है कै तिरसा मरतो मर जावै तो म्हारी लार छूटै।

(ख) (२१) आफळती-आफळती वो चुकलिया रै तळै मे इत्ता काकरा न्हाख दीना कै पाणी गळवैरी कोर तक चढग्यो।

(२२) राणी औ म्याली गुण इत्ती राजी व्ही कै हाथोहाथ हीरा-मोतिया री थाळ भरनै बधाई मे दियो।

(२३) म्है थानै कित्ती ई लड़ती कै म्हारै बेटा नै थोड़ी मत दो। पण थें थारी बाण नी छोड़ो।

(ग) (२४) भजन रो नसो इणविध लोगों रैं माथै में छायो कै वे बावळा-सा हुग्या।

(२५) अटी-उटी भटका देयनै इण भांत फंफोड़ियो कै ठोड़-ठोड सूं हार री माळा तूटगी।

१०.३.३. निम्नलिखित उदाहरणों में प्रथम उपवाक्य के क्रिया-व्यापार का उल्लेख कै- उपवाक्य द्वारा होता है।

(२६) छोटकियौ भाई पोहरा माथै इण भांत आळोच करतौ हौ कै अणछक उणनै खोंपण हिलतौ निगै आयौ। मूजेवड़ी सूं बंधियौ मड़ौ अठी-उठी खसण लागौ।

(२७) सावचेती सूं उभौ हौ कै उणनै किणी रै रोवण री तीखी आवाज सुणीजी। पोरायती रा कांन झळगळा हुयग्या।

(२८) लक्खी बिणजारौ कीं कैवण वाळौ हौ कै बांमणी रै मन मे अेक बिचार आयौ।

(२९) मां रो इत्तौ कैवणौ हौ कै उणरै हाचला सूं दूध री बत्तीस धारावां सागै छूटी।

(३०) राजमैल रै माय राणियां नै दरसण देयनै राव आपरै मुकाम जावतौ हौ कै राजा साम्हौ थकिया।

उपरिलिखित समस्त उदाहरणों में कै उपवाक्यों में वर्णित क्रिया-व्यापार सर्वथा अप्रत्याशित है।

१०.३.४. नीचे निर्दशित प्रश्नोत्तर-स्थिति में कै की अवस्थिति उल्लेखनीय है।

(३१) वा उणनै भरमावण सारू अठी-उठी री बातां पूछन लागी :

जूं जूं सिध जावै अे ?
डीरा खूंटण नै
...
खावै कीकर अे ?
कै सवड़-मवड़।
....
थूं बिछावै कांई अे ?
कै छाजलो ?
भूं ओढै कांई अे ?
कै खेरणो।
....

१०.३.५. किन्हीं परिसरों में कै- संयोजित वाक्यों में संयोजक कै अनवस्थिति होती है।

(३२) मैं म्हारै घर में मोकळा मिनखां नै देखिया तो मन में जाणियो, म्हारी सीड़ी बाधे है, जीवत सिनान करावै है अर थें म्हनै बालण नै जासो।

१०.४. विभाजक समुच्चय बोधक निपात कै के द्वारा विविध विभाजक समुच्चय बोधक पदबन्धों तथा वाक्यों की रचना होती है।

१०.४.१. विभाजक समुच्चय बोधक कै से निर्मित कतिपय संज्ञा पदबन्धों के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

(३३) सिणगार कै वणाव करायां लुगाई रै अेडी सूं चोटी लग झाळ-झाळ ऊठै। पछै वै तो लुगाई रै सागै रांणी जी हा।

(३४) मिण कै यागिया चिमकै ज्यूं उण काळै-बोळै अंधारै में ई परियां रो उघाड़ो डील पळपळाट करतो हो।

(३५) देखौ भगवान रै कबूल करियां भगत लोग चढायो कै परसाद कित्ताक दिना तांई चाढेला।

(३६) आसती-पासती रै गावां में कठैई भजन, संगत, जागण कै रातीजोगा हुयता तो लोग परिहार नै अवस करनै बुलावता।

१०.४.२. विभाजक समुच्चय बोधक वाक्यों में अवस्थित विविध वाक्यविन्यासात्मक युक्तियों का नीचे सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

(क) वाक्य$_1$ कै वाक्य$_2$ (३७-९)

(३७) राजा म्हनै घणो चावै कै वो आपरै कंवरां सूं घणो नेह करै।

(३८) कंवर रो रूं-रूं उभो हुयग्यो। या कोई छोकरी है कै चंडी है। थोड़ी ताळ मे वा खेत रै बारै माठ माथै आई।

(३९) उणनै ठा नी पड़ी कै चादणी समन्दर नै सिनान करावै कै समन्दर चादणी नै संपाडो करावै।

(ख) कै तो वाक्य$_1$ (अर) कै वाक्य$_2$ (४०-३)

(४०) कै तो म्हारी सेवा वदगी मे खामी है अर कै आपरी भगती मे खामी है।

(४१) पछै बिना किणी लाग-लपेट रै इण भांत बोलण लागी जाणै पिंडत जी उणरा वाळ-गोठिया व्है। उणरी बोली कै तो अेडी जाणै साचाणी गळै मे सुत्रयोडा दोय कागळा काव-काव करै अर कै किणी कागळ नै ई बोलण रो वरदान मिळग्यो व्है।

(४२) जागतो जित्तै कै तो थोगो रमतो कै खलकां सूं कजिया करतो।

(४३) पोहरायतो नै आप रै गाढ़ रो पूरो-पूरो पतियारो हो। डरियो तो कोनी. पण इचरज अणूंतो हुयो। आ काई वात हुई। कै तो घरवाळा भूळ सूं जीवतै नै मसांण ले आया कै मड़ै मे पाछो जीव वावड़ियो।

१०.४.३. किन्ही परिसरों मे कै की अवस्थिति अव्यक्त भी रहती है (४४)।

(४४) हमैं रीस नी राखैं अर म्हारै सू मिळण अवस आवै। जावणी नी जावणी थे जाणों।

१०.४.४. विभाजक समुच्चय वोधक निपात कै से मिलते-जुलते अर्थ में, चाहे द्वारा भी विकल्पात्मक सयुक्त वाक्यों की रचना होती है (४५,४६)।

(४५) ......तौ थोडी निरात सू सोची कै जका माईत म्हनैं वीस वरसां तक आपरी गोद में पाळ-पोसनैं मोटी करी, वेटा गिणौ चाहे वेटी गिणौ, वारै वास्तै तौ सैग म्है इज हूं, पछै कीकर म्हारै विना वानैं चैन पडतौ व्हैला।

(४६) चिडी मोळी पडतौं थकौ कह्यौ—म्हनैं तौ म्हारा विखा रैं पार की सूझै ई नी। म्है तौ म्हारै मरता, टावरा रैं बिखा री राव-रत्ती ई अदाज नी लगा सकू। राणी-मा म्हनैं थे भूडौ कौ चाहे भलौ, म्हारै तौ लुगाई बिना अेक पलक ई नी सरै।

१०.५ सोद्देश्य सयोजक अनैं~नैं तथा सामान्य सयोजक अर~'र द्वारा पदों, पदबन्धो एवं वाक्यों का सयोजन होता है।

१०.५.१. अनै~नै द्वारा सयोजित कतिपय पदों, पदबन्धों एवं वाक्यों के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(४६) पयाळ लोक री तौ माया ई अनूठी। सोना-रूपा रा रूंख। हीरा-मोतियां रा झूमका। धरती माथै काकरा री ठौड़ मिणिया ई मिणिया। ......सुथार री वेटी पयाळ-लोक री छिब देखण लागी। बगीचा मे केसर रैं रूंख किरणा रैं हीडै सेस नाग री किन्या हीडती ही। उणरी छिब अर आब देखता ई सुथार रैं डीकरा री जोत सवाई वधगी। दुनियां में फगत दो ई चीजा रूपाळी—अेक कुदरत नै दूजी नार। वाकी सैं पयाळ।

(४७) किणी अेक बन रा हलका मे अेक स्याळ रैवती ही। औ घणौ चतुर नैं अत ई घणौ हुसियार हौ। मौका माथै उणरी बुध घणी फिरती ही।

(४८) कागलौ आपरै रूप रौ वखाण सुणनैं घणौ अजस करियौ। ......लूकड़ी तौ वोलती ई गी—जैंडी रूपाळी काया है, वैंड़ौ ई भगवान मीठौ अर सुरीलौ गलौ दियौ है, म्हारा हाडा राव नै। ......म्है तौ आपरै मीठा गळा नै तरसूं। गरीवणी माथै दया करौ नै कोई मीठौ गीत उगेरौ। म्हैं तौ आपरै गळा रौ मीठौ इमरत पीवण अळगी भाय सू आई हूं। म्हारै हिवडा री आसा पूरी नैं कोई मीठौ गीत उगेरौ। खुसामद रा नसा मे कागला री अकल गैळीजगी।

१०.५.२. सामान्य सयोजक अर~'र की अवस्थिति के भी कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(४९) छोटा-मोटा राजा उमराव अर ठाकर ठेठर तो उणरै धड़ा में जुगता हा।

(५०) अेक हो सेठ। तिणरै बेटा सात अर बेटी अेक। वा सबसूं छोटी।

(५१) वा सात दिना ताई लगती सोवै अर लगती जागै।

(५२) राणी री बातां सुणनै राजा उणरै गुण अर समझ माथै घणो ई राजी हुयौ।

१०.५ ३. अर की विभाजक-संयोजकवत् अवस्थिति के भी कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(५३) सेठ री मोटोडा बहू कंयो—बादळा रौ काई भरोसौ, बरसै अर नी बरसै।

(५४) छोटकिया बेटा रौ रू-रू जाणै कान बणग्यौ। सगळी बात नै ध्यान सू सुणी। सुणिया ई सबर राखी। सगळा जणिया रै साम्ही पूछिया कदास भेद देवै अर नी देवै। वो होठा उफनता बोना माथै गाँठ खाम देय राखी।

१० ६ निषेधवाचक वाक्यो में निषेधार्थक निपातो की अवस्थिति के अतिरिक्त, लक्ष्यार्थ द्वारा निषेधात्मकता की अभिव्यजना भी होती है। यथा वाक्य संख्या (५५) मे,

(५५) इण हिसाब सू मिनख जमारै रै खोलियै री लाज री तौ कुण कूतौ कर सकै ?

वक्ता का अभिप्राय सामान्य प्रश्न का कथन न होकर, लक्ष्यार्थ द्वारा यह अभिव्यजित किया गया है कि "मिनख जमारै रै खोलियै री लाज री कूंतो" करने वाला कोई नही है अथवा ऐसा कोई व्यक्ति नही है जिससे यह कार्य हो सकता है, इत्यादि। इसी प्रकार के कतिपय अन्य वाक्यो के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(५६) कबूड़े मे बाज वाळी हूंस अर ताकत व्है तौ वो इण भात निबळो बिण दाणा चुगै।

(५७) गुड़तां ई राजकवर री आख खुली—कठै राजकवरी, कठै अपछरावा, कठै सोनै रा हंस, कठै सोनै रा पखेरू, कठै मोतिया रा भूमका अर कठै बावड़ी।

आ० राजस्थानी के निषेधवाचक निपात निम्नलिखित है :

(क) सामान्य निषेधार्थक नीं, न

(ख) अवधारक निषेधार्थक कोनी, कोयनी

(ग) आज्ञार्थक निषेधार्थक मत

(घ) उद्‌बोधक निषेधार्थक मती

(ङ) अभिव्यजक निषेधार्थक नीज

१०.६.१. सामान्य निपात की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(५८) थूं नी मानैं तौ पछै काई करूं।

(५९) बेटी री सीख बाप री समझ मे नी आई।

नीं के वैकल्पिक रूप न की अवस्थिति के भी कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(६०) इग्यारैं बजियां स्कूल री छुट्टी हुई ही, पण अजैं जीमिया न जूठिया; भूखा ई यारैं गया है।

(६१) .. ...पण हालैं नैं डोलैं, बैठी बोली-बोली सुणैं है।

१०.६.२. अवधारक निषेधार्थक निपात कोनीं की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(६२) ......अर मिनख भरम करैं कै जठैं उणनैं की नी दीसैं उठैं कीं है ई कोनीं।

(६३) ठाकर इती ताळ नीठ चुप रिया। वे दारू लेवण में मस्त हा। आधी बाता सुणी अर आधी सुणी ई कोनी।

(६४) असवार मायौ निवायनैं बोलियौ—इण संसार में आपरै वास्तै की काम कठण कोनी।

कोनीं के वैकल्पिक रूप कोयनीं की अवस्थिति के भी कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(६५) ऊंदरी नैं आ बात चोखी लागी कोयनी।

(६६) उतावळी अर जोस रै कारण वो तौ पूरौ देखियौ ई कोयनी। फटाफट आपरी टूव घसण लागी।

(६७) मां बोली—बेटा, म्हारी मांदगी री दवा बैद खनैं कोयनी।

किन्ही परिसरों मे अवधारक निषेधार्थक निपात कोनीं की कतिपय तत्वों से अन्तर्निविष्ट अवस्थिति भी होती है।

(६८) खुसामद री मार कदैं ई खाली को जावै नीं।

(६९) अेक हो ऊंदरौ नै एक ही ऊंदरी। ऊंदरी अचपळी अत घणी ही। उणरै हाथां पगा दिया जगता हा। की न की बोछरड़ाई करिया बिना को मानती नीं। ऊंदरौ घणौ ई समझावतौ—देख घणी रोळिया मत कर। कदै ई कुमौत मारी जावैला। पण ऊंदरी किण री सीख मानैं।

१०.६.३. आज्ञार्थक मत तथा उद्बोधक मतो दोनों निषेधार्थक निपातो की अवस्थिति (जैसा कि इन दोनों निपातों के नामकरण से स्पष्ट है) अपने संगत समापिका क्रियारूपों के साथ ही होती है। इन सगत अवस्थितियों के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

(७०) म्हनै तो फगत आइज वात कैवणी है कै थे म्हारी जै मत वोलो, इण भगती री जै वोलो।

(७१) थूं आ मत जाणै कै थारी काळी मासी जलम सूं ई औ घसको लेय जलमी व्हैला।

(७२) पगार म्हैं आपनै मूंडै मागी देवूला, पण आप जावण री वात तो करो ई मती।

(७३) ......वोली—वेटी अर पावणं नै तो अेक दिन सिधावणो ई पडै। राणी वणिया जामण नै विसराजे मती।

१०६४ अभिव्यंजक निषेधार्थक निपात नौज की सामान्य अर्थ है "कभी नहीं, कभी न।" नौज की अवस्थिति लगभग मत और मती की अवस्थिति के परिसरों में ही होती है।

(७४) जांन बहीर हुवती वगत वींद री वाप कैयौ—जानिया सूं कोई नकटाई कै वदमासी हुयगी व्है तो सिरदार माफ करावै। पडूत्तर में वेटी रौ वाप वोलियौ—आप सूं गळती नौज व्है।

नौज का मुख्य अभिव्यंजक प्रकार्य है किसी के कथन में अन्तर्निहित अमंगल की आशंका के निराकरण की वक्ता द्वारा उत्कट इच्छा (७५)।

(७५) राजा रा मूंडा सूं आ वात सुणनै राणी गोद सूं आपरो माथौ ऊंचौ करियौ। वोली—अैड़ी वात आपरा मूंडा सूं नौज काढ़ौ। आप सूं वता म्हनै कंवर थोड़ा ई लागै......।

१०.६५. तुलनावाचक उभयपक्ष निषेधवाचक वाक्यों में दोनों उपवाक्यों में निषेधार्थक निपातों की अवस्थिति होती है। इस कोटि के वाक्यों की विविध सम्भावनाओं के उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे है।

(क) नी......नी

(७६) वामणी वोली—औ गैणो-गांठो नीं थारो है नी म्हारो। औ तो सगळौ राजकंवर रौ है।

(ख) नी......अर नी......

(७७) नी आप लोग पाछा अेक दिन में टाबर हुय सको, अर नीं म्हैं अेक दिन में आप लोगा री उमर उलाघ सकूं।

(ग) नी तो......अर नी, नीं तो......नी......अर नी......

(७८) सेवट कायो होयनै राजा कैयौ—राणी, थनै थारै कवरा री इत्तो डर है अर थूं म्हारी वात रो पतियारो ई नी करै तो वचन रासण सारू म्हैं पैली

ई मर जावूं। नी तौ म्हैं जीवतौ रैवूंला अर नीं राजकंवरा रैं वास्तैं दुमात री जोखौ व्हैला।

(७९) बामणी बोली—नी तौ म्हनैं पीवर जावणौ है, नी सासरैं अर नी नानेरैं।

(घ) ......नी...... ~ ......नें......

(८०) काई देखें कै राणी तौ भाटा री मूरत ज्यूं बैठी छवरां-छवरां आंसू ढळकावैं। बोलैं नी कोई चालैं।

(८१) अेक राजा रा कंवरजी की भणिया न कोई पढिया, मा मूरख।

(८२) बोलैं न चालैं। आप रैं किरतब में तन-मन सूं लाग रिया है।

१०.६.६. विकल्पात्मक निषेधवाचक वाक्यों में प्रथम उपवाक्य में कै तौ, तथा अनुवर्ती उपवाक्यों नीतर आदि निपातों की अवस्थिति होती है।

(८३) राजा-राणी इणरौ काई जवाब देवता। खीझ करनैं बोलिया—कै तौ इण भेद री पतौ लगावौ, नीतर म्हैं सगळा रा माथा कलम कर दिरावूंला।

१०.६.७. विकल्पात्मक सकारात्मक निषेधवाचक वाक्यों में दोनों उपवाक्यों का कै द्वारा सयोजन होता है। इनमें पूर्ववर्ती उपवाक्य सकारात्मक तथा उत्तरवर्ती उपवाक्य निषेधवाचक होता है।

(८४) जे इण सिंघ नै मारणौ रौ काम गळै पड़ग्यौ तौ सिंघ तौ मरैला कै नी मरैला, पण म्हनै तौ मरणौ ई पड़सी।

किन्ही स्थितियों में कै की अवस्थिति नही भी होती।

(८५) असमान जोगी कै यौ—थे डरौ तौ म्हारैं वास्तैं वा इज बात, नी डरौ तौ म्हारैं वास्तैं वा इज बात।

(८६) म्है लंपण राखूं तौ म्हारी मरजी अर नी राखूं तौ म्हारी मरजी।

(८७) म्है बोलूं जकौ ई झूठ अर नीं बोलूं जकौ ई साच।

१०.६.८. इस प्रकरण मे सामान्य निषेधार्थक निपात नीं की आवृत्ति एवं उसके साथ कतिपय अन्य तत्त्वों की अवस्थिति के उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(क) नी नी (८८)

(८८) जे बीकाणै रैं राजकंवर नैं इण वात री सोय हुवती कै सूवर री सिकार चढिया, आगैं नी नी म्हैं जैड़ी भजोगती वाता बणैला तौ वो भवै ई जैसाणैं री सीव मे सूवर रैं लारैं घोड़ौ नी दावतौ।

(ख) नी ई सई (८९)

(८९) औ नी मानै तौ नीं ई सई, म्हनै तौ सात लटका कर'र इण आगै निमणी पड़ै ।

(ग) नी जणै (९०)

(९०) नी जणै भूखा भलै मरसां ! पाणी है न आटौ ।

१०.७ कालवाचक सर्वनाम जद, तद इत्यादि से संयोजित वाक्यों की कोटि में जद-तद हेतुमद वाक्य एक प्रमुख उपकोटि के रूप में परिणित किये जा सकते हैं। इस उपकोटि के वाक्यों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत है।

(९१) बेमाता राम जाणै क्यूं अबळा लुगाई रा अंतस में प्रेम करण री चावना भरी । जद उणरौ कौ आपौ नी तद क्यूं उणनै प्रेम री हिमाळौ सूंप्यौ ।

(९२) खुद भगवान रो ई जद आपरै आगै पसवाड़ौ नी फिरै तद बापड़ै मिनख री तौ बिसात ई काई ।

उपरिलिखित दोनों उदाहरणों में काल के साथ-साथ प्रासंगिक रूप से हेतुमद् भाव का समाहित उल्लेख है, किन्तु तद के स्थान पर तौ का आदेश होने पर हेतुमद् भाव का उल्लेख आनुषंगिक हो जाता है (९३, ९४)।

(९३) म्हारी भगती रै जोर सूं जद चील आयनै खूंटी मे हार टाक जावै तौ लोग सिध रै मरणै रौ धीजो क्यूं नी करै।

(९४) इण उपरात जद काळै बाळै बरसतै पांणी में पावणा आपरै डील माथै अेक ई छांट नी लागण दी तौ आ बात सुणतां ई जाणै सगळा गाव वाळां री बचियोड़ी सुधबुध ई जाती री ।

१०.७.१. जद-तौ वाक्यों के हेतुमद् भाव समाहित कालवाचक अर्थ के अतिरिक्त, केवल कालवाचक अर्थ भी होता है (९५, ९६)।

(९५) बावडी पार करिया जद हवा रो पोळ आई तौ वारौ जीव में कीं नेहचौ हुयौ ।

(९६) गाय रै बिछियै नै जद इण वात रो पतौ पड़ियौ तौ वो ठळाक-ठळाक रोवण लागौ ।

निम्न वाक्य में जब की "जब कभी" के अर्थ में अवस्थिति हुई है (९७)।

(९७) जद उणरै मूंडै माथै दया हुवती तौ देखणवाळा नै अंडो लखावतौ के इण नै रीस तो सपनै में ई नीं आवती व्हैला ।

निम्न वाक्य में जद की अवस्थिति "जैसे ही" के अर्थ में हुई है।

(९८) जद खेत रो धणी जाळ भेळो कर'र पावडा पचासे'क आगो आयो कै कागलो तो क्रांय-क्रांय करणो माडियो।

१०.७.२ कालवाचक वाक्यों में सामान्यतया जद की ही अवस्थिति होती है। इस कोटि के वाक्यों में जद की विविध रूपों में अवस्थितियों के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(क) जद "तब"

(९९) दो-तीन घड़ी रात ढळी जद पाछी उणनै चेतो वावड़ियौ।

(ख) जद ई "तभी तो"

(१००) वो थोड़ी जोर सू बोलनै जवाब दियो— म्हनै तो दीसै है जद ई आपनै अरज करू।

(ग) जद इज "तभी तो"

(१०१) थू म्हारै माथै भरोसो कर। म्हारी बाई, म्हैं दुनियां री घणी-घणी ठोकरा खाई हूं, जद इज म्हैं इणरा हथकंडां नै आज सावळ समझण जोग बणी हूं।

(घ) जद इज तो "तभी तो"

(१०२) बोलियो—अवसी भळै कद पड़ै, अवसी पडी जद इ तो इण [illegible] काठे आयो।

(ङ) जद तो "तब तो"

(१०३) थू ई म्हारै सू चोज राखै जद तो वात माव ई गूटगी। [illegible]

(च) जद सू "जब से"

(१०४) म्हारा लोक थपिया जद सूं जको भेद [illegible] बतावूं।

१०.७.३. तद की कतिपय अवस्थितियों के [illegible] जा रहे हैं।

(१०५) बामणी री वा काणकी [illegible] धणी नै कैयो कै मोटोडी बेटी [illegible] लखपती रै बेटे साथै ब्याव [illegible] पीहर जावै।

(१०६) कुदरत री सुभाव आपसूं वत्तो कुण जाणै, तद आ वात आप सूं ई अछाणी कोनी व्हैला कै जीव-जिनावर किसा नित भेळा व्है।

(१०७) असमान जोगी घणी लटापोरिया करी तद वा नींठ मानी।

ऊपर वर्णित अद-संयोजित वाक्यों और इस प्रकरण में वर्णित तद-संयोजित वाक्यों मे अर्थ भेद है। जद के द्वारा मात्र काल-क्रम का अर्थ द्योतित होता है जबकि तद-संयोजित वाक्यों में काल-क्रम के अतिरिक्त तद-उपवाक्य मे कथित व्यापार अपने पूर्ववर्ती वाक्य मे कथित तथ्य का स्वाभाविक अनुसरण, फल अथवा परिणाम इत्यादि होता है।

१०.७.४ जणै की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित है।

(१०८) गोडै तणौ पाणी आयौ जणै भळै कैयौ—मान जा, रामकवरी मान जा।

(१०९) अबै तो राणी री हार हाथ जावै जणै वात विगै। इण काम सारू म्हनै जावण दो।

१०.८ प्रतीतिवाचक वाक्यो मे वक्ता जाणै चिह्नक के द्वारा किसी प्रस्तुत के विषय मे, अपनी प्रतीति के अनुसार कथन करता है। वक्ता की प्रस्तुत विषयक अभिव्यक्ति के मुख्यतः तीन रूप हैं—(क) प्रतीयमान रूप मे, (ख) भासमान रूप मे तथा (ग) स्वभावप्रवण रूप मे।

१०.८.१. प्रस्तुत की प्रतीयमान रूप मे अभिव्यक्ति के कतिपय उदाहरण नीचे दिये जा रहे है।

(११०) डावडी रै मूडा सूं आ वात सुणता ई बाई तो जाणै चित्रवंगी हुयगी।

(१११) हाथिया रै गळै झूलता वीरघट, ऊटा रै गोडा लूमती नेवरिया, घोड़ा रै पगां खणकता आवला री गमक सूं काकड री कण-कण जाणै सुजाग हुयग्यो।

(११२) कैफ रै फूला री हार गळा मे घालता ई राणी रै रूप मे जाणै सोळै चाद जुड़ग्या। उणरै जोवन मे जाणी सूरज री उजास घुळियो।

१०.८.२. भासमान रूप मे अभिव्यक्ति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(११३) ताळो खोल पेटी री ढकणो काई उघाड़ियो जाणै उण सारू सुरग रा पाट खुलग्या व्है।

(११४) जणछक डाढाळो दकियो। जाणै कोई उणरै चारू पगा नै मेंठा भान जरू कर दिया व्है।

(११५) राजा खुद घोड़ै चढ़ियो सामत आपरी निजरां राजकंवरां री निसडा-पणी देखियो तो जाणै सोर नै तिणग बताई।

१०.८.३ प्रस्तुत की स्व-भावप्रवण रूप में प्रतीति की अभिव्यक्ति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(११६) बामणी आरसी में आपरी मूंडो जोयो तो इण भांत डरी कै जाणै काळिंदर री फण जोयो।

(११७) इण में कदै ई नागा हुय जावै तो रावळै जाणै जित्तो म्हानै डंड दिरावजो भलाई।

१०.९. प्रथम कोटि के जको- संयोजित वाक्यों में मूल उपवाक्य में किसी विशिष्ट प्राणी, वस्तु अथवा विषय का कथन करके, जको-उपवाक्य में उक्त प्राणी, वस्तु अथवा विषय पर वक्ता द्वारा टिप्पणी की जाती है (११८-२०)।

(११८) पण राजकंवरी तो कंवर री कळाई साव अबूझ ही। सपनावाळी बात सुणनै कंवर माथै मोहित व्हैगी। मोटा बाजणिया लोग तो साची बात नै छिटकाय दै। अर अेक औ है जको सपनावाळी बात नै ई छोडणी नी चावै।

(११९) दुनिया में औ वगत सबसूं अमोलक है, जको थें हाथा करनै गमाय दियो।

(१२०) जंगळ रै पंछी-जिनावर अर कीड़ी-मकोड़ां सारू वो पैलो अर आखरी मिनख हो जको वारी राजा बणियो।

इस कोटि के वाक्यों में कथित प्राणी, वस्तु अथवा विषय के वैशिष्ट्य के संकेत करने वाले चिह्नक अथवा निर्धारक विशेषण सामान्यतः विद्यमान रहते हैं, जिनके आधार पर जको-उपवाक्य में तद्विषयक टिप्पणी की जाती है। उपरिलिखित तीनों उदाहरणों में अेक (११८), औ (११९), वो (१२०) आदि चिह्नक अवस्थित हुए हैं। नीचे कांई (१२१), अंडो (१२२), अंडो कांई (१२३), इतरो (१२४), किसो (१२५) आदि की चिह्नक रूप में अवस्थिति के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१२१) कुंभारी रा गधा अर छान मायला सोगरा बिना देखिया बताय दिया तो अबै इण देगची रै माय कांई चीज है जको बतावो।

(१२२) मतगरू तो अंडा गिरस्त में कढ़िया जको नाव लेवण री ई वेळा नी री।

(१२३) गाव री अंडो कांई सत निकळग्यो जको बऊ नैं भारी पगां नाव रै वारै जावण दा।

(१२४) पेट पापी व्है। हूं तो थानै खासूं। इतरी छूट दूं जकी वानी है कै मरिरा पैली येकर थारै इस्टदेव री जाप कर

(१२५) म्हे किसो डाकी हूं जको फेर रोटिया पोवो। आज री टंक तो ग्रै तेरै सोगरा घणा। ग्रवै तकलीफ करण री की जरूरत कोनी।

१०.६.१. द्वितीय कोटि के जको-संयोजित वाक्यों में, जको-उपवाक्य में किसी प्राणी, वस्तु अथवा विषय का इस प्रकार उल्लेख किया जाता है कि पूर्ववर्ती और अनुवर्ती उपवाक्यों में विविध सम्बन्धों को लक्ष्य किया जा सकता है। नीचे इन सम्बन्धों का स्पष्टोल्लेख करते हुए उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(क) हेतुहेतुमद् भाव सम्बन्ध (१२६)।

(१२६) जको संत ग्रमावस री रात चाद उगाय सकै, चालती नदिया नै डाब लेवै, उण वास्तै तो नवलखा हार री पती लगावणी साव सैल वात है।

(ख) विरोधात्मकता भाव सम्बन्ध (१२७)

(१२७) पण दर ग्रसल ग्रापरै सोचण में जकी भलाई ग्रर मगळ री वात है, वा म्हारै सोचण में दुःख ग्रर कळेस री बात है।

(ग) अप्रत्याशित भाव सम्बन्ध (१२८)

(१२८) जका दिनां टाबरपणै म्हे ढूला-ढूली रा नित व्याव रचायनै वारा घणा घणा कोड करतो, वां ईं दिना ग्रेक दिन म्हारो ई ग्रणचीत्यो व्याव हुयग्यो।

(घ) सशर्तकथन सम्बन्ध (१२९)

(१२९) किणी सूं जको काम बण नी ग्रावैला फगत वो काम ई म्हे करूला।

(ङ) कार्य-परिणाम सम्बन्ध (१३०)

(१३०) म्हे तो ग्रेक नाकुछ ग्रादमी हूं। लाठी है तो ग्रा भगती है। जको ई भगती करैला वो रामजी री पद पा सकैला।

(च) शर्त-स्वीकृति कथन (१३१)

(१३१) थूं इणरी मनजाणी कीमत माग। जकीई मागैला वा ई देवूंला।

(छ) कार्य-फलाफल निर्देश कथन (१३२)

(१३२) काळिदर री बिस भूलनै जको उणरी मिण री लोभ करै, उणनै मरणो ई पड़ै।

(झ) घटना-अतिरिक्त प्रभाव कथन (१३३, १३४)

(१३३) भाटिया री ग्रेक नाकुछ छोकरी सगळो मूरापणो झाड़ न्हाकियो, माजनो गमियो जको इदकाई में।

(१३४) डोकरी भूखा ई मरै नै बादरी रो डर जको न्यारो ई। मूखनै काटो हुयगी।

१०.९.२. तृतीय कोटि के वाक्यों मे जकौ ई-उपवाक्य द्वारा किसी प्राणी, वस्तु अथवा विषय के वैशिष्ट्य लक्षण का निर्देश करके, अनुवर्ती उपवाक्य मे पारिभाषिक कथन की पूर्ति की जाती है।

(१३५) बाकी तौ सगळा अफडा है। भगती करती वगत जकौ ई आपरी सुध-बुध विसर जावै, म्हैं उणनैं साची भगती कैवूं, अर यूं दुनिया मे अफडा री किसी कमी है।

(१३६) जकौ ई मारग सामी आयौ, वा तौ नाक री सोय भरणाटै दौड़ती ई गी।

(१३७) औ जकौ ई काम करै इणनैं मरजी सूं करण दौ। इणनैं थें कदेई ओड़ौ मत दिया करौ।

१०.९.३ चतुर्थ कोटि मे उन वाक्यों को परिगणित किया जा सकता है जिनमे पूर्ववर्ती जकौ-उपवाक्य का नामिकीकरण करके निर्मित पदबन्ध का उत्तर उपवाक्य मे उपयुक्त सज्ञा-स्थानीय अन्तर्निवेश कर दिया जाता है। यथा (१३८) में "जकौ चोखी पढाई करी" पूर्व-उपवाक्य

(१३८) जकौ चोखी पढ़ाई करी, वो पास हुयौ

का नामिकीकृत रूप "चोखी पढ़ाई करी जकौ" की वाक्य सख्या (१३८) के उत्तर-उपवाक्य मे "वो" के स्थान पर अन्तनिर्वेश करके निम्न वाक्य निर्मित होता है (१३९)।

(१३९) चोखी पढ़ाई करी जकौ पास हुयौ।

वाक्य संख्या (१३८) मे एक सामान्य तथ्य का कथन किया गया है, किन्तु उसका रूपान्तरित पर्याय वाक्य (१३९) वक्ता के अभिप्राय की अभिव्यजना करने वाला और व्यक्ति विशेष के प्रति कथित वाक्य है। वाक्य संख्या (१३९) के सन्दर्भानुसार विविध अभिव्यजक अर्थ हो सकते है।

इस कोटि के वाक्यों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(१४०) उणरी सास घर-घर फिरतैं कै यौ—इत्ता दिन कानां सुणी जकी बातां साप्रत साची हुयगी।

(१४१) हाथ जोड़नैं बोलिया—हुकम, आपरै दाय पड़ै जकौ घोड़ौ टाळ लिरावौ। घोड़ा रा गुण आप सूं काई अछाना है।

(१४२) राजा अर कवर री जोस तौ दबतां सारू ई हुया करै। दबै अर गिरणावै जकै नै वै मारिया विना को छोडै नी।

(१४३) म्हारी अरज सुणिया पछै, अदाता मरजी आवै जकौ म्हानैं डड दिराडै।

(१४४) कसूर करियौ जकै रै पगा माथा निवाय माफी मागी। औ कठै री न्याव। म्है की ऊधौ काम नी करियौ।

१०.६.४. जकौ-संयोजित वाक्यों में जकौ के अन्य विविध प्रकार्यों का निर्देश करते हुए नीचे उनके उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(क) जकौ की कै स्थानीय अवस्थिति (१४५, १४६)

(१४५) राजा जी रै काना में राम जाणै काईं भुरकी न्हाखी जकौ हाथौ हाथ जवत हुयोड़ा गाँव पाछा वाल करवाय लिया।

(१४६) ग्रेकर एक कागलै री भाग जागी जकौ माखण मीसरी लागोड़ी ग्रेक रोटी हाथ ग्राई।

(ख) जकौ की 'सो' के अर्थ में अवस्थिति (१४७-५०)

(१४७) डेडरिया री वात सुणनै हाथी हसण लागौ जकौ व्हा ई नी करै।

(१४८) अदाता, ग्रापा रै गाव रा मोटा भाग जकौ अँड़ा पावणा रा दरसण तौ हुया।

(१४९) ग्रवै म्हैं काई करू ग्रर कठे जावू। रोवण मार्थं जोर जकौ बैठी ग्रापरै करमा नै रोवू।

(१५०) हार तौ गियौ जकौ गियौ ई, फेर की सवाय में हुवौ।

(ग) जकौ की 'तो' के ग्रर्थ में अवस्थिति (१५१)

(१५१) लड़ाई में मरता तौ मिनख री मरणौ हुतौ। ग्रवै मरीला जकौ वा गिडक री मौत व्हैला।

(घ) जकौ की "ग्रत:" ग्रथवा "इसलिए" के ग्रर्थ में ग्रवस्थिति (१५२, १५३)

(१५२) हसती-हंसती ई बोली—राजा म्हे तौ जाणती कै थू इत्तौ मोटौ राज संभाळै जकौ थारै मैं की न की तौ अकल व्हैला इज।

(१५३) दोनू राजकवर कैयौ—रमण-खेलण रा दिन है, जकौ घूड़ में रमा। म्हारी मसा तौ भूडी है कोनी।

(ङ) जकौ की "पर", "जबकि" के ग्रर्थ मे ग्रवस्थिति (१५४)

(१५४) छान रै माय ऊभा रा गाभा आला व्है जकौ थे तौ मारग चालता आया।

(च) जकौ की "जोकि" के ग्रर्थ मे अवस्थिति (१५५-५७)

(१५५) वेटी हौळैसी'क पडूत्तर दियौ—आ कोई नवादी बात तौ कोनी जकौ पूछण री जरूरत पड़ी।

(१५६) इण आस्रम में म्हैं ग्रणगिण जीव-जिनावरा नै मारिया-जकौ म्हैं ग्राप सगला नै विगतवार वताय चुकियौ हू।

(१५७) बोलिया—नी ग्रदाता, म्हारी ग्रकल माग थोड़ी ई खायोड़ी जकौ म्है ग्रैड़ा भूंडा गचळका काढू।

१०.६.५. किन्ही परिसरों में जकौ के स्थान पर जिण की अवस्थिति भी होती है (१५८-६३)।

(१५८) पण हे अंतरजामी, थूं म्हारी इत्ती करड़ी परख क्यूं ली। जिणनैं धुरकार मेड़ी सूं बारै काढियौ, उणनैं ई हाव भाव सूं पाछौ रिझांणो है।

(१५६) जिण दिन इण धरती सूं राजपूतां री वीरता छूट जावैला उण दिन आ दुनियां ई छूट जावैला।

(१६०) गवाड़ी आस करनैं आयौ जिणनैं हाथ सूं ई उत्तर दियौ, मूंडै सूं नी।

(१६१) बेटी ! जिण भांत थूं अणचीती कवराणी बणी, उणी भांत अेक दिन म्हे ई अणचीती बीनणी बणी।

(१६२) जिण तरै थूं उठै पूगौ, वा सगळी बात माडनैं वताजे।

(१६३) चोरी करनैं धनमाल जिणकिणी नैं दियौ है, उणरौ म्हनैं ठा पड़ियां रैसी।

१०.१०. रीतिनिर्धारक ज्यूं-त्यूं संयोजित वाक्यों को उनमें अवस्थित ज्यूं, त्यूं आदि संयोजकों के आधार पर विविध कोटियों में विभाजित किया जा सकता है। नीचे इन वाक्यों का सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

१०.१०.१ प्रथम कोटि में उन वाक्यों को परिगणित किया जा सकता है जिनमें पूर्ववर्ती और अनुवर्ती दोनों उपवाक्यों मे ज्यूं की आवृत्ति होती है।

(१६४) कंवर थोड़ी सी सांनी कर देता तौ रैयत री औ समन्दर सगळा राज नै मिट जावतौ। राजा राणी री की जोर नी चालतौ। अेक पलक मे ज्यूं राजकवर चावता ज्यूं होवणौ पड़तौ। खुद भगवान ई उण होवणा नै टाळ नी सकतौ।

(१६५) सेनापति हाथ जोड़नैं बोलियौ—अदाता, आप धणी हौ, ज्यूं इछा व्है ज्यूं कर सकौ।

(१६६) राजा जी देखियौ कै साल भर पछै ज्यूं भरै पड़ैला ज्यूं सलट लेवूं ला, आज क्यूं भड़ावूं।

उपरिलिखित वाक्यों में प्रथम ज्यूं का लोप करके इनके निम्नलिखित वैकल्पिक रूप भी हो सकते है।

(१६४क) ... अेक पलक मे राजकंवर चावता ज्यूं होवणौ पड़तौ।....

(१६५क) ... अदाता, आप धणी हौ, आपरी इछा व्है ज्यूं कर सकौ।

(१६६क) राजा जी देखियौ कै साल भर पछै भरै पड़ैला ज्यूं ई सलट लेवूं ला।....

किन्तु निम्नलिखित वाक्य का उपरोक्त प्रकार का वैकल्पिक रूप व्याकरणिक दृष्टि से सम्भव नही है।

(१६७) राम ज्यूं मामी बोलतौ ग्यौ ज्यूं उणरै जीसा नैं घणी रीस आवती री।

कारण-कार्य वाक्यों में दोनों उपवाक्यों में ज्यूं की अवस्थिति अनिवार्य है, जैसा कि वाक्य सख्या (१६७) से स्पष्ट है। इस प्रकार के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१६८) रामूड़ो आज दिन ज्यूं पढाई करै है ज्यूं इज करतो रियो तो इण नै कोई फेल नी कर सकै।

१०.१० २. द्वितीय कोटि के वाक्यों में प्रथम उपवाक्य में ज्यूं तथा द्वितीय उपवाक्य में त्यूं की अवस्थिति होती है।

(१६९) ज्यूं माया वधती गी, त्यूं उणरो लोभ वधतो गियो। हीयै री दया-माया खूटगी।

(१७०) असमान ओमी ज्यूं आमू देवै त्यूं बत्तो राजी व्है। रोवती लुगाया उणनै रूपाळी इज घणी लागै।

(१७१) सेठा री वेटी कह्यो—फगत अठै ई काई, केई वाता में थारो वस नी पुगै, पण थानै इणरो वेरो कोनी। आपरी करामातां री आपनै अगूंतो वैम है। तीस दिना ताईं भळै उडीक रो आणंद लिरावो। पछै ज्यूं रावळी इछा व्हैला त्यूं व्है जावैला।

उपरिलिखित वाक्य मे प्रथम उपवाक्य मे ज्यूं का लोप तथा द्वितीय उपवाक्य में त्यूं के स्थान पर ज्यूं का आदेश करने से वाक्यार्थ मे अर्थ भेद हो जाता है। प्रथम वाक्य का अर्थ है "पीछे जैसे आपकी इच्छा होगी (अर्थात् जिस इच्छा का वक्ता को ज्ञान है) वैसा हो जावेगा।" इस वाक्य के परिवर्तित रूप (१७२) का अर्थ है "पीछे जैसी आपकी इच्छा होगी।

(१७२) ...पछै रावळी इछा व्हैला ज्यूं हुय जावैला।

(अर्थात् जैसा भी आप चाहेंगे) वैसा हो जावेगा।"

१०.१० ३. तृतीय कोटि के वाक्यों में प्रथम उपवाक्य में ज्यूं तथा द्वितीय उपवाक्य मे उण भांत, वो इत्यादि की अवस्थिति होती है (१७३, १७४)।

(१७३) प्रजा रै लारै ई तो राजा री सोभा है। ज्यूं पांणी विना सरवर अडोळो लागै, उण भात विना प्रजा रै राजा अडोळो लागै...।

(१७४) ज्यूं कुम्हारी बतायो वो रो वो ठरको निजर आयो।

१० १०.४. चतुर्थ कोटि के वाक्यों मे प्रथम उपवाक्य मे ज्यूं-ज्यूं तथा द्वितीय उपवाक्य मे त्यूं-त्यूं की अवस्थिति होती है।

(१७५) ज्यूं-ज्यूं लोग डर बतायो अर वरजियो त्यूं-त्यूं उणरै मन में घणी-घणी हुस वधी।

(१७६) ठकराणी धणी री रग पिछाण ली। वा ज्यूं-ज्यूं कौल तोड़ण री बाद करती ठाकर त्यूं-त्यूं कौल रै जाळ में बत्ता फदीजता गिया।

१०.१०.५. पंचम कोटि के वाक्यों में दोनों उपवाक्यों का मात्र ज्यूं-ज्यूं द्वारा संयोजन होता है।

(१७७) सगळा गांववाला कवराणी री घणी-घणी मान राखण सारू खपता ज्यूं-ज्यूं उण री घणी भरण हूवती।

१०.१०.६. षष्ठ कोटि के वाक्यों मे दोनों उपवाक्यों का ज्यूं ई द्वारा संयोजन होता है।

(१७८) वो तो चुपचाप आयौ ज्यूं ई पाछौ आपरै मुकाम पोंच ग्यौ।

(१७९) पण म्हारी काई दोस। माईता कैयौ ज्यूं ई करियौ।

१० १०.७. सप्तम कोटि मे प्रथम उपवाक्य मे ज्यूं ई की और द्वितीय उपवाक्य मे तौ, कै इत्यादि की अवस्थिति होती है।

(१८०) वो खुसी मे उडाण भरतौ ज्यूं ई आपरै नीबड़े माथै बैठियौ तौ उणनै डाळै रै नीचे ऊभी जेक लोकी निगै आई।

(१८१) वो घरै जायनै ज्यूं ई रोटी खावण नै बैठी कै बारै सूं पुलिस वाळै उणनै हेलौ पाड़ियौ।

किन्ही स्थितियों द्वितीय उपवाक्य मे किसी सयोजक की अवस्थिति नही होती।

(१८२) वो ज्यूं ई अठै पूगै, उणनै म्हारै खनै मेल दीजे।

(१८३) नरसा ज्यूं ई रिजल्ट देखियौ, सपैलड़ा म्हारै खनै इज आया।

१०.१०.८. इस कोटि के वाक्यों मे पूर्ववर्ती उपवाक्य का उत्तरवर्ती उपवाक्य से संयोजन होता है तथा दोनों उपवाक्यों के वाक्यों की पारस्परिक समानता का निर्देश।

(१८४) कोई कंवता कै म्हैं सत नै धरती, माथै चालै ज्यूं पाणी माथै चालतां देखिया।

(१८५) पेट में हील री उठाव हुयो सौ दो घड़ी में कबूड़ी लुटै ज्यूं लोटनै प्राण छोड़ दिया।

(१८५) च्यारू कंवर उणरी आखिया में सूल खुवै ज्यूं खुवण लागा।

उपरिलिखित वाक्यों में ज्यूं से संयोजित दोनों क्रिया-व्यापारों की पारस्परिक समानता निम्न वाक्यों में अभिव्यक्त समानता से तुलनीय है।

(१८७) वो बगनी व्है ज्यूं उणरै उणियारै साम्ही टुग-टुग जोवण लागो।

(१८८) कवर टावर री छाई झाड़ी लेवतो व्हे ज्यूं बोलियौ—म्हारा करम नीज फूटे।

(१८९) थोड़ी ताळ तौ वा बैकुंठी व्हे ज्यूं बैठी री, पण हवा री अेक जोर सूं झोळौ मायौ जर वा जमी माथै गुडगी।

१० १०.९. निम्नलिखित वाक्यों मे ज्यूं-उपवाक्य की अवस्थिति संज्ञा + परसर्ग वत् है जिसका प्रकार्य है मुख्य उपवाक्य से क्रियाविशेषण के रूप में सगति।

(१९०) रैयत री सगळी खुसियां लोप हुयगी। लुगायां, टावर अर बूढा-ठाडा सुणियो जका री ई माथौ अर डील सुन्न हुयग्यौ, जाणै वारै माथाकर वांण बैग्यौ व्हे ज्यूं।

निम्नलिखित वाक्य में ज्यूं-उपवाक्य की अवस्थिति जकौ से मिलकर "ताकि" के अर्थ मे हुई है।

(१९१) सोनजी नैं अठै ला जकौ समझाऊं ज्यूं।

१० १० १०. निम्न वाक्यों में ज्यूं की अवस्थिति जकौ से तुलनीय है। इन वाक्यों में वक्ता ने ज्यूं का प्रयोग जैसा कुछ, वैसा कुछ के अर्थ में किया है।

(१९२) तीड़ै री सासू ई खासी-भली समझणी ही। वा हाजरिया नैं पावणा कैयौ ज्यू नी बतायौ।

(१९३) बोलिया—म्हनै आपरी आ बात ई मजूर है। बारै महीना पछै आप हुकम फरमावीला ज्यू करूला।

(१९४) इण घर मे थारी अजळ है, सीर-संस्कार है, थारी मरजी व्हे ज्यूं खा-पी। थनैं कुण ई ओड़ो देवणियो नी।

१०.११ सम्बन्ध वाचक परिमाण वाचक सर्वनाम जितरौ-जित्तौ गुणवाचक विशेषण, सज्ञा तथा क्रिया पूर्व परिसरों में अवस्थित होकर मान अथवा सख्येयता का बोधक होता है। संख्येयता बोध केवल सख्येय संज्ञाओं के साथ आसक्ति मे, और वह भी बहुवचन मे होता है। इस प्रकार के वाक्यों मे प्रथम उपवाक्य में जितरौ-जित्तौ द्वारा पदार्थ-परिमाण का उल्लेख होता है, तथा उत्तर वर्ती उत्तौ-उपवाक्य उक्त पदार्थ-परिमाण विषयक विविध कथन।

(१९५) लुगाया ज्त्तिी सैणी दीसै उत्ती सैणी व्हे कोनी।

(१९६) चीज तौ जित्ती दोरी हाथै लागै उत्तो ई उणरी कीमत व्हे।

(१९७) जित्ती नवी लुगाया लावै उत्ता ई माटा भरणा पड़ै। अबारू सेठां री बेटी जर वहुवा रैं परवाण आठ माटा भरै।

(१९८) राजा नै राणी री समझ अर उणरै गुणा माथै जित्तौ भरोसौ हो, राणी नै उत्तौ ई राजा री नासमझी अर उणरी मूढ़ता रौ भरोसौ हो।

(१९९) बेटी जित्ती रूपाळी ही उत्ती ई भोळी अर अबूझ ही।

इसी कोटि के कतिपय वाक्यों में उत्तौ के स्थान पर उत्तरवर्ती उपवाक्य में अन्य सर्वनामों की भी अवस्थिति होती है।

(२००) इण भगती री म्हे जित्तौ ई बखान करूं वो थोडौ है।

(२०१) अै तौ बगत-बगत री वाता है। राणी जित्ती रूपाळी ही उणसूं सवाय ओछी अर हीण सुभाव री ही।

१०.११.१. एक अन्य कोटि के वाक्यों में जित्तौ-उपवाक्य के नामिकीकृत रूप की उत्तरवर्ती उपवाक्य के पूर्व अवस्थिति होती है। इस कोटि के वाक्यों में जित्तौ-उपवाक्य सामान्यतया इच्छार्थक परिमाणबोधक होते हैं।

(२०२) भावै जित्तौ खावै है अर बाकी री जमी माथै ऊंधावै है।

(२०३) आखी उमर झूठ बोलिया तौ जाणै जित्ता फोड़ा पड़िया।

(२०४) सोच करिया सोच मिटतौ व्है तौ दोनू भेळा बैठ, चावा जित्तौ सोच करला।

(२०५) म्हारै सूं पूग आवैला जित्ती मदत करूंला। पछै थारै जचै ज्यूं करजे।

१०.११.२. जितरौ~जित्तौ के तिर्यक रूप से संयोजित वाक्यों में जित्तै आदि का अर्थ होता है "जब तक" अथवा "तब तक।"

(२०६) भेरू री पूजा करणियां मिळै जित्तै औ बिणज दांछट चालै।

(२०७) म्हे तौ निजरां नी देखूं जित्तै किणी रै कयै रौ पतियारौ नी करू।

(२०८) राव फौज में पूगी जित्तै सगळा सिपाई सस्तर हेटै न्हाक दिया।

(२०९) आपा री फौजा चढैला जित्तै तौ दुस्मी री फौजां नगर माथै पूरी कब्जौ कर लेवैला।

वाक्य संख्या (२०६-९) में द्वितीय उपवाक्य में वर्णित क्रिया-व्यापार की प्रथम उपवाक्य में कथित व्यापार से पूर्व ही होने की ध्वनि विद्यमान है।

इसी कोटि के वाक्यों में जित्तै के स्थान पर उसके आमेडित रूप जित्तै-जित्तै की अवस्थिति भी होती है। इन वाक्यों में पूर्वउपवाक्य के क्रिया-व्यापार की कालावधि में अथवा उसके समापन के पूर्व ही, अनुवर्ती उपवाक्य में वर्णित क्रिया-व्यापार के होने का उल्लेख है।

(२१०) बेटै रै अमल लागू ई हुयौ तौ अंडौ के सोळै बरस पूगा जित्तै-जित्तै वो साठ बरस रै बाप सूं ई सवायौ अमलदार हुयग्यौ।

(२११) दूजै दिन सूरज ऊगियौ जिसौ-जितै तौ उणरै उजास सूं ई पैली सारै नगर में गवर फैलगी कै राज रै खजानै में चोरी हुयगी।

उपरिलिखित वाक्यों में (२१०-११) पूर्ववर्ती उपवाक्य में वर्णित क्रिया-व्यापार की क्रमिक अभिवृद्धि अथवा वर्द्धमान तीव्रता की ध्वनि भी विद्यमान है।

१०.११.३ नीचे जितरै तौ तथा जितै ई की अवस्थिति के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे है।

(२१२) दीवाण जी अठीनै-उठीनै देखियौ जितरै तौ डोकरी री बेटौ झट उभौ हुय'र अरज कीनी— राजा रा बगसियोड़ा सिरोपाव मकल पैरै।

(२१३) मौत री अंधारौ कै जकौ कदाक वो औ इज है। पण थां अधारौ है जितै ई तौ जीवणौ है।

१०.११.४ नीचे इत्तौ तथा उत्तौ द्वारा संयोजित वाक्यों के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे है।

(२१४) समदर रौ पाणी चढ़ता-चढ़ता इत्तौ ऊंचौ चढ़ियौ कै वो मिंदर रै भवारै माय व्हळकीजण लागौ।

(२१५) ...राईको कैवण लागौ—म्है मात तालिया वजाऊं उत्तौ ताळ में चूकतौ गाडरा नै टोळ इण भेजड़ी रै ओळी-दोळी भेकठ भेळी करदै जकौ ई साचौ।

१०.१२. गुणवाचक सर्वनामो द्वारा संयोजित वाक्यो मे प्रथम कोटि मे ऐसे वाक्यो को परिगणित किया जा सकता है जिनमे पूर्ववर्ती उपवाक्य में जैड़ौ द्वारा गुण-कथन किया जाता है और उत्तरवर्ती वैड़ौ अथवा ऊड़ौ-उपवाक्य में उक्त गुण-कथन के विषय मे टिप्पणी।

(२१६) वेटी खिचाळै ई जोर सू खिलखिल हसी, जाणै कोयल हसी व्है। बोली— वा ! म्है तौ जैड़ी कवराणी ऊड़ी ई महाराणी। आप बधाई सारू फालतू ई फोड़ा भुगतिया।

(२१७) माईता नै सोरौ सास आयौ। 'राजी' रौ जैड़ौ नाव वैड़ा ई गुण दरसाया।

(२१८) भ्रतलोक मे जैड़ी सुणता ऊड़ौ ई इदरलोक रौ थाट हौ।

१०.१२.१. प्रथम उपवाक्य के नामिकीकृत रूप द्वारा निर्मित जैड़ौ-सयोजित वाक्यों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(२१९) फूलकवर कैयौ—माया तौ विस्वास नी करै जैड़ी इज है, पण थे सार्थ हौ तौ विस्वास करणौ इज पड़ै, अभरोसौ कीकर करू।

(२२०) फूल रै कवळास अर उणरै रंग नै ई मात करै जैड़ी उणरै डील री पसम ।

(२२१) बकरी तौ सदावत सू करै जैडी ई मीगणिया करी ।

(२२२) आध घड़ी मे आय खातण चावळ सभाळिया तौ हा जैड़ा अर अठी अरटियौ घड़ीजण आयौ ।

(२२३) राजा आपरै जीवण मे याळीं तिरायां तिरै जैड़ी अर तिल उछालियां हेटै नी पडै उड़ी भीड आज आपरी आखिया मू देखी ।

१० १२.२. प्रथम उपवाक्य मे अैड़ो की अवस्थिति और द्वितीय उपवाक्य में अन्य वाक्यविन्यासात्मक युक्तियों द्वारा निर्मित वाक्यों के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित है ।

(क) अैड़ो ...जाणै (२२४)

(२२४) ठाकर सा नै अैड़ो लखायौ जाणै उण रूप रा वखाण सुण खुदीखुद दारू ई नै नसौ चढग्यौ ।

(ख) अैडी ...कै (२२५)

(२२५) पण इण आणद रै विचाळै अेक अजोगती वात ग्रैडी वणी कै वां री जीवणौ हराम हुयग्यौ ।

अैड़ो की अवस्थिति के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(२२६) सुख अर न्याव रा नवा कायदा वणता । राजा व्है तौ ग्रैड़ो व्है । दीवाण व्है तो ग्रैडौ व्है ।

(२२७) इण वगत धणी नै वचावणौ ई सिरै हौ । जीव अर लाज दोनूं बच जावै अैड़ी जुगत वण जावै तो ठीक रैवै ।

१०.१२.३. जैड़ो–उपवाक्यों की कतिपय अन्य नामिकीकृत अवस्थितियों के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है ।

(२२८) देत राजी होय बोलियौ–हा, आ बात तौ म्हनै ई कबूल । मांनण जैड़ी वात व्है तौ क्यूं नी मानूं ।

(२२९) देख या में जाणै जैड़ी कर्ला । पण स्याळ तौ ई वारै को आयौ नीं ।

१०.१२.४. नीचे संवोई "जैसे ही, ज्यों ही" की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे है ।

(२३०) अेक दिन सजोग री वात अैड़ी वणी कै सवोई तौ वा अभ्यागत मीवड़ो बदूणी देय बोर भाड़ती ही कै सिकार जावतौ राजा गळाकर नीसरियौ ।

(२३१) संजोग री वाकौ अेडो पीयों के संवौई हथमार वाळ-गोपाळ नें खधेड़ै में सुवाग कोई चारेक खेतवा अळगो गियो व्हेला कै विणजारै सूं मिळण आवतै मुनीम रै कानां किणी वाळक रै रोवण री साद सुणीजियो ।

१०.१३. हेतुमद वाक्यों में सामान्यतया जे "यदि, अगर" उपवाक्य द्वारा किसी कारण अथवा कारणस्वरूप का कथन करके, अनुवर्ती तो-उपवाक्य में उक्त कारण अथवा कारण स्वरूप के परिणाम इत्यादि का कथन किया जाता है (२३२)।

(२३२) किणी रै माथै विना कसूर खीझ करणी अर रांगियां नें दुहाग देणी औ राजा रा खास गुण है। नीतर वो राजा ई काई। आपा में अर वा में पछै भेद ई काई। म्हानैं तौ आपरौ माथो ई मंवियोडौ दीसै । जे आप सूं चौथो पातो री रूप ई म्हारै पारवती हुवतो तौ सिंधां नै ई बस में कर लेतो। रूप री आ छिब देखनैं मिनख री आयी रूसणों करलैं तौ पछै सामी आप में ई है। जे आप वापता तौ कंवर जी ताड़ियां ई इण मेड़ी री ठायो को छोड़ता नी। पण आपरी रीस तौ रूप सूं ई चौगणी है।

उपरिलिखित उद्धरण में अर्थ की दृष्टि से दो प्रकार के हेतुमद् वाक्यों की अवस्थिति हुई है। प्रथम वाक्य में वक्ता ने "यदि आप से चौथा हिस्सा रूप भी मेरे पास होता" कारणस्वरूप गुण का उल्लेख करके, उक्त गुण के प्राक्कल्पित परिणाम अथवा फल का कथन किया है, अर्थात् "तो वह (किसी मनुष्य की तो बात ही क्या है) सिंहों को भी बस में कर लेती।" इसके विपरीत द्वितीय उपवाक्य में यथाघटित प्रत्यक्ष का तो उपवाक्य में उल्लेख वक्ता का अभिप्रेत है, अर्थात् "तो कंवर जी ताड़ना करने पर भी इस "मेड़ी" के स्थान का परित्याग नहीं करता" कथन द्वारा यह उल्लेख किया गया है "कि आपके द्वारा ताड़ना करने पर कंवर जी ने "मेड़ी" के स्थान का परित्याग किया। (जो कि यथाघटित प्रत्यक्ष है), किन्तु वस्तुतः उन्होंने इसलिए ऐसा किया है कि आप नहीं चाहती थीं कि वे यहाँ ठहरें इत्यादि। प्रथम वाक्य से सर्वथा विपरीत द्वितीय वाक्य में किसी प्राक्कल्पित अथवा यथाघटित प्रत्यक्ष को परिणाम स्वरूप मानकर, उक्त परिणाम स्वरूप के संभावित कारणस्वरूप का उल्लेख है।

जे-हेतुमद् वाक्यों के, जैसा कि ऊपर स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है, दो मुख्य प्रकार्य हैं। अर्थात् किसी कारण स्वरूप का जे-उपवाक्य द्वारा उल्लेख करके, तो उपवाक्य में उक्त कारणस्वरूप के परिणाम की परिकल्पना, तथा जे-उपवाक्य द्वारा किसी संभावित कारणस्वरूप का उल्लेख करके, उक्त कारणस्वरूप के प्राक्कल्पित अथवा यथाघटित प्रत्यक्ष के स्पष्टीकरण का प्रयत्न।

एक अन्य प्रकार के हेतुमद् वाक्य की अवस्थिति भी उपरिलिखित (२३२) सन्दर्भ में हुई है। (२३२क) इस वाक्य में हेतुमद् वाक्य

(२३२ क) रूप री आ छिब देखनैं मिनख री आयी रूसणो करलैं तो पछै सामी आप में ई है।

चिह्नक जे की अनवस्थिति है, तो भी यह वाक्य हेतुमद् वाक्य ही है। इस वाक्य में प्रथम उपवाक्य में एक सामान्य अथवा अनुभूत मान्यता को कारण स्वरूप का प्रतिस्थानीय मानकर, तो-उपवाक्य द्वारा उसकी अवश्यंभावी फलपरक प्रतिज्ञप्ति का उल्लेख किया गया है। इस वाक्य में जे की अनवस्थिति यह संकेत कर रही है कि प्रथम उपवाक्य में कथित सामान्य अथवा अनुभूत मान्यता वक्ता द्वारा परिकल्पित कारण न होकर एक वास्तविक सत्य है।

नीचे कारणस्वरूप-परिकल्पित परिणाम वाचक जे-हेतुमद् वाक्यों के कतिपय अन्य उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(२३३) जे थारै साम्ही सपनै में ई झूठ बोलू तो म्हनै अगलै जलम पाछौ औ ई जमारौ मिळजो।

(२३४) राजी री उजियारौ निरखती खुसी बोली—जे म्हारै फूला अर म्हारै मन मे सत हुयौ तो आपां री दुनियां में प्रलै ताई विछोव नी हुवैला।

(३४५) मावा रै पालिया जे मौत ढवती व्है तो आज दिन ताई कोई बेटौ मरतौ ई नी।

(२३६) जे फरगैट घोडै नैं इण झूलरै रै मायकर निकालू तो कैड़ो मजौ वणै। नामी खिलकौ रैवैला।

नीचे संभावित कारणस्वरूप-प्राक्कल्पित/प्रत्यक्ष घटित जे-हेतुमद् वाक्यों के कतिपय अन्य उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(२३७) जे आपरी वाता समझण री म्हा लोगों में खमता हुवती तो म्हे छोटा ई क्यूं रैवता।

(२३८) जे अैड़ी ठा हुवती तो म्हैं उठै ई क्यूं चूकतो। पण अबै काई व्है। हाथा करनै करम फोड़ लिया।

(२३६) अर आपरी थेह रै माय भूंडण धणी अर पेट रा जाया रै विचाळै आणंद में गरक हुयोड़ी बैठी ही। जे वानै ई आपरी दीठ रैछिणा रै पार दीखण लाग जातौ तो वै क्यूं इण भात फौज रै मिस काळ री नचीता वैठा वाट न्हाळता।

चिह्नक जे की अनवस्थिति वाले कतिपय हेतुमद् वाक्यों के उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(२४०) भगवान सूं कोई भूल व्है तो राजा सूं ई कोई भूल व्है।

(२४१) वांमणी बोली—आप वौपारी हो तो म्हैं ई अेक मां हूं।

(२४२) म्हे तो सगळा मरियै समान हा। मरियोड़ा ल्हास नैं किणी वातरौ अनुभव व्है तो म्हानै व्है।

(२४३) लुगाई री ठौर कोई मोटियार हूवतो तो म्हैं जीभ सूं नी बतळाय तीर सूं बतळावतो ।

(२४४) घरे आवता डावी अर दिसावर सिधावता सुगन चिड़ी जीमणी धर्के तो मन जांणिया आछा सुगन व्है ।

जे की अनवस्थिति वाले हेतुमद् वाक्यों मे द्वितीय उपवाक्य मे तो के स्थान पर तो ई (२४५), तो पछै (२४६), तो फेर (२४७) का भी आदेश होता है ।

(२४५) अवै थूं कैवै तो ई म्हैं इण जगळ मे नी ढबूं । मासी रै पात पछै इण जगळ में सास लेवणी अधरम ।

(२४६) राजा जी कैयो—वो काम तो आप नी करोला तो पछै कुण करैला ।

(२४७) मोटियार बोलियो—अेक मिनख नै मिनख रै दुख-दरद सूं लेणो देणो नी व्है तो फेर किणनै व्है ?

१० १४ स्थानवाचक सर्वनामों द्वारा संयोजित वाक्यों मे अवस्थित वाक्यविन्यासात्मक युक्तियों को सूचित करते हुए तत्सम्बन्धी उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(क) अठीनै....अठीनै (२४८) ।

(२४८) हिरण स्याळ नै कैयो—कैडो'क मोको सजियो, अठीनै म्हारो फसणो हुयो अठी नै म्हारै मित्तर रो आवणो हुयो ।

(ख) अठै तो...उठै (२४९) ।

(२४९) पछै वो हाथ सूं इसारो करतो बोलियो—छाट पड़ती अठै तो बंदो पड़तो उठै । ढील रै एक छाट ई नी लागण दी ।

(ग) अठीनै...अर उठीनै (२५०) ।

(२५०) अठीनै डोकरा-डोकरी अजसनै मोद सूं आपरै बेटा रै बारे मे बाता करता हा, अर उठीनै ठिकाणा मे रैवता उण री मानता दिना-दिन वधती गी ।

(घ) जठै...उठै (२५१) ।

(२५१) लक्खी बिणजारो जोस मे कैवण लागो—जठै जावणो चावो उठै छोड़ दूं ।

(ङ) जठालग... तठालग (२५२) ।

(२५२) जठालग इण दुनियां सूं मिनख रो बिणास नी व्है, तठालग धैंडा नगारा तो नित घुरैला ।

(च) जठै...उण ठोड़ (२५३) ।

(२५३) अेकली लुगाई नै जठै गिरस्तिया री बस्ती मे अेक रात रो भरोसो कोनी, उण ठोड़ इण पातर रै आसरै सोळै बरसा री मोलगत मिळै है ।

(घ) उठी...वठी (२५४)।

(२५४) वठी ओवरलियां पौला रै मिल रा धुंआ। उठी भिड़िया अठी सं आंपता।

१०.१४.१ स्थानवाचक सर्वनामों द्वारा संयोजित वाक्यों के प्रथम उपवाक्यों के नामिकीकृत रूपों के इन सर्वनामों की उपस्थिति के विविध उदाहरण नीचे संकलित किये जा रहे हैं।

(क) उठै ई (२५५), उठै ताईं (२५६), उठी नै ई (२५७)।

(२५५) भला, नेक मर सालस मिनखां सारू सगळी दुनिया घर रै उनमान है। थारो तो जावो उठै ई घर है, पछै कैडो देस-निकाळो।

(२५६) म्हारै राज री स्याही पुगै उठै ताईं मैं थाथी नी पीन सकै !

(२५७) आंधी उळियां पो बडेरां री ठावो छोड़ पग सेधा उठीनै ई बहीर हुयग्यो।

(ख) जठै (२५८), जठै ई (२५९), जठीनै ई (२६०), जठै तक (२६१), जठै ताईं (२६२), जठालग (२६३)।

(२५८) म्हारै कमरै में थारो मरजी हुवै जठै ईंडा दे। म्हैं थारो साळ-संभाळ करूला।

(२५९) उणनै देखतां ई लुगायां रा पग तो हा जठै ई रुपग्या।

(२६०) वो तो चितबंगो हुयग्यो। पछै पड़ी जठीनै ई मापरो जीव रोयने सोकड़ मनाई।

(२६१) वो आवै जठै तक थूं थाप'र थारो मोडियो पुरो करलै।

(२६२) किसनो जो बोलिया—परणीजै जठै ताईं बोलै कोनी क ? बोयो—कोनी बोलूं।

(२६३) पण थूं सोरै सास इण दुस्ट रै हाथ आवणियो म्है ई कोनी। जठालग म्हारै जीव में जीव है इण देह रै आणव री खातर म्है पुरो पीठ बजावूला।

१०.१५ प्रतियौगिक वाक्यों को विवरण की सुविधा के लिये निम्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है: (क) विरोध-वाचक वाक्य, (ख) प्रतिषेधात्मक वाक्य, (ग) अपवादात्मक वाक्य, (घ) इतर प्रतियौगिक समुच्चयात्मक वाक्य, तथा (ङ) अवच्छेदक वाक्य। नीचे इन पांचों वर्गों के वाक्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जायगा।

१०.१५.१. विरोधवाचक वाक्यों में प्रथम उपवाक्य में किसी धारणा, तथ्य आदि का उल्लेख करके, द्वितीय उपवाक्य में उक्त धारणा, तथ्य आदि का खण्डन किया जाता है। दोनों उपवाक्यों को विरोधवाचक समुच्चयबोधक निपात पण द्वारा योजित किया जाता है

(२६४) म्हनैं तौ परणीजती जकी ई राणी हूवती, पण थारै सूं हथळेवो जोड़तौ जको कंवर तौ भवै ई नी हूवतौ ।

(२६५) लजालू नागकिन्या निजर नीची करनैं कैयौ—आप फरमावौ तौ म्हे मानूं ई हूं, पण आप तौ मन परवाण धोळी-धोळी सै दूध ई जाणौ ।

(२६६) थूं नाकुछ चिड़ी म्हारी सत्यानास करै। म्हारी सत्यानास तौ काई ठा कद व्हैला पण थारौ तौ इणी सायत कर दूं ।

(२६७) रंग में तौ आपरी मा रै उणियारै ई है पण मूरत बेमाता दूजी ई दीनी है ।

(२६८) वो सगळी दुनिया नै देखै पण उणनैं कोई नी देखै । फगत बादळ मैल रै मांय उणरौ रूप परगट व्है ।

(२६९) मां-बापां री हूर तौ भ्रवस आवती, पण म्हारै दुख री खास कारण औ इज हो । म्हे डरती आपनैं कैयौ कोनी ।

विरोधवाचक निपात पण के अतिरिक्त विरोधवाचक समुच्चय बोधक वाक्यों में, पूर्ववर्ती वाक्यों में भी कई तत्त्वों की अवस्थिति होती है, जिनसे अनुवर्ती वाक्य के खण्डणात्मक उपवाक्य होने का संकेत होता है ।

(२७०) लक्ष्मी थावस देवती लाड सूं बोली—थारै भलाई समझ में नी बैठै, पण म्हारै तौ थनै देखतां ई समझ में बैठगी कै म्हे औ धंधौ थनै मरिया ई नी करावूला ।

(२७१) माया बिचै ई वत्तौ माया री ठागौ कीकर व्हैगौ । उणनैं हरावणौ अंगे ई मोटी बात नी, पण आज तौ आ छोटी बात ई सबसूं लांठी होय मोघौ गुमान करै ।

(२७२) राजा जी खुद तौ सबूरी री सीख देय उठा सूं व्हीर हुयौ, पण वारा सूं एक छिणरी सबूरी नी हुई ।

उपरिलिखित वाक्यों में भलाई, अंगे, तौ इत्यादि ऐसे सकेतक हैं जिनसे अनुवर्ती वाक्य के विरोध वाचक उपवाक्य होने का स्पष्ट संकेत हो रहा है ।

अनेक परिसरों में विरोधवाचक निपात पण की अपस्थिति नहीं होती (२७३-७६) ।

(२७३) हांडा भलाई सोनै री ई व्हो, ढकणौ उघाडिया पछै की आणद नी । ढकणै री तौ आणंद ई दूजौ ।

(२७४) राणी-मा म्हनैं थे भूंडौ कौ चाहे भळी, म्हारै तौ लुगाई विना अेक पलक ई नी सरै ।

(२७५) थें त्यार व्हौ चाहै नी व्हौ, मौत थानैं कठैई बगसैला नी ।

(२७६) काल आप घर गोढिया रजपूत री बेटी हा, आज आप बीकाणै रै टणकैल राजकंवर री कवराणी हौ ।

किन्हीं परिसरों में पण के स्थान पर अर का भी आदेश होता है (२७७)।

(२७७) म्हे थनै हमार इज कैयो हो कै बखडी में आयोडै दुसमी नै भवैं ई नी छोड़णो, अर थू म्हनै छोड़ दी।

१०.१५.२. प्रतिषेधात्मक प्रतियोगिक वाक्यों में प्रथम उपवाक्य में किसी तथ्य आदि की एकान्तिकता आदि का प्रतिषेध करके, उसकी विस्तृति अथवा अन्य गुणों का भी उल्लेख किया जाता है (२७८, २७६)।

(२७८) आ ठंडाई नी ता ताई है। मान नी अपमान है। आरै साल रै छीदे-पतले काम नै यूड में रळावण वाळो गंदो पाणी है।

(२७६) कितरो ई निकामो है, पण है तो म्हारै घर रो धणी। औ नी मानै तो नी,ई सई, म्हनै तो सात लटका कर'र इण आगे निमणो पड़ै।

१०.१५.३. अपवादवादात्मक प्रतियोगिक वाक्यों में पूर्ववर्ती उपवाक्य में किसी सामान्य तथ्य का उल्लेख होता है और उत्तरवर्ती उपवाक्य में उसके अपवाद का प्रतियोगी रूप में कथन किया जाता है। इस कोटि के कतिपय वाक्यों के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं जिनमें अवस्थित संयोजकों को रेखांकित किया गया है।

(२८०) सलिया उणसू अणूंती राजी ही। राजकवरी घणी ई समझाइस करी तोई वे पयाळ-लोक सू बारै आवण वास्तै राजी नीं हुई।

(२८१) म्हारी तो अंगै हुई चूक नी हुई तो ई आप म्हारै माथै चिड़ो हो।

(२८२) होठा आयोड़ी मुळक माथै वा आडाणी खामदेवसी बोली : थैं वाता में तो वेमाता नै ई नी धारो, पछै म्हारी काई जिनात।

(२८३) उण जाणियो कै अबै मरणा में तो घाटो नी, पछै डरणै सू काई सार निकळै।

(२८४) बामणी गरीब अर फाटोड़ै वेस मे ही, तोई सतीपणा री तेज उणरै रू रू सू छिटकतो हो।

१०.१५.४. इतर प्रतियोगिक वाक्यों की कोटि मे ऐसे वाक्यों को परिगणित किया जा सकता जिनके दोनों उपवाक्यों का नींतर आदि समुच्चयबोधको द्वारा संयोजन होता है।

(२८५) मन री मानणो ई तो सबसू लाठी बात है। दुनिया मानै तो भगवान है, नीतर फगत भाटो है।

(२८६) लुगाई रै आयाँ गिरस्ती रै खूटै सू बधग्यो तो उणरो मगज ठाणै आय जावैला। नींतर आ भमती थनै फोड़ा घालैला।

(२८७) आज तो राजा जी म्हारै माथै अणूता राजी है, इणसूं खास दीवाण बणावणी चावै, पण जिण दिन खीझ गया तो वे सूळी चढ़ावता ई जेज

नी करैला। हारवाळी बात तौ गुनै ई पार पड़गी, नींतर सारा दीवांन जो नै तौ आज ई सूळी चढ़णो पड़तौ।

(२८८) पकौ घर अर जोड़ी री बर दाय आयग्यौ, नींजनै छोरा गांव में भळै घणा ई है। पण आपड़ा नै कुण पूछै ?

(२८९) आपड़ौ फोगसी न्याय कर ईं तौ भलाई, नीं तौ राजा मौरां देवैला नी।

(२९०) बावळा, राजा नै किणी दूजी चीज सूं कदै ई नसौ नी आवै। राजमद सूं सगळा ई नसा माड़ा है। हा अलबत, इण प्रांत रौ नगौ राजमद सूं सवायौ है।

१०.१५.५. व्यवच्छेदक प्रतियौगिक वाक्यों के विविध प्रकार भाषा में प्रचलित हैं। उनमें अवस्थित वाक्यविन्यासात्मक युक्तियों सहित उनके उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(क) जितै.... उत्तै ई (२९१)

(२९१) राजा री डावड़िया जितै कोडसूं बांमणी नै रांणी बणाई उत्तै ई कोडसूं चोर आपरै हाथां उणरी रांणी भेख उतारियौ।

(ख) (अठी).... अर उठी (२९२)

(२९२) राजकंवर बरसा लग सुख सूं राज करियौ अर उठी मसांण में बरसां लग वो आक-धतूरो उणी भात उभौ रैयौ। लोग मांय थूकता, खोळा-खाळी कूदता, बळबळता पाणी सूं सींचता अर भाटा बगावता।

११. आधुनिक राजस्थानी शब्द रचना

११.१ आ. राजस्थानी में शब्द-रचना के अन्तर्गत तीन विषयों का उल्लेख करना आवश्यक है— (क) प्रतिध्वन्यात्मक शब्द रचना, (ख) अनुकरणात्मक शब्द रचना और, (ग) सामान्य शब्द साधन।

११.१.१. प्रतिध्वन्यात्मक शब्द रचना में किसी सामान्य शब्द के रूप में किसी व्यंजन अथवा स्वर आदि में परिवर्तन करके, नव-निर्मित प्रतिध्वन्यात्मक रूप की मूल शब्द के साथ आसक्ति कर दी जाती है। यथा, निम्न वाक्यों में भगवान (१), वरदान (२), हिबोलौ (३), टोटकौ (४), दरसन (५) आदि शब्दों के क्रमशः आदि व्यंजनों भ, व, ह, ट, तथा द, के स्थान पर फ का आदेश तथा इस प्रकार से निर्मित प्रतिध्वन्यात्मक रूपों फगवान, फरदान, फिबोलौ, फोटकौ तथा फरसन आदि की अपने मूल शब्दों के साथ अवस्थिति हुई है।

(१) वो राईकौ तौ पगा हालणौ सीखियौ तद सू अेवड़ रै लारै ढरर करतौ भटकतौ रियौ, सो भगवान—फगवान रै नफड़ा में की समझतौ-बूझतौ ई नी हो।

(२) आ वरदानां-फरदाना नै म्है नी समझूं।

(३) जटा माथै हाथ फैरतै जोगी कैयौ—हिबोलां-फिबोलां री तौ म्हनै ठा कोनी।

(४) असमान जोगी रै बादळ-मेल धरती रा टोटका-फोटका नी चालै।

(५) दरसन-फरसन ई करावणा व्है तौ वेगा कराजो, म्हनै घणी वेला कोनी।

प्रतिध्वन्यात्मक शब्द-रचना की भाषा में तीन विधियां हैं—(क) शब्द के आदि व्यंजन के स्थान पर स्, व्, फ् अथवा ह् का आदेश, (ख) आदि स्वर के साथ व्यंजन का योग, तथा (ग) आदि अक्षर में स्वर परिवर्तन। नीचे इन तीनों विधियों का सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

(क) आदि व्यंजन के स्थान पर स्, व्, फ्, ह् का आदेश।

मूल	प्रतिध्वन्यात्मक प्रतिरूप सहित युग्म			
शब्द	स्-आदेश	व्-आदेश	फ्-आदेश	ह्-आदेश
काग	काग-साग	काग-वाग	काग-फाग	
खेजड़ी	खेजड़ी-सेजड़ी	खेजड़ी-वेजड़ी	खेजड़ी-फेजड़ी	
गाड़ी	गाड़ी-साड़ी	गाड़ी-वाड़ी		
घोड़ा	घोड़ा-सोड़ा	घोड़ा-वोड़ा	घोड़ा-फोड़ा	
चारो	चारो-सारो	चारो-वारो		
छाक	छाक-साक	छाक-वाक	छाक-फाक	
जाच	जाच-साच	जाच-वाच	जाच फाच	
झाग	झाग-साग	झाग-वाग	झाग-फाग	
टिलोड़ी	टिलोड़ी-सिलोड़ी	टिलोड़ी-विलोड़ी	टिलोड़ी-फिलोड़ी	
डाक	डाक-साक	डाक-वाक	डाक-फाक	
ताच	ताच-साच	ताच-वाच	ताच-फाच	
पाळा	पाळा-साळा	पाळा-वाळा	पाळा-फाळा	
लड़ाई	लड़ाई-सडाई	लड़ाई-वड़ाई	लड़ाई-फड़ाई	
मा		मा-वा		मा-हा
गास		गास-वास		गास-हास
चारण	चारण-सारण	चारण-वारण		
गाय	गाय-साय	गाय-वाय		
भाई	भाई-साई	भाई-वाई		
खोद	खोद-सोद	खोद-वोद		

(ख) आदि स्वर के साथ व्यंजन का योग

मूल	प्रतिध्वन्यात्मक रूप सहित युग्म		
शब्द	स् आदेश	व्-आदेश	फ्-आदेश
अकड़णो		अकड़णो-वकड़णो	अकड़णो-फकड़णो
आणो		आणो-वाणो	आणो-फाणो
इमरत	इमरत-सिमरत		इमरत-फिमरत
ईतर	ईतर-सीतर	ईतर-वीतर	ईतर-फीतर
उजाड़	उजाड़-सुजाड	उजाड़-वुजाड़	उजाड़-फुजाड़
अेंठ		अेंठ-वेंठ	अेंठ-फेंठ
ओछो	ओछो-सोछो	ओछो-वोछो	ओछो-फोछो
ऊंट	ऊंट-सूंट	ऊंट-वूंट	ऊंट-फूंट

(ग) आदि अक्षर में स्वर-परिवर्तन

आ के स्थान पर ऊ का आदेश

चाक	चाक-चूक
डाक	डाक-डूक
काज	काज-कूज
काकड़	काकड़-कूंकड़

ई के स्थान पर ऊ का आदेश

कीमत	कीमत-कूमत
ईतर	ईतर-ऊतर

अं के स्थान पर ऊ का आदेश

अंठ	अंठ-ऊठ

ओ के स्थान पर ऊ का आदेश

ओछो	ओछो-ऊछो
कोजो	कोजो-कूजो

औ के स्थान पर ऊ का आदेश

औसद	औसद-ऊसद
कौल	कौल-कूल

उ के स्थान पर आ का आदेश

कुबेर	कुबेर-काबेर

अ के स्थान पर उ का आदेश

कड़ी	कड़ी-कुड़ी

११.१.२. अनुकरणात्मक शब्द रचना किन्हीं ध्वनियों का अनुकरण (ध्वन्यानुकरण) मात्र न होकर, भावुक, स्पर्श तथा स्पर्श संवेदनों [illegible] आधार पर भाषा के स्वनिमिक तत्वों द्वारा अभिव्यक्तिकरण है। [illegible] में इन कोटि की शब्द रचना पर्याप्त जटिल एवं विस्तृत है।

नीचे आ. राजस्थानी के सात स्वनिमिक [illegible]

घ घक .... घग .... घड़ घच .... घट .... घण .... घन घप ... घब .... घम ... घर ....

न .... नच ... . नर ....

प .... पच .... पट .... पद .... पर पल पळ पव पस ....

फ फक .... फग .... फड़ फच .... फट .... फण .... फद .... फन .... फर .... फळ .... फस ....

ब बक बख बग .... बड़ बच .... बट .... बण .... बद .... बन .... बफ .... बम ....

भ भक भख भग .... भड़ भच ... . भट .... भण .... भन भप .... भभ भम .... भर .. भळ भस ....

म .... मड़ मच .... मट .... मर ... मळ .... मस ....

र .... रग .... रप .... रब .... रळ ....

ल लक .... लग .... लड़ लच .... लट .... लड .... लप लफ लब .... लर .... लळ .... लस ... .

स .... सग ... सड़ .... सट .... सण .... सन सप .... सर .... सळ ....

स़ .... स़ट .... स़ण .... स़प .... स़ब .... स़र स़ल स़ळ ....

ह हक .... हच .... हण .... हन हप हफ हब .... हम .... हर हल हळ .... हस ....

ध धक .... धग .... धड़ धच .... धट .... धण .... धन धप .... धव .... धम .... धर ....

न .... नच .... नर ....

प .... पच .... पट .... पद .... पर पल पळ पव पस ....

फ फक .... फग .... फड़ फच .... फट .... फण .... फद .... फन .... फर .... फळ .... फस ....

ब बक बख बग .... बड़ बच .... बट .... बण .... बद .... बन .... बफ .... बम ....

भ भक भख भग .... भड़ भच .... भट .... भण .... भन भप .... भभ भम .... भर .. भळ भस ....

म .... मड़ मच .... मट .... मर .... मळ .... मस ....

र .... रग .... रप .... रव .... रळ ....

ल लक .... लग .... लड़ लच .... लट .... लड .... लप लफ लव .... लर .... लळ .... लस ....

स .... सग .... सड़ .... सट .... सण .... सन सप .... सर .... सळ ....

स़ .... स़ट .... स़ण .... स़प .... स़ब .... स़र स़ल स़ळ ....

ह हक .... हच .... हण .... हन हप हफ हब .... हम .... हर हल हळ .... हस ....

उपरिलिखित स्वनिमिक मात्रकों के साथ विविध स्वनप्रक्रियात्मक विकारों की अवस्थिति से अनुकरणात्मक शब्दों की रचना होती है। स्वनिमिक मात्रक कच को आधार मानकर इस प्रकरण में उन विकारों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

स्वनिमिक मात्रकों के साथ अवस्थित होने वाले समस्त ज्ञात विकार नीचे सूचित किये जा रहे हैं :

(१) मात्रक की स्वय अवस्थिति, यथा कच।

(२) मात्रक अक्षर के अ का इ अथवा उ में स्वर परिवर्तन, यथा कच से किच और कुच की रचना।

(३) मात्रक अन्त्य व्यंजन का द्वित्वीकरण, यथा कच्च, किच्च और कुच्च की रचना।

(४) द्वित्वीकृत अन्त्य व्यंजन वाले रूपों को छोड़कर अन्य रूपों के साथ -अर -अळ तथा -अड़ प्रत्ययों की अवस्थिति, यथा कचर, किचर, कुचर; कचळ, किचळ कुचळ एवं कचड़ किचड़ कुचड़ रूपों की रचना।

(५) उपरिलिखित नियमों द्वारा रचित रूपों के साथ -अक अथवा -आक प्रत्ययों की अवस्थिति, यथा कचक, किचक, कुचक, कचाक, किचाक, कुचाक
कच्चक, किच्चक, कुच्चक, कच्चाक, किच्चाक, कुच्चाक
कचरक, किचरक, कुचरक
कचराक, किचराक, कुचराक
कचळक, किचळक, कुचळक
कचळाक, किचळाक, कुचळाक
कचड़क, किचड़क, कुचड़क
कचड़ाक, किचड़ाक, कुचड़ाक

(६) उपरिलिखित ४५ मात्रक प्रकृतियों का आम्रेडन

नियम संख्या (६) द्वारा जनित समस्त मात्रक रूपों को नीचे सूचित किया जा रहा है।

(१) कचकच किचकिच, कुचकुच
(२) कच्च-कच्च, किच्च-किच्च, कुच्च-कुच्च
(३) कचर-कचर, किचर-किचर, कुचर-कुचर
(४) कचळ-कचळ, किचळ-किचळ, कुचळ-कुचळ
(५) कचड़-कचड़, किचड़-किचड़, कुचड़-कुचड़
(६) कचक-कचक, किचक-किचक, कुचक-कुचक

(७) कचाक-कचाक, किचाक-किचाक, कुचाक-कुचाक
(८) कच्चक-कच्चक, किच्चक-किच्चक, कुच्चक-कुच्चक
(९) कच्चाक-कच्चाक, किच्चाक-किच्चाक, कुच्चाक-कुच्चाक
(१०) कचरक-कचरक, किचरक-किचरक, कुचरक-कुचरक
(११) कचराक-कचराक, किचराक-किचराक, कुचराक-कुचराक
(१२) कचळक-कचळक, किचळक-किचळक, कुचळक-कुचळक
(१३) कचळाक-कचळाक, किचळाक-किचळाक, कुचळाक-कुचळाक
(१४) कचड़क कचड़क, किचड़क-किचड़क, कुचड़क-कुचड़क
(१५) कचडाक-कचड़ाक, किचडाक-किचड़ाक, कुचडाक-कुचड़ाक

(७) उपरिलिखित सूची मे मात्रक-प्रकृत्ति संख्या (१-५) के दोनों तत्वों के साथ -आं प्रत्यय के योग से निम्न प्रकृतियों की रचना होती है ।

(१६) कचां-कचा, किचां-किचां कुचां-कुचां
(१७) कच्चां-कच्चां, किच्चां-किच्चा, कुच्चां-कुच्चां
(१८) कचरां-कचरां, किचरा-किचरां, कुचरा-कुचरा
(१९) कचळा-कचळा, किचळां-किचळां, कुचळा-कुचळा
(२०) कचड़ा-कचड़ा, किचड़ा-किचड़ा, कुचड़ा-कुचड़ा

(८) मात्रक प्रकृत्ति संख्या (९, १०, १२, १४) के अन्त्य क के द्वित्वीकरण द्वारा निम्नलिखित प्रकृतियों की रचना होती है ।

(२१) कचक्क-कचक्क, किचक्क-किच्चक, कुचक्क-कुच्चक
(२२) कचरक्क-कचरक्क, किचरक्क-किचरक्क, कुचरक्क-कुचरक्क
(२३) कचळक्क-कचळक्क, किचळक्क-किचलक्क, कुचलक्क-कुचलक्क
(२४) कचड़क्क-कचड़क्क, किचड़क्क-किचड़क्क, कुचड़क्क-कुचड़क्क

(९) मात्रक प्रकृत्तियां कच, किच, कुच; कचर, किचर, कुचर; कचल्, किचल्, कुचल्; कचड़, तथा किचड़, कुचड़, के प्रथम अक्षर के स्वरो मे निम्न परिवर्तन हो सकते हैं :

(क) अ के स्थान पर आ का आदेश ।
(ख) इ के स्थान पर ई,ए का आदेश
(ग) उ के स्थान पर ऊ,ओ का आदेश

इन स्वर परिवर्तनों द्वारा निम्न रूपों की रचना होती है :

(२५) काच, काचर, काचळ, काचड

(२६) कीच, केच, कीचर, केचर, कीचळ, केचळ; कीचड, केचड़

(२७) कूच, कोच, कूचर, कोचर, कूचळ, कोचळ, कूचड, कोचड

(१०) नियम संख्या (४) से व्युत्पन्न रूपों की -णौ प्रत्यय के योग में भाषा में क्रियाओं के रूप में अवस्थिति होती है।

(११) नियम संख्या (४) से व्युत्पन्न रूपों के साथ -आट तथा -आटौ प्रत्ययों के योग से क्रमशः स्त्रीलिंग और पुल्लिंग रूप, यथा कचराट, कचराटौ संज्ञाओं की रचना होती है।

(१२) कच, किच, कुच रूपों के साथ ईड़, -ईड़ौ; -अन्द, -अन्दौ; तथा -कार, -कारौ की अवस्थिति से संज्ञाओं की रचना होती है। विकल्प से -अन्द, -अन्दौ के स्थान पर पर -इन्द, -इन्दौ की अवस्थिति भी हो सकती है।

(१३) नियम संख्या (६) द्वारा व्युत्पन्न रूप कचकच, किचकिच, कुचकुच, के साथ -औ (पुल्लिंग), -आट (स्त्रीलिंग) तथा -आटौ (पुल्लिंग) के योग से संज्ञाओं की रचना होती है।

(१४) नियम संख्या (६) द्वारा व्युत्पन्न रूप कचकच, किचकिच, कुचकुच की -(आ) णौ प्रत्यय के योग से अनुकरणात्मक क्रियाओं की रचना होती है।

(१५) नियम संख्या (६) द्वारा व्युत्पन्न रूप संख्या (१) तथा (२) के साथ मध्य-प्रत्यय -आ- के योग से कचाकचा, कच्चा कच्च आदि रूपों की रचना होती है।

उपरिलिखित नियमों द्वारा निष्पन्न रूपों की समस्त सम्भावनाओं की भाषा में अवस्थिति होती है अथवा नहीं, इसके विषय में निश्चयात्मक रूप से नहीं कहा जा सकता। साथ-ही-साथ दो महत्वपूर्ण तथ्य ऐसे है जिन्हें अस्वीकार नहीं किया जा सकता। अनुकरणात्मक रचनाओं की भाषा के वाक्यों में अवस्थिति वक्ता की स्ववृत्ति अन्य स्थितियों पर निर्भर होती है, तथा भाषा में अनेक अनुकरणात्मक रचनाएं विविध अर्थों में रूढ़ हो चुकी हैं। कोश में इस प्रकार की रचनाओं को सूचित किया गया है। किन्तु फिर भी अनेक ऐसी है जिनका विवरण उपलब्ध नहीं होता।

अनुकरणात्मक शब्द रचना की उपरिलिखित मुख्य विधियों के अतिरिक्त, अन्य विधियां भाषा में उपलब्ध हैं। इन समस्त ज्ञात विधियों का संक्षिप्त विवरण नीचे किया जायेगा।

(क) दो भिन्न किन्तु समवर्गी स्वनिमिक मात्रकों के योग से जगमग, डगमग, तगमत; कलमल, झलमल, टलमल; झड़पड़, चड़पड़, छड़पड़ आदि अनुकरणात्मक शब्दों की रचना भी होती है।

(ख) उपरोक्त कोटि में परिगणित किये जा सकने वाले मात्रकों के साथ -अड़ तथा -अर प्रत्ययों के योग करके भी संयोजनों की रचना होती है, यथा खटर-पटर, चरड़-परड़ इत्यादि।

(ग) लटर-पटर, चरड़-मरड़ इत्यादि संयोजनों के दोनों अंगो के साथ -अक प्रत्ययों के योग से भी लटरक-पटरक, चरड़क-मरड़क आदि नवीन संयोजन निर्मित होते है।

(ग) अनेक मात्रकों के अन्त्य व्यंजनों के द्वित्वीकरण के अतिरिक्त, उनके अन्त्य अक्षरों का अभ्यास भी होता है।

यथा,	तग्ग-तग्ग	तगग-तगग
	दग्ग-दग्ग	दगग-दगग
	धग्ग-धग्ग	धगग-धगग
	फग्ग-फग्ग	फगग-फगग
	बग्ग-बग्ग	बगग-बगग
	भग्ग-भग्ग	भगग-भगग

खण्ण-खण्ण	खणण-खणण	खुणण-खुणण
गण्ण-गण्ण	गणण-गणण	गुणण-गुणण
चण्ण-चण्ण	चणण-चणण	चुणण-चुणण

प्रयत्न करने पर इस प्रकार के अन्य संयोजनों का भाषा में मिल जाना असंभव नही है।

(घ) अनुकरणात्मक मात्रकों के आद्य व्यंजनों के अभ्यास द्वारा भी विविध प्रकार की अनुकरणात्मक रचनाएं होती है।

अभ्यस्त व्यंजन के साथ सानुनासिक ऊ, अ तथा आ के योग से निर्मित रचना की मूल मात्रक के पूर्व आसत्ति द्वारा निम्न प्रकार के शब्द बनते हैं।

चूंचाड़	खंखेड़	खंखोळी	खांखल	कांकर	काकड़
छूंछाड़	गंगेड़	गंगोळी	दादळ	खांखर	चाचड़
ढूंढाड़	डंडेड़	डंडोळी	झांझळ	चाचर	टाटड़
टूंटाड़	जजेड़	पंपोळ	दादळ	छाछर	तातड़

कंकर, संकर ; पंपाळ, जजाळ आदि अनेक शब्द इसी कोटि के हैं।

(ङ) नियम (४) द्वारा निर्मित कतिपय रूपों (तथा खरड़ चरड़ आदि) और खरड़ चरड़ आदि के –अक प्रत्यययुक्त रूपों के पश्चात् इन शब्दों के आदि व्यंजन के साथ ऊं का योग करके निम्न प्रकार के अनुकरणात्मक शब्दों की रचना होती है।

गरड़ गूं	—
चरड़ चूं	चरड़क चूं
झरड़ झूं	झरड़क झूं
टरड़ टूं	टरड़क टूं
ठरड़ ठूं	ठरड़क ठूं
—	डरड़क डूं
परड़ पूं	परड़क पूं

(च) नियम (४) द्वारा निर्मित रूप चरड़ आदि के पश्चात् उक्त रूप के आदि व्यंजन के साथ –अप्प का योग करके निम्न प्रकार के अनुकरणात्मक शब्दों की रचना होती है।

खरड़ खप्प
गरड़ गप्प
घरड़ घप्प
झरड़ झप्प

११.१.२. सामान्य शब्द-साधन के अन्तर्गत दो प्रकार के प्रत्ययों का विवरण प्रस्तुत किया जायगा — (क) ऐसे पूर्व-तथा पर-प्रत्यय जिनके योग से शब्दों के संवर्ग परिवर्तित हो जाते हैं (यथा रस संज्ञा से -ईलो प्रत्यय के योग से रसीलो विशेषण की रचना होती है), तथा (ख) कतिपय अभिव्यंजक प्रत्यय, जिनके योग से शब्दों के संवर्ग तो परिवर्तित नहीं होते किन्तु उन प्रत्ययों से युक्त शब्दों के समुद्देश्यों के प्रति वक्ता का दृष्टिकोण बदल जाता है।

नीचे राजस्थानी के मुख्य पर-प्रत्ययों की सूची प्रस्तुत करते हुए, उनसे निर्मित शब्दों के उदाहरण सूचित किये जा रहे है। इन पर-प्रत्ययों से निर्मित शब्दों के उदाहरण देते समय उन उदाहरणों का विश्लेषण प्रस्तुत नहीं किया जायेगा क्योंकि इस विवरण का उद्देश्य भाषा के इन तत्वों की स्थापना है।

(१) –आण
बंधाण
मंडाण
कमठाण
भंगाण
रचाण
ओळखाण

(२) –आंणी	गेहाणी	
	सोमाणी	
(३) –आणी	माडाणी	
	साचाणी	
	भूठाणी	
(४) –आंत	ढलात	
	उचात	
(५) –आतियौ	पगातियौ	
	सिरातियौ	
	आगातियौ	
	पाछातियौ	
(५) –आद∾ –आण	मिचळाद∾मिचळाण	
	सड़ाद	
(६) –आदरौ	पीळादरौ	
	काळादरौ	
(७) –आइस	समझाइस	
	बुझाइस	
	फरमाइस	
	पैमाइस	
(८) –आई	सुगराई	मुथराई
	कालाई	सुघडाई
	इदकाई	चिकणाई
	टणकाई	
(९) –आपौ∾पौ	पोचापौ	मापौ
	भाईपौ	इकलापौ
	रडापौ	पूजापौ
	लूटापौ	भेळापौ
	बधापौ	राजीपौ
	छीजापौ	सेणापौ
(१०) –आप	धणियाप	मिळाप

(११) –प	भोळप	भेळप
	भाईप	सैणप
	काळप	
(१२) आयत	जोडायत	वैठायत
	नातायत	अड़पायत
	गनायत	गोळायत
	घटायत	पौरायत
	पचायत	नातरायत
(१३) –आयती	पौरायती	धामायती
	दवायती	नातायती
	जापायती	पचायती
	खोळायती	
(१४) –आळ∼इयाळ	डयाळ	संयाळ
	जीमणियाळ	ग्रयाळ
	ओटाळ	
(१५) –आळो	रूपाळो	मूछाळो
	कोडियाळो	हेजाळो
	अणियाळो	कडियाळो
	बरमाळो	लूवाळो
	मतवाळो	
	छोगाळो	
	जाडाळो	
	आटाळो	
(१६) –आव	पमराव	खटाव
	बरताव	कटाव
	निभाव	घिराव
	उकसाव	छळाव
	उतराव	तणाव
	उफणाव	छिड़काव
(१७) –आवट	बणावट	गिरावट
	सजावट	कचावट
	दिखावट	पकावट

(१८) –आवण	करडावण ~ करड़ाण	
	खरावण	
	लगावण	
	मिरावण	
	बधावण	
	रिझावण	
(१९) –आवौ	दिखावौ	धकावौ
	पिछतावौ	हलावौ
	छळावौ	झुरावौ
	धीजावौ	पचावौ
	भुलावौ	मुणावौ
(२०) –आस	पीळास	मिठास
	खारास	खटास
	काळास	धोळास
	चरकास	फीकास

(२१) –ओकड,–ओकडौ,–ओकड़ौ,–ओखड़ौ

बातोकड़		रमेकड़ौ	बंधोखड़ौ
भूलोकड	भूलोकडौ		
पिदोकड	पिदोकड़ौ		
रमोकड़			

(२२) –इन्दौ	रातिन्दौ
	रातून्दौ
	बातिन्दौ ~ बातन्दौ
(२३) –इयारौ	कठियारौ
(२४) –ई	जोरावरी
	उन्मादी
	कुचमादी
(२५) –ईक	मंगळीक
	रमणीक
	पूजनीक

(२६) –ईलो	रसीलो	कसीलो
	वादीलो	फुर्तीलो
	अडीलो	सांतीलो
	आटीलो	हठीलो
	गठीलो	गर्वीलो
(२७) –ऊ	प्रस्तावू	अपटावू
	अड्डू	धपावू
	मारगू	कथावू
(२८) –ऊळियो	वनूळियो	गैंतूळियो
(२९) –एति	कामेति	रूवेति
	गामेति	घामेति
(३०) –एल	टणकेल	जणकेल
(३१) –ऐता~इता	मांनैता ~ मानिता	
	जाणैता ~ जाणिता	
(३२) –एरो	मानेरो	दादेरो
	बावेरो	मामेरो
(३३) –एरण	भातेरण	कातेरण
	गीतेरण	पातेरण
	कमतेरण	
(३४) –क	पाटक	खाटक
	धाटक	पाटक
	दाटक	राटक
	वूटक	
(३५) –कार	जाणकार	झणकार
	ततकार	टणकार
(३६) –कारो	रेकारो	हुंकारो
	रणकारो	ततकारो
	चुसकारो	होकारो
(३७) –गरो	भारीगरो	

(३८) –गर	झाड़ागर	
	जादूगर	
(३९) –गारी	पुरसगारी	
(४०) –गारो	छळगारो	धूतरगारो
	झाड़ागारो	चाळागारो
	कामणगारो	छंदागारो
(४१) –गी	मादगी	सादगी
	साजगी	वानगी
(४२) –गो	नांवगो	
(४३) –चारो	मिनखीचारो	भाईचारो
(४४) –ची	काणची	खांमची
	बंदूकची	काळची
	धोळची	पीळची
	गोरची	
(४५) –त	वणत	छीजत
	वळत	रजत
	आगत	पाछत
	मांगत ~ मगत	
(४६) –ता	विडरुपता	
	क्रूरता	
	परवसता	
(४७) –ती	गिणती	मिळती
	विरती	विणती
(४८) –तो	नचीतो	
(४९) –दार	चोवदार	चवड़ेदार
	घरवादार	कामदार
	चूड़ीदार	नकीबदार
(५०) –पणो	लुगाईपणो	बालपणो
	टाबरपणो	राजापणो
	कामदारपणो	गोलापणो
	गघापणो	भाईपणो
	सागपणो	मिनखपणो
	मळीचपणो	अबूभपणो
	दातारपणो	गिवारपणो
	बोदापणो	नुगरापणो

	मगसापणो	ओछापणो
	गेलापणो	लाटापणो
(५१) –पत	रासपत	
	रसापत	
(५२) –आयरो,–वायरो	लसणां वायरो	
	आसग वायरो	
	लाज वायरो	
	सिम्या बायरो	
	चेता वायरो	
(५३) –मां –मो	अपटमा	ढेलमो
	दपटमा	
(५४) –रत	गिनरत	
	गागरत	
(५५) –रोळ	भमरोळ	
(५६) –लो	छेहलो	ऊपरलो
	लारलो	साम्हेलो
	धकलो	माथायलो
(५७) –वड़		गावड़
		मांवड़
		पारवाड़
(५८) –वाड़		
(५९) –वाड़ो,-वाड़ी,-वाड़	नरकनाड़ो	बोरावाड़ी
	सूगलीवाडो	
	रजवाड़ो	मंगलवाड़
	पातरवाड़ो	
	मारवाड़ो	
	मुफ्तवाडो	
	अँठवाड़ो	
	वेंचवाड़ो	
(६०) –वांन,-वंती	समझवान	धनवती
	सरूपवान	सतवंती
(६१) –वास, -वासो	घरवास	रातवासो
	रैंवास	
	सहवास	
(६२) –व	थाटवो	
	पाटवो	

(६३) -हीण, -हीणो	वस्तरहीण	पतहीणो
	करमहीण	

नीचे आ. राजस्थानी के मुख्य पूर्व-प्रत्ययों की सूची प्रस्तुत करते हुए, उनसे निर्मित शब्दों के उदाहरण सूचित किये जा रहे हैं। इन पूर्व-प्रत्ययों से निर्मित शब्दों के उदाहरण देते समय उन उदाहरणों का विश्लेषण नहीं किया जायगा क्योंकि इस विवरण का उद्देश्य भाषा के इन तत्वों की स्थापना मात्र है।

(१) अ-	अकथ्य	अडोळो	अजेज
	अमोलक	असँधो	अजांण
	अलूट	अनूक	अजोगती
	अन्याव	अभरोसो	अणचो
	अकरम	अलगाव	अंगळो
(२) अध-	अधकालो		अधगावळो
	अधकीचरियो		अधपेटो
	अधरोगलो		अधघींटो
	अधमरियो		अधपूड
	अधरातियो		अधराणो
(३) अण-	अणचीत्यो		अणघड़
	अणगिण		अणभणियो
(४) अग्ट-	अरटगोर		
(५) ओ-	ओगण		
(६) का-	कायळ		
(७) कु-	कुलखणी		कुवेळा
	कुबांण		कुरूप
	कुमया		
(८) चौ-	चौफेर		
	चौरंगो		
(९) दु-	दुपतां		
	दुपड़ियो		
(१०) दुर-	दुरदस		
	दुरगंध		
(११) ना-	नाकुर		
	नामरदो		
(१२) सं-	संजोग		
	सपूरण		
	सजाग		

(१३) नि–	निसक	निपूता	
	निकेवळो	निपोच्यौ	
	निपग्गी	निसडो	
(१४) निर–	निरफळ	निरमोही	
	निरलज्ज	निराकार	
(१५) निस्–	निस्कारो	निस्तार	
(१६) नु–	नुगरो		
(१७) ने–	नेगम		
(१८) बे–	बेचेतो,	बेभाव,	बेराजी
(१९) वि–	विजोग		
	विवाद		
	विणास		
(२०) स–	सभाग		
(२१) सा–	सावळ		
(२२) सु–	सुलखणी	सुमत	सुगरो
	सुरंगो	सुजाग	
(२३) म–	मधीनो		

११.१.४. *अभिव्यंजक प्रत्ययों की अवस्थिति का उल्लेख इस व्याकरण में यत्र-तत्र* किया गया है। फिर भी भाषा में उनके प्रकार्यों एवं और विशेष रूप से संज्ञाओं के साथ उनकी अवस्थिति से शब्दों के जो विविध रूप निर्मित होते है, उनका विवरण शब्द रचना के प्रकरण मे करना अधिक समीचीन है।

आ. राजस्थानी में मुख्य रूप से चार अभिव्यंजक प्रत्यय है– -अक~क, -अल~ल, -अड़~ड़ तथा -अट~ट। इन चारों प्रत्ययों द्वारा वक्ता अपने सम्वादी (जिस व्यक्ति अथवा वस्तु इत्यादि के विषय मे वह अपने श्रोता से बातचीत कर रहा है) की क्रमशः किसी क्रिया व्यापार मे सलग्नता के प्रति सक्रियता, उसकी (अर्थात् सम्वादी) की स्वतः से सम्बन्धात्मकता, उसके प्रति अपनी भावगुणात्मकता तथा उसकी क्षमता आदि के विषय मे विविध दृष्टिकोणों की अभिव्यक्ति करता है।

इन प्रत्ययों की अवस्थिति पुरुष अथवा स्त्री प्रदत्त नामों के ह्रस्वीकृत अंशो के साथ, मानवेतर प्राणीवाचक संज्ञाओं तथा अप्राणीवाचक संज्ञाओं के साथ हो सकती है। इन प्रत्ययों की इन संज्ञाओं के साथ अवस्थिति का अनुकूलन-उपादान है वक्ता की अपने सम्वादी के प्रति संवेगात्मक अभिवृत्ति की अभिव्यक्ति। अतः प्रत्ययो की अवस्थिति के लिये भाषावैज्ञानिक प्रतिबन्धों के अतिरिक्त विविध समाजशास्त्रीय शर्तों का होना भी अनिवार्य है,और दोनो प्रकार के प्रतिबन्धो के साथ साथ ही वक्ता की स्वभावजन्य वृत्तियों मे परिवर्तनशीलता भी एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है।

ऊपरलिखित चारों प्रत्ययों के विविध संयोजनो का निदर्शन करने के लिये नीचे व्यक्तिवाचक पुरुष अथवा स्त्री नाम सोन के साथ इनकी अवस्थिति से निर्मित रूपावली प्रस्तुत की जा रही है।

व्यक्तिवाचक पुरुष अथा स्त्री नाम सोन की रूपावली

रूपावली संख्या		अभिव्यंजक रूप लिंग			
		सामान्य पुल्लिग	विशिष्ट पुल्लिंग	अल्पार्थक पुल्लिग	स्त्रीलिंग
(१)	(क)	सोन	सोनको	सोनकियो	सोनकी
	(ख)	—	सोनकडो	सोनडियो	सोनकडी
	(ग)	—	सोनकलो	सोनलियो	सोनकली
(२)	(क)	सोनल	सोनलो	सोनलियो	सोनली
	(ख)	—	सोनलको	सोनलियो	सोनलकी
	(ग)	—	सोनलडो	सोनलडियो	सोनलड़ी
(३)	(क)	सोनड़	सोनड़ो	सोनडियो	सोनडी
	(ख)	—	सोनडको	सोनड़कियो	सोनडकी
	(ग)	—	सोनडलो	सोनड़लियो	सोनड़ली
(४)	(क)	सोनट	सोनटो	सोनटियो	सोनटी
	(ख)	—	सोनटको	सोनटकियो	सोनटकी
	(ग)	—	सोनटडो	सोनटडियो	सोनटड़ी

नीचे सोन के अल्पार्थक रूप सोनू के भी विविध रूप प्रस्तुत किये जा रहे है।

(५)	(क)	सोनूड	सोनूड़ो	सोनूड़ियो	सोनूड़ी
	(ख)	—	सोनूडको	सोनूड़कियो	सोनूड़की
	(ग)	—	सोनूड़लो	सोनूडलियो	सोनूडली

व्यक्तिवाचक नामों के अभिव्यंजक रूपों के उपरिलिखित लिंग रूपो का पुरुष अथवा स्त्री व्यक्तियो से सहसम्बन्ध नही है। इस कथन का अभिप्राय यह है कि प्रत्येक पुल्लिग अथवा स्त्रीलिंग रूप की अवस्थिति पुरुष अथवा स्त्री व्यक्ति के लिये निर्बाध रूप से हो सकती है। इस तथ्य का स्पष्टीकरण करने के लिए नीचे एक ही रूप के स्त्री तथा पुरुष व्यक्तियों के समुद्देशन के वाक्यात्मक उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

सोनको (पुल्लिग रूप) की पुरुष-समुद्देशक अवस्थिति (६)

(६) इत्ती जेज लगाय दी, सोनको पछे काई करतो हो।

सोनको (पुल्लिग रूप) की स्त्री-समुद्देशक अवस्थिति (७)

(७) सोनको बेटो घर मे दीसे कोयनी; सिधग्यो परो।

उपरोक्त अभिव्यंजक प्रत्ययों की अवस्थिति जाति वाचक, मानवेतर प्राणीवाचक, वस्तु इत्यादि वाचक संज्ञाओं तथा विशेषणों के साथ भी होती है। इन कोटियों की समस्त संज्ञाओं तथा विशेषणों से निर्मित समस्त रूप भाषा में उपलब्ध नहीं होते, और साथ ही साथ रूप-निर्माण की प्रक्रिया इतनी अनियमित है कि इसके विषय में सामान्य नियमों का कथन अति दुस्साध्य कार्य है। अतः इनके कतिपय उदाहरण देकर ही संतोष करना पड़ता है।

(क) जातिवाचक, मानवेतर प्राणीवाचक तथा वस्तु इत्यादि वाचक संज्ञाओं की उपलब्ध अभिव्यंजक रूपावलियों के उदाहरण।

संज्ञा		उपलब्ध अभिव्यंजक रूप
जातिवाचक	चोर	चोरको, चोरड़ो चोरटो, चोरड़ियों, चोरटियो, चोरकी, चोरड़ी, चोरटी।
मानवेतर प्राणी वाचक	मिन्नी	मिनको, मिनकियो, मिनकी, मिनकड़, मिनकड़ो, मिनकड़ियो, मिनकड़ी, मिनलो, मिनलियो, मिनली, मिनलड़ो, मिनड़, मिनड़ो, मिनड़ियो, मिनड़ी, मिनड़क, मिनड़को, मिनड़की, मिनूड़, मिनूड़ो, मिनूड़ियो, मिनुड़ो।
वस्तु इत्यादि वाचक	घरटी	घरटलो घरटलियो, घरटली, घरटलको, घरटलड़ो, घरटड़, घरटड़ो, घरटड़ी, घरटूलड़ो।

(ख) कतिपय विशेषणों की उपलब्ध अभिव्यंजक रूपावलियों के उदाहरण।

खारो	खारोड़ो, खारोड़को, खारलो
मोटो	मोटोड़ो, मोटोड़को, मोटलो
नवो	नवोड़ो, नवोड़को
अेकलो	अेकलड़ो
असलो	असलीड़ियो
धरमी	धरमीड़ो
रोगी	रोगीड़ो
पैलो	पैलोड़ो, पैलको, पैलोड़को, पैलियो, पैलोड़ियो, पैलकियो, पैलोड़कियो, पैली, पैलोड़ो, पैलकी, पैलोड़की
म्हारो	म्हारोड़ो, म्हारोड़को, म्हारड़लो

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या (ऊपर से)	अशुद्धि	शुद्ध पाठ
१२	१	की	को
१२	४	अधारित	आधारित
१२	१७	आधियो	आदियो
१३	२१	काचरो	काचर
१४	३	दातलियो	दातळियो
२६	२७	सभँ-पाडो	भैंस-पाडो
२७	८	समिक्ष	समिश्र
२९	९	कठोरदान	कटोरदान
३२	८	(=स$_2$ का सं$_2$)	(=स$_1$ का स$_2$)
३२	१०	स$_2$–घटकों की	स$_1$–घटकों की
सर्वत्र	—	आमेड़ित	आम्रेड़ित
३५	१४	वादरा	वादरा
४८	१८	नही	नी
५०	२२	सेठावू	सेढावू
५३	१५	(५,४)	(५.४)
५५	१	कै के	कै
५७	१३	शून्य के	शून्य के लिए
६२	२४	सौकर्म	सौकर्य
६४	७	विकल्प	कैवैकल्पिक
७४	२२	उद्धेलन	उद्वेलन
७६	१	उर	डर
७६	६	वस्तुत	वस्तुतः
८०	२	मुक्त	युक्त
८२	२०	समथकोटि	समिश्रकोटि
८८	३	माम	माय
९०	१९	क्रियाओं	इन क्रियाओं
१०८	१५	स्याळ-स्यालणी	स्याळ-स्याळणी
१०९	२८	नियात	निपात
११०	८	पारो	परो

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या (ऊपर से)	अशुद्धि	शुद्ध पाठ
१११	१६	अंटणो	अंठणो
११२	७	चिरावणो	चिरवावणो
११२	१०	लुटवावणो	लुठावणो
११२	२७	उठावणो	उठाणणो
११२	२८	उठवावणो	उठवाणणो
११२	३०	वंठवणाणो	वंठवावणो
१२१	१८	१५६	(१५६)
१२३	१	एक	एक वात
१२४	४	क्रिया–	क्रिया–
१२४	२७	केवण	कंवण
१२५	२९	लिखतो	लिखतो
१२६	१६	थका	थकाई
१२७	२१	अनिवार्य	अविकार्य
१२८	१८	अविसित	अवसित
१२९	१७	करके, न	न करके,
१३०	७	पन	पण
१३०	२	अन्तनिविण	अन्तर्निविष्ट
१३०	१६	नियात	निपात
१३०	२९	अभिरचना	अभिरचना का
१४७	१	म्हारो	म्हाटो
१४७	२	म्हारो	म्हाटो
१४७	३	८.५.	८.४.
१४८	७	पूणगो	पूछणो
१४९	१५	सळं	भळं
१६६	१६, १८	पंयाळ	पयाळ
१७१	६	नै	न
१७४	२२	होना	होता
१७६	१५	स)	(स)
१७७	२९	नाव	गाव
१८३	२६	ब्याऊ	ब्याऊ
१८४	२५	उत्ती-उपवाक्य	उत्ती-उपवाक्य में
१९१	४	रूपों के	रूपों के साथ